सुभाषचन्द्र बोस

नेताजी
सम्पूर्ण वाङ्मय

खंड - 6

सम्पादकीय सलाहकार मंडल
पी.के सहगल
लियोनार्ड ए गॉर्डन
योजी आकाशी

सम्पादक
शिशिर कुमार बोस
सुगता बोस

अनुवादक
जानकी प्रसाद शर्मा

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण शक 1919 (1997)

ISBN 81-230-0514-8

मूल्य : 85/-

निदेशक,
प्रकाशन विभाग,
सूचना और प्रसारण मंत्रालय,
भारत सरकार, पटियाला हाउस,
नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित

विक्रय केन्द्र प्रकाशन विभाग

- प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, तिलक मार्ग, नई दिल्ली-110001
- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल) कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
- कामर्स हाउस, करीम भाई रोड, बालार्ड पायर, मुंबई-400038
- 8 एस्प्लेनड ईस्ट, कलकत्ता-700069
- राजाजी भवन, बेसंट नगर, चेन्नई-600090
- बिहार स्टेट कोआपरेटिव बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
- निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, तिरुअनंतपुरम्-695001
- 27/6 राममोहन राय मार्ग, लखनऊ-226001
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद-500004

मुद्रित बी एम एस प्रिन्टर एण्ड पब्लिशर्स फोन 4632395

साभार

शरतचंद्र-विवावती बोस सग्रह
एमिली सेकल-बोस
अनिता बी पफाफ

प्रस्तावना

नेताजी के 90 वे जन्मदिवस पर प्रकाशित हो रहे उनके सपूर्ण वाङ्मय के छठे भाग मे उनके राजनीतिक जीवन के दूसरे महत्वपूर्ण चरण, जिसकी समाप्ति 1933 मे उनके यूरोप प्रवास के साथ होती है, तक की घटनाए शामिल हैं।

जब से पाचवा भाग प्रकाशित हुआ है, सपादकीय परामर्श मडल के वरिष्ठतम सदस्य श्री ए० सी० एन० नाम्बियार के निधन के रूप मे हमारी एक अपूरणीय क्षति हुई है, जिनके गभीर अनुभव एव विद्वत्तापूर्ण परामर्श का अब हम कभी लाभ नहीं उठा सकेगे। ऐसे विद्वानो के दु खद किंतु अपरिहार्य निधन एव भविष्य की आवश्यकताओ की माग है कि वाछित प्रशिक्षण और इतिहास मे विशेषज्ञता रखने वाले युवा पीढी के लोगो को लेकर मडल का पुनर्गठन किया जाये। यह कार्य हो रहा है।

वाङ्मय के तीसरे और चौथे भागो मे हमने नेता जी के 1923 से 1932 तक के पत्र व्यवहार के विस्तृत सग्रह को प्रकाशित किया है। इसमे 1924 से 1927 तक के बर्मा के बदी-जीवन का दौर शामिल है। जब ये भाग प्रकाशन की प्रक्रिया में थे, तब इसी काल से सबधित नयी एव असाधारण रूप से महत्वपूर्ण सामग्री का एक खड रिसर्च डिवीजन द्वारा प्रकाशन विभाग को सौंप दिया गया। हमें लगा कि इस तमाम नयी सामग्री के लिए दो खड आवश्यक होगे। 1985 के मध्य मे प्रकाशित पाचवे खड की अन्य चीजो के साथ-साथ नेताजी की बर्मा डायरी से बडी मात्रा मे अप्रकाशित सामग्री को शामिल किया गया है। इस खड मे अतिम विशुद्ध राजनीतिक विषय के रूप मे दिसम्बर 1928 मे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के कलकत्ता सत्र मे दिये गये उनके ऐतिहासिक भाषण को शामिल किया गया है। जिसमे उन्होने डोमिनियन स्टेटस बनाम पूर्ण स्वाधीनता के मुद्दे पर महात्मा गाधी के प्रस्ताव मे सशोधन पेश किया था।

प्रस्तुत खड 1929 के आरभ से 1933 के आरभ तक के समय से हमारा परिचय कराता है, जबकि उन्होने यूरोप प्रस्थान किया था। यह वह समय था जब वे अपने ढग के एक विशिष्ट नेता के रूप में तथा उभरते हुए वामपथ के एकमात्र प्रवक्ता के रूप मे राष्ट्रीय परिदृश्य पर उपस्थित हुए। पाठको के हित को ध्यान मे रखते हुए, जो कि उनके राजनीतिक भाषणो एव वक्तव्यो को पढेगे, यह आवश्यक लगता है कि 1929 से लेकर 1933 मे नेताजी के यूरोप प्रस्थान तक राजनीतिक विकास और इसमे उनके द्वारा अदा की गयी भूमिका का सक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया जाये।

कलकत्ता काग्रेस मे महात्मा जी के प्रस्ताव को लेकर नेताजी के सशोधन की पराजय से राष्ट्रीय आदोलन के विकास को भारी क्षति पहुची। तथापि इसमे आश्वस्त करने वाली बात यह थी कि नेताजी को अपने प्रस्ताव के पक्ष मे जो पर्याप्त समर्थन प्राप्त हुआ था, वह इस बात का स्पष्ट सकेत था कि काग्रेस और देश में उभरता हुआ वामपथ शक्ति अर्जित कर रहा था। 1929 के आरभिक महीनो मे उत्तर भारत मे क्रातिकारी गतिविधि का विस्फोट हुआ जिसका चरम रूप भगत सिह वृतात और जतीनदास के आत्म-बलिदान के रूप मे सामने आया। इस वर्ष के दौरान सुभाष चद्र बोस ने बगाल तथा इससे बाहर विद्यार्थियो और युवाओ के अनेक सम्मेलनो की अध्यक्षता की। उन्होने युवाओ और विद्यार्थियो के लिए देशभक्ति, ईमानदारी, त्याग, राहत, साहस

और पूर्ण स्वाधीनता के राष्ट्रीय लक्ष्य के प्रति अविचल निष्ठा की शिक्षा दी। यह वर्ष मजदूर वर्ग के बीच बढते हुए असतोष का भी साक्षी रहा। मेरठ षड्यंत्र केस 1929 मे शुरू हुआ। राष्ट्रवादी बुद्धिजीवियो, विद्यार्थियो, युवाओ और मजदूर वर्गों के विक्षोभ ने नेताजी को अंग्रेजो के विरुद्ध व्यापक राजनीतिक अभियान चलाने के लिए उत्साहित किया। उन्होने बगाल काग्रेस की उदारवादी और दक्षिणपथी शक्तियो के ऊपर अपना प्रभुत्व कायम किया। उनकी पार्टी के मुखपत्र "फार्वर्ड" के बद हो जाने पर नेताजी के अनुयायियो ने उल्लेखनीय साधन सपन्नता का प्रदर्शन किया। उन्होने प्राय रात भर मे इसके विकल्प के रूप मे "लिबर्टी" को जारी कर दिया। साइमन कमीशन की रिपोर्ट पर आधारित एक गोलमेज सम्मेलन के संबंध में ब्रिटिश वायसराय द्वारा की गयी घोषणा के जवाब में वर्ष के अत मे आयोजित सर्वदलीय सम्मेलन ने राष्ट्रवादियो के बीच एक रोचक पक्तिबद्धता का उद्घाटन किया। जब जवाहरलाल नेहरू सहित अनेक काग्रेस नेताओ ने अपने घोषणापत्र मे उनके प्रति सहयोग जताया था और डोमिनियन स्टेटस के आधार पर बातचीत करने के लिए तैयार थे तब सुभाष चद्र बोस, सैफुद्दीन किचलू और अब्दुल बारी ने डोमिनियन स्टेटस और अंग्रेजो की शर्तों पर एक गोलमेज सम्मेलन का विरोध करते हुए एक पृथक घोषणापत्र जारी किया।

लाहौर काग्रेस मे सुभाष चद्र बोस ने पूर्ण-स्वाधीनता के रूप मे राष्ट्रीय लक्ष्य की सुस्पष्ट घोषणा की। लाहौर मे नेताजी ने माग को प्रभावशाली बनाने हेतु किसानो, मजदूर वर्गों और युवाओ के सुदृढ सगठन पर आधारित एक सपूर्ण कार्यक्रम प्रस्तुत किया था। उनके अनुसार राष्ट्रीय सघर्ष समझौते पर आधारित एक अधूरा प्रयास नहीं हो सकता। इसे अंग्रेजी कानून और प्रशासन का "पूर्ण बहिष्कार" करते हुए एक समानातर सरकार का विकल्प प्रस्तुत करना होगा। यह एक ऐतिहासिक रूचि का तथ्य है कि काग्रेस ने भारतीय जनता के उन उग्रवादी वर्गो के क्रातिकारी कार्यक्रमो को अपनाने मे कमी का परिचय दिया है जो निष्क्रिय जन प्रदर्शनो और कानून के प्रतीकात्मक उल्लघन मे आस्था नहीं रखते थे। यह बात सबसे स्पष्ट रूप मे 1942 में गांधीजी द्वारा छेडे गये अतिम सघर्ष के दौरान खुलकर सामने आयी जब भारतीय जनता को अंग्रेजी साम्राज्यवाद के सगठित दमन और आक्रमण का सामना करने के लिए अपने हाल पर छोड दिया गया था। नेता जी का भी यह विचार था कि काग्रेस के सामाजिक कार्यक्रम कांग्रेसजनो के हाथ मे ही रहना चाहिए, ये कार्यक्रम उन सगठनो के अधीन नहीं होने चाहिए जो सीधे पार्टी के नियत्रण मे नहीं हैं।

लाहौर काग्रेस से कलकत्ता लौटने के तुरत बाद सुभाष चद्र बोस को गिरफ्तार कर लिया गया और एक वर्ष के लिए जेल भेज दिया गया।

जब महात्मा जी ने 1930 मे दाडी मार्च की शुरूआत की, नेताजी उस समय जेल मे थे और उन्होने जेल की दीवारो के पीछे से ही राष्ट्रीय प्रतिरोधकत्ता आदोलन की गतिविधियो का बडी रूचि के साथ अनुसरण किया। सरकारी आतक ने देश-विशेष रूप से बगाल मे क्रातिकारी आतकवाद के विस्फोट को प्रेरित किया। अप्रैल 1930 मे चित्तगोग के शस्त्रागार पर छापा मारा गया और राष्ट्रवादियो तथा सरकारी शक्तियो के बीच हर मोर्चे पर महीनो झूमा-झूमी की लडाई चलती रही। अंग्रेज सरकार ने जून 1930 में साइमन कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित की। इसे

एक ओर से सभी पार्टियो द्वारा निरस्त कर दिया गया और इससे जनता का मनोबल ऊचा हुआ। जेल मे रहते हुए सुभाष चद्र बोस को कलकत्ता का मेयर चुना गया। वे जेल से मुक्त होने के बाद अपना कार्यभार सभाल सकते थे। मेयर के पद से उनके अभिभाषण को इस खड मे उचित स्थान दिया गया है। वर्ष के अत मे लदन मे पहला गोलमेज सम्मेलन हुआ जिसमे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस का प्रतिनिधित्व नहीं हुआ था। यह एक निरर्थक प्रयास था और इसके माध्यम से भारतीय जनता को "रक्षाकवच" और ब्रिटिश अवधारणा का "सघ" मुहैया कराने की पेशकश की गयी जिसकी नेताजी और अन्य लोगो ने खुलकर भर्त्सना की।

1931 के आरभ मे नेताजी की सत्तारूढ शक्ति से सीधी भिडत हुई। जब वे स्वतत्रता दिवस, 26 जनवरी, 1931 को कलकत्ता मे मेयर के रूप मे जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे अपने साथियो सहित उनके ऊपर अग्रेज घुडसवार सिपाहियो द्वारा जान लेवा हमला किया गया और उन्हे हिरासत में ले लिया गया। जब वे जेल मे थे तब मार्च 1931 का गाधी–इर्विन समझौता हुआ। समझौते की शर्तो से उन्हे बडी निराशा हुई। फिर भी उन्होने पार्टी के विभाजन को उचित नहीं समझा। मुक्त होते ही वे महात्मा गाधी से मिलने को बम्बई दौडे, उनके साथ फिर दिल्ली की यात्रा की ओर उनके साथ व्यापक विचार-विमर्श किया। कराची काग्रेस एक महान त्रासदी की छाया मे आयोजित हुई। यह त्रासदी थी–भारत के जनमत की पूर्ण उपेक्षा करते हुए भगतसिह और उनके साथियो को फासी देना। नेताजी ने नागरिक अधिकारो के कराची प्रस्ताव का स्वागत किया जो पार्टी के समाजार्थिक उद्देश्यो को कुछ बल देता था। यह बात महत्वपूर्ण है कि लाहौर अधिवेशन मे गाधी जी के सकेत पर जवाहरलाल नेहरू को अध्यक्ष निर्वाचित किये जाने के बावजूद सुभाष चद्र बोस और उनके वामपथी रुझान के साथियो को लाहौर और कराची दोनो जगह काग्रेस कार्यसमिति से बाहर रखा गया।

कराची काग्रेस के समय ही नेताजी को भगतसिह द्वारा सस्थापित एक क्रातिकारी युवा सगठन नौजवान भारत सभा की अध्यक्षता हेतु आमत्रित किया गया। नेताजी ने इन साथियो से मिलते हुए सहज आत्मीयता का अनुभव किया और उन्होने अपने क्रातिकारी समाजार्थिक विचारो तथा राष्ट्रीय पुनर्निमाण के भावों को उचित ढग से प्रस्तुत किया। उन्होने कायेस से अलग समाजवादी सोच पर एक वैकल्पिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने मे सकोच नहीं किया। उनका विचार था कि काग्रेस का कार्यक्रम आमूल परिवर्तनवाद के बजाय निहित स्वार्थों के समायोजन और समझौतो पर आधारित है। उन्होने भारत की उस ऐतिहासिक और रचनात्मक भूमिका को भी रेखाकित किया जो कि उसे ससार भर से साम्राज्यवाद का विनाश करते हुए एक नयी विश्व-व्यवस्था के निर्माण मे अदा करनी है।

जब काग्रेस कार्यसमिति ने महात्मा गाधी को दूसरे गोलमेज सम्मेलन के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में चुना, तब नेताजी ने स्पष्ट रूप से यह राय व्यक्त की कि यह एक कार्यनीतिक भूल थी। इस पर भी सुभाष चद्र बोस ने महात्मा गाधी को उनके विलायत प्रस्थान के पूर्व सध्या पर तार द्वारा एक भावपूर्ण और शालीन संदेश भेजा, जो इस प्रकार है– "आप जहा हो, हमारा मन आपके साथ है। जाग्रत भारत प्रत्याशा भरी आखो से आपका अनुसरण करेगा। हम आश्वस्त हैं कि आपके हाथो राष्ट्र का सम्मान सुरक्षित रहेगा। आवश्यकता हुई तो हम फिर से लडेगे-लेकिन अपने जन्मसिद्ध अधिकार से कम को स्वीकार नहीं करेगे।"

जैसा कि नेताजी का अनुमान था, सम्मेलन मे अंग्रेज सरकार ने महात्मा गाधी के विरुद्ध अज्ञातकुलशील लोगो, आत्म-नियुक्त नेताओ और सकीर्णतावादी तत्वो की व्यूहरचना खडी कर दी और अल्पसख्यको की समस्या व भारत के भावी सरचनात्मक ढाचे के मुद्दो को केंद्र मे लाते हुए गाधीजी के ऊपर ही बाजी पलट दी। इस प्रकार उन्होने बडी सहजता से राष्ट्रीय स्वाधीनता के मुख्य मुद्दे को टाल दिया। नेताजी का यह मानना था कि गाधीजी की लदन यात्रा गलत ढग से नियोजित की गयी थी। इसके समाप्त होने पर महात्माजी का पूर्ण मोहभग हो गया। आगे, नेताजी ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि गाधी जी को उन लोगो के सपर्क मे नहीं रहने दिया गया, जिनकी इग्लैंड से बाहर यूरोपीय राजनीति मे गिनती होती थी।

नेताजी ने मई 1931 मे उत्तर प्रदेश मे नौजवान भारत सभा और जुलाई मे आल इडिया ट्रेड यूनियन काग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्षता की। दिसम्बर मे आयोजित बगाल राजनीतिक सम्मेलन मे नेताजी की प्रेरणा से इस विचार को तरजीह दी गयी कि सविनय अवज्ञा को फिर से चालू किया जाये। जब महात्मा गाधी ने अपनी इग्लैंड से वापसी पर नये वायसराय विलिगडन को लिखा। इसके बदले उन्हे सिर्फ एक नकारात्मक और रूखा उत्तर मिला। इस प्रकार दूसरे सविनय अवज्ञा आदोलन का वातावरण तैयार हो गया।

पहले सविनय अवज्ञा आदोलन के दौरान अंग्रेज सरकार को महात्मा गाधी के प्रतिरोध की नयी पद्धति ने आश्चर्य में डाल दिया था। लेकिन 1932 तक उन्होने सविनय अवज्ञा से निबटने के लिए अपनी मशीनरी को तैयार कर लिया था। और अब वे (अंग्रेज) आक्रामक हो उठे थे। उन्होंने इर्विन की जगह चालाक लार्ड विलिगडन को वायसराय के रूप मे बैठा दिया था जिसने देश भर मे आतक का बोलबाला कर दिया। उसने महात्मा गाधी, नेताजी बोस, पडित जवाहरलाल नेहरू और अन्य नेताओ की गिरफ्तारी मे कोई समय नहीं लगाया।

जनवरी 1932 मे सुभाष चद्र बोस को सबसे पहले सेंट्रल प्राविस के सिवनी नामक दुरूह स्थान पर एक छोटी जेल में रखा गया। शीघ्र ही उनके पीछे अग्रणी वकील, अग्रिम पक्ति के काग्रेस कार्यकर्ता और कलकत्ता नगर निगम के महापौर उनके अग्रज शरतचद्र भी जेल मे आ गये। बचपन से ही नेताजी को उनके बडे भाई और भाभी विवावती का विशेष स्नेह प्राप्त था। नेताजी का अपने भाई से पत्र-व्यवहार उनके जीवन की एक बहुत महत्वपूर्ण स्त्रोत सामग्री है। अतएव जो कुछ उपलब्ध है, वह उनके सपूर्ण वाड्मय मे समाविष्ट कर लिया गया है। दोनो भाइयो के बीच विचारधारा और जीवन-क्रम का साम्य हमारे समय के इतिहास मे एक विशिष्ट उदाहरण है।

बोस बधुओ ने 1932 की घटनाओ के विकास को जेल की सलाखो के पीछे से देखा। अगस्त 1932 मे अंग्रेज सरकार द्वारा तथा कथित साप्रदायिक निर्णय की घोषणा के बाद महात्मा गाधी ने साप्रदायिक निर्वाचन-क्षेत्र के प्रश्न के विरोधस्वरूप उपवास किया। बम्बई मे हिंदू नेताओ की एक सभा हुई और अततोगत्वा पृथक निर्वाचन क्षेत्रो से दूर रहने के अनुबध पर सहमति जताई गयी। पूना समझौता होने पर महात्मा जी ने उपवास तोडा। इस तथ्य के बावजूद कि साप्रदायिक निर्वाचन क्षेत्रो का प्रश्न एक महत्वपूर्ण प्रश्न था, नेताजी भौचक्के रह गये कि भारतीय स्वाधीनता के महान और ज्वलत प्रश्न को गाधी जी के उपवास की भावुकतापूर्ण लहर द्वारा टाल और दबा दिया गया। उनका मत यह था कि अंग्रेज सरकार को पूना समझौते को मानना ही पडता लेकिन राष्ट्रीय स्वाधीनता के मुख्य मुद्दे को सफलतापूर्वक टालते हुए सरकार ने निश्चित रूप से काग्रेस

से काफी कुछ प्राप्त कर लिया। सविनय अवज्ञा और जन सत्याग्रहो ने अस्पृश्यता विरोधी अभियानो को रास्ता दिया और मदिर प्रवेश विधेयको पर बहसे शुरू करा दीं। इन प्रतिकाष्ठाओ ने सुभाष चद्र बोस और क्रातिकारी तत्वो के मन मे भारी असतोष जगाया।

जैसे ही बोस बधुओ का स्वास्थ्य तेजी के साथ गिरने लगा उन्हे जबलपुर सेट्रल जेल भेज दिया गया। वहा से नेताजी को दिखावे के तौर पर इलाज के लिए जगह-जगह भेजा जाता रहा। पहले उन्हे मद्रास, फिर भोवाली और अत मे लखनऊ स्थानातरित किया गया। लेकिन दशा बिगडती गयी। शरत बोस की प्रभावी अनुपस्थिति मे बिवावती ने सुभाष की ओर से दिल्ली में सरकार से बातचीत शुरू की। उन्हे लगा कि सरकार का रवैया अत्यत निर्मम और कठोर है। अतत सरकार ने नेताजी को उपचार हेतु यूरोप जाने की अनुमति दे दी और यह स्पष्ट था कि उन्हे किसी भी कीमत पर भारत की धरती पर मुक्त नहीं किया जायेगा। जाने से पहले उन्हे कुछ समय के लिए जबलपुर जेल लाया गया, जहा उनके भाई बदी थे। सुभाष चद्र बोस फरवरी, 1933 के मध्य मे दूसरे बलात् निर्वासन के रूप मे इटली के एस० एस० गैंज जहाज द्वारा यूरोप गये। यह यात्रा उनके राजनीतिक के एक नये अध्याय की घोषणा सिद्ध हुई। इस खड के अत मे समुद्र से उनके द्वारा बगालवासियो को भेजा गया विदाई सदेश शामिल है।

मार्च, 1933 से आरभ होने वाले उनके यूरोप प्रवास से सबधित सामग्री को अब व्यवस्थित और सपादित किया जा रहा है, इसे सपूर्ण वाङ्मय के सातवे खड के रूप मे प्रकाशित किया जायेगा।

पाठक, कृपया इस बात की प्रशसा करेगे कि नेताजी रिसर्च ब्यूरो भारी बाधाओ के बावजूद इस योजना को आगे बढा रहा है। आठ वर्ष पहले जब यह योजना बनाकर सरकार को भेजी गयी थी, तब से अब तक इस प्रकार के स्तरीय प्रकाशन के उत्पादन लागत मूल अनुमानित लागत की तुलना मे तिगुनी हो गयी है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस बात का यथास्थान ध्यान रखा जायेगा। हमारे नियत्रण से बाहर परिस्थितियो के कारण प्रेस का काम दु खद रूप से धीरे-धीरे चला।

सातवे खड के साथ हम अतर्राष्ट्रीय स्तर पर नेताजी की सक्रियता से परिचय प्राप्त करेगे। अतएव, यह आवश्यक और उचित लगता है कि हम भारत से बाहर के ऐसे विद्वानो की सहायता और मार्गदर्शन प्राप्त करे जो यूरोप के साथ-साथ एशिया मे नेताजी से सबधित गहन शोध कार्य कर चुके हैं।

श्री हरि गागुली ने इस खड का ध्यानपूर्वक प्रूफ सशोधन किया और सूची तैयार की। कार्तिक चक्रवर्ती ने पाण्डुलिपि को व्यवस्थित किया और नाग सुदरम ने पुरातत्व सबधी सामग्री को खोजने मे सतत् सहयोग किया। इस आत्मीयतापूर्ण सहयोग हेतु हम इन मित्रो के आभारी है।

नेताजी रिसर्च ब्यूरो
नेताजी भवन,
38/2, लाला लाजपतराय मार्ग,
कलकत्ता- 20
भारत
23 जनवरी, 1987

शिशिर के० बोस
सुगता बोस

विषय-सूची

पृष्ठ स०

बंगाल की सार्वभौमिकता और समाजवाद का सदेश

रंगपुर राजनीतिक अधिवेशन मे दिया गया अध्यक्षीय अभिभाषण, 30 मार्च, 1929

बगाल के पास विश्व को देने के लिये अपना एक सदेश है। इस सदेश मे जीवन की कुल "जमापूजी'' और बगाल का समग्र इतिहास निहित है। इस सदेश को सुनाने के जैसे प्रयत्न उसने अतीत मे किए थे, उसके ये प्रयत्न आज भी जारी हैं। यह सदेश बगाल के चरित्र मे रचा-बसा है। बगाल ने विविधता, समन्वय और भ्रातृत्व को सदा अपने दिल मे जगह दी है। बगाल का सहज स्वभाव सदा से ही स्थैतिक नहीं बल्कि गतिशील रहा है। उसे सही मायनो मे क्रातिकारी कहा जा सकता है। वैदिक युग से लेकर वर्तमान समय तक ऐसे अनेक दृष्टात मिल जायेंगे जिनमे यह उजागर होता है कि वह सदा से गतिमयता और आत्मसातीकरण का पक्षधर रहा है।

सत्य मात्र ही हमारा आदर्श है और इसीलिये बाह्य सस्कृति, सभ्यता साहित्य एव धर्म के प्रवेश के बावजूद बगाल हर समय अपनी निजता को सुरक्षित रखते हुए नवागतुको के सत्य को आत्मसात करता रहा है। इस सम्यक् "क्राति'' के परिणामस्वरूप बगाल मे वैष्णववाद फला फूला। आज भी इस दिशा मे प्रयत्न जारी है। लेकिन सफलता प्राप्त करने के लिये हमे सपूर्ण जाति-व्यवस्था को समूल नष्ट करना होगा। या हमे सभी जातियो को शूद्र अथवा ब्राह्मण--एक जाति मे बदलना होगा। अब यह बात तय हो जानी चाहिये कि हमे इनमे से किन तरीको को अपनाना है।

बगाल ने धर्म की तरह साहित्य मे भी अपने-आपको विभिन्न रूपो मे अभिव्यक्त किया है। उसके विद्यापति और चडीदास, मुकदराम और शरतचद काशीराम, क्रित्तिबास और रामप्रसाद चितन एव सस्कृति के क्षेत्र मे उसकी नई खोजो के चिरस्थाई उदाहरणो के रूप मे मौजूद है। बगाल ने उसके साहित्य के लिये मुसलमानो के योगदान को भुलाया नहीं है और इसीलिये यहा दोनो समुदायो के बीच अटूट एकता पाई जाती है जो अतीत मे अनेक तूफानो का सामना कर चुकी है। सक्षेप मे, आज बगाल जैसा है, वह जाति एव पथ से परे सार्वभौमिकतावाद की सतान है।

लेकिन एक समय विशेष मे जो यह वातावरण बना था उसे तब गहरा आघात पहुचा जबकि बगाल पाश्चात्य सभ्यता के सपर्क मे आया। अपनी चारित्रिक विशेषताओ के मुताबिक बगाल राजा राममोहन राय द्वारा शुरू किये गये नये आदोलन मे योगदान करने के लिये जाग उठा। जब उन्नीसवीं शताब्दी के अतिम वर्षों मे रामकृष्ण परमहस और स्वामी विवेकानद का आगमन हुआ तो राजा राममोहन राय के अधूरे कार्यो को पूर्ण करने की आशा जागृत हुई। उसके साहित्य दर्शन एव जीवन के अन्य क्षेत्रो मे धार्मिक पुनर्जागरण का प्रतिबिंबन हुआ तथा हिंदू-मुसलमान दोनों इस भ्रातृत्व के सिद्धात को प्रचारित करने के लिए एकजुट हो गए।

यह स्वामी विवेकानद थे जिन्होने बगाल के इतिहास को एक नया मोड दिया। जैसा कि उन्होने बार-बार कहा है, मनुष्य का निर्माण करना ही उनके जीवन का ध्येय है। मनुष्य-निर्माण के कार्य मे स्वामी विवेकानद ने अपने ध्यान को किसी मत विशेष तक सीमित नहीं रखा बल्कि समूचे समाज को गले लगाया। उनके आग्नेय शब्दो की अनुगूजन आज भी बगाल के घर-घर मे सुनाई देती है–"कारखानो, झोपडियो और बाजारो से एक नये भारत का उदय होगा।''

यह समाजवाद कार्लमार्क्स की पुस्तको से लिया हुआ नहीं है। इसकी जडे भारत की विचार परपरा एव सस्कृति मे है। स्वामी विवेकानद द्वारा प्रतिपादित जनतत्र के सिद्वात को देशबधु दास की कृतियों और उपलब्धियो मे सपूर्ण अभिव्यक्ति मिली जिन्होने कहा था कि नारायण उनके भीतर निवास करता है जो जमीन जोतते हैं अपनी भौंहो के पसीने से हमारा भोजन तैयार करते है और वे जो अभावो की चक्की मे पिस रहे हैं हमारी सस्कृति, सभ्यता और धर्म की मशाले उनके कारण ही जल रही हैं।

राष्ट्र निर्माण की दिशा मे पहला कदम सच्चे मनुष्य को गढना है तथा दूसरा कदम है सगठन। विवेकानद एव अन्य मनीषियो ने मनुष्य-निर्माण के प्रयास किये, जबकि देशबधु राजनीतिक सगठन बनाने के प्रयास करते रहे और उन्होने एक ऐसा सगठन बनाया जिसकी अग्रेजो तक ने सराहना की।

आजकल भारत मे समाजवाद के नये विचार पश्चिम से आ रहे है, बहुत लोगो को ये काति की ओर उन्मुख भी कर रहे है लेकिन समाजवाद का विचार इस देश मे कोई नयी चीज नहीं है। हम इसे जस का तस इसलिए स्वीकार कर लेते हैं क्योकि हम अपने इतिहास के धागे को खो बैठे है। किसी भी विचारधारा को त्रुटिरहित और निरपेक्ष सत्य मान लेना एक भूल होगी। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कार्लमार्क्स के प्रमुख अनुयायी रूसवासियो ने उसके विचारो का अधानुकरण नहीं किया। उसके सिद्धातो को अमली रूप देते हुए उन्हे दिक्कत पेश आई तो उन्होने एक नयी आर्थिक नीति को अपनाया जिसमे निजी सपत्ति के अधिकार और व्यापारिक फैक्ट्रियो के स्वामित्व को बरकरार रखा। अतएव हमें अपने समाज और राजनीति को अपने आदर्शो के अनुसार और अपनी जरूरतो के अनुसार करना होगा। हर भारतीय का यह ध्येय होना चाहिए।

हम अपने राजनीतिक सघर्ष की तीसरी मजिल पर आ पहुचे है। स्वदेशी का दौर पहली मजिल थी क्रातिकारियो का दौर दूसरी मजिल थी और असहयोग व समाजवाद तीसरी मजिल है। कुछ लोग यह सोच सकते है कि स्वराज की लडाई के हमारे प्रयास व्यर्थ साबित हुए। लेकिन कोई भी कारगर कोशिश नाकाम नहीं हुआ करती। पिछले पच्चीस वर्षो के आदोलन के परिणामस्वरूप हमने आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को पुन प्राप्त कर लिया है। धीरे-धीरे देश सगठित हो रहा है और धरती पर कोई ताकत नहीं है जो हमे अपने जन्मसिद्ध अधिकार से वचित कर सके। समस्या सिर्फ यह है कि हम कितने जल्दी इसे हासिल कर सकते है।

एक सहानुभूतिपूर्ण हडताल के लिए बहस

जमशेदपुर के टिन प्लेट मजदूरो की हडताल पर वक्तव्य,
6 जुलाई, 1929

बम्बई मे अनेक मित्रो ने मुझसे यह जानना चाहा कि मैने टिन प्लेट कम्पनी मे हडताल का समझौता न करने के लिए टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी को क्यो जिम्मेदार ठहराया और क्यो मैने टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी मे सहानुभूतिपूर्ण हडताल की तरफदारी की? मेरी

दलीलें बहुत साफ है। जहा तक मेरी जानकारी है टाटा के पास टिन प्लेट कम्पनी के एक-तिहाई शेयर हैं। इसके अलावा बोर्ड मे टाटा के दो डायरेक्टर हैं जो वहा उपस्थिति आसानी से जता सकते हैं। टिन प्लेट कम्पनी अपने अस्तित्व के लिए टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी पर निर्भर करती है और बाद की कपनी पूर्वोक्त कपनी पर हडताल का निबटारा करने के लिये आसानी के साथ पर्याप्त दबाव डाल सकती है। टिन प्लेट कपनी ने टाटा से पट्ट पर जमीन ली है। टाटा टिन प्लेट कपनी को बिजली और फिल्टर किये हुये पानी की आपूर्ति करते है। टिन प्लेट कपनी के बिजली विभाग की मरम्मत टाटा आयरन एण्ड स्टील कपनी द्वारा ही की गई है।

"आगे मुझे बताया गया है कि टाटा ने टिन प्लेट कपनी को आदमियो से परोक्ष मदद की है जो पहले टाटा के यहा नौकरी करते थे। इन तमाम कारणो से टिन प्लेट कपनी पर हडताल को सुलझाने के लिये टाटा के लिए दो मिनट की बात थी और टाटा को राजी करने के सिलसिले मे एक सहानुभूतिपूर्ण हडताल की घोषणा करना जरूरी कहा जा सकता है। टाटा के कर्मचारी जो कि सतुष्ट नहीं है, इस तथ्य की रोशनी मे ऐसा प्रस्ताव रख देना कोई मुश्किल बात नहीं है। मि मानिक होमी ने जो आशाए जगाई वे पूरी नहीं हुई और जो वचन दिये उनका पालन नहीं किया गया। उनका उत्साह एक बहुत उच्च बिंदु तक पहुच गया लेकिन जब उन्हे और उनकी लेबर फेडरेशन को मान्यता मिल गई तो अचानक ही उन्होने अपनी मागें वापस ले ली। हालांकि मि होमी प्रबधतत्र से जोडकर अपनी पहचान बनाते है लेकिन लोग अब भी उत्तेजना की उसी हालत मे है और अब भी मि होमी से उनके द्वारा दिये गये वचनो को पूरा करने की अपेक्षा रखते हैं। लोगो की सहानुभूति प्राप्त करने के लिये उन्हे सिर्फ उनकी अधूरी आशाओं की याद दिलाना होगा। एक सहानुभूति पूर्ण हडताल हमारा सर्वोत्तम सहारा है। यदि टाटा ने टिन प्लेट हडताल को सुलझाने की दिशा में सर्वोत्तम प्रयास नहीं किये तो इस बाबत हमे कदम उठाने होंगे भले ही चाहे कितना कष्ट उठाना पडे।"—"फ्री प्रेस"

विनाशकारी श्रमनीति

श्रमनीति पर वक्तव्य, जमशेदपुर 7 जुलाई, 1929

मै टाटा आयरन एण्ड स्टील वर्क्स की स्थिति के बारे मे बयान देने से सोद्देश्य बचाव करता रहा हू। ऐसा न हो कि मेरे बयान देने से चीजे और उलझ जाए। लेकिन आज ऐसा करने के लिए मुझ पर दबाव डाला गया है। अतएव मै स्वय के लिये तथा टाटा आयरन एण्ड स्टील वर्क्स मे दिलचस्पी रखने वालो के लिए स्थिति को स्पष्ट करना स्वीकार करता हू। वर्तमान स्थिति को स्पष्ट करने के सिलसिले मे सितबर 1928 तक की घटनाओ का संक्षिप्त इतिहास बताना जरूरी होगा, जबकि यह हडताल खत्म हुई थी। इससे यह बात साफ होगी कि कपनी और प्रबधतत्र मे मजदूरो को लेकर एक सतत नीति को नहीं अपनाया था। इसके परिणामस्वरूप उद्योग

को भारी क्षति उठानी पड़ी। जब सितंबर 1928 मे समझौते के लिये बातचीत शुरू हुई तो मैंने यह पाया कि प्रबधतत्र और निदेशकगण दोनों ही मि मानिक होमी के लिए कुछ भी न करने का निश्चय किये हुए थे और उन्होने अपने इस निश्चय को बरकरार करने के लिये अनेक आधार तैयार कर लिए थे। समझौते की शर्तें मि होमी सहित दोनो पक्षो को स्वीकार्य थीं लेकिन मि होमी की यह शर्त थी कि वे किसी समझौते को अतिम रूप से तब तक स्वीकार नहीं करेगे जब तक कि उन्हे अपने नवगठित मजदूर सघ सहित कपनी द्वारा मान्यता प्राप्त न हो जाए। मै मि होमी के इस रवैये से सहमत नहीं था। प्रथमत क्योंकि वे हडताल के समझौते के बीच निजी मामले को ला रहे थे और दूसरे, क्योंकि एक ही जगह और मजदूरो के एक ही निकाय के बीच मे दो यूनियनो का होना मजदूर सघ के उसूलो के विरुद्ध है। मैने मि होमी से निवेदन किया कि वे निजी सवाल को लेकर समझौते के मार्ग मे आडे न आये। मैने उनसे कहा कि वे कम्पनी द्वारा मान्यता प्राप्त मजदूर सघ पर आसानी के साथ काबिज हो सकते है और यदि वे चाहे तो उसके एक पदाधिकारी भी हो सकते हैं। तब कपनी उन्हे मान्यता देने से किसी तरह इकार नहीं कर सकती और जबकि फिलहाल वह आसानी से कह देगी कि उनकी कोई अधिकारिता नहीं है।

आगे मैंने उन्हे मान्यता प्राप्त करने के सिलसिले मे अपने तथा मजदूर सघ के पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया बशर्ते कि वे सही नीतियो पर चलते रहे। मि होमी ने तब भी दुराग्रह नहीं छोडा। उन्होने महाप्रबधक के साथ हुए समझौते की शर्तो की स्वीकृति को बाधित करने की जीतोड कोशिश की। फिर उन्होने मजदूर सघ मेरे उस समुदाय के जिससे मेरे सबध है तथा प्रबधतत्र के विरुद्ध एक अत्यत विषाक्त और द्वेषपूर्ण अभियान छेडा। सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि लेबर फेडरेशन के सदस्यो ने गलियो मे रात मे और दिन-दहाडे लेबर एसोसिएशन के सदस्यो पर हमले करना शुरू कर दिये। एक अवसर पर उन्होने दिन-दहाडे लेबर एसोसिएशन के दफ्तर पर छापा मार दिया एसोसिएशन की सपत्ति लूट ली गई और कर्मचारियो से मारपीट की गई।

भारी उत्तेजना के बावजूद हमने शात रहने का निर्णय लिया और हमारे सघ के सदस्यो की तकलीफो को असहाय होकर देखने के अलावा हमारे सामने कोई चारा नहीं था। हम लबे समय तक इस भयानक उत्पीडन के शिकार हुए और हमारे लोग अपने जीवन का जोखिम उठाकर शातिपूर्ण प्रचार के साधनो द्वारा एक बेईमान दुश्मन के खिलाफ लडते रहे। जब हम प्राय सफल हो गये और लेबर फेडरेशन के विघटन के कगार पर पहुच गई तब कपनी ने अचानक मि होमी और उनकी लेबर फेडरेशन को मान्यता दे दी और इसके द्वारा लेबर फेडरेशन को पुनर्जीवित करने मे मदद की। फेडरेशन को मान्यता प्रदान करते हुए कम्पनी ने मजदूर सघ के सिद्धातो के विरुद्ध आचरण किया जो एक जगह तथा मजदूरो के एक निकाय के बीच एक से ज्यादा यूनियन की इजाजत नहीं देते। फिर भी कम्पनी का मकसद सभवत "फूट डालो और राज करो" था।

मान्यता उस समय दी गयी जब मि होमी की फेडरेशन विघटन के कगार पर थी। उन्होने सिर्फ यह जताने के लिए कि मजदूरो पर उनका नियत्रण है, हडताल कराने की अनेक कोशिशे कीं। ये तमाम कोशिशे बुरी तरह नाकाम हुई। लेबर एसोसिएशन को खत्म करने के लिए उसके दफ्तर पर दिन-दहाडे छापा मारना लेबर फेडरेशन के समर्थको का आखिरी खेल था। हालाकि लेबर एसोसिएशन को स्थानीय सरकार और पुलिस अधिकारियो की ओर से अपर्याप्त सहायता मिल

रही थी, जबकि वह भीषण सकट के दौरे मे थी और आज भी वह दृढता के माथ लड रही है। मैने जनवरी मे सब लोगो से यह कह दिया था कि कुछ ही महीनो मे जमशेदपुर मे सब कुछ सामान्य हो जायेगा।

मि होमी को सबसे पहले टिन प्लेट कम्पनी से मान्यता मिली। कम्पनी का यह विचार था ऐसा करके वह मजदूरो को सतुष्ट करेगी और इससे उत्पादन मे वृद्धि होगी। टाटा ने भी वैसा ही किया। लेकिन मि होमी ने मजदूरो की हालत मे सुधार के बजाय मान्यता प्राप्त करने मे अधिक दिलचस्पी दिखाई। वे लेबर ऐसोसिएशन को नीचा दिखाने और यह जताने के लिए कि समझौते की शर्तो से मजदूर सतुष्ट नहीं है, टाटा के मजदूरो के बीच फिजूल की मागे उठा रहे हैं। लेकिन जैसे ही उन्हे टिन प्लेट कम्पनी से मान्यता मिली वैस ही उन्होने मजदूरो की तर्कसम्मत और अत्यत शालीन मागो को भुला दिया और खुलकर प्रबधतत्र से हाथ मिला लिया। इसका नतीजा यह हुआ कि यूनियन के भूतपूर्व अध्यक्ष के रूप मे मि होमी का कोई असर बाकी नही रहा है।

जब टाटा ने मि होमी और लेबर फेडरेशन को मान्यता प्रदान की तब सभवत उन्होने यह सोचा था कि वह अकेले मजदूरो पर नियत्रण कर लेगे और लेबर फेडरेशन को मान्यता देने से उत्पादन भी बढेगा। लेकिन जल्दी ही टाटा ने यह समझ लिया कि मि होमी अपने लिए मान्यता प्राप्त करने की लालायित है और वे कर्मचारियो मे भारी उम्मीदे जगाकर मात्र अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये उन्हे उकसा रहे है। कपनी इस बात को ठीक तरह से समझ नहीं पाई कि मि होमी अपनी मागो को लेकर तुरत ही इतने उदार हो गये। जिन मजदूरो की उत्तेजना को उन्होने इतना अधिक बढा दिया था वे अब शात नहीं होगे और वे दबाव डालेगे कि मि होमी अपने किए गये वायदो को पूरा करे और यहा तक कि वे उन्हे कुर्सी से उतार देगे जैसा कि टिन प्लेट मजदूरो ने किया था।

जनवरी 1929 के अत तक मेरे ऊपर मजदूरो को नियत्रित करने की कुछ जिम्मेदारी थी। लेकिन जब से यह जिम्मेदारी मि होमी के पास चली गई जिनकी प्रबधतत्र से अब अच्छी साठ-गाठ है। उत्पादन के आकडे हमे बताते है कि 13 सितबर 1928 को हडताल के समझौते के बाद से अब तक क्या प्रगति हुई है। परिष्कृत इस्पात का उत्पादन अक्टूबर 1928 मे 35400, नवबर मे 34700, दिसबर मे 32500, जनवरी 1929 में 39000, फरवरी मे 31300, मार्च मे 33000, अप्रैल मे 31900, मई मे 33400 और जून में 31000 टन के आसपास था। अतएव यह स्पष्ट है कि अक्टूबर 1928 के उत्पादन के आकडे मि होमी के तमाम प्रभाव के बावजूद फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई और जून के आकडो को नहीं छू पाए। दूसरी ओर लेबर फेडरेशन की ओर से हमारे विरुद्ध भारी दुष्प्रचार तथा स्थानीय अधिकारियो के अपर्याप्त समर्थन के बावजूद जनवरी मे उत्पादन 39000 टन तक पहुच गया जबकि मि होमी बार-बार हडताल घोषित करने की कोशिशे करते रहे। यदि यह बात ध्यान मे रखी जाए तो तुलनात्मक अध्ययन मे काफी मदद मिलेगी कि फरवरी से लेबर एसोसिएशन ने मि होमी और उनकी फेडरेशन के मार्ग मे कोई बाधा नहीं पहुचाई और सारा क्षेत्र उनके लिए खुला छोड दिया गया।

मै जल्दी ही टाटा आयरन एण्ड स्टील कपनी की आतरिक स्थिति पर एक दूसरा बयान जारी करूगा जो कि उद्योग को तबाही से बचाने के लिए इसके अशधारियो से एक अपील होगी।

विधायिकाओं से निवृत्ति का प्रश्न

एसोसिएटेड प्रेस के प्रतिनिधियो को दिया गया बयान, 11 जुलाई, 1929

जैसोर से लौटने के बाद मैंने पाया कि विधायिकाओ से निवृत्ति के प्रश्न पर मेरे भाषण को कलकत्ता के कुछ अखबारो ने गलत ढग से पेश किया है।

जैसोर अधिवेशन के समक्ष प्रस्ताव था कि 31, दिसबर, 1929 तक विधायिकाओ से अलग नहीं हुआ जायेगा। जैसे कि मै सभा की अध्यक्षता कर रहा था, इस प्रश्न पर अपने विचार रख कर मैं प्रतिनिधियो के निर्णय को प्रभावित नहीं करना चाहता था लेकिन जैसे ही बहस आगे बढी, मैने पाया कि असगत मुद्दे उठाए जाने लगे और बहस अतत परिषद-प्रवेश का आगा-पीछा विचार करने की ओर मुड गई। अतएव मैने इस मुद्दे को स्पष्ट करने के लिए इस विषय को मतदान हेतु रखने से पहले अपनी बात कहने का निर्णय लिया।

मैने बहुत आरभ मे ही यह कहा था कि सदन के दोनो पक्ष इस बात पर पूर्णत सहमत थे कि मात्र विधायिकाओ की गतिविधियो के जरिए हमे स्वराज की प्राप्ति नहीं हो सकती। इस बात पर पूर्ण मतैक्य था कि देश मे व्यापक स्तर पर काम किये बिना कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आ सकते। आज की परिस्थितियो मे विधायिकाओ से अलग रहने का मुद्दा हमारे उद्देश्य प्राप्ति मे सीधे-सीधे सहायक होगा। बगाल विधान परिषद् की सरचना को देखते हुए मैं यह कहने का साहस नहीं कर सकता कि अपने आपको अलग करने मे हमे कोई सहायता मिलेगी। परिषद् मे काग्रेस के चद पूर्णकालिक कार्यकर्ता हैं लेकिन वे अपनी ऊर्जा का बहुत थोडा-सा हिस्सा परिषद् के कार्य मे खर्च करते है और चाहे वे परिषद् से बाहर हो या न हो, वे हर स्थिति मे परिषद् से बाहर काग्रेस के कार्यक्रम को आगे बढायेगे। बहुसख्यक पार्षद, जो कि पूर्णकालिक कार्यकर्ता नहीं है परिषदेतर कार्यो मे ठोस सहायता कर सकते है, यदि वे ऐसी सदिच्छा रखते है। लेकिन 1916 के बहिर्गमन और 1928 की निवृत्ति के हमारे अनुभवो को देखते हुए मुझे बहुत क्षीण आशा है कि वे ऐसा कर पायेगे।

दूसरी ओर परिषदो से अपने-आपको बाहर रखकर हम गतिविधि का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र व्यावहारिक रूप से शत्रु के हाथ मे सौप देगे जिसे हमने एक लम्बे सघर्ष के बाद हथियाया है। हमारे बाहर रहने का साफ मतलब यह है कि हम ऐसे समय मे विधायिकाओ से विपक्ष का खात्मा कर रहे है जबकि उसकी बहुत जरूरत है। अन्य महत्वपूर्ण प्रातीय समस्याओ के साथ-साथ मत्रीमडल का गठन और साइमन कमीशन जैसी कई अहम समस्याए आज हमारे सामने हैं। हमने इन बड़े मुद्दो पर चुनाव लडा और जीता। हमने चुनाव अभियान मे पडित मोतीलाल नेहरू से प्रोत्साहन और प्रेरणा प्राप्त की। कलकत्ता काग्रेस मे अगीकार किया गया आदर्श और कार्यक्रम आज भी बदला नहीं है, लाहौर काग्रेस की प्रतीक्षा किये बिना परिषद-कार्यक्रम मे कोई क्रातिकारी परिवर्तन करने से पहले लोगो को ध्यानपूर्वक सोच-विचार करना होगा।

ये सब बाते कहते हुए मैने यह भी सपष्ट कर दिया था कि मेरे मन मे विधायिकाओ का लेशमात्र भी मोह नहीं है। यदि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी विधायिकाओ से निवृत्ति की घोषणा करती है तो मैं आज भी त्यागपत्र देने के लिए तैयार हू यदि इससे महात्मा गाधी और पडित नेहरू

को सतुष्टि होती है। मै परिषद् के अन्य पूर्णकालिक कार्यकर्ताओ को लेकर भी कह सकता हू। ऐसा इसलिए कि मेरे मन मे विधायिकाओ का कोई मोह नहीं है, जैसा कि मै महसूस करता हू। मैंने चीजो पर ठडे दिमाग से विचार किया है, मै इस प्रकरण को यथासभव निष्पक्ष रूप मे सदन के समक्ष पेश करूगा। जहा तक मैं समझ सका हू, समूचे प्रात की राय वर्ष के अत से पहले निवृत्ति या त्यागपत्र के विरुद्ध है। हम जल्दी ही प्रातीय काग्रेस समिति की एक बैठक बुलायेगे और इलाहाबाद प्रस्थान करने से पूर्व सदन की राय लेगे।

व्यक्ति, राष्ट्र और आदर्श

चिनसुरा मे हुगली जिला छात्र अधिवेशन मे भाषण, रविवार 22 जुलाई, 1929

स्वागत समिति के सभापति जी एव विद्यार्थियो

आप बेहतर जानते है कि आज के इस छात्र अधिवेशन मे आपने मुझे क्यो बुलाया है। लेकिन जहा तक मेरी बात है, आज की इस सभा मे उपस्थित होने की अभिरुचि और हिम्मत का कारण यह है कि मैं आज भी स्वय को आपकी तरह एक विद्यार्थी महसूस करता हू। मैने "जीवन के वेदो को ध्यानपूर्वक पढा है और इस समय मैं जीवन-अनुभवो के भीषण थपेडो के माध्यम से प्राप्त होने वाले ज्ञान को एकत्र करने मे जुटा हुआ हू।

हर राष्ट्र या व्यक्ति का अपना एक विशेष विश्वास या आदर्श होता है। वह उस आदर्श के अनुरूप अपने जीवन को ढालता है। इस आदर्श को यथासम्भव साकार करना जीवन का एक मात्र ध्येय बन जाता है। इस आदर्श के अभाव मे उसका जीवन अर्थहीन और अनावश्यक हो जाता है। जिस तरह इस ध्येय की प्राप्ति के लिए एक व्यक्ति की कोशिशे लम्बे समय तक जारी रहती है, ठीक उसी तरह एक राष्ट्र पीढी-दर-पीढी ये कोशिशे करता रहता है। इसीलिए बुद्धिमान लोगो का कहना है कि एक आदर्श जीवनरहित और गतिहीन नहीं होता। इसमे गति प्रवाह और जीवनदायिनी शक्ति निहित होती है।

हम उस आदर्श की एक झलक को देखने मे हमेशा सफल नहीं हो पाते जो पिछले एक हजार वर्ष से हमारे समाज मे व्यक्त होने का प्रयत्न कर रहा है। लेकिन जो विचारवान और वास्तविक अतर्दृष्टि से लैस है, वह तमाम दृश्यमान स्थितियो के पीछे इस आदर्श के एक सामान्य सूत्र का जरूर पता लगा सकता है। यह सूत्र फालगू नदी के तीव्र अतवर्ती प्रवाह की भाति है। और यह आदर्श ही है जो युग के विचार को जन्म देता है। जब एक व्यक्ति आदर्श का पूर्ण बोध प्राप्त कर लेता है, तब वह अपनी मजिल और अपने मार्गदर्शक को आसानी से तलाश कर लेता है। लेकिन क्योकि यह बोध हमे हमेशा नहीं हो पाता तो हम गलत आदर्शो के पीछे दौडने लगते है और झूठे मसीहाओ का अनुसरण करने लगते है। विद्यार्थियो, यदि वास्तव मे तुम किसी लक्ष्य के लिए अपने

जीवन को ढालना चाहते हो तो तुम हर प्रकार के झूठे मार्गदर्शको और भ्रष्ट आदर्शों के प्रभाव से बचो और जीवन के आदर्श का चुनाव तुम स्वय करो।

जिस आदर्श ने पद्रह वर्ष पहले बगाल के विद्यार्थी समुदाय के मन मे उत्साह जगाया, वह स्वामी विवेकानद का आदर्श था। इस गौरवशाली आदर्श के जुदाई प्रभाव के वशीभूत बगाल का युवा वर्ग स्वार्थपरता और क्षुद्रता से रहित एक शुद्ध और आध्यात्मिक जीवन को प्राप्त करने के निश्चय से भर गया। समाज और राष्ट्र के निर्माण के मूल मे निजता का प्रकटन होता है। इसीलिए स्वामी विवेकानद यह कहते हुए थके नहीं कि "मनुष्य-निर्माण'' ही उनका मिशन है।

विवेकानद से पूर्व हमारे देश मे जब एक नये युग का सूत्रपात हुआ तब राजा रामा मोहन राय हमारे मार्गदर्शक थे। राम मोहन के युग से स्वाधीनता के आकाक्षा भारत मे विभिन्न आदोलनो के माध्यम से व्यक्त होती रही है। जब उन्नीसवीं शताब्दी के अतिम दशक तथा बीसवीं शताब्दी के पहले दशक मे स्वामी विवेकानद के इन विचारो–"स्वतत्रता, स्वतत्रता आत्मा का गीत है''–ने स्वदेशी के हृदय के बद दरवाजो को तोड दिया और एक अबाध शक्ति का रूप धारण कर लिया, सारा देश इन विचारो से ओतप्रोत हो गया और लगभग पागल-सा हो गया।

यह स्वामी विवेकानद ही थे जिन्होने एक ओर अनुयायियो को सभी प्रकार के बधन तोडने और सच्चे अर्थो मे "मनुष्य'' बनने के लिए प्रेरित किया तथा दूसरी ओर सभी धर्मो एव सप्रदायो मे अनिवार्य एकता पर बल देते हुए भारत मे सच्चे राष्ट्रवाद की नींव रखी। लेकिन विवेकानद के यहा स्वतत्रता की जो धारणा विद्यमान है, वह उनके समय की राजनीति मे देखने को नहीं मिलती। सबसे पहले हमने अरविद के मुख से स्वतत्रता का सदेश सुना। और जब अरविद ने अपने "बदे मातरम्'' के स्तभो मे लिखा–"हम ब्रिटिश नियत्रण से मुक्त पूर्ण स्वायत्तता चाहते है''–तब एक स्वतत्रता प्रेमी बगाली युवा ने महसूस किया कि उसे अपना मनचाहा व्यक्ति मिल गया है।

इस प्रकार पूर्ण स्वतत्रता की प्रेरणा प्राप्त करने पर बगाल के लोग आगे बढे, मार्ग मे आने वाली तमाम मुश्किलो को उन्होने आसान बना लिया। और जब हम 1921 तक आते है तो असहयोग के सदेश के साथ-साथ महात्मा गाधी की जबान से एक नई बात सुनते है–"व्यापक जन समुदाय के बिना स्वराज नहीं आ सकता, और जब तक हम उनमे स्वतत्रता की भूख नहीं जगाते है– देशबधु चितरजन के जीवन से यह प्रबल सदेश और अधिक स्पष्ट हो जाता है। लाहौर भाषण के दौरान उन्होने स्पष्ट रूप से यह घोषणा की थी कि जो स्वराज वह चाहते है, वह कुछ लोगो के लिए नहीं बल्कि सबके लिए, आम जनता के लिए है। उन्होने अखिल भारतीय मजदूर अधिवेशन मे अपने देशवासियो के समक्ष "आवास के लिए स्वराज'' का आदर्श रखा।

देशबधु के जीवन मे व्यवहृत हमने एक अन्य सदेश प्राप्त किया। वह यह है कि मनुष्य जीवन–राष्ट्रीय और साथ-साथ मे निजी–एक अपरिवर्तनीय सत्य का अश है। इसे दो या इससे ज्यादा जलरुद्ध खानो मे बाटना सभव नहीं है। जब एक मनुष्य का जीवन चैतन्य की अवस्था को प्राप्त करता है, तब हर ओर से हमे इस नवजागरण के पर्याप्त प्रमाण मिल जाते है और सर्वत्र एक नये जीवन का स्पदन सुनाई देता है। ससार–उसी प्रकार व्यक्ति का जीवन–विविधताओ से परिपूर्ण है। यदि हम इस विविधता को समाप्त कर दे तो जीवन की पूर्णता भी नहीं बच सकेगी।

ऐसा करके एक तरह से हम अपने-आपको मृत्यु या विनाश के समीप ले जायेंगे। इसीलिए हमे इसी विविधता के द्वारा, इसी अनेकता के द्वारा व्यक्ति और राष्ट्र के दोनो के व्यक्तित्व को उजागर करना है।

रामकृष्ण और विवेकानद ने आध्यात्मिक जगत मे 'एक'' और 'बहु' के बीच जो एकत्व स्थापित किया था, देशबधु ने इसे राष्ट्र के जीवन और राजनीतिक क्षेत्र मे अर्जित किया या कम से कम, अर्जित करने के प्रयत्न किये। थोडे शब्दो मे कहे तो वे 'सस्कृतियो के एक सघ' मे यकीन रखते थे। राजनीतिक अर्थो मे वे भारत के लिए एक केंद्रीकृत राज्य के बजाय एक सघीय राज्य के रूप में देखना पसद करते थे।

सर्वांगीण विकास और आत्म-परिपूर्णता ही आज के युग का आदर्श है जिसमे देशबधु दृढता के साथ विश्वास रखते थे। यदि हम इस साधना को पूर्णकाम बनाना चाहते है तो सबसे पहले हमें अपने मस्तिष्क मे स्वतत्रता का एक अखडित बिम्ब बनाना होगा। जब तक व्यक्ति को अपने आदर्श का पूर्णरूपेण बोध नहीं होगा, वह जीवन के समर मे कभी विजयी होने की आशा नहीं कर सकता। इसीलिए पूरे भारत से विशेष रूप से युवा वर्ग मे यह कहना जरूरी हो गया है कि जिस स्वतत्र भारत का हम स्वप्न देख रहे है उसमें हर व्यक्ति आजाद होगा–सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक सभी तरह की बेडियो से आजाद।

मै आज यहा विद्यार्थी समुदाय से यह बात कहने के लिए आया हू कि जिस युग मे आपने जन्म लिया है उसका "मूल विचार'' पूर्ण और सर्वांगीण स्वतत्रता प्राप्त करना है। हमारे लोग जीना और प्रगति करना चाहते है। वे एक स्वतत्र देश मे और एक उन्मुक्त वातावरण मे रहना चाहते हैं। हमारे स्वाधीनता के दावे का मतलब गलतिया करने का अधिकार प्राप्त करना है। इसलिए हमे एक भ्रममूलक दु स्वप्न से विचलित नहीं होना चाहिए जो कि हमे राजनीतिक मुक्ति दिला भी सकता है और नहीं भी। हमे अपने भीतर एक अटल विश्वास पैदा करना होगा और आगे बढकर अपने जन्मसिद्ध अधिकार को अनिच्छित हाथो से छीनना होगा।

हमारे देश मे तीन बडे समुदाय बिल्कुल सुप्त पडे हुए है। यह है–स्त्रिया तथाकथित दलित वर्ग और मजदूर अवाम। हमे उनके पास जाना होगा और कहना होगा आप भी मनुष्य है और मनुष्यो के पूरे अधिकार आप प्राप्त करेगे। इसलिए उठो जागो अपने निष्क्रियता के रवैये को बदलो और अपने विधिसम्मत अधिकारो को छीन लो।''

बगाल के विद्यार्थियो और युवाओ तुम सब पूर्ण स्वाधीनता के उपासक बनो। तुम भविष्य के भारत के उत्तराधिकारी हो। अत तुम्हारा यह दायित्व है कि तुम समूचे राष्ट्र के पुनर्जागरण और उन्नयन के कार्यभार को सम्भालो। बगाल के दूर-दराज के गावो और कोनो मे तुम हजारो की तादाद में जाओ और प्रत्येक व्यक्ति को समानता एव स्वतत्रता का जीवनद यक सदेश दो। मैने अभी-अभी स्वाधीनता की जो तस्वीर तुम्हारे सामने पेश की है उसे आगे बढाते हुए तुम्हें समूचे राष्ट्र के सामने ले जाना है। शुद्ध मन के साथ आगे बढो तुम्हारी विजय सुनिश्चित है। तुम्हारी "साधना'' सही परिणामो के रूप मे फलीभूत होगी भारत फिर स्वतत्र होगा और तुम्हारा जीवन गरिमा एव यश से मडित होगा।

– "वदे मातरम''

लिबर्टी के सम्पादक के नाम पत्र

रविवार 23 जुलाई, 1929

सम्पादक
''लिबर्टी''

आज के 'लिबर्टी'' मे बगाल विधान परिषद् के सदस्य की हैसियत से मेरे द्वारा भेजे गये कुछ प्रश्न छपे हैं। उनमे से एक प्रश्न को लेकर इस आशय का निष्कर्ष निकाला गया है कि मेरी इच्छा है कि राजनीतिक बंदियो के लिए एक पृथक कारागार की व्यवस्था होनी चाहिए। मेरे प्रश्न से ऐसा कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जाना चाहिए। प्रश्न को प्रकाशित करने के पीछे सीधे-सीधे मेरा उद्देश्य सरकार के इरादे से सबधित सूचना को प्रकाश मे लाना था।

कलकत्ता,
23-7-1929

आपका,
सुभाष चद्र बोस

कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में नामांकन

बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप मे जारी बयान
23 जुलाई, 1929

एक व्यक्ति विशेष को काग्रेस प्रत्याशी मनोनीत करने की बाबत बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी की कार्यवाही का औचित्य सिद्ध करते हुए मैने अब तक कोई बयान जारी नहीं किया है। लेकिन इस बारे मे काफी कुछ लिखा और कहा जा चुका है कि वीरभूमि से जे एल बनर्जी को काग्रेस का नामाकन क्यो नहीं मिला। इसलिए इतनी देर बाद भी इस प्रश्न पर बयान जारी करने हेतु मुझे बाध्य होना पड़ा।

श्री बनर्जी ने एक चतुर रणनीतिक की तरह यह प्रचारित करते हुए लोगो की सहानुभूति अर्जित करने की कोशिश की जब बगाल विधान परिषद् द्वारा बगाल काश्तकारी विधेयक पारित होने वाला था, तब उन्होने हर मौके पर काग्रेस के पक्ष मे मतदान नहीं किया था, इस कारण उन्होने काग्रेस का समर्थन खो दिया है। यह बात एकदम झूठ है। उनके मामले मे जिन कारणो

से हमने नामाकन को रोका था, उन कारणो को बगाल काश्तकारी विधेयक पर उनके मतदान से कोई लेना-देना नहीं है।

मै शुरू मे एक बात साफ कर दू कि जब 1926 मे श्री बनर्जी को नामाकन प्राप्त हुआ बडी कठिनाई के साथ वह ऐसा कर सके थे क्योकि पार्टी के अनेक प्रमुख सदस्यों द्वारा उनके नामाकन का कडा विरोध किया गया था। वे लोग जो श्री बनर्जी के पिछले इतिहास को पूरी तरह भूले नहीं है, उन्हे इस बात पर आश्चर्य नहीं होगा कि इस वर्ष या 1926 मे हमारी पार्टी के अनेक प्रमुख सदस्यो द्वारा उनके नामाकन का प्रतिवाद किया गया। यदि कोई प्रातीय काग्रेस कमेटी की कार्यवाही का औचित्य सिद्ध करना चाहता है तो उसे श्री बनर्जी की असख्य भूलो निरतर कलाबाजियो, देशबधु की नीति एव कार्यक्रम के सतत् विरोध और इन सबसे ऊपर 1923 मे जेल से रिहा होने से लेकर अब तक के इतिहास को जरूर ध्यान मे रखना होगा। 1923 की दिल्ली काग्रेस के विशेष सत्र मे देशबधु के परिषद् प्रवेश कार्यक्रम का उनके द्वारा विरोध और कराची मे स्वराजियो की नीति एव कार्यक्रम को ध्वस्त करते हुए उनका धुआधार भाषण अभी लोगो के मस्तिष्क मे ताजा बना होगा। श्री बनर्जी को उनके बुरे इतिहास के बावजूद सार्वजनिक कार्य को आगे बढाने हेतु एक वक्ता के रूप मे उनकी क्षमता का बेहतर इस्तेमाल करने के लिए 1926 मे एक आखिरी मौका दिया गया। इस सुअवसर का वे स्वय लाभ नहीं उठा सके। बगाल म काग्रेस काउसिल पार्टी के सदस्य जानते हैं कि उन्होने किस प्रकार काम किया और कैसा व्यवहार किया। उनके भाषणो ने कई बार पार्टी को अडचन मे डाल दिया। मत्रियो और कार्यकारी पार्षदो के साथ उनकी साजिशो को लेकर पार्टी को अक्सर समझौता करना पडा। 1928 मे साइमन कमीशन के आगमन के दौरान मद्रास काग्रेस के निर्णय का पालन करते हुए जब काग्रेस पार्टी परिषद से बाहर आ गई तब श्री बनर्जी हमारे निवेदन करने पर भी परिषद् मे बैठे और काग्रेस पार्टी की कार्यवाही का उपहास करते हुए एक भाषण दिया। वह पार्टी से निकाले ही जाने वाले थ कि उन्होने अपने आचरण के लिए क्षमा-याचना करते हुए अपने निष्कासन को टाल दिया। लेकिन दुर्भाग्य से इसके बाद श्री बनर्जी ने अपने आप मे कोई सुधार नहीं किया।

परिषद के बाहर मि बनर्जी की गतिविधिया जनता के विश्वास को प्रेरित नहीं कर सकी। नगरेतर सार्वजनिक जीवन से जुडे लोग इस सबध मे श्री बनर्जी के इतिहास से शायद परिचित न हो लेकिन मैं बेहिचक यह बात कह सकता हू कि श्री बनर्जी के नामाकन को सार्वजनिक हित मे नकारा गया है और यदि कोई पुराने इतिहास की रोशनी मे उनकी परख करे तो कोई समझदार व्यक्ति उनकी उम्मीदवारी का समर्थन नहीं कर सकता। हम बहुत शिद्दत के साथ यह महसूस करते है कि यदि श्री बनर्जी मत्रियो और सरकारी दलालो के साथ अपनी साजिशो को जारी रखना चाहते हैं तो उनके लिये ये बेहतर होगा कि वे काग्रेस के ठप्पे के सरक्षण मे नहीं बल्कि खुलकर ऐसा करे। वे हाल के चुनाव से अब तक के उनके पुराने इतिहास को ध्यान मे रखे फिर उनके काग्रेस नामाकन को अस्वीकार करने विषयक हमारी कार्यवाही के औचित्य पर विचार करें। मुझे कोई सदेह नहीं है कि वे जो आज भी श्री बनर्जी मे आस्था रखते हैं और यह विश्वास करते हैं कि हमने उन्हे मनोनीत न करते हुए कोई अन्याय किया है उनका मोहभग अ य होगा।

लोग बहुत जागरूक है इसलिये बगाल प्रातीय काग्रेस कमेटी ने वीरभूमि प्रत्याशी के रूप मे श्री अविनाश चद्र राय को मनोनीत किया था। फिर भी श्री बनर्जी और उनके मित्रो ने उन्हें अवकाश प्राप्त करने के लिए समझाया-बुझाया। उनका यह सोचना था कि ऐसा करके वे श्री बनर्जी को प्रातीय कमेटी मे मनोनीत करा लेगे। उपर्युक्त कारणों से प्रातीय काग्रेस कमेटी का यह विचार था कि उन जैसे छद्म-काग्रेसी को मनोनीत करके कमेटी सार्वजनिक कार्य को नुकसान पहुचायेगी। यह बात हमारी जानकारी मे आई कि बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी द्वारा श्री बनर्जी के मनोनयन को अस्वीकार करने के बावजूद वीरभूमि जिले मे यह प्रचारित किया गया कि वह ही काग्रेस के प्रत्याशी हैं। इस प्रचार को रोकने और बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के सही दृष्टिकोण को सामने लाने के उद्देश्य से कार्यकर्ताओ को कलकत्ता से वीरभूमि भेजा गया। मै वहा स्वय गया और मै अपनी जरूरी व्यस्तताओं के बावजूद स्वय को नहीं रोक सका। मैने उन्हे इस बात के लिए अधिकृत भी किया कि वे क्षेत्र मे दूसरे प्रत्याशी से सपर्क करे और यह पता लगाये कि क्या वह वाकई मे अपने चरित्र को नये सिरे से बदलने और एक पूर्ण काग्रेसी होने को तैयार हैं। जैसाकि यह सभव नहीं था अत वीरभूमि की जनता के समक्ष अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने के अलावा बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी की चुनाव में आगे कोई दिलचस्पी नहीं रही।

अपने द्वारा एकत्र सूचनाओ के आधार पर मै कह सकता हू कि कलकत्ता से भेजे गये कार्यकर्ताओ ने वीरभूमि की जनता और काग्रेस कार्यकर्ताओ से अपील की कि वे श्री बनर्जी की उम्मीदवारी का समर्थन न करे क्योकि उन्हे काग्रेस ने मनोनीत नहीं किया। जहा तक मेरी जानकारी है दूसरे प्रत्याशी की ओर से वोट मागने का कोई अभियान नहीं चलाया गया।

श्री बनर्जी ने बडे जोर-शोर के साथ यह दावा किया कि जिला काग्रेस कमेटी के निवेदन करने पर भी प्रातीय काग्रेस कमेटी ने उन्हे अधिकारिक प्रत्याशी के रूप मे स्वीकार न करके गलत काम किया है। सब लोगों मे श्री बनर्जी काग्रेस के सविधान और नियमो से भली-भाति परिचित है कि प्रत्याशियो के मनोनयन का अंतिम अधिकार प्रातीय काग्रेस कमेटी के पास ही है। लेकिन जिला काग्रेस कमेटी अपने सुझाव भेज सकती है, प्रा का, क इन्हे स्वीकार कर सकती है और निरस्त भी। इस मामले मे जिला काग्रेस कमेटी श्री बनर्जी के पक्ष मे अविनाश चद्र राय (काग्रेस प्रत्याशी) पर दबाव डालने को लेकर एकदम गलती पर थी। जबकि यह बात बहुत साफ थी कि बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी बडे सोच-विचार के बाद उनकी उम्मीदवारी को निरस्त कर चुकी थी। जिला काग्रेस कमेटी के पक्ष पर यह भी एक भूल थी कि उसने अपनी सीमाओ से बाहर जाकर श्री बनर्जी का समर्थन किया, जबकि उसे तटस्थता का आचरण करना चाहिए था।

आयातित टिन प्लेटों पर संरक्षण कर की वापसी

टिन प्लेट कारखाने मे हडताल के सम्बन्ध मे प्रेस को एक बयान,
3 अगस्त, 1929

गोलमुडी, जमशेदपुर की टिन प्लेट कम्पनी मे हड़ताल से उत्पन्न स्थिति लम्बे समय से जनता के सामने है। इस कम्पनी का वास्तविक मालिक बर्मा आयल कम्पनी है। हालाकि बर्मा आयल कम्पनी इस देश के सम्पन्नतम पूजीवादी प्रतिष्ठानो मे से एक है लेकिन इसके कर्मचारियो की हालत इससे सम्बद्ध टाटा प्रतिष्ठान के कर्मचारियो से कहीं बदतर है। पिछले वर्षो मे टाटा के कर्मचारियो ने जितना सुख भोग किया है उसकी तुलना मे बर्मा आयल कम्पनी के कर्मचारी बहुत थोडे दामो पर काम कर रहे है। कम्पनी भारी नुकसान के बावजूद हडताल को लम्बा खींचते हुए इसे तोडने की कोशिश मे है उसे आशा है कि बर्मा आयल कम्पनी के असीमित साधनो के कारण उसकी जीत होगी। टिन प्लेट कम्पनी इस तथ्य को बखूबी जानती है कि जो सरक्षण उन्हे मिला हुआ, इसके रहते हुए वह इस देश मे अपना व्यवसाय जारी रख सकती है। अतएव अब यह समय आ गया है कि यदि टिन प्लेट कम्पनी अपने वर्तमान अडियल रवैये को बदलने के लिए तैयार नहीं है तो विधायिका मे भारतीय जनता के प्रतिनिधिगण आयातित टिन प्लेटो पर से सरक्षण कर हटाने हेतु कदम उठाये। कोई कारण नहीं एक विदेशी कम्पनी जो भारतीय मजदूरो के प्रति इन निर्मम और सवेदनशून्य है सरक्षण के लाभ को उठाती रहे। अतएव मै विधायको से अपील करता हू कि वे आगामी सत्र मे सरकार से आयातित टिन प्लेटो पर से सरक्षण कर हटाने की माग करते हुए एक प्रस्ताव पारित करे। मुझे यह कहते हुए खुशी है कि मुझे अनेक मित्रो ने आश्वस्त किया है कि विधान परिषद के आगामी सत्र मे इस मामले को उठायेंगे।

राजनीतिक पीड़ित दिवस

बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप मे बयान,
4 अगस्त, 1929

अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पडित मोतीलाल नेहरू ने प्रातीय काग्रेस कमेटी से निवेदन किया है कि अखिल भारतीय राजनीतिक पीडित दिवस मनाया जाये और उ प्र काग्रेस कमेटी का अनुसरण करते हुए 4 अगस्त को इसे मनाया जा सकता है। उन्होने यह भी कहा कि यदि किसी प्रातीय काग्रेस कमेटी को 4 अगस्त की तारीख बहुत जल्दी लगती हो तो कोई बाद की तारीख रखी जा सकती है। मै समझता हू कि कोई बाद की तारीख निश्चित करना बेहतर होगा ताकि सभी प्रात इस उत्सव का आयोजन कर सके। 4 अगस्त को राजनीतिक पीडित दिवस मनाना बगाल के लिए सभव नहीं है इसलिए बगाल के लिए हमने रविवार 11 अगस्त की तारीख निश्चित की है। किसी वजह से कोई प्रातीय काग्रेस कमेटी 4 अगस्त को यह आयोजन न कर सके तो मैं उनसे अपील करूगा कि वे रविवार 11 अगस्त को राजनीतिक पीडित दिवस मनाये।

स्वतंत्रता की सही प्रकृति

राजशाही जिला छात्र अधिवेशन मे दिया गया भाषण

17 अगस्त, 1929

आपको सबोधित करते हुए मुझे अति हर्ष की अनुभूति हो रही है सबसे पहले क्योंकि मै महसूस करता हू कि हमारी समस्याओ का समाधान केवल युवाओ के द्वारा ही सभव है। और अपनी शक्ति की सीमाओ मे यह युवाओ का दायित्व है कि अपने युग की समस्याओ का पता लगाये और उनका हल निकाले। मेरी दृष्टि मे युवा वह है जिसमे आत्मा की प्रबल जीवन-शक्ति है। दूसरे हालाकि मेरे विद्यार्थी जीवन को बीते कई वर्ष हो गये फिर भी मैं एक बगाली विद्यार्थी के मन मे विद्यमान आशाओ और आकाक्षाओ से पूरी तरह परिचित हू और मै उन खतरो और बाधाओ को भी जानता हू जिनसे वह लगातार घिरा रहा है।

एक व्यक्ति की भाति राष्ट्र के जीवन मे भी 'गति एव विस्तार'' का नियम होता है। यह उस समय तक कार्य करता है जब तक कि उसमें जीवन की विद्यमानता रहती है। जब यह नियम कार्य करना बद कर देता है तो राष्ट्र या व्यक्ति मानो जड या मृत हो जाता है। "गति एव विस्तार'' दो ऐसे बैरोमीटर है जो हमारे राष्ट्र की वर्तमान हालत को सकेतित करते है।

और भी एक राष्ट्र के उत्थान व पतन के पीछे एक अदृश्य और रहस्यात्मक सिद्धात कार्य करता है। कुछ राष्ट्र पृथ्वी के नक्शे से बिल्कुल गायब हो गये है जो केवल पहाड की चोटियो पर यह इतिहास के पृष्ठो पर नजर आते है। और दूसरे वे हैं जो आज भी अस्तित्ववान है और अपने अस्तित्व का अहसास कराते है। इसका क्या कारण है? यह भिन्नता क्यो है? इसका उत्तर एक दिन या महीने मे देना सभव नहीं लगता लेकिन फिर भी इसके उत्तर को खोजना चाहिए। यदि हम इस पहेली का हल नहीं खोज पाते तो हम एक नये राष्ट्र का निर्माण कैसे कर सकते हैं? पाश्चात्य विचारक आग्रहपूर्वक कहते है कि जो राष्ट्र इस रहस्य को खोल देता है उसी का उत्थान हो सकता है—वह जितनी बार नीचे गिर सकता है उतनी बार ऊपर उठ सकता है। यह एक तथ्य है कि जब एक राष्ट्र मे पतन के आसार दिखाई देते हैं तो उसके बौद्धिक दृष्टिकोण को एक क्रातिकारी आघात पहुचता है ताकि वह पुनर्विचार शुरू कर सके। चीन जापान और भारत द्वारा सभ्यता के नियम भारी आघातो को सहने का मुख्य कारण यह है कि अधकार-युग के अत तक यहा वैचारिक क्रातिया जारी रहीं। दूसरी ओर विदेशियो के साथ सास्कृतिक सायुज्य भी होता रहा है, इसने भी उनके अस्तित्व मे बडा योगदान किया है।

इनमे से कौन-सा सही और महत्वपूर्ण है यह आपको तय करना है। प्रश्न कितना भी जटिल क्यो न हो, यदि आपके पास विचारवान मन है तो इसका उत्तर सरलता से खोजा जा सकता है। इस जीवन की सार्थकता इसी मे है यदि यह जान सके या जानने का प्रयत्न करे कि एक नये राष्ट्र का निर्माण करना किस प्रकार सभव है? छात्र सम्मेलन के सामने यह वास्तविक समस्या है।

यह पूछा जा सकता है कि मनुष्य का सच्चा आदर्श और "साधना'' क्या है? विद्यार्थी जीवन की आचार-संहिता क्या होनी चाहिए, जो उस आदर्श की प्राप्ति की ओर अग्रसर कर सकती है। इस सबध मे नीत्शे का अतिमानव का सिद्धात एक उपयुक्त सुझाव हो सकता है इस सिद्धात का प्रतिपादन उसने जर्मनी को एक महान और आदर्श राष्ट्र बनाने हेतु किया था। नीत्शे ने उस दौर के प्रभावी विचारो मे थोडा परिवर्तन करके एक नई आचार-सहिता प्रस्तुत की थी। उसका विश्वास था कि ईसाई नैतिकता ने मनुष्य को सही आदर्शो के मार्ग से भटका दिया था और यदि मनुष्यो के एक नये वर्ग की रचना होनी थी तो ईसाई नैतिकता को तिरस्कृत और बहिष्कृत करना लाजिमी था। प्लेटो, सुकरात अरस्तू, थामस मूर और हमारे प्राचीन ऋषियो ने एक मार्ग का सधान किया जिसके जरिए मनुष्य मानवता के उच्चतर धरातल तक ऊपर उठ सकता है जो सबके लिए एक आदर्श होगा।

अब, हमारा आदर्श क्या है? कोई विदेशी या बाहर का आदमी यह नही सुझा सकता। हमारे बीच से ही इसका उत्तर आना चाहिए हमारी जनता के बीच से ही इसका उत्तर आना चाहिए। जब तक हमारी दृष्टि साफ नही है तब तक सभवत हम अपने आदर्श को नहीं पा सकते। पहले अपने आदर्श को आत्मसात करना होगा केवल और केवल तभी हम अपना कर्तव्य निश्चित कर सकते है। मनुष्य आदर्शो का प्रतीक है जब उसकी सपूर्णता मे वह उन्हे अनुभव करता है तभी वह पूजनीय बनता है। समय-समय पर आदर्श मे भिन्नता आ जाती है और यह व्यक्ति की दृष्टि-सीमा एव अर्जित ज्ञान मे आनुपातिक सबध रखता है। हमारे आदर्श को पाप्त करने की दिशा मे अनेक प्रयत्न हुए है और हो रहे है। राजा राममोहन राय के आदर्श को विभिन्न धार्मिक आदोलनो और तत्पश्चात् ब्रह्म समाज की स्थापना के रूप मे अभिव्यक्ति मिली। केशवचद्र का विचार था कि जब तक समाज को अधविश्वास की बुराईयो से मुक्ति नहीं मिलती है तब तक आदर्श मनुष्य का प्रश्न ही नहीं उठता तब पुन हमारा यह विश्वास है कि जब तक हम राजनीतिक गुलामी और सभी प्रकार के उत्पीडनो की बेडियो से आजाद नहीं होते है तब तक हम एक सही किस्म का इन्सान नहीं बना सकते। और अब राजनीतिक आदोलन को लीजिए। इन आदोलनो की चर्चा करते हुए एक बडी सच्चाई सामने आती है जिससे यह उजागर होता है कि लोग राजनीतिक धार्मिक सामाजिक और आर्थिक दासता से मुक्त होना चाहते है। लेकिन स्वतत्रता का प्रतीक क्या है वे यह नही जानते।

हम स्वतत्रता चाहते हैं क्योकि दासता मृत्यु का लक्षण हैं। अधेरे मे जीने के अभ्यस्त लोग उससे मुक्त होने मे अरुचि दिखाते है। उदाहरण के लिए हमारे नारी समाज को लीजिए। कभी-कभी यह पाया गया है कि उनकी सबसे बडी शत्रु वे स्वय है।

लम्बे समय से हम इस सोच मे जीते रहे कि मात्र धार्मिक या आर्थिक या राजनीतिक स्वतत्रता हमारे उद्देश्य को पूरा कर देगी। यह अर्द्ध सत्य है। लेकिन महान सत्य यह है कि एक व्यक्ति का जीवन पूर्ण सत्य है और एक जीवित मनुष्य के लिये सर्वागीण स्वतत्रता अभीष्ट है। यह अत्यत उदात्त आदर्श है जिसे आत्मसात और ग्रहण करना बहुत कठिन है। यह एक ऐसा आदर्श है जिसमे बिना किसी भेद-भाव के सबके लिये समान अधिकार निहित है। बगाल के विद्यार्थियो और युवाओ को इस आदर्श को ग्रहण करना होगा। अतएव भविष्य की तमाम आशाए और आकाक्षाए उन पर ही केन्द्रित है।

निस्सदेह इस आदर्श को लेकर विद्यार्थियो को भारी निजी हानि और खतरे भी उठाने होगे। उसे स्कूल या कालेज से निकाला भी जा सकता है लेकिन तो भी यह उसकी मनुष्यता को समुन्नत करेगा। मेरे निजी जीवन मे मुझे जब अधिकारियो का सामना करना पडा, मैंने अपने भीतर शानदार ताकत को महसूस किया और यह आज भी मुझे रास्ता दिखा रही है। एक व्यक्ति के जीवन मे केवल एक मात्र अवसर आता है जो कि उसके जीवन मे बदलाव का बिदु साबित हो सकता है और उसकी पूरी तर्ज बदल देता है। कर्तव्य ने खडगबहादुर को एक साहसिक कार्य हेतु उत्प्रेरित किया जिसको लेकर वह जानते थे कि यह कार्य अनिवार्य मृत्यु का कारण बन सकता है। सौभाग्य से उनका जीवन बच गया लेकिन एक ओर मृत्यु तथा दूसरी ओर पूर्ण मनुष्यता के बीच चुनाव की बात कायम रही। हजारो पुस्तके या सैकडो सम्मेलन या सभाए ऐसे परिवर्तन आत्मा की ऐसी मुक्ति का प्रभाव पैदा नहीं कर सकतीं।

हमारी स्त्रियो पर दिन-ब-दिन बढती हुई क्रूर हिसा के बारे मे सोचिये। क्या इसका कोई उपचार नहीं है? बडी सख्या मे अग्रेज हमारे देश मे रहते हैं लेकिन उनकी स्त्रियो को किसी भी रूप मे सताया नहीं जाता। कुछ साल पहले सीमा-प्रात की घटना को याद कीजिये। जब कुछ आदिवासियो ने एक अग्रेज स्त्री का अपहरण कर लिया था तब विश्व भर के अग्रेज एक होकर उसे छुडाने के लिये उठ खडे हुए थे।

हमारे आदर्श को लेकर समग्रता मे विचार कीजिये और सर्वतोन्मुखी स्वतत्रता की इस धारणा को अपने जीवन व्यवहार मे अनुभव करने का प्रयास कीजिये। जो अपने जीवन को पूर्णरूपेण अभिव्यक्ति देना चाहता है उसके मार्ग मे बाधाएं आती ही हैं। लेकिन सत्य की जीत होती है। मेरी समझ से सत्य और स्वतत्रता एक ही है। स्वतत्रता जीवन का लक्षण है और यदि तुम सत्यनिष्ठ होकर इसे जानते हो तो एक दिन यह साकार भी होगी।

जिस तरह हमारा सघर्ष चल रहा है ऐसे राष्ट्र स्वतत्र नहीं हो सकता। उदाहरण के रूप मे अस्पृश्यता के प्रश्न को लीजिये। हम तथाकथित दलित वर्गो को मदिर के परिसर मे दाखिल होने की अनुमति नहीं देते मानो कि ईश्वर एक जाति विशेष यानि ऊची जाति का है और उसके ही द्वारा रचे गये एक वर्ग के स्पर्श से वह अपवित्र हो जायेगा।

जब एक राष्ट्र या एक व्यक्ति जाग्रत होता है तो यह जाग्रति पूर्ण और सर्वागीण होनी चाहिये। हमे कार्यकर्ताओ की एक जमात की जरूरत है, चाहे वह कितना ही कठिन हो, जो इस पवित्र उद्देश्य के उपासक के रूप मे काम कर सके। साधना के लिये शक्ति और ऊर्जा पर्याप्त मात्रा मे है लेकिन इसका सदुपयोग नहीं हो पा रहा। हमारी जीवन शक्ति के "गति एव विस्तार'' पर्याप्त नहीं है। चमत्कार की भावना, अज्ञात को जानने की लालसा—इन तमाम चीजो का हमारे युवाओ मे भारी अभाव है।

अनुशासन की जरूरत

राजशाही छात्र-अधिवेशन मे भाषण
20 अगस्त, 1929

बगाल के इतिहास मे यह स्वयसेवक आदोलन कोई नई चीज नहीं है, हमारे राष्ट्रवाद के उदय के समय से ही इसका विचार युवाओ के मन मे समाया हुआ है। हालाकि एक ओर सरकारी दमन तथा दूसरी ओर राष्ट्रीय कार्य मे हमारी भिन्नतामूलक पद्धतियो के कारण कुछ समय के लिए यह विचार सुषुप्त पडा रहा। पुन सगठन का विचार अब फिर से पहले मोर्चे पर आ गया है। शारीरिक अभ्यास और सैन्य प्रशिक्षण के क्षेत्र मे बगाल निस्सदेह अपना कोई सानी नहीं रखता लेकिन निरतर बढता हुआ सरकारी दमन हमारे लिए इस प्रकार के आदोलन और सगठन की उपयोगिता का अहसास करा रहा है।

यह कहा जाता है कि हथियारो के व्यवहारिक प्रशिक्षण के अभाव मे आदोलन असफल साबित होगा। लेकिन यहा एक तथ्य को नजरअदाज कर दिया जाता है कि सैन्य प्रशिक्षण मे आग्नेय अस्त्रो के पाठ्यक्रम द्वारा "ड्रिल कोर्स" की अनुमति दी गई है। हमे पहले चलना सीखना चाहिए। चलते समय हमे अपने हाथ-पैरो की उचित अवस्थाओ का ज्ञान प्राप्त करना होगा। एक स्वतत्र देश के लोगो पर दृष्टिपात् कीजिए, देखिए वे कैसे खडे होते है, कैसे चलते है, जब वे जुलूस मे चलते है या थियेटर की खिडकी पर पक्ति मे खडे होते हैं, जब वे सिनेमा या खेल के मैदान मे होते है, तब वे कैसा व्यवहार करते हैं? यहा आपको अनुशासन का एक उचित भाव प्राप्त होगा।

दूसरे देशो मे सरकार स्वय लोगो के सैन्य प्रशिक्षण की व्यवस्था करती है लेकिन स्पष्ट रूप से भारत मे यह सब हमे ही करना पडता है।

कलकत्ता काग्रेस के दौरान स्वयसेवक सेना का आयोजन करते हुए हम दुनिया को यह बताने मे सफल हुए कि इस पराधीन देश मे भी इस प्रकार का कार्य किया जा सकता है।

इस प्रकार के प्रशिक्षण के पीछे मुख्य लक्ष्य और सिद्धात ये है कि लडके और लडकियो की एक टोली नपे हुए कदमो से यदि साथ-साथ चल सकती है तो वे एक साथ कार्य करना भी सीख सकते है। कहना चाहिए कि यदि बीस हजार लडके आज एक जगह एकत्र हो जाए तो एक प्रकार का हुल्लड मच जाएगा लेकिन यदि उन्हे प्रशिक्षित करके फिर से एकत्र किया जाए तो एक अनुशासित सेना के रूप मे दिखाई देंगे।

पिछली काग्रेस मे स्वयसेवी दल पर हुए बडे खर्च के औचित्य को लेकर अनेक लोगों की ओर से प्रश्न खडे किए गये। लेकिन यहा इस तथ्य को अनदेखा किया गया कि दातेदार आरी की भाति एक सिपाही की वर्दी भी राष्ट्रीयता का प्रतीक होती है। सेना के नियमानुसार यह एक शिष्टाचार है कि एक अधिकारी अपने से उच्चतर श्रेणी के अधिकारी को सलाम करे। निजी गुणो मे बडा अधिकारी छोटे की तुलना मे कमतर हो सकता है लेकिन "राजा की वर्दी को सलाम किया ही जाना चाहिये।" वास्तव मे सलाम व्यक्ति को नहीं उस वर्दी को किया जाता है जिसे वो पहने हुए है। हम अपने विद्यार्थियो को वर्दी का एक ऐसा ही आदर सिखाना चाहते है। हम ऐसा ही "वफादारी का भाव" चाहते है।

जब हम सेना मे भर्ती होते हैं तो हम किसी व्यक्ति को उसके अवगुणो को कारण अभिवादन करने मे सकुचाते हैं। लेकिन हम यह भूल जाते है कि यह अभिवादन या आज्ञाकारिता उस वर्दी के कारण है जिसे वो पहने हुए है।

धोती लपेटने से इस प्रकार की आज्ञाकारिता या अनुशासन नहीं आ सकता। इसलिये मैं आग्रह के साथ कहना चाहता हू कि बैलगाडी के जमाने मे लौटना हमारे लिए असभव होगा।

आधुनिकीकरण के मार्ग मे अनेक बाधाए रही है। चीन मे भी यह बात रही थी। लेकिन जो सफलता उसे मिली वह उसकी स्वयसेवी सस्थाओ के कारण ही सभव हो सकी। इतिहास मे ऐसे सशक्त सगठनो के बेशुमार उदाहरण भरे पडे हैं। "आयरन साइड" क्रामवैल का मुख्य आधार था, उसकी राष्ट्रीय सेना थी, नेपोलियन के पास इपीरियल गार्ड थे, जर्मनी के फ्रेडरिक के पास गैरीबाल्डी के दस हजार लोग थे, मुसोलिनी के ब्लैक शर्टस और रशियन रेड आर्मी–ये तमाम सगठन इतिहास के महत्वपूर्ण स्मारक रहे हैं। जापान ने अपनी अनुशासित सेना के द्वारा रूस पर गौरवशाली विजय प्राप्त की, कमाल ने तुर्की मे अधविश्वास की बेडियो को तोडा और अपनी अनुशासित एव वफादार सेना के द्वारा एक आदर्श राज्य की स्थापना की। यदि शाह अमानुल्लाह के पास एक समतुल्य अनुशासित एव वफादार सेना होती तो अफगानिस्तान क्राति की भवर की लपेट मे न आया होता। तथापि व्यक्तियो के एक अनुशासित समुदाय की सहायता के अभाव मे कोई भी सुधार प्रभावी नहीं हो सकता। यदि हम अनुशासित रूप मे कार्य करने की कला का अधिकार पा लेते हैं तो हम इसी पद्धति को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे लागू कर सकते हैं।

इसमे भयभीत होने की कोई बात नहीं है। भारत अपने आप मे एक विशाल कारागार है। बाहर रहते हुए हमारी स्थिति भीतर से कुछ ज्यादा बेहतर नहीं है। हमे नये भावो और विचारो से प्रेरणा लेनी है। यदि एक बार तुम इनसे आप्लावित हो गए तो धरती पर कोई ताकत तुम्हे नष्ट नहीं कर सकती। सुकरात और ईसा की भाति इन विचारो का जितना प्रतिरोध होगा, ये उतने ही तीव्र रूप मे उभरेगे।

गैर समझौतावादी रूख और संघर्ष

टिन प्लेट कम्पनी के कर्मचारियो के समर्थन मे बयान, जमशेदपुर, 28 अगस्त, 1929

टिन प्लेट कपनी की स्थिति एक गतिरोध के बिदु पर पहुच गई है। पिछले शुक्रवार से एक आम हडताल शुरू हो गई है। नये और पुराने दोनों मजदूर बाहर हो गए हैं। मात्र दिखावे के लिए मशीनरी चल रही है। लेकिन कोई खास उत्पादन नहीं हो रहा। प्रबधतत्र अपनी हठ पर कायम है लेकिन जब कि वे यूनियन से बातचीत को इन्कार करते हैं लेकिन व्यक्तिगत रूप से मजदूरो को लालच देने और फुसलाने का काम कर रहे हैं। महाप्रबधक सहित कपनी के बडे अधिकारीगण मजदूरो को फुसलाने के लिए घर-घर जाने मे तक संकोच नहीं करते।

मजदूरो की मागे बहुत उदार है और स्थानीय प्रबधतत्र का रुख बहुत अतार्किक और गैर समझौतावादी है। हम लोग जो मजूदरो के हित के लिए समर्पित है हमारे सामने अत तक लडाई जारी रखने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। इस उद्देश्य के लिए हम स्थानीय विधानपरिषद और विधानसभा का समर्थन प्राप्त करना चाहते है। टिन प्लेट कपनी एक धमकी दे रही है कि यदि सरक्षण वापस ले लिया जाता है तो वे सदा के लिए बद कर सकते है और तब बर्मा आयल कपनी टिन प्लेटे बाहर से आयात करेगी। यदि यह धमकी आगे जारी रहती है तो मौजूदा लडाई तब बर्मा आयल कपनी और हमारे बीच की लडाई का रूप ले लेगी। इस लडाई को जारी रखने के लिए हम बर्मा आयल कपनी के स्वामित्व वाली भारत मे प्रत्येक फैक्ट्री से सपर्क करेंगे। और हम वह स्थिति पैदा कर देगे जो कि हमने बज-बज मे की थी। इस सिलसिले मे कदम उठा लिए गये है। स्थानीय प्रबध तत्र के कठोर रुख ने एक अखिल भारतीय मुद्दे का रूप ले लिया है। हम जो कि टिन प्लेट कर्मचारी नहीं हैं केवल उनकी मदद कर रहे हैं स्वय कर्मचारियो द्वारा ही इस लडाई मे झोक दिए गये हैं। इसमे हस्तक्षेप करने से पहले हमने कई महीनो प्रतीक्षा की। लेकिन जब हमने यह अनुभव किया कि गरीब मजदूर भारी विपत्ति से जूझ रहे हैं और प्रबध तत्र बहुत दुराग्रही है, तब हमे इस लडाई मे कूदना पडा। जब एक बार हम कूद पडे है तो हम कठोर अत तक लडाई जारी रखेगे।

राजनीतिक दमन और आर्थिक शोषण मे मेल-जोल

फ्री प्रेस के साक्षात्कार मे बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप मे बयान, 5 अगस्त, 1929

आज का भारत एक दमन के दौर से गुजर रहा है और यह दमन हमारे प्रात के हिस्से मे बहुत अधिक आया है। बगाल सरकार परिषद के भीतर सत्र मे की गई घोषणा—दमन की नीति वर्ष के अत तक अपरिवर्तित रहेगी—के मुताबिक कार्य कर रही है। मैं हृदय से इस दमन का स्वागत करता हू। यह दमन हमारे देशवासियो को राजनीतिक जडता से उबारने मे मदद करेगा और इसमे हमारा देश अगली 1 जनवरी से नया कदम उठाने के लिये तैयार है।

बगाल और दूसरी जगह की सरकारो की दमन नीति मे महत्वपूर्ण बात यह है कि सरकार केवल राजनीतिक गतिविधियो को दबाने हेतु दमनकारी कदम नहीं उठा रही है बल्कि मजदूरो की औद्योगिक गतिविधियो पर भी प्रतिबध लगा रही है। विशेष रूप से ऐसी जगहो पर जहा इन गतिविधियो से विदेशी पूजीपतियो के हितो की हानि होती है। सरकार और विदेशी पूजीपति अपने सामान्य लक्ष्य की ओर हाथ मे हाथ डालकर आगे बढ रहे है। यह सामान्य लक्ष्य है—राजनीतिक एव आर्थिक मुक्ति आदोलन का दमन इस "मेल-जोल" के जवाब मे हमे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस और भारत के मजदूर आदोलन के बीच आक्रामक एव आत्मरक्षात्मक मैत्री कायम करनी होगी। देश को दमन की अवाछित खुराके दी जा रही है और वास्तव मे ये खुराके लेने की उसकी आदत

बन चुकी है। फिर भी ऐसा कोई खतरा नहीं है कि यह दमन हमे कमजोर और हतोत्साहित करेगा। सरकार यदि यह अपेक्षा करती है कि दमन हम देश के स्वाधीनता आदोलन को नष्ट या अशक्त कर देगा तब मैं खुली चुनौती देता हू कि तुम बुरा से बुरा जो हो सके करके दिखाओ।

सरकार का विश्वासघात .

बारीसाल मे राजनीतिक बंदियो की हडताल के लिए जिम्मेदार कारणो के बारे मे बयान, 24 सितम्बर, 1929

हमारे देशवासी सभवत ठीक-ठीक नहीं जानते है कि श्री सतींद्र नाथ सेन और उनके कुछ सहकर्मियो ने भूख हडताल क्यो की? जिन तकलीफो के खिलाफ वे लड रहे है, सक्षेप मे इस प्रकार हैं –

1 श्री सेन और उनके साथियो के विरुद्ध आपराधिक प्रक्रिया सहिता की धारा 110 के अधीन कार्यवाहियो का पुन प्रवर्तन, जबकि जुलाई 1928 मे पटुआ खाली विवाद के समाधान के समय इन्हे समाप्त कर दिया गया था।

2 हमले के दो मामले बनाना–एक श्री सेन और उनके साथियो के विरुद्ध तथा दूसरा उनमे से कुछ लोगो के विरुद्ध।

जुलाई 1928 मे पटुआ खाली सत्याग्रह आदोलन को समाप्त करने के सिलसिले मे बारीसाल के जिला मैजिस्ट्रेट की पहल पर सभी सबधित पक्षो के बीच एक समझौता हुआ। इस समझौते के तहत आपराधिक प्रक्रिया सहिता की धारा 110 के अधीन कार्यवाहियो सहित सत्याग्रहियो के सभी मुकदमे वापस ले लिए गये।

लगभग मार्च, 1929 के मध्य मे श्री सतींद्र नाथ सेन और उनके कुछ साथियो को आपराधिक प्रक्रिया सहिता की धारा 110 के तहत अचानक गिरफ्तार कर लिया गया। शीघ्र ही यह जाहिर हो गया कि इस मामले मे गवाही ली गई है, उसका सबध पटुआखाली विवाद के समझौते से पूर्व के समय से है। इन कार्यवाहियों के पुन प्रवर्तन से श्री सेन और उनके साथियो का रुष्ट होना स्वाभाविक था। जिससे सरकार के पक्ष पर भारी विश्वासघात का पता चलता है।

हमले के मामले पुलिस व जेल अधिकारियो और कैदियों के बीच कहा-सुनी के कारण सामने आये। कैदियो का कहना था कि उनके लिए सवारी की व्यवस्था होनी चाहिए अथवा उन्हे अदालत न ले जाया जाये। कैदियो का आरोप था कि उनकी सवारी की उचित व्यवस्था नहीं थी, तो भी उन्हें असतोषजनक हालत मे अदालत जाने के लिए बाध्य किया गया, यहा तक कि बीमारी को भी नहीं बख्शा गया। उनके इनकार करने पर उनके साथ मार-पीट की गई। ऐसा लगता है

कि आपराधिक प्रक्रिया सहिता की धारा 110 के तहत कार्यवाहियो के असफल हो जाने के कारण श्री सेन और उनके साथियो को दडित करने के उद्देश्य से ये हमले किये।

लेकिन श्री सेन ने जल्दबाजी से काम नहीं लिया, हालाकि वे सरकार का रुख लेकर काफी स्पष्ट थे। वह मई अत तक प्रतीक्षा करते रहे कि शायद न्यायायिक पद्धतियो द्वारा हालात मे कुछ सुधार हो सके। या कि बाहर के उनके मित्र उन्हे रिहा कराने मे सक्षम हो सके। लेकिन जब कोई नतीजा नहीं निकला तो उन्हे भूख हडताल का निर्णय लेना पडा।

मै पिछली जुलाई मे जिला अधिवेशन के सिलसिले मे बारीसाल गया था और इस अवसर पर मैने जेल मे श्री सेन से भेटवार्ता की थी। मै बडी मुश्किल से उन्हे भूख हडताल तोडने के लिए राजी कर सका। मैं अपनी ओर से तथा बारीसाल की जनता की ओर से सिर्फ यह आश्वासन देने के बाद कामयाब हो सका कि उनकी भूख हडताल के बिना भी जेल के बाहर उनके मित्र लोग उनके कार्य को आगे बढाते रहेंगे।

बारीसाल से लौटने पर मैने सरकार को उन तकलीफो के बारे मे लिखा जिनके रहते हुए श्री सेन को भूख हडताल पर बैठना पडा। मैने सरकार से स्थिति मे शीघ्र सुधार के लिए कहा। मुझे जवाब मे बताया गया कि सरकार इस मामले पर विचार कर रही है लेकिन अब तक कोई सुधार नहीं हुआ।

कुछ समय प्रतीक्षा करने के बाद और यह जानने पर कि हमारे प्रयत्न निष्फल रहे श्री सेन और उनके कुछ साथियो ने फिर भूख हडताल का रास्ता अपना लिया। यह भूख हडताल आज तक जारी है जहा तक श्री सतींद्र नाथ सेन की बात है वे थोडे से सोडा वाटर के अलावा और कुछ ग्रहण नहीं कर रहे है। यह बात सुनिश्चित है कि यदि कुछ दिन और यह भूख हडताल चली तो इसका परिणाम मृत्यु होगा। सतींद्र नाथ सेन सरकार के सकीर्ण और प्रतिशोधात्मक रवैये के खिलाफ मे, विशेष रूप से पिछले मामलो को दोबारा उठाने को लेकर उसके विश्वासघात के खिलाफ मे भूख हडताल कर रहे है, वे मामले जो कि पटुआखाली विवाद के समझौते के समय हमेशा के लिये खत्म कर दिए गए थे। यद्यपि मैने भरसक प्रयास किए कि श्री सेन अपने जीवन को बचाने के लिए भूख हडताल तोड दे। मै स्वीकार करता हू कि उन्होने जो रुख अपनाया वह उचित और सम्मानजनक था और मै उससे पूर्ण सतुष्ट होकर लौटा और हम तो साधारण रूप से चेतावनी के सलाहकार भर हैं। उस समय जब श्री सेन अपने जीवन का उत्सर्ग करते हुए अपने सम्मान की रक्षा कर रहे है और राजनीतिक कार्यकर्ताओ को दण्डित करने वाली आपराधिक प्रक्रिया सहिता की धारा 110 पर रोकथाम लगाने का प्रयास कर रहे है तब हमारा ये कर्तव्य बनता है कि हम श्री सेन की बिन शर्त रिहाई को लेकर सरकार पर दबाव डालते हुए एक देश व्यापी भीषण अभियान की शुरूआत करे। हमे अपने आचरण के द्वारा सीधे-सीधे सरकार को यह बताना है कि इस देश मे मानवीय जीवन इतना सस्ता नहीं है जैसा कि और जगह है और यह कि बगाल के लोग बारीसाल मे लाहौर त्रासदी की पुनरावृत्ति देखने को तैयार नहीं है।

जन सगठन और सामाजिक क्रांति की अपरिहार्यता

हावडा जिला राजनीतिक अधिवेशन मे भाषण
शनिवार, 28 सितम्बर, 1929

स्वागत समिति के सभापति जी देवियो और सज्जनो

आपने वाकई एक अत्यत पवित्र और उपयुक्त समय पर हावडा जिला राजनीतिक अधिवेशन का आयोजन किया है। देश के सामने कठिन से कठिनतर समस्याए प्रतिदिन उपस्थित हो रही हैं और दमनकारी नीतियो के परिणामस्वरूप भारत के राजनीतिक क्षितिज पर काले बादल छा रहे हैं। भीषण तूफान के पूर्वाभास के रूप मे समय-समय पर हवा के झोके आते रहे हैं और थोडे-थोडे अतराल पर बिजली कडक रही है। ऐसे मौसम मे हम जैसे यात्री अपने लक्ष्य पर आख लगाये हुए अपने हृदय मे आशाए भय आकाक्षाए और उत्कठाए लिए हुए स्वाधीनता के मार्ग पर आगे बढ रहे हैं।

अभी कुछ ही दिन पहले ठीक इसी मैदान के पास आपने एक महान बगाली नायक व आत्मबलिदान साहस और पराक्रम की प्रतिमूर्ति स्मृति के प्रति प्रेम और सम्मान व्यक्त करने हेतु बडी तैयारिया की थीं। हजारो हजार स्त्री-पुरुष आयु या जाति और पथ के भेदभाव को भुलाकर रातभर उस नायक को श्रद्धाजलि अर्पित करते रहे थे। नाम और ख्याति की दृष्टि से अज्ञात युवा कार्यकर्ता यतींद्र नाथ ने देश की स्वाधीनता के लिये बडे धैर्य के साथ अपने प्राणो के बलि दे दी। वह अपने कठोर निश्चय से लेश मात्र भी नहीं हटा और आज मैं यह आशा कर सकता हू और पूरे मन से यह प्रार्थना करता हू कि जब तक हम अपने सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर लेते हैं, यतींद्रनाथ का साहस, आत्मबलिदान, पराक्रम, सकल्प, देशभक्ति और कार्य करने की अद्भुत क्षमता हमे निरतर प्रेरणा देती रहे।

इसका उपाय क्या है?

हमारे दु खद शोषण और स्वतत्रता की हानि तथा अवसरो को लेकर हमारी माग के जस का तस बने रहने के बावजूद भारत ने पिछले डेढ सौ वर्षो मे जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे बहुत से महापुरुषो को जन्म दिया है। यह तथ्य दुनिया के सामने इस बात की घोषणा करता है कि यह राष्ट्र मर नहीं सकता, मरने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। लेकिन इस तथ्य मे हमारा भारी दुर्भाग्य छुपा हुआ है कि उस देश में जो कि इतने महापुरुषो को जन्म दे चुका है, जनता बहुत अपमानित और दु खी है तथा अपनी तमाम आशाओ-आकाक्षाओ को खो चुकी है। इस स्थिति से उबरने का क्या उपाय है? वस्तुत हमे राष्ट्रीय "साधना" व्यक्तिवाद के सिद्धात के आधार पर नहीं चलना चाहिए, इसे एक स्वस्थ समाजवाद के आधार पर स्थित करने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए। हम सिर्फ तभी और तभी शक्तिमान आत्माओ को भारत के गाव-गाव और घर-घर मे प्रवेश करते हुए तथा उसे धन और गौरव से आपूरित करते हुए देख पायेगे।

मैंने जो ऊपर कहा है, उसका अभिप्राय सिर्फ यह है कि यदि हम आज समूचे राष्ट्र मे नवजागरण और नये जीवन का सचार देखना चाहते हैं, तो हमे सभी प्रकार की कृत्रिम सामाजिक असमानताओ से मुक्त होना होगा और हमे सबको समान अवसर देने होगे ताकि उन्हे मनुष्यता का पूर्ण दर्जा प्राप्त करने मे मदद मिल सके। मनुष्य द्वारा निर्मित सभी प्रकार की सामाजिक, राजनीतिक एव आर्थिक विसगतिया दूर होनी चाहिए और स्त्रियो को पुरुषो की दासता से मुक्त कराया जाना चाहिए।

समाज और राज्य के जीवित सबधो को मद्देनजर रखते हुए मैं इस बात का पूरी तरह कायल हू कि जब तक हम अपनी समाज व्यवस्था मे एक क्रातिकारी परिवर्तन एक सपूर्ण क्राति नहीं करते हैं तब तक हम अपनी राजनीति शक्ति को फिर से हासिल करने या अपनी राजनीतिक स्वतत्रता को पुर्नस्थापित करने की स्थिति मे नहीं आ सकगे। जितनी देर तक समूचा राष्ट्र स्वतत्रता के उन्माद से बचता रहेगा उतनी ही देर तक हमारी राजनीतिक मुक्ति एक आकाश कुसुम बनी रहेगी।

राष्ट्रीय आदोलन के शनै शनै बढते हुए प्रभाव के साथ-साथ स्वतत्रता के अर्थ मे भी विस्तार हो रहा है। एक समय था जब स्वराज का अर्थ हमारे लिए सिर्फ "उपनिवेशीय स्वशासन" था। लेकिन आज यह पूर्ण स्वाधीनता का पर्याय बन गया है।

इतिहास का अवलोकन स्वतत्रता के मार्ग को ढूढने का एक सुनिश्चित तरीका है। पिछले तीस वर्षो मे भारत और बगाल के इतिहास का विश्लेष्ण करते हुए, तीन विशिष्ट और सुपरिभाषित युगो से हमारा परिचय होता है। उनके नाम इस प्रकार है- (1) स्वदेशी का युग (2) अराजकता या क्राति का युग और (3) असहयोग का युग । पहले युग के दौरान हमारा प्रमुख हथियार विलायती माल का बहिष्कार था, विशेष रूप से विलायती कपडे और नमक का बहिष्कार। स्वदेशी के दिनो मे जबर्दस्त आदोलन के परिणामस्वरूप बगाल का विभाजन हुआ और मार्ले-मिटो सुधार सामने आये। नौकरशाही का ऊचा सिर नीचे झुक गया और उसका स्थायी बदोबस्त बिखर गया। क्रातिकारी आदोलन का दूसरा चरण 1918-19 तक जारी रहा। बहुत से नौजवान देशभक्ति की कीमत चुकाते हुए हसते-हसते फासी के तख्ते पर चढ गये। लेकिन यह इन्हीं उच्चाशय नौजवानो की गतिविधियो का नतीजा था कि अग्रेजी हुकूमत को 1919 के सुधार पेश करने हेतु बाध्य होना पड़ा।

असहयोग के तीसरे दौर का मुख्य सिद्धात जनता को सगठित करना और नौकरशाही के बढते हुए प्रभाव को हर सभव तरीके से खत्म करना है और इसके जरिए हमारी स्वैच्छिक सहायता के उस मुख्य आधार को नष्ट करना है जिस पर अग्रेजी हुकूमत टिकी हुई है।

मै नहीं जानता कि हमारे देश मे आज भी ऐसे कुछ लोग है जिनका यह विश्वास है कि चद बम और पिस्तौलो से हम स्वतत्रता प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से भारत की मुक्ति ऐसी आसान चीज नहीं है। एक बम या पिस्तौल यहा वहा आतक पैदा करने मे सफल हो सकती है लेकिन यह क्राति कदापि नहीं ला सकती। आतकवाद एक विशुद्ध भौतिक घटना है, यहा तक कि मुट्ठी भर लोग आतक पैदा कर सकते हैं। लेकिन क्राति का जन्म हमारे विचारो के व्यापक

ससार और साहित्य के माध्यम से होता है। अग्रेज लोग इस बात को भली-भांति समझते हैं। इसीलिये हमारे राष्ट्रीय साहित्य पर कडी और क्रूर दृष्टि रखी जाती है। तथा भारत मे राजद्रोह की आश्चर्यजनक व्याख्याए की जा रही हैं।

बहरहाल मेरा यह सुनिश्चित मत है कि आतकवाद का दौर बीत चुका है। आज हमारा मुख्य हथियार जन-सगठन है। हमे अपने देशवासियो को अपने हितो की रक्षा करते हुए तथा अपने अधिकारो को दबाव बनाये रखते हुए एकजुट करना होगा और यह जनसगठन विशेष दावो और तकलीफो के इर्द-गिर्द खडा किया जाना चाहिये। जहा भी हमे दमन दिखाई दे या निहित स्वार्थी की क्रूरता का पता चले वहीं हमे एक व्यापक आदोलन चलाना होगा। शायद इससे हमे समाज की ऊची जातियो या कभी-कभी धन के घमडी पूजीपतियो से खुली जग करनी पड सकती है। या कभी हमे करो का भुगतान न करते हुए नागरिक अवज्ञा का कदम उठाना पड सकता है और इस प्रकार हमारे देशवासी अपने सकीर्ण स्वार्थी से ऊपर उठकर राष्ट्रीय स्तर पर एकजुट हो सकते हैं। असहयोग के मूलभाव को सफलता तक पहुचाते हुए अहिंसक जनसगठन को तैयार करने का सबसे प्रमुख तरीका प्रचार और अत्यधिक प्रचार है। एक प्रभावशाली और अनवरत प्रचार के माध्यम से हम अपने देशवासियो के मानसिक ससार मे एक क्राति ला सकते हैं यहा तक कि विचारवान अग्रेज लेखको ने इस सभावना को जानते हुए इस बात की घोषणा कर दी है कि हम इस प्रकार के प्रचार के परिणामस्वरूप एकजुट हो जाए तो भारत मे अग्रेजी राज का अत आ जाएगा। हमे निस्वार्थ कार्यकर्ताओ को एक ऐसा समुदाय पैदा करने की जरूरत है जो स्वतत्रता की एक पूर्ण और स्पष्ट समझ से प्रेरित होकर पूरे मन के साथ जनता के बीच मे काम करे और जन आदोलनो में खुलकर हिस्सेदारी करे। निर्भीक कार्यकर्ताओ की इस जरूरत को देखते हुए युवा और छात्र आदोलनो को होना बहुत जरूरी है। दूसरी चीज अनुशासन है जिसकी हममे बडी कमी है। अनुशासन की भावना को विकसित करने के लिए सशक्त स्वयसेवी आदोलन की बडी जरूरत है। हम जानते हैं कि जब बगाल में यह स्वयसेवी आदोलन सफल हो जायेगा तो बगाली चरित्र का एक बहुत बडा दोष सदा के लिए समाप्त हो जाएगा।

अगर हम आज की उन समस्याओ का हल निकालने मे दिलचस्पी रखते हैं जो कि हम जूझ रहे हैं तो हमे तुरत दो चीजो पर ध्यान केंद्रित करना होगा। पहली सैन्य आधार पर स्वयसेवी दल का सगठन और दूसरी, मजदूर आदोलनो मे हमारी पूरे मन के साथ भागीदारी। मुझे यह कहना पड रहा है कि हमारे नेताओ ने राष्ट्रीय कार्य मे आज तक इन दो बिंदुओ की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया है।

एक बात और कह कर मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हू। देश की मौजूदा हालत देखिए, मै महसूस करता हू कि अगले वर्ष तक हम अपनी मातृभूमि के इस छोर से उस छोर तक एक जबरदस्त आदोलन खडा करने की स्थिति मे हैं और सरकार की मौजूदा दमन नीति हमारे इस आदोलन को रोकने मे सक्षम नहीं हो सकती। लेकिन इस भयकर कठिनाई के दौर में हमे हजारो समर्पित कार्यकर्ता चाहियें। इस सभावना के उजागर होने पर बगाल के विधार्थियो को एक बार फिर स्कूल और कालेजो से बाहर बुलाने का आव्हान किया जायेगा। फिर भी यह एक वर्ष की

बात है हमेशा के लिए नहीं। उन्हे हजारो और लाखो की सख्या मे राष्ट्रीय आदोलन मे उतरना पडेगा। शायद मेरी बातो से अभिभावक गण नाराज होगे। लेकिन मेरा उत्तर है- "यदि आपको आजादी चाहिए, तो कोई और रास्ता नहीं है।"

सज्जनो, मेरी बात पूरी हो गई। शायद मैं अब कोई नयी बात नहीं कह पाऊगा। लेकिन जो बाते मैंने अभी आप से कही हैं, वे मेरे हृदय का उद्‌गार हैं और मेरे आतरिक अनुभव हैं। मेरा ये दृढ विश्वास है कि भारत फिर से आजाद होगा। इस धरती के बडे भू-भाग पर भारत मा के सपूत एक बार फिर अपने सिर और कधो को उठाकर चल सकेगे और राष्ट्रो की मसद मे एक बार फिर उनकी कला और साहित्य की प्रशसा की जाएगी। लडाई जारी है। भाइयो और बहनो इस पवित्र अवसर पर अपने सकीर्ण निजी स्वार्थी से ऊपर उठो और इस लडाई मे पूरी तन्मयता के साथ कूद पडो।

-वदे मातरम्

बारीसाल के सतीन सेन द्वारा भूख हड़ताल के बारे मे कुछ शब्द

बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप मे बयान
4 अक्टूबर 1929

बगाल से प्राप्त ताजा सूचनाओ से पता चलता है कि सतींद्र नाथ सेन जो कि बारीसाल जेल मे भूख हडताल पर हैं, की हालत काफी बिगड रही है। सरकार कह चुकी है कि यह श्री सेन के खिलाफ मुकदमे को वापस नहीं लेगी। वह श्री सेन और उनके सहकर्मियो के खिलाफ की गई ये कार्यवाहिया प्राप्त कर चुकी है जो कि या तो उच्च न्यायालय द्वारा खारिज कर दी गई थीं या पटुआ खाली समझौते के समय सरकार ने वापस ले ली थीं। इन कार्यवाहियो का मुख्य उद्‌देश्य उन्हे जेल मे बद रखते हुए उनकी सार्वजनिक गतिविधियों को खत्म करना है। यह नितात असगत है कि एक देशभक्त कार्यकर्ता के खिलाफ आपराधिक प्रक्रिया सहिता की कुख्यात धारा के तहत कार्यवाही की जाए। यदि सरकार अपने उद्‌देश्य मे सफल हो जाती है तो यह पूरे देश के लिए खतरनाक साबित होगा। जब उनके देशवासी उन्हे रिहा कराने मे असमर्थ सिद्ध हुए तो श्री सतीन सेन जैसे सम्मानीय व्यक्ति के सामने अपने कार्य की दिशा तय करने के अलावा कोई चारा नहीं रहा, जैसा कि वे कर भी रहे हैं। ऐसे मे जब कि वे धीरे-धीरे मृत्यु के समीप पहुच रहे हैं। तब हमारे लिए यह जरूरी हो जाता है कि हम उन्हे मुक्त कराने के लिए एक जबरदस्त देशव्यापी अभियान छेडे। इस उद्‌देश्य के लिए बगाल के प्रत्येक जिले मे "सतीन सेन मुक्ति समितिया" कार्यरत

होनी चाहिए। इन समितियो को श्री सतीन सेन की रिहाई के लिये आदोलन करना चाहिए तथा जहा सभव और जरूरी हो वहा सत्याग्रह करना चाहिए। सिर्फ हम तभी सरकार को यह बताने मे समर्थ होगे कि बगाल के लोग इस बात के लिए कृत सकल्प हैं कि वे बारीसाल मे लाहौर त्रासदी की पुनरावृत्ति नहीं होने देगे और तभी हम दृढ़तापूर्वक सरकार को उसकी अमानवीय नीति के भीषण परिणामो से आगाह कर सकेगे।

अखिल बगाल अभियान के पहले सोपान पर मैं बगाल की सभी काग्रेस कमेटियो से यह निवेदन करूगा कि रविवार 6 अक्टूबर, 1929 को अखिल बगाल सतीन सेन दिवस के रूप मे मनाया जाए। इस दिन श्री सतीन सेन के स्वास्थ्य और मुक्ति के लिए सभाओ, जुलूसो, प्रदर्शनो, सामूहिक प्रार्थनाओ आदि का आयोजन किया जाए।

बारीसाल के सतीन सेन के आत्म बलिदान के बारे में देशवासियों से अपील

8 अक्टूबर, 1929

जब मैं यह सोचता हू कि हम कितने असहाय है, मेरी वाणी मूक हो जाती है। एक अत्यत कर्मठ कार्यकर्ता सरकार के खिलाफ प्रतिरोध करते हुए देश के कार्य के लिए तिल-तिल करके मर रहा है और हम उसके लिए कुछ भी करने मे असमर्थ हैं। जब उन्हे धारा 110 के तहत बद किया गया तो उन्होने यह सोचते हुए भूख हडताल नहीं की कि उनके देशवासी सरकार की दमन नीति के खिलाफ आदोलन करेगे लेकिन उनकी प्रत्याशा पूरी होती नहीं दिखाई दी तो उन्होने स्वय अपने हथियार को आजमाया। जब सरकार सतीन सेन जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति को इस धारा के तहत कैद करने मे सकोच नहीं दिखाती तो इसी तरह किसी भी राष्ट्रीय कार्यकर्ता को सताया जा सकता है। अतएव यह सिर्फ बगाल के लिए ही नहीं बल्कि समूचे भारत के लिये एक धमकी है।

सरकार का इरादा किसी भी तरह सतीन सेन को जेल मे बद किए रखने का है। यदि धारा 110 का मुकदमा किसी तरह नाकाम रहता है तो सरकार के पास और बहुत से इल्जाम अभी सुरक्षित हैं।

यदि जतीन दास और सतीन सेन के आत्मबलिदान के पीछे निहित मनोविज्ञान का विश्लेषण किया जाए तो यह पाया जाएगा कि उन्होने पहले विद्रोह की भावना से प्रेरित होकर फिर बाद मे गुलामी की टीस के कारण भूख हडताल का रास्ता अपनाया। यह टीस उनके हृदय मे इतने गहरे मे समाई हुई थी कि उन्हे ऐसा निश्चय करना पडा। दूसरी बात यह है कि जब एक बार जो शुरूआत हो चुकी है, उससे पीछे हटना भी उचित नहीं था जब श्री सेन गुप्ता और मैने सतीन से भूख हडताल तोडने की बात की तब उन्होने इतने त्रिकट तर्कों के साथ हमारी बातो का जवाब दिया

जिससे यह प्रकट होता था कि उन्हे अपने लक्ष्य की अनुभूति तथा सत्य का साक्षात्कार हो चुका है। उन्होने हम से कहा, "मै जीवन मे किसी व्यक्ति के सामने कभी नहीं झुका और मैने कभी कोई अपमानजनक वचन नहीं दिया है। यदि मै अपने जीवन को बचाने के लिये आज रिहा हो जाऊ तो मैंने जो मानसिक शक्ति प्राप्त की है, उसे खो दूगा।" सचमुच मे वे इतने दृढ है इतने दृढनिश्चयी और इतने गैर समझौतावादी हैं कि सरकार तक उनसे डरती है।

काग्रेस कार्यकारी समिति के एक सदस्य के रूप मे मैं उसके निर्णय से प्रतिश्रुत हू। लेकिन निजी तौर पर मेरा विचार है कि भूख हडताल के बारे मे काग्रेस का आदेश जारी करना उचित नहीं होगा। यदि जतीन के आत्मदाह के बाद कोई व्यक्ति ऐसा ही तरीका अपनाता है तो यह समझना चाहिए कि उसने ये कदम सोच समझ कर उठाया है और उसे ऐसा करने से नही रोका जाना चाहिए।

जतीन दास और सतीन सेन जैसो के बलिदान जो कि उन्होने मानवता की भलाई के लिए किए है, कभी व्यर्थ नहीं जाएगे और यहा तक कि ईसाई भी इसके कायल होगे। गुलामी की यह टीस जिसने जतीन दास और सतीन सेन को प्रेरित किया हममे से प्रत्येक के भीतर उभरनी चाहिए।

श्री जे० एम० सेनगुप्ता से अपील

10 अक्टूबर, 1929

श्री जे० एम० सेनगुप्ता पिछले कुछ समय से मेरे तथा साथ-साथ बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी की कार्यकारी परिषद पर निजी और सार्वजनिक रूप मे आक्रमण करते रहे है। मने सोद्देश्य रूप से इसके उत्तर मे अब तक कुछ नहीं कहा है। क्योकि मै महसूस करता हू कि इस विवाद को प्रेस और मच के बीच ले जाना उचित नहीं होगा। लेकिन उनके अभी हाल ही के कथन सुनने के बाद अब अधिक समय तक चुप रहना मेरे लिए असभव हो गया है। विशेष रूप से तब जब कि श्री सेनगुप्ता शालीनता की मर्यादाओ को लाघ चुके है।

श्री सेनगुप्ता और उनके गुट की प्रचारात्मक गतिविधियो के बारे मे ऐसा बहुत कुछ है जो मै कहना चाहता हू। लेकिन इन बातो को मैं किसी बाद के अवसर के लिये बचाए रखूगा। फिलहाल मै "जतींद्रनाथ दास स्मारक समिति" तथा चित्तगोग विवाद के सबध मे उनकी टिप्पणियो का हवाला देना चाहूगा।

महान शहीद का एक उपयुक्त स्मारक बनाने के बारे मे कदम उठाने हेतु बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी परिषद की एक बैठक उचित पूर्व सूचना के बाद बुलाई गई। इस सस्था के सदस्य होते हुए भी श्री सेनगुप्ता ने इस बैठक मे उपस्थित होने की परवाह नहीं की हालाकि उनके दो साथी बैठक मे आए। मैंने बैठक की अध्यक्षता की थी और मुझे भलीभाति याद है कि कमेटी के गठन से सबधित सभी सुझाव कार्यकारी परिषद् ने स्वीकार कर लिये थे। बैठक मे यह आम समझ भी उभरी थी कि यदि बाद मे दूसरे नाम सुझाये जाते है तो उन्हे भी शामिल कर लिया जायेगा।

बैठक समाप्त हुए अभी आधा घटा भी नहीं बीता था कि बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के सचिव श्री किरण शकर राय के पास श्री सेनगुप्ता के घर से टेलीफोन आया और बताया गया कि श्री सेनगुप्ता समिति मे नहीं रहना चाहते और वे दूसरी सुबह के अखबारो मे अपना नाम नहीं जाने देना चाहते। लगभग उसी समय "फ्री प्रेस" के सम्पादक को टेलीफोन पर श्री सेनगुप्ता का एक सन्देश मिला। का क के सचिव ने उत्तर मे कहा कि कार्यकारी परिषद द्वारा निर्वाचित सदस्य का नाम हटाने का अधिकार उनके पास नहीं है। मैं नहीं समझता कि जल्दबाजी मे यह निर्णय लेने से पहले श्री सेनगुप्ता समिति के सदस्यो के नामो से परिचित भी थे और स्मारक समिति के कार्य की शर्तो को भी जानते थे या नहीं। बहरहाल हम सबके लिए यह आश्चर्य की बात थी उनके समान स्थिति वाला एक नेता इस तर्ज पर आचरण कर सकता है।

जल्दी ही श्री सेनगुप्ता को अपनी भूल का अहसास हो गया। कुछ दिन बाद उन्होंने मुझे लखनऊ से तार भेजकर बताया कि वे समिति के साथ सहयोग करेगे लेकिन इस बात पर खेद प्रकट किया कि वे समिति के सदस्य के रूप मे कार्य करने मे असमर्थ हैं।

श्री सेनगुप्ता ने सभवत अब यह महसूस किया है यह स्थिति अतर्विरोधपूर्ण है और अब वे समिति की सदस्यता से मुक्त होने के कारण ढूढ रहे हैं। इस माह की 11 तारीख के "वसुमति" मे उन्होने कहा है –"समिति के सदस्य के रूप मे कार्य करने को लेकर मेरी अनिच्छा के अनेक कारणो मे से एक महत्वपूर्ण कारण यह है कि यह मात्र चदा एकत्र करने वाली समिति नहीं है बल्कि यह एक ऐसी समिति है जिसे एकत्र राशि को खर्च करने का अधिकार भी है।" मैं श्री सेनगुप्ता को सूचित करता हू कि वे जिस समिति की बात कर रहे हैं उसे यह निर्णय करने का अधिकार नहीं है कि एकत्र राशि को किस तरह खर्च किया जाये।

श्री सेनगुप्ता जिस अदाज मे आगे कहते हैं वह उन जैसे नेता से सगति नहीं रखता–"बगाल के मेरे पिछले निजी अनुभवो को देखते हुए और सार्वजनिक धन को खर्च करने के दायित्व को निभाने की मेरी असमर्थता को देखते हुए मैं ऐसी समिति मे नहीं रहना चाहता जो जनता की ओर से धन खर्च करने का दायित्व सभाले हुए है।" यदि सेनगुप्ता मे पर्याप्त साहस और निर्भीकता है तो मैं निवेदन करना चाहूगा कि वे इस प्रकार के छल-कपट मे लिप्त न हो बल्कि एकदम खुलकर बोले। और यदि सचमुच मे वे ये मानते हैं कि सार्वजनिक धन को खर्च करने के दायित्व को निभाने मे असमर्थ हैं, मुझे आश्चर्य है कि वे एक निगम के प्रमुख कैसे बने रहे जो दो करोड रुपये वार्षिक खर्च करता है।

श्री सेनगुप्ता के मन मे अखिल चद्र दत्त योगेद्र चद चक्रवर्ती और विजयकृष्ण बोस के प्रति अचानक एक दूरी का भाव जाग्रत हो गया था। यदि वह वास्तव मे यह इच्छा रखते थे कि उन्हे स्मारक समिति का सदस्य होना चाहिए तो फिर वह कार्यकारी परिषद की बैठक मे क्यो नहीं आए और अपने सुझाव क्यो नहीं रखे? इससे आगे जल्दबाजी मे समिति से त्यागपत्र देते समय थोडा विराम लेकर हमसे कुछ पूछ-ताछ की? वे श्री दत्त, चक्रवर्ती और बोस या इनसे कमतर व्यक्तित्व वाले किसी व्यक्ति को समिति का सदस्य बनाने की बाबत अपनी आपत्ति जाहिर करते। मैं कहना चाहूगा कि उपर्युक्त सज्जनो को सदस्यो के रूप मे चुने जाने के विषय मे सेनगुप्ता ने जो तर्क

दिया है वह निर्मूल है क्योंकि चुनी गई समिति विशुद्ध रूप से सग्रह समिति है। (तर्क यह था कि धन की देखभाल बगाल मे मौजूद लोगो के नियत्रण मे रहे) फिर भी मै पूरे अधिकार के साथ यह कह सकता हू कि सर्वश्री दत्त, चक्रवर्ती और बोस जैसे प्रतिष्ठित लोगो को सदस्य के रूप मे चुने जाने पर न कोई आपत्ति थी और न ही कभी होगी।

निष्कर्ष के रूप मे श्री सेनगुप्ता 8 तारीख के "वसुमति" मे कहते है

"क्या कोई निष्पक्ष काग्रेसी है जो ईमानदारी के साथ यह बता सके कि बगाल काग्रेस को मुख्यालय की ग्रुप पालिसी का पालन करने से प्राय हर जिला काग्रेस समिति मे कितने दु खद परिणाम सामने आये।''

इसी लहजे को बरकरार रखते हुए श्री सेनगुप्ता ने कल के "वसुमति' और "अमृत बाजार' पत्रिका मे चित्तगोग विवाद के बारे मे लिखा है –"मै तमाम तथ्यो पर भलीभाति सोच विचार करने के बाद और दायित्व की पूरी भावना के साथ घोषणा करता हू कि इन चद लोगो का अतार्किक रवैया *बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी की कार्यकारी परिषद की उस समूह नीति का परिणाम था जिसने* बगाल के प्रत्येक जिले मे विभाजन विवादो और उपद्रवो को जन्म दिया है।'

मैं नीचे ब० प्र० का० क० की कार्यकारी परिषद की सूची दे रहा हू, जिससे यह स्पष्ट हो जायेगा कि यह सस्था कितनी प्रातिनिधिक है। यह बात याद रखनी चाहिये कि जब नवबर 1928 मे वर्तमान कार्यकारी परिषद को चुना गया था तब श्री सेनगुप्ता और ब० प्र० का० क० के बीच कोई विवाद नहीं था। वह ब० प्र० का० क० की उस बैठक मे उपस्थित थे जिसमे वर्तमान कार्यकारी परिषद को चुना गया था। जैसी की बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी की सामान्य स्वीकृति थी उन्होने भी चुनाव का अनुमोदन किया था। चुनाव के भागीदार होने के नाते उनकी जुबान से कार्यकारी परिषद के गठन की आलोचना शोभा नहीं देती। मै यहा तक कहूगा की श्री सेनगुप्ता को मेरी चुनौती है कि वे कार्यकारी परिषद के सदस्यो की एक सूची तैयार करके दिखाए जो कि अपने चरित्र मे प्रातिनिधिक हो। आगे मैं सेनगुप्ता को याद दिलाना चाहूगा जब उन्होने बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी से आग्रह किया था कि उन्हे एक कार्यकारी परिषद मनोनीत करने का अधिकार दिया जाए जो कि उनके प्रति पूरी तरह वफादार हो। लेकिन वर्तमान कार्यकारी परिषद का चुनाव बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी की पूर्ण बैठक मे हुआ था जिसमे कि श्री सेनगुप्ता और उनके सभी साथी उपस्थित थे।

श्री सेनगुप्ता ने विभाजन विवाद, उपद्रवो आदि का हवाला दिया है जो कि उनके मतानुसार बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी की कार्यकारी परिषद की समूह नीति के द्वारा पैदा किए गये है। क्या मै श्री सेनगुप्ता से पूछ सकता हू कि वे उस दिन को भूल गये जब उनके नेतृत्व के बावजूद गुटो और सभूहो मे टूट कर बिखर गया था और इस प्रात मे दो प्रातीय काग्रेस कमेटियो का दुखद दृश्य पैदा हो गया था। क्या ऐसा उस समय नहीं हुआ जबकि देशबधु की छत्रछाया उन्हे प्राप्त थीं और उन्हे देशबन्धु की भाति ही सपूर्ण शक्ति, प्रभाव और प्रतिष्ठा प्राप्त थी क्या मैं उनसे पूछ सकता हू कि 1925 मे देशबधु से उन्हे कौन सी नीति विरासत मे मिली थी और 1927 मे

उन्होने अपने उत्तराधिकारी को क्या दिया? क्या 1926 और 1927 की तुलना मे बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी का 1928 और 1929 के दौरान का रिकार्ड अलग नहीं दिखाई देता? हालाकि अतिम दो वर्षो मे नेतृत्व बटा हुआ था और बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी को सेनगुप्ता का आर्थिक सहयोग शून्य रहा था।

ऐसे समय मे जबकि हम एक निष्ठुर नौकरशाही से कडी लडाई लड रहे हैं हम अपनी तमाम ताकतो से अपेक्षा करते है कि वे एक दिशा मे एकजुट हो जाये। अतएव मैं हम सब की मातृभूमि के नाम पर श्री सेनगुप्ता से निवेदन करूगा कि वे एक पल के लिये जरा सोचे कि बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी पर सरेआम आक्रमण करते हुए इस प्रात मे काग्रेस सगठन को नीचा दिखाना क्या उनकी दृष्टि मे उचित है? बगाल मे काग्रेस अनेक तूफानो और आक्रमणो को झेल चुकी है, चाहे वे भीतर से रहे हो या बाहर से। लेकिन यह हमारे और सपूर्ण प्रात के लिए दुर्भाग्यपूर्ण होगा यदि श्री सेनगुप्ता अपनी ऊर्जा प्रभाव और योग्यता को बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी पर आक्रमण करने मे खर्च कर दे। इससे विदेशी नौकरशाही के अतिरिक्त किसी का हित नहीं होगा।

सतीन सेन की भूख हड़ताल

सरकार के विश्वासघात की भर्त्सना करते हुए एक बयान, 15 अक्टूबर, 1929

जब मुझे कलकत्ता मे यह चिताजनक समाचार मिला कि बारीसाल जेल मे श्री सतीन नाथ सेन की हालत तेजी के साथ बिगड रही है और किसी भी क्षण उनका अत आ सकता है, मैंने उनके भाई श्री हेमचद्र सेन के जरिए उनके पास सूचना भेजी कि जेल के बाहर उनके तमाम मित्रो और शुभचितक का यह कहना है कि वे उन्हे मिलने का अतिम अवसर दिये बिना मृत्यु का पीछा न करे। मैंने उनसे यह निवेदन भी किया था कि वे अपने आपको कम से कम कुछ दिनो तक और जीवित बनाए रखे जब तक कि हम बारीसाल पहुचकर उनका इटरव्यू न कर ले। सौभाग्य से श्री हेमचद्र सेन उन्हे कुछ आहार ग्रहण करने को राजी करने मे सफल हो गये। इसके परिणामस्वरूप मै जब बारीसाल जेल मे उनसे मिला तब उनके अत के आसन्न खतरे का कोई पता नहीं चला था।

जैसा कि मैं एकाधिक बार कह चुका हू, श्री सतीन नाथ सेन की मुख्य तकलीफ यह थी कि सरकार ने उन मामलो को फिर से उठाकर विश्वासघात किया जो कि पटुआ खाली समझौते के समय खत्म कर दिये गये थे और सरकार ने जब भारतीय दड सहिता की अन्य धाराओ को असफल होते देखा तो सार्वजनिक कार्यकर्ताओ को दडित करने के लिए आपराधिक प्रक्रिया सहिता की बदनाम धारा 110 का इस्तेमाल किया। एक दूसरी तकलीफ थी उनके खिलाफ बनाया गया मारपीट का मुकदमा। अधिकारियो ने श्री सतीन बाबू और उनके साथियो के साथ जो व्यवहार

किया वह निंदनीय और प्रतिशोधात्मक था। उनके रवैये और आचरण की कडी भर्त्सना की जानी चाहिए।

फिर भी मैंने सतीन बाबू को समझाने के भरसक प्रयास किये जबकि उनकी तकलीफे जायज थीं, मैं इस बात से कभी भी सतुष्ट नहीं हुआ कि स्थिति मे सुधार का एकमात्र तरीका उनका भूख हडताल पर बैठ जाना है। यह सच है कि उन्होने भूख हडताल पर बैठने से पहले उन्होंने जनता को उनकी ओर से प्रयास करने का पूरा समय दिया था। उस समय उनका चीजो को अपने हाथ मे लेना उचित ही था जबकि उन्होंने देखा कि कई महीने इतजार करने के बाद भी जनता के आदोलन से कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आ सका है।

लेकिन समूचा प्रात उत्तेजित था और जनता का रोष और असतोष बहुत बढ चुका है उन्हे चाहिए कि वे स्थिति को जनता के हाथो मे सौप दे और भूख हडताल तोड दे। जो व्यक्ति सतीन बाबू को ठीक से जानता है उसे कोई सदेह नहीं है कि वे इतने बहादुर और निर्भीक है कि यदि बलिदान की जरूरत पडती है तो वे हसते हसते मृत्यु को गले लगा लेगे। लेकिन मैंने कहा कि अभी वह अवसर नहीं आया है। उन्हे सतुष्ट करने के लिए मैने उनके सामने दो महत्वपूर्ण बिंदु रखे। पहला भारत मे अंग्रेजी राज के इतिहास मे सरकार द्वारा विश्वासघात कोई पहली घटना नहीं है। इसके विपरीत भारतीयो के मतानुसार भारत मे अंग्रेजी राज का इतिहास सधियों के टूटने का इतिहास रहा है इसके बाद यदि हम सरकार से यह अपेक्षा करते हैं कि वह 1929 मे विश्वासघात नहीं करेगी तो यह एक तरह से उसकी प्रशसा होगी जिसकी कि वह पात्र नहीं है। दूसरे देश की मौजूदा परिस्थितियों मे उनका मृत्यु की ओर अग्रसर होना सिर्फ विदेशी नौकरशाही को मददगार साबित होगा। जब कार्यकारिणी ने सतीन बाबू को अपनी रास्ते का एक काटा समझा तो इस काटे के रास्ते से हट जाने का उसने स्वागत किया।

उनसे बातचीत के दौरान उभरे इन तमाम तर्को का कुछ असर हुआ और सतीन बाबू बडी मुश्किल के साथ भूख हडताल तोडने पर राजी हुए लेकिन उन्होंने साफ कह दिया था कि वे सिर्फ उतना स्वल्पाहार लेगे जिससे वे जीवित बने रहे। फिर निष्कर्ष रूप मे उन्होंने कहा कि यदि जनता का आदोलन उनकी तकलीफो को दूर करने मे नाकाम रहता है तो उन्हे भूख हडताल का रास्ता अपनाने की आजादी होगी। मैने उन्हे आश्वासन दिया कि उनके कष्टो को दूर करने के हर सभव प्रयत्न किये जायेगे।

इन परिस्थितियों के तहत सतीन सेन को अपना उपवास समाप्त करने के लिए राजी किया गया। उन सब के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए जो सतीन सेन के प्रति लगाव महसूस करते है और जिन्होने उनकी ओर से आदोलन किये मै उन्हे याद दिलाना चाहता हू कि श्री सेन की तकलीफे अब भी ज्यो की त्यो बनी हुई हैं। सुनवाई करने वाले मजिस्ट्रेट का निर्णय जो भी रहे लेकिन सतीन सेन के कष्ट निवारण की दिशा मे शातिपूर्ण और वैधानिक कार्यवाहिया जारी रहनी चाहिए। अतएव हमे सकल्प करना चाहिए कि हम श्री सतीन सेन के सम्मान की रक्षा हेतु यथाशक्ति प्रयास करे और आपराधिक प्रक्रिया सहिता के धारा 110 का राजनैतिक उद्देश्य के लिए इस्तेमाल की दुष्प्रवृत्ति पर हमेशा के लिए रोक लगाये।

पंजाब और बंगाल, छात्र और राजनीति

पजाबी छात्र सम्मेलन के लाहौर सत्र मे भाषण
19 अक्टूबर, 1929

पजाब के बहनो व भाईयो

पचनद की पवित्र भूमि मे मेरे प्रथम आगमन के अवसर पर आपने मेरा जो आत्मीयतापूर्ण स्वागत किया है, इस हेतु मे आपका हार्दिक धन्यवाद करता हू। मैं जानता हू कि आपने जो सम्मान मुझे दिया है, मैं उसके कितने योग्य हू? आज मैं यही कामना करता हू कि स्वय को उस दयालुता और अपनत्व के थोडा भी योग्य साबित कर सकू जो यहा मुझे आपसे प्राप्त हुई है।

यहा आपने मुझे कलकत्ता जैसी दूर जगह से भाषण के लिए बुलाया है। यहा मै आपके निमत्रण को सम्मान करने हेतु आपके समक्ष खडा हुआ हू। लेकिन आपने तमाम लोगो मे से मुझे ही क्यो बुलाया? क्या इसलिए कि पूर्व और पश्चिम को अपनी सामान्य समस्याओ के समाधान हेतु परस्पर मिलना चाहिए? क्या इसलिए कि बगाल अग्रेजी शासन के अधीन आने वाला प्रथम राज्य है और पराधीन होने वालो मे पजाब सबसे अतिम है, इसलिए दोनो का मिलना जरूरी है? या इसलिये कि हमारे भीतर कोई चीज सामान्य है और हम आप एक जैसे विचारो के हैं तथा अपने भीतर एक जैसी आकाक्षाए लिए हुए हैं?

नियति का यह कैसा कटाक्ष है कि आपने मेरे रूप मे एक ऐसे व्यक्ति को जो एक बार विश्वविद्यालय से छात्र जीवन मे निष्कासित किया जा चुका था, यहा लाहौर मे छात्रो को सबोधित करने हेतु बुलाया है। क्या आपको इस बात पर आपत्ति होगी यदि हमारे बुजुर्ग यह शिकायत करे कि अब समय अनुकूल नहीं है क्योकि नये-नये विचार दुनिया मे आगे आ रहे है। यदि आपने मुझे मेरे पिछले इतिहास की पूरी जानकारी के साथ आमत्रित किया है तो जो मैं कहने जा रहा हू, आप उसका वास्तव मे पूर्वानुमान कर लेगे।

मित्रो, आप मुझे क्षमा करेगे यदि मैं शुरू मे ही अपने मन मे तरगे लेती हुई कृतज्ञता की भावनाओ को सार्वजनिक रूप से अभिव्यक्त करना चाहू। हो सकता है मेरी अभिव्यक्ति उतनी सशक्त न हो। मैं कृतज्ञ हू कि पजाब, विशेष रूप से पजाब के युवाओ ने जतींद्र नाथ दास और उनके सह-पीडितो की उस समय बहुत सहायता की थी जब वे पजाब की जेलो मे बद थे। पजाब के युवाओ ने उनकी सुरक्षा के जो प्रबध किए, उनके प्रति उत्सुकता और चिता प्रकट की जब वे भूख हडताल पर बैठे तो उनके प्रति सहानुभूति जताई, जतीन के जीते जी और उसकी मृत्यु के बाद भी जो स्नेह और सम्मान दिया गया-ये सब बाते बगाल के लोगो के हृदय मे बहुत गहरे मे समाई हुई हैं।

रक्षा समिति के सदस्यो ने जतीन की जो लाहैर मे सहायता की थी वे उससे सतुष्ट नहीं थे। अतएव रक्षा समिति के सदस्यगण इस महान शहीद की पार्थिव अवशेषो को लेकर कलकत्ता आए और ये अवशेष हमे सौंप दिए। हम भावुक लोग हैं और आपके हृदय की उदारता ने हमे जो स्नेह दिया है वह अकथनीय है। बगाल आभार और कृतज्ञता के साथ वह सब याद रखेगा जो कि पजाब ने उसके बुरे दिनो मे उसे दिया है।

एक दिन डा० आलम जैसे आपके महान नेता ने महान शहीद का हवाला देते हुए कलकत्ता मे कहा था कि जिस तरह सूर्य पूर्व मे उदित होता है और पश्चिम मे अस्त होता है और जिस तरह सूर्यास्त के पश्चात् चद्रोदय होता है और फिर वह पश्चिम से पूर्व की वापसी यात्रा करता है ठीक उसी प्रकार जतीन ने अपने जीवन को जीते हुए मृत्यु का वरण किया। उसने जीवन के आह्लाद के साथ कलकत्ता से लाहौर की यात्रा की और मृत्यु के बाद उसके पार्थिव अवशेष वापस कलकत्ता आ गए वे मात्र एक निर्जीव मिट्टी के रूप मे नहीं बल्कि एक पवित्र, श्रेष्ठ और दैवीय प्रतीक के रूप मे वापस आए। जतीन आज भी मृत नहीं है वह भावी पीढियो को आलोकित करने के लिए एक शुद्ध और स्वच्छ नक्षत्र के रूप मे आकाश मे आज भी जीवित है। वह अपने अमर बलिदान और दिव्य पीडा के रूप मे आज भी विद्यमान है। वह मानवता के पवित्रतम आदर्श और प्रतीक के रूप मे आज भी अस्तित्ववान है। मेरा यह विश्वास है कि उसने अपने आत्मबलिदान के द्वारा न केवल देश के आत्मा को जाग्रत किया है बल्कि उसने दो प्रातो के बीच अमिट सबध बना दिए हैं-एक, जहा उसका जन्म हुआ दूसरा, जहा उसकी मृत्यु हुई अत मुझे आपके इस महान शहर से ईर्ष्या होती है जो कि एक तपस्या क्षेत्र- इस आधुनिक दधीचि की तपोभूमि रहा है।

हम जैसे-जैसे आजादी की सुबह की ओर बढते जा रहे हैं वैसे-वैसे हमारी यातनाओ का पैमाना बढता जा रहा है। ये स्वाभाविक है कि दूसरी जगह के तानाशाहो की तरह अपने हाथ से सत्ता को खिसकते हुए देखकर हमारे शासक भी दिन ब दिन कठोर होते जाए। इस बात से किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि वे धीरे-धीरे सभ्यता के तकाजो को छोड दे और अपने ऊपर से शालीनता का आवरण हटा दे जिससे कि वे जनता के ऊपर खुलकर और निस्सकोच भाव से नूखूनी घूसे से प्रहार कर सके। इस समय पजाब और बगाल मे बडे पैमाने पर दमन चक्र चल रहा है वास्तव मे यह एक बधाई की बात है कि इसके द्वारा हम एक प्रभावशाली तरीके के साथ स्वराज की ओर बढ रहे हैं। इसके विपरीत, देशभक्त नेताओ का निर्माण दमन यातना अवमानना और पीडा के माध्यम से ही होता है इसलिए हमे दमन का हार्दिक स्वागत करना चाहिये और अपने हित मे इसका पूरा उपयोग करना चाहिए।

शायद आपको कुछ ज्ञात होगा कि बगला साहित्य ने स्वय को समृद्ध करने तथा अपने पाठको को समुन्नत करने के उद्देश्य से पजाब के आरभिक इतिहास से कितना कुछ ग्रहण किया है? रवीन्द्रनाथ टैगोर सहित हमारे महान कवियो ने आपके वीरो की गाथाओ पर रचनाए लिखी हैं और उनका गान किया है। इनमे से कुछ आज भी हर बगाली घर मे सुनने को मिल जाएगी। हमारे सतो की वाणियो कर अनुवाद परिष्कृत बगला मे किया जा चुका है। ये वाणिया असख्य बगालवासियो की प्रेरणा का स्त्रोत रही है। इस सास्कृतिक सपर्क का दूसरा रूप राजनीतिक क्षेत्र मे दिखाई देता है। हम देखते हैं कि हमारे और आपके "राजनीतिक तीर्थयात्री' केवल भारत की जेलो मे ही नहीं बल्कि दूरस्थ बर्मा और समुद्र पार अडमान के जगलो मे भी एक दूसरे से मिलते रहे हैं।

मित्रो, मैं इस बात के लिए खेद नहीं जता पाऊगा कि मै अपने इस भाषण मे राजनीतिक प्रश्नो और उनके समाधान के तरीको पर ज्यादा बल दे रहा हू। मैं जानता हू कि हमारे देश मे ऐसे लोग भी हैं-यहा तक कि कुछ प्रतिष्ठित लोग भी उनमे शामिल हैं जो ये सोचते हैं कि एक

"गुलाम देश की कोई राजनीति नहीं होती" और विद्यार्थियो को राजनीति से कोई लेना देना नहीं होना चाहिए। लेकिन मेरे विचार से एक गुलाम देश के पास और कुछ नहीं सिर्फ राजनीति ही होती है। एक पराधीन देश की समस्याओ का गहराई से विश्लेषण किया जाए तो अपने अतिम रूप मे वे राजनीतिक समस्याए प्रतीत होंगी जैसे कि स्वर्गीय देशबधु सी० आर० दास कहा करते थे–जीवन सपूर्ण होता है– अतएव आप राजनीति को अर्थशास्त्र या शिक्षा से अलग नहीं कर सकते। मानवीय जीवन को खानो मे नहीं बाटा जा सकता। राष्ट्रीय जीवन के सभी पक्ष परस्पर अतर्सम्बद्ध हैं और तमाम समस्याए परस्पर अतर्ग्रथित हैं। इस हालत मे एक पराधीन जाति मे तमाम दोषो और त्रुटियो की जडे राजनीतिक कार्य मे खोजी जा सकती हैं। यह राजनीतिक कार्य है हमारी राजनीतिक गुलामी। इसके बाद विद्यार्थी हमारी राजनीतिक मुक्ति को प्राप्त करने की मूलभूत समस्या की ओर से आखे बद नहीं रख सकते।

मैं यह बात नहीं समझ पा रहा कि यदि सामान्य राष्ट्रीय कार्य पर कोई प्रतिबध नहीं है तो विशेष रूप से राजनीति मे भागीदारी पर प्रतिबध क्यो लगाया जाना चाहिए। पूरे राष्ट्रीय कार्य पर प्रतिबध लगाने की बात समझ मे आती है लेकिन सिर्फ राजनीतिक कार्य पर प्रतिबध को कोई अर्थ नहीं है। यदि एक पराधीन देश मे सभी समस्याए मूलभूत रूप से राजनीतिक समस्याए हैं तब सभी राष्ट्रीय गतिविधिया अपने चरित्र मे राजनीतिक होगी। किसी स्वतत्र देश मे राजनीति मे भागीदारी पर कोई प्रतिबध नहीं है–इसके विपरीत विद्यार्थियो को राजनीति मे उतरने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। यह प्रोत्साहन जानबूझकर इसलिए दिया जाता है कि विद्यार्थी वर्ग के बीच से ही राजनीतिक चितक और राजनेता उभर कर आते हैं। यदि भारत मे छात्र राजनीति मे सक्रिय भाग नहीं लेगे तो हम अपने राजनीतिक कार्यकर्ता कहा से चुनेगे और हम उन्हे प्रशिक्षण कहा देगे। इससे भी आगे यह स्वीकार करना चाहिए कि चरित्र के विकास और मनुष्यता के लिए राजनीति मे भागीदारी परम आवश्यक है। क्रियाविहीन विचार से चरित्र निर्माण सभव नहीं है। इस कारण चारित्रिक विकास के लिए स्वस्थ राजनीतिक सामाजिक कलात्मक आदि गतिविधियो मे शिरकत आवश्यक है। विश्वविद्यालयो का लक्ष्य सिर्फ किताबी कीडे स्वर्ण पदक विजेता और आफिस क्लर्को को पैदा करना नहीं है बल्कि ऐसे चरित्रवान व्यक्तियो को निर्माण करना है जो जीवन के विविध क्षेत्रो मे अपने देश को महान बनाते हुए स्वय महान हो जायेगे।

इस समय देश भर मे एक सच्चे छात्र आदोलन के उदय को उत्साहजनक लक्षण कहा जा सकता है। मैं इस आदोलन को व्यापक युवा आदोलन के एक चरण के रूप मे देखता हू। आज का यह छात्र सम्मेलन पिछले दशक की छात्र गतिविधियो से बहुत भिन्न है। सामान्यतया पहले ये गतिविधिया सरकारी देख-रेख मे होती थीं। प्रवेश द्वार के बाहर यह वाक्य लिखा रहता था – 'यहा राजनीति पर चर्चा नहीं होगी"। इन सम्मेलनो की तुलना भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के उन आरभिक सत्रो से की जा सकती है। जहा पहला प्रस्ताव सम्राट के प्रति अपनी वफादारी जताने के सबध मे पारित किया जाता था। हम सौभाग्य से न केवल भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस मे बल्कि छात्र आदोलन मे भी इस मजिल को पार कर चुके हैं। आज के छात्र सम्मेलन तुलनात्मक रूप से खुले वातावरण मे होते हैं और इनमे भागीदारी करने वाले जैसा चाहते हैं विचार विमर्श करते हैं। सिर्फ भारतीय दड सहिता के प्रतिबधो का ध्यान रखना पडता है।

आज के युवा आदोलन मे वर्तमान परिदृश्य को लेकर असतोप और बेचैनी का भाव है उसमे चीजो को एक नये और ज्यादा बेहतर रूप मे देखने की तीव्र आकाक्षा है। दायित्व बोध और एक आत्मनिर्भरता का भाव इस आदोलन को विस्तार प्रदान करता है। आज का युवा इस बात मे सतुष्ट नहीं है कि सपूर्ण दायित्व वरिष्ठ लोगो को सौंप दिए जाए। उसके बजाय वे महसूस करते है कि बुजुर्ग पीढी की तुलना मे देश और देश के भविष्य को सबध नई पीढी से ज्यादा है और इसलिए उनका यह अनिवार्य कर्तव्य है कि वे अपने देश के भविष्य के सपूर्ण दायित्व स्वीकार करे और स्वय को इस दायित्व निर्वाह के योग्य बनाये। व्यापक युवा आदोलन के एक चरण के रूप मे छात्र आदोलन भी ठीक वैसे ही दृष्टिकोण मनोविज्ञान और लक्ष्य से प्ररित है।

आज का छात्र आदोलन ऐसे दायित्वशील और गतिशील युवक-युवतियो को आदोलन नही है जो व्यक्तित्व और चरित्र-निर्माण के आदेश से प्रेरित हो इस आदर्श के रहते हुए ही देश का कार्य अधिक प्रभावशाली ढग से किया जा सकता है। इस आदोलन की दो प्राथमिकताए है या होनी चाहिए। पहले, इसे विशेष रूप से सिर्फ विधार्थी वर्ग की समस्याओ को समझना चाहिए और उनके शारीरिक, बौद्धिक एव नैतिक विकास हेतु प्रयत्नशील होना चाहिए। दूसरे भविष्य के नागरिक के रूप में उन्हे जीवन सग्राम मे उतरने योग्य बनाने का प्रयास करना चाहिए। इस हेतु उन्हे उन समस्याओ और गतिविधियो से वाकिफ कराना जरूरी है जिनका कि उन्हे भावी जीवन मे प्रवेश करते समय सामना करना पडेगा।

छात्र आदोलन के पहले पक्ष का, जिसकी ओर मैंने अभी सकेत किया है सत्ता और प्रभुत्व वर्ग द्वारा विरोध नहीं हो सकता लेकिन आदोलन के दूसरे पक्ष को कई बार हतोत्साहित और नष्ट-भ्रष्ट करने की कोशिश की जा सकती है। यह बताना मुझे जरूरी नहीं लगता कि आदोलन की पहली मद मे आपको क्या करना चाहिए? यह कुछ तो आपकी आवश्यकताओ और न्यूनताओ पर निर्भर करता है तथा कुछ इसका सबध शिक्षा अधिकारियो द्वारा इन आवश्यकताओ और न्यूनताओ को पूरा करने के प्रयत्नो से है। हर विधार्थी को एक स्वथ्य शरीर सुदृढ चरित्र और नई सूचनाओ व गतिशील विचारो से मुक्त मस्तिष्क चाहिए। यदि अधिकारीगण विधार्थियो के शारीरिक चारित्रिक और बौद्धिक विकास की उचित व्यवस्था नहीं कर पाते हैं तो यह व्यवस्था आपको करनी होगी। यदि अधिकारी गण इस दिशा में किये गये आपके प्रयत्नो मे सहयोग करते हैं तो बेहतर है। न भी करे तो उन्हे छोडिए, आप अपने रास्ते पर आगे बढिए। आपका जीवन अपना है। इसे विकसित करने का दायित्व किसी दूसरे से ज्यादा आप स्वय का है।

इस सिलसिले में मेरा एक सुझाव है जिसकी ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूगा। मेरी इच्छा है कि हमारे छात्र सघ अपने-अपने कार्यक्षेत्र मे केवल विधार्थियो के लाभार्थ सहकारी स्वदेशी स्टोर कायम करे। यदि ये स्टोर विधार्थियो द्वारा ठीक तरह से चलाये जाते हैं तो इनसे दोहरा मतलब हल होगा। इससे एक ओर जहा विधार्थियो को स्वदेशी वस्तुए सस्ते दामो पर उपलब्ध होगी साथ ही गृह उधोगो को प्रोत्साहन मिलेगा। वहीं दूसरी ओर इससे हमारे विधार्थी सहकारी स्टोर चलाना सीखेगे और लाभ के रूप मे प्राप्त राशि को छात्र कल्याण के कार्य मे खर्च कर सकेगे। शारीरिक सस्कृति सभाए, जिम्नाजियम, अध्ययन वृत्त, पत्रिकाए, सगीत क्लब,

पुस्तकालय और वाचनालय तथा समाजसेवी संस्थाए आदि छात्र कल्याण के कार्य को आगे बढाने मे सहायक हो सकती हैं।

छात्र आदोलन का एक अन्य और सभवत अधिक महत्वपूर्ण पक्ष भावी नागरिको को प्रशिक्षण देना है। यह प्रशिक्षण बौद्धिक और शारीरिक दोनो प्रकार का होगा। हमे विद्यार्थियो के समक्ष एक आदर्श समाज की झलक रखनी होगी जिसे कि अपने जीवन-काल मे ही साकार करने की कोशिश उन्हे करनी चाहिए। ठीक इसी समय उनके लिए एक कार्यक्रम भी तैयार किया जाना चाहिए जिस पर वे अपनी योग्यतानुसार अमल कर सके ताकि एक विद्यार्थी के रूप मे कार्य करते हुए वे विश्वविद्यालय के बाद के कैरियर हेतु स्वय को तैयार कर सके। इस प्रकार की गतिविधियो मे अधिकारियो से टकराव की सभावना बनी रहती है। लेकिन इस टकराव का होना या न होना शैक्षिक अधिकारियो के नजरिए पर निर्भर करता है। यदि दुर्भाग्य से यह टकराव होता है तब इसका कोई चारा नही है और विद्यार्थियो को यह मन बना लेना चाहिए कि वे निर्भीक एव स्वावलम्बी बने तथा विश्वविद्यालय के बाद के जीवन के लिए विचार और क्रिया के माध्यम से अपने-आपको तैयार करे।

इससे पहले कि मैं आदर्श विषयक अपनी धारणा से आपको अवगत कराऊ जिसे हमे अपने हृदय मे सजोना है मैं आपकी इजाजत से थोडा विषय से हटकर अपनी बात कहना चाहता हू जो एकदम अप्रासगिक नही होगी। ऐसा कौन-सा एशियावासी होगा जिसे यूरोप के पैरो मे एशिया को गिरा देखकर दुख न हो? लेकिन आप इस ख्याल को मन से निकाल दे कि एशिया की यह हालत सदा से ऐसी ही थी। आज यूरोप मालिक है लेकिन एक जमाना था जब एशिया मालिक था। इतिहास बताता है कि प्राचीन काल मे एशिया ने यूरोप के बडे भाग पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था और उन दिनो यूरोप को एशिया का डर बना रहता था। अब हालत बदल गये हैं लेकिन भाग्य चक्र अब भी घूम रहा है और निराशा की कोई बात नहीं है। एशिया फिलहाल दासता का जुआ उतार कर फेकने की कोशिश मे है और वह दिन दूर नहीं जब अतीत के अधकार के बीच से एक सशक्त एव गौरवशाली नये एशिया का उदय होगा और स्वतत्र राष्ट्रो की सभा मे उसे एक सम्मान जनक स्थान प्राप्त होगा।

इस शाश्वत पूर्व को कभी-कभी पश्चिम के लोगो द्वारा रूढिवादी कह कर ठीक वैसे ही कलकित किया जाता रहा है जैसे कि एक समय तुर्की को एशिया का बीमार आदमी कहा जाता था। लेकिन यह बात सपूर्ण एशिया या अकेले तुर्की पर लागू नहीं होनी चाहिए। आज जापान से लेकर तुर्की और साइबेरिया से लेकर श्रीलका तक समूचा पूर्व गतिशील है। जहा परिवर्तन होगा वहा प्रगति होगी। वहा प्रथा, सत्ता और परम्परा से सघर्ष होगा। पूर्व तब तक रूढिवादी रहेगा जब तक वह रहना चाहेगा लेकिन एक बार जब उसकी जडता टूटी तो वह पश्चिमी राष्ट्रो से भी ज्यादा रफ्तार के साथ प्रगति करेगा। यह है, जो आजकल एशिया मे हो रहा है।

हमसे कभी-कभी पूछा जाता है कि जो गतिविधिया और आदोलन एशिया-विशेष रूप से भारत मे हो रहे हैं, क्या इन्हे वास्तविक जीवन के लक्षण कहा जा सकता है? अथवा ये आदोलन बाह्य

उत्तेजक तत्वो के प्रति एक सामान्य प्रतिक्रिया भर है? हमे यह निश्चय करना होगा कि ये आदोलन निर्जीव मासपेशियो की थिरकन भर नहीं है। मेरा विचार है कि रचनात्मक गतिविधि जीवन का स्वाद देती है और जब हम पाते हैं कि हमारे आज के आदोलन मौलिक और रचनात्मक प्रतिभा से मुक्त हैं तो हम वाकई एक राष्ट्र के रूप मे जीवित है तथा हमारे राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे दिखाई देने वाला नया उभार सही मायनो मे पुनर्जागरण है।

वर्तमान भारत मे हम विचारो के एक भवर मे फसे हुए है। सभी दिशाओ से असख्य धाराए प्रतिधाराए और अतर्धाराए बहती जा रही है। विचारो का एक विचित्र तालमेल चल रहा है एक भ्रमात्मक स्थिति पैदा हो गयी है। इस भ्रम के रहते हुए एक आम आदमी के लिए सभव नहीं है कि वह अच्छे-बुरे और सही-गलत विचारो मे भेद कर सके।

यदि हमे अपने देश का कायाकल्प करना है और उसे सही मार्ग पर आगे बढाना है तो हमे अपने लक्ष्य और उस लक्ष्य तक पहुचाने वाले मार्ग की स्पष्ट पहचान होनी चाहिए।

भारतीय सभ्यता अधकार युग से अभी-अभी उभरी है और अब एक नये जीवन मे प्रवेश कर रही है। एक समय था जब कि यह खतरा बना हुआ था कि कहीं फोनेशिया और बेबीलोन की भाति इस सभ्यता का भी अत न हो जाये। लेकिन इसने समय के आघातो को सहकर प्राणशक्ति को बचाये रखा। यदि हम देश के कायाकल्प की प्रक्रिया को जारी रखना चाहते हैं तो हमे अपने विचारो की दुनिया मे क्राति लानी होगी और जैविक स्तर पर रक्त का परस्पर मिश्रण करना होगा। हमे इतिहास की आवाज और मर फ्लिडर्स पैट्रिक जैसे विचारको की राय को स्वीकार करना पडेगा कि केवल इसी तरीके से पुरानी और थकी-मादी सभ्यताओ को नया जीवन प्रदान किया जा सकता है। यदि आपको मेरे विचारो से इत्तिफाक नहीं है तो आप सभ्यताओ के उत्थान-पतन के नियमो को अपने निजी प्रयासो से खोजिए। एक बार इस नियम को खोजने मे सफल हो गये तो हम अपने देशवासियो को यह समझाने मे सक्षम होगे कि इस प्राचीन भूमि पर एक स्वस्थ एव प्रगतिशील राष्ट्र के निर्माण हेतु हमे क्या-क्या करना जरूरी है। यदि हमे वैचारिक क्राति लानी है तो पहले हमे अपने सामने एक आदर्श रखना होगा जो कि हमारे जीवन-पथ को आलोकित करेगा। यह आदर्श है स्वतत्रता। स्वतत्रता एक ऐसा शब्द है जिसकी अनेक अर्थ-छविया हैं। यहा तक कि हमारे देश मे स्वतत्रता की धारणा मे विकास की प्रक्रिया रही है। स्वतत्रता से मेरा अभिप्राय सर्वागीण *स्वतत्रता से है। उदाहरण के लिए व्यक्ति के साथ-साथ समाज के लिए स्वतत्रता पुरुष के साथ साथ* स्त्री के लिए स्वतत्रता अमीर के साथ-साथ गरीब के लिए स्वतत्रता सभी व्यक्तियो और वर्गो के लिए स्वतत्रता। इस स्वतत्रता मे सिर्फ राजनीतिक दासता से मुक्ति निहित नहीं है बल्कि इसमे धन का समान वितरण जाति व्यवस्था तथा सामाजिक विषमताओ का अत साप्रदायिकता और धार्मिक असहिष्णुता का उन्मूलन भी शामिल है। चतुर स्त्री-पुरुषो को यह आदर्श अव्यावहारिक सा प्रतीत हो सकता है लेकिन केवल यही आदर्श आत्मा की भूख को शात कर सकता है।

हमारे राष्ट्रीय जीवन की भाति स्वतत्रता के भी विविध पक्ष हैं। ऐसे लोग भी हैं जो स्वतत्रता पर बात करते हुए उसके कुछ विशिष्ट पक्षो तक ही सीमित रहते हैं। स्वतत्रता की सकीर्ण धारणा

से मुक्त होने और सपूर्ण व व्यापक धारणा तक पहुचने मे हमे कई दशक लगे हैं। यदि हम वास्तव मे स्वतत्रता से प्रेम करते हैं और सिर्फ स्वार्थ पूर्ति के लिए बल्कि सच्चे मन से प्रेम करते हैं तब यह बात हमे स्वीकार कर लेनी चाहिए कि सच्ची स्वतत्रता के मायने न केवल व्यक्ति को बल्कि सपूर्ण समाज को सभी प्रकार के बधनो से मुक्त कराना है। मेरी समझ से यह हमारे युग का आदर्श है, पूर्ण रूपेण स्वतत्रता और मुक्त भारत के इस स्वप्न पर मेरी आत्मा मुग्ध है।

स्वतत्रता प्राप्त करने का एकमात्र तरीका यह है कि हम एक स्वतत्र व्यक्ति की तरह सोचे और महसूस करे। हमारे समाज मे एक पूर्ण क्रांति होनी चाहिए और हमे आजादी की शराब के नशे मे गर्क हो जाना चाहिए। जब हमारे मन मे स्वतत्र होने की इच्छा जाग्रत होगी तब हम सक्रियता के समुद्र मे कूदने के लिए दौड पडेगे। कोई चेतावनी की आवाज हमे रोक नहीं सकेगी और सत्य का आकर्षण हमे अपनी लक्ष्य प्राप्ति की ओर प्रेरित करेगा।

मित्रो, अपने जीवन-लक्ष्य को लेकर मैं जो महसूस करता हू, सोचता हू और मेरी मौजूदा गतिविधियो की पीछे जो प्रेरक शक्ति है, इसके बारे मे ही आपको कुछ बताने का प्रयास मैंने किया है। मैं नहीं जानता कि ये बाते आपको आकर्षित करेगी या नहीं। लेकिन एक बात मेरे मन मे बहुत साफ है कि जीवन का एक उद्देश्य है, वह है सभी प्रकार के बधनो से मुक्ति। स्वतत्रता के बाद की भूख आत्मा का एक गीत है और नवजात शिशु की सबसे पहली चीज उन बधनो के खिलाफ एक चीख होती है जिनके बीच वह स्वय को महसूस करता है। आप अपने और अपने देशवासियो के हृदय मे स्वतत्रता की इस लालसा को अकुरित होने दीजिए, मुझे यकीन है कि भारत जल्दी ही आजाद होगा।

यहा तक कि एक अध देशभक्त ठहराये जाने का खतरा उठाते हुए मैं अपने देशवासियो से यह कहना चाहूगा कि भारत के पास पूरा करने के लिए एक मिशन है और इसीलिए आज भारत जीवित है। इस "मिशन" शब्द मे कुछ भी रहस्यवादी तत्व नहीं है। भारत के पास ऐसा बहुत कुछ मौलिक है जो वह विश्व की सस्कृतियो और सभ्यताओ को जीवन के विविध पक्षो मे दे सकता है। आज के अपमानजनक हालात के बीच वह जो योगदान कर पा रहा है, निश्चय की कम है। जरा एक क्षण के लिए सोचिए तब उसका योगदान कितना महान होगा जबकि वह अपने सिद्धातो और अपनी अपेक्षाओ के अनुसार विकास करने के लिए स्वतत्र हो जायेगा।

देश मे कुछ ऐसे लोग भी हैं-उनमे कुछ प्रतिष्ठित और सम्माननीय व्यक्ति भी शामिल हैं, जो स्वतत्रता के सिद्धात को सपूर्ण रूप मे लागू करने के पक्ष मे नहीं है। हमे खेद है कि हम उन्हे खुश नहीं कर सकते लेकिन हम किसी भी स्थिति मे सत्य, न्याय और समानता पर आधारित लक्ष्य को त्याग नहीं सकते। हम अपने मार्ग पर चलेगे। भले ही कोई हमारे साथ आये या न आये। लेकिन एक बात आप निश्चित मानिये कि यदि कुछ लोग हमारा साथ छोड भी देगे तो हजारो-हजार लोग हमारी आजादी की फौज मे शामिल भी होगे। इसलिए हम दासता, अन्याय और असमानता से कोई समझौता न करे। मित्रो, समय आ गया है कि सभी स्वतत्रता प्रेमी अपने-आपको सुखद भ्रातृत्व के एक सूत्र मे बाध ले और आजादी की फौज का निर्माण करे।

यह फौज सिर्फ सिपाहियो को स्वतत्रता की लडाई लडने के लिए नहीं भेजेगी बल्कि स्वतत्रता के मत को प्रचारित करने के लिए मिशनरियो को भी भेजना चाहिए। ये मिशनरी और सिपाही आपके बीच में से ही आने हैं। हमे अपनी कार्यवाही के कार्यक्रम मे एक ओर छोटे और बडे पैमाने पर प्रचार को शामिल करना होगा दूसरी ओर एक देशव्यापी स्वयसेवी सगठन खडा करना होगा। हमारे मिशनरियो को किसानो और फैक्ट्री मजदूरो के बीच जाना होगा और उन्हे यह नया सदेश देना होगा। उन्हे युवाओ को प्रेरणा देनी होगी और देश भर मे युवा सगठन खडे करने होंगे। अतिम लेकिन उतनी ही महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें देश के सपूर्ण नारी समाज को जाग्रत करना है- क्योकि अब नारी को समाज तथा राष्ट्र मे पुरुष की सहभागी के रूप मे अपना स्थान पाने के लिए आगे आना चाहिए।

मित्रो, आज आप मे से अनेक भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस मे शामिल होने का प्रशिक्षण ले रहे होगे। निस्सदेह भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस इस देश का सर्वोच्च राष्ट्रीय सगठन है और इसी पर हमारी आशाए टिकी हुई हैं। लेकिन भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस भी अपनी मजबूती प्रभाव और शक्ति के लिए मजदूर आदोलन, युवा आदोलन, किसान आदोलन, नारी आदोलन और छात्र आदोलनो पर निर्भर करती है या निर्भर करना चाहिए। यदि हम अपने मजदूरो किसानो दलित वर्गो युवाओ और विधार्थियो को मुक्त कराने मे सफल हो गये तब हम देश मे ऐसी ताकत को उभारने मे सक्षम होगे जो भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस को राजनीतिक मुक्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने का सशक्त औजार बना देगी। अतएव यदि तुम प्रभावशाली रूप मे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की सेवा करना चाहते हो तो आपको उन आदोलनो को आगे बढाना होगा जिनका कि मैने अभी जिक्र किया है।

चीन हमारा पडोसी है। जरा ताजे चीनी इतिहास के कुछ पन्ने पलट कर देखिए। देखे कि चीनी विधार्थियो ने अपनी मातृभूमि के लिए क्या किया है? आधुनिक चीन मे पुनर्जागरण अधिकाशत वहा के छात्र-छात्राओ की गतिविधियो के कारण सभव हुआ है। एक ओर वे स्वतत्रता का नया सदेश सुनाने के लिए गाव कस्बो और फैक्ट्रियो मे गये। दूसरी ओर उन्हे इस सिरे से लेकर उस सिरे तक समूचे देश को एक सूत्र मे बाध दिया। हमे भारत मे ठीक यही करना होगा। स्वतत्रता पाने का कोई शाही रास्ता नहीं है। निस्सदेह स्वतत्रता का मार्ग कटकाकीर्ण है लेकिन यह वह मार्ग है जो गौरव और अमरत्व तक भी पहुचायेगा। हमें अतीत से मुक्त होना है हमे युगो-युगो की बेडियो को तोडना है और सच्चे तीर्थयात्रियो की भाति कधे से कधा मिलाकर स्वतत्रता के लक्ष्य की ओर अग्रसर होना है। स्वतत्रता का अर्थ है जीवन और स्वतत्रता के प्रयासो मे मृत्यु का अर्थ है शाश्वत और सर्वोच्च गौरव। आओ, हम स्वतत्र होने या कम से कम स्वतत्रता के प्रयास मे आत्मोत्सर्ग करने का सकल्प करे, हम अपने आचरण एव चरित्र से यह प्रदर्शित करे कि हम महान शहीद यतींद्रनाथ दास के देशवासी होने के योग्य हैं।

वदे मातरम

पंजाब के युवकों से अपील

लाहौर, 24 अक्टूबर 1929

मै जबकि लाहौर मे हू, मैं अपने पजाब के युवा मित्रो से पूरे जोर के साथ अपील करना चाहूगा कि ऐसे समय मे जबकि उनके अनेक देशभक्त साथी जेलो मे बद हैं वे अपने कर्तव्य के बारे मे सोचे। यदि वे पीडित हैं तो हमारी खुशहाली के लिए हैं, यदि उनकी मृत्यु हो जाती है तो उनके इस बलिदान से हम एक स्वतत्र मनुष्य के रूप मे जी सकते हैं। यदि वास्तव मे हम उनसे प्रेम करते हैं और उनके त्याग और कष्टो के लिए उनका आदर करते हैं तो हमारा परम कर्तव्य है कि हम देश के कार्य मे प्राण-पर्ण के साथ जुट जाये।

सरकार की दमन नीति पूरी गति से जारी है और वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति मे सफल भी हो जायेगी यदि पजाब के युवा तत्काल नहीं जागेगे। इस दमन नीति का माकूल जवाब यह है कि युवा लोग सरकार को जता दे कि एक कार्यकर्ता यदि जेल भेजा जाता है तो उसकी जगह काम करने के लिए हजारो लोग तैयार है। विद्यार्थियो पर इस बात की बडी जिम्मेदारी है क्योकि वे युवाओं मे सबसे अग्रणी हैं।

यदि कालेज अधिकारी या सरकार विद्यार्थियो के स्वयसेवी बनने के मार्ग मे बाधा डालते हैं, मैं समझता हू इन बातो को नजरअदाज करना विद्यार्थियो का पवित्र कर्तव्य है और उन्हे निर्भीकता के साथ अपना दायित्व निर्वाह करना चाहिए। दूसरे देशो के भांति भारत के विधार्थियो को भी देश की सेवा करने और राजनीति मे सक्रिय भाग लेने का अधिकार है। यह उनका जन्मसिद्ध अधिकार है और उन्हे इस अधिकार से वचित नहीं किया जा सकता। मै युवाओ से विशेष रूप से विधार्थियो से पूरे जोर के साथ अपील करूगा कि हजारो की सख्या मे स्वयसेवको मे अपना नाम लिखा दे।

उन्हे स्वयसेवी प्रशिक्षण का कोर्स पूरा करना चाहिए और जब काग्रेस की सभा हो तो अनुशासन और सक्षमता के साथ काम करना चाहिए। इसमे कोई सदेह नहीं कि काग्रेस अधिवेशनो के सफलता बहुत कुछ स्वयसेवी दल की सक्षमता और अनुशासन पर निर्भर करती है। वीरता की इतनी गौरवशाली परपरा के रहते हुए पजाब के युवाओ को एक सक्षम स्वयसेवी दल का निर्माण करना कोई मुश्किल नहीं है। सिर्फ प्रयत्न करने की जरूरत है। दिसबर का अतिम सप्ताह कोई ज्यादा दूर नहीं है। अतएव, विद्यार्थियो को भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की सेवार्थ स्वयसेवी के रूप मे सामने आकर अपने बदी नेताओ और अमर शहीदो के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि अर्पित करना है।

सेवा दल की सहायता के लिए अपील

लाहौर, 24 अक्टूबर, 1929

स्वयसेवियो के चयन और प्रशिक्षण का अखिल भारतीय सगठन "हिंदुस्तानी सेवा दल" कई वर्षो से काम कर रहा है। इस अवधि के दौरान कार्यक्रम को सहयोग के रूप मे एक अखिल भारतीय स्वयसेवी अधिवेशन आयोजित करने की परपरा रही है। इस वर्ष भी लाहौर मे वार्षिक स्वयसेवी अधिवेशन आयोजित हो रहा है।

देश मे स्वयसेवी सगठनो के कार्य को आगे बढाने के लिए स्थायी मुख्यालय की आवश्यकता पर कोई भारतीय प्रश्नचिह्न नहीं लगायेगा। देश के कुछ निश्चित भागो मे हिंदुस्तानी सेवा दल ने अनेक मूल्यवान कार्य किये हैं। यदि इसके पास कार्यकर्ता और धन अधिक हो तो निश्चित रूप से वह ज्यादा बेहतर काम कर सकता है। दल ने जो प्रशिक्षण शिविर खोले है और कक्षाए शुरू की हैं, इसके लिए धन और कार्यकर्ताओ की जरूरत है। अतएव, यह जनता का कर्तव्य है कि वह इस पवित्र कार्य मे यथाशक्ति सहायता करे।

सेवादल का मुख्यालय बगलौर मे है जहा स्वयसेवको और स्वयसेवक अधिकारियो के प्रशिक्षण का प्रबध है। सेवादल को चाहिए कि वह अपने हाथ के काम को ठीक तरह अजाम दे और जहा स्वयसेवी सगठन नहीं है वहा इनकी शुरूआत करे। अतएव मै जनता विशेष रूप से युवाओ से अपील करूगा कि वे हिंदुस्तानी सेवादल की हर सभव सहायता करे।

जतींद्र नाथ दास के स्मारक का निर्माण करने की बावत अपील

जतींद्र नाथ दास के जन्म दिवस समारोह मे भाषण, 28 अक्टूबर, 1929

जतींद्र नाथ की बात कहते हुए मुझे अपनी भावनाओ को वश मे करना मुश्किल होगा। फिर भी मुझ पर इस कार्यक्रम की अध्यक्षता का भार है, अत मैं अपना कर्तव्य निभाने के लिए बाध्य हू।

जतींद्र नाथ दास के बलिदान से पजाब के राजनीतिक वातावरण मे एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। यदि हम पजाब के अतीत और वर्तमान की स्थितियो की तुलना करे तो जनता के बीच इस बदलाव के असर को आसानी के साथ महसूस किया जा सकता है। पजाब जो कि कभी साप्रदायिकता का गढ रहा है, साम्प्रदायिक दगो का केन्द्र रहा है, आज साम्प्रदायिक सदभाव, एकता, मेलजोल और अमन की धरती बन गया है। यतींद्र नाथ की शहादत ने इस प्रात के न केवल शिक्षित

वर्गों बल्कि आम लोगो के दिलो मे गहरा असर किया है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अब कोई साप्रदायिकता की बात करने का दुस्साहस नहीं कर सकता। आज समूचे प्रात मे "इन्किलाब जिदाबाद" और "जतींद्रनाथ दास जिदाबाद" के दो नारे सुनाई देते हैं। कभी-कभी मैं स्वय से पूछता हू कि काश बगाल के लोग भी पजाब की जनता की तरह आगे बढते। जतींद्र दास लगभग हमारे साथ ही 1921 ई० असहयोग आदोलन से जुडा था। मुझे याद है 1921 मे वह हमारे साथ था जब हम पूजा से ठीक पहले सासा रोड पर कपडे की दुकानो की पिकेटिंग कर रहे थे। औरो की तरह वह भी जेल भेज दिया गया लेकिन जेल से रिहा होने के बाद भी वह राष्ट्र के कार्य हेतु मैदान मे सक्रिय बना रहा क्योकि उसके हृदय मे जलती हुई देश प्रेम की ज्वाला शात नहीं हुई थी। वह 1925 मे अध्यादेश के तहत फिर से जेल गया। जब हम एक वरिष्ठ सी० आई० डी० अधिकारी से बात कर रहे थे तो बातचीत के दौरान उसने बडे प्रशसात्मक लहजे मे जतींद्र नाथ का जिक्र किया था। उसके बाद के जीवन ने इस प्रशसा को सही साबित किया। कुछ लोग यह कहते है कि यतींद्र ने राजनीतिक पीडितो की दशा सुधारने के लिए बलिदान किया। यह बात आशिक रूप से सत्य को सकती है पूर्णरूप से नही। इसमे कोई सदेह नहीं कि जब जतींद्र नाथ ने भूख हडताल की थी तब उसके सामने राजनीतिक बदियो का बेहतर उपचार का प्रमुख मुद्दा था। लेकिन मै नहीं समझता कि इस मामूली और छोटे से मुद्दे को लेकर एक व्यक्ति जान दे देगा। जब कोई व्यक्ति भूख हडताल पर बैठता है और हालात मे कोई सुधार नहीं नजर आता तब उसके मस्तिष्क मे एक क्रातिकारी परिवर्तन आ जाता है। धीरे-धीरे यह मुद्दा व्यापक बन जाता है। एक स्थिति आती है जब सपूर्ण आत्मा दासता के खिलाफ विद्रोह कर देती है। राजनीतिक बदियो को दिया गया अमानवीय उपचार इसी दासता का एक रूप है। जब आत्मा विदेशी शासन नौकरशाही की नीति के परिणामस्वरूप उत्पन्न दासता के खिलाफ विद्रोह करती है तब एक व्यक्ति दासता और बर्बरता के खिलाफ प्रतिरोध के रूप मे आत्मबलिदान के लिए तैयार हो सकता है। जतींद्र नाथ मे जब यह आतरिक रूपातरण आया तो उसने प्रसन्नता के साथ मृत्यु का वरण कर लिया और जो मन की इस अवस्था तक नही पहुच सके और इस सकीर्ण मुद्दे तक सीमित रहे, वे अतिम कीमत नहीं चुका सके।

शायद आप यह न जानते हो कि जतींद नाथ पहले भूख हडताल पर बैठने का इच्छुक नहीं था। उसने कहा था "भूख हडताल से मे एक दम अनभिज्ञ नहीं हू। आप को इसका कोई अनुभव नहीं है। यदि एक बार मैंने कदम उठा लिया तो कभी पीछे नहीं हटाउगा।" हम जानते है और तमाम दुनिया जानती है कि वह जिस तरह अपने शब्दो पर कायम रहा।

मुझे आश्चर्य है कि उसने यह अति मानवीय शक्ति कैसे अर्जित की? मैंने कलकत्ता की अखिल भारतीय युवा काग्रेस के दौरान कहा था कि हम न तो वन मे तपस्या के माध्यम से स्वतत्रता प्राप्त कर सकते है और न ही आश्रमो मे ध्यान के द्वारा इसे प्राप्त किया जा सकता है बल्कि हम इसे केवल सघर्ष और चुनौतीपूर्ण कार्यवाही के द्वारा पा सकते है। जतींद्र नाथ के जीवन से हम यह सीख सकते है कि आज की हमारी सबसे बडी साधना सघर्ष के माध्यम से मृत्यु पर विजय प्राप्त करना है।

भारतीय राष्ट्रवाद के समूचे नेताओ के सयुक्त प्रयास वह जागृति नहीं ला सके जो कि अकेले उसके आत्मदाह से पैदा हो गई है। साप्रदायिकता की उस चट्टान को जिसे कोई नेता अपनी जगह से हिला नहीं पाया वह एक नौजवान के आत्मबलिदान के प्रभाव से चूर-चूर हो गई।

अब मैं उसके स्मारक के निर्माण के बाबत दो शब्द कहकर अपनी बात समाप्त करता हू। इस कार्य के लिए लगभग दो लाख रुपयो की आवश्यकता है। पूरे बगाल नहीं अकेले दक्षिणी कलकत्ता के लोग इस धनराशि का प्रबध कर सकते हैं क्योकि जतींद्र नाथ की यह जन्मभूमि है। कहना चाहिए कि आवश्यकता पडने पर अकेला दक्षिण कलकत्ता यह प्रबध करेगा। मेरी इच्छा है कि जो राशि पजाब मे एकत्र की जाए वे वहीं रहे। वह एक युवा, विद्यार्थी और स्वयसेवी था और इसलिए युवाओ विद्यार्थियो और स्वयसेवियो से यह आशा की जाती है कि वे कोष के लिए उदारता के साथ योगदान दे। मैंने कालेजो मे देखा है कि विद्यार्थी लोग एक दूसरे से होड लगाकर चदा इकट्ठा कर रहे हैं।

जतीन बगाल स्वयसेवी दल को सगठित करने वालो मे से एक था। उसकी अंतिम इच्छा यह थी कि इस दल को एक मजबूत आधार प्रदान किया जाए। मुझे उम्मीद है यह बात सबको अपील करेगी। उसका दूसरा लक्ष्य था बगाल की स्त्रियो की उन्नति और मुक्ति। इस कार्य मे वह जीवन के अंतिम क्षण तक लगा रहा। मुझे आशा है कि हम लोग उसके राजनीतिक सोच के अनुसार कार्य करने मे यथासभव का प्रयास करेगे।

उपनिवेशवाद का सही चेहरा

लार्ड सभा मे हुई बहस के बारे मे बयान ■ नवम्बर, 1929

जब वायसराय की पहली घोषणा हुई तो इगलैंड के लिबर्ल और कजर्वेटिव सदस्यो ने अपना असतोष और प्रतिरोध व्यक्त किया। इस घटना से हमारे कुछ देशवासी इन नतीजे पर पहुचे कि उन्हे सहयोग का हाथ बढाते हुए लेबर सरकार को मजबूत बनाना चाहिए। लेकिन असतोष का तूफान इतनी तेजी के साथ फैला कि किसी को यह लग सकता था कि यह समूची घटना नासमझी के साथ नियोजित की गई थी। लार्ड सभा मे लार्ड पारमूर के भाषण से उन लोगो को धक्का लगा होगा जो वायसराय की घोषणा मे वह सब कुछ खोजना चाहते थे जो कि उसमे नहीं था।

इस भाषण ने निराधार आशाओ के वातावरण को स्पष्ट करने मे बडी सहायता की। मा बदौलत स्पष्ट रूप से यह कह दिया था कि इस बात की कोई निश्चितता नहीं है कि डोमीनियन दर्जा कब स्वीकृत किया जायेगा। इससे आगे यह बात भी साफ कर दी गई थी कि 1917 की घोषणा मे निहित शर्ते और भारत सरकार अधिनियम 1919 की भूमिका यथावत बहाल रहेगी और बिना किसी फेर बदल के ये सुरक्षित अधिकार बरकरार रहेगे। यह भी निश्चित कर दिया गया था कि लार्ड रीडिग के विचारो तथा लेबर सरकार और कजर्वेटिव व लिबरल पार्टियो के नेताओ के विचारो मे कोई मूलभूत अतर नहीं था।

अंतिम लेकिन उतनी ही महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रस्तावित सम्मेलन सही मायनो मे गोलमेज सम्मेलन नहीं था। साइमन कमीशन के कार्य से सबधित सपूर्ण प्रावधान और जिनका मान्टेग्यु चैम्सफोर्ड सुधारो के समय अनुसरण किया गया, इस सम्मेलन मे उस प्रावधान को कोई तरजीह नहीं दी गई। यह सम्मेलन उक्त प्रावधान के दो उत्तर वर्ती सोपानो के बीच की जगह भरने वाली एक फच्चड साबित हुआ। इस निर्णय का बाध्यता दोनो पार्टियो पर नहीं होगी क्यो कि यह कह दिया गया है कि सम्मेलन के बाद इस मामले को ससद द्वारा निबटाया जाएगा।

मुझे उम्मीद है कि यह सुस्पष्ट वक्तव्य आशाओ के उस मकडजाल को बिल्कुल छाट देगा जो कि हम मे से कुछ लोगो ने पिछले दिनो से अपने आसपास बना रखा था। मैं नहीं जानता कि हमारे नेता लार्ड पारमूर के भाषण को किस रूप मे लेते है। व्यक्तिगत रूप से मैं इसे नेता के वक्तव्य के जवाब के रूप मे लेता हू। अतएव मैं अपनी इसी व्याख्या की रोशनी मे अपने प्रयास जारी रखने का निर्णय लेता हू।

लार्ड इरविन के वक्तव्य का सीधा-सीधा उद्देश्य यह था कि हमारे देशवासियो को किसी प्रकार के सख्त कदम उठाने से रोका जाए और उनके प्रयासो को शिथिल किया जाए। हम सीधे साधे लोगो के मन मे यह आशा जाग उठी कि स्वतत्रता को एक सक्षिप्त मार्ग से प्राप्त किया जा सकता है और इसके लिए कठोर सघर्ष और बलिदान की आवश्यकता नहीं है लेकिन हमे और ज्यादा समय तक आशाओ के स्वर्ग मे नहीं रहना चाहिए। लार्ड पारमूर ने स्थिति की कठोर वास्तविकताओ से हमे परिचित करा दिया है।

अतएव हमे लाहौर मे आजादी के परचम को ऊचा उठाना है। और हमे दुगुनी ऊर्जा के साथ देश की भावी सकट का सामना करने के लिए तैयार करने मे जुट जाना चाहिए।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की कार्यसमिति से त्यागपत्र वापस लेना

कारण स्पष्ट करते हुए एक बयान, 22 नवम्बर, 1929

इलाहाबाद से वापसी के बाद मैने पाया कि कलकत्ता के अखबारो मे नेताओ के सम्मेलन और कार्यसमिति की कार्यवाहियो को लेकर गलत खबरे छपी है। ऐसा इसलिए हुआ कि प्रेस प्रतिनिधियो ने सम्मेलन और समिति के बैठक मे उपस्थित हुए बिना ही उनकी रिपोर्ट देने की कोशिश की। यह बहुत साफ है कि ये खबरे सुनी सुनाई बातो और कल्पना पर आधारित है।

इसी महीने की बीस तारीख के 'स्टेट्समैन" मे एक रिपोर्ट है कि अठारह तारीख की मध्यरात्रि के बाद कार्यसमिति की एक बैठक हुई जिसमे दिल्ली मे कांग्रेस नेताओ की कार्यवाही की सर्वसम्मति से पुष्टि की गई। तथापि मैं नहीं जानता कि अठारह की मध्यरात्रि के बाद कार्यसमिति

की ऐसी कोई बैठक हुई है। कम से कम मैं तो ऐसी किसी बैठको मे उपस्थित नहीं रहा हू। मै अठाहरह तारीख का कार्यसमिति की दो बैठको मे उपस्थित था लेकिन इन दोनो बैठको मे कोई अतिम निर्णय नहीं लिया गया था। इन दो बैठको मे बहसो मे मैने हिस्सेदारी नहीं की थी। क्योकि मै वायसराय की घोषणा के विषय मे अपनी स्थिति पहले ही स्पष्ट कर चुका था। मुझे खेद है कि प्रेस की रिपोर्टो से यह भाव व्यक्त होता है कि मै कार्यसमिति के निर्णय मे भागीदार रहा था। मेरा दृष्टिकोण आज भी वही है जो कि दिल्ली मे था।

कुछ मित्रो ने मुझसे पूछा है कि मैने कार्यसमिति से अपना त्यागपत्र क्यो वापस ले लिया है? यह याद किया जाएगा कि जब श्री निवास आयगर जवाहरलाल नेहरू मन्माहामूर्ति और मुझे कार्यसमिति के लिए चुना गया तब हमे "आजादी वाले" कहा जाता था और यथावत हमें चुन लिया गया। कलकत्ता प्रस्ताव मे भी हमे स्वतत्रता हेतु प्रचारार्थ करने की आजादी दी गई फिर भी जब महात्मा गाधी ने दिल्ली सम्मेलन मे यह कहा कि कार्यसमिति एक केबिनेट की तरह है और सभी सदस्यो पर बहुमत के निर्णय की बाध्यता रहेगी। मैने उनके तर्क की शक्ति को महसूस किया और विचार किया कि कार्य समिति से त्यागपत्र देना बेहतर होगा। त्यागपत्र देने पर मै स्वतत्रता क पत्र मे प्रचार कार्य मकूगा और कार्यसमिति के दूसरे मैम्बरो को अडचन में डाले बिना वायसराय की घोषणा के बारे मे अपने विचार पूरी तरह व्यक्त कर सकूगा। कार्यसमिति की बैठक म जब पडित मोती लाल नेहरू और दूसरे नेताओ ने कहा कि मेरा त्यागपत्र देना जरूरी नहीं है क्योंकि कार्यसमिति मे भिन्न विचार रखने वालो के लिए भी गुजाइश है। और जब पडित जवाहरलाल और मुझसे त्यागपत्र वापस लेने के सबध मे प्रस्ताव पारित हुआ तब मैने महसूस किया कि इस निवेदन को स्वीकार कर लेना उचित होगा। जब तक कार्यसमिति मुझे अभिव्यक्ति और कार्य की आजादी देती है तब तक मेरे इससे अलग होने का कोई कारण नहीं है।

हमारे राष्ट्रीय जीवन मे युवाओ की भूमिका

प्रथम सेट्रल प्राविस युवा सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप मे भाषण,
29 नवम्बर, 1929 नागपुर

सभापति महोदय और मित्रो

आपने सैन्ट्रल प्राविस के प्रातीय युवा सम्मेलन का अध्यक्ष बनाकर मुझे जो सम्मान दिया है इस हेतु मैं आप का धन्यवाद करता हू।

हम अपने राष्ट्रीय इतिहास के एक भीषण दौर से गुजर रहे है। ऐसे मे युवा वर्ग का यह कर्तव्य है कि भविष्य के कार्यक्रमो की रूपरेखा निश्चित करने को लेकर सभी युवाजन एक जुट हो जाए। मुझे यह स्थिति बहुत आशाजनक लगती है कि सैन्ट्रल प्राविस के युवा अपने बडो से मार्गदर्शन की अपेक्षा किये बिना हमारे राष्ट्रीय जीवन की आधारभूत समस्याओ पर विचार करने

हेतु यहा एकत्र हुए है। यदि मै आप के पवित्र उद्देश्य की सफलता मे कुछ सहयोग कर सका तो यह मेरा सौभाग्य होगा।

इस देश मे कुछ ऐसे लोग भी है-इनमे कुछ सम्रात व्यक्ति भी शामिल है-जो आज के युवा आदोलन को कुछ हिकारत की नजर से देखते है या यह दर्शाते है कि वे इस आदोलन के उद्देश्य और महत्व की प्रशसा नहीं करना चाहते। दूसरे वे लोग है जो युवा आदोलन के आतरिक अर्थ को नहीं समझते लेकिन उन्होने इस आदोलन से जुडना सभवत इस भावना के कारण स्वीकार कर लिया कि उनकी भागीदारी के बिना कोई आदोलन नहीं बढना चाहिए।

भारत मे वर्तमान पुनर्जागरण के आरभ से लेकर अब तक अनेक आदोलन और विचारधाराए एक के बाद एक सामने आईं। इस आदोलन के सातत्य मे एक दूसरे आदोलन का अस्तित्व मे आना इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि यह युवा आदोलन समय की एक माग थी। व्यक्ति और राष्ट्र के मन मे एक लालसा रही थी जिसकी सतुष्टि के लिए युवा आदोलन अस्तित्व मे आया। वह मूल भूत लालसा क्या है वह स्वतत्रता और आत्मनिर्भरता की इच्छा है।

आज देश को एक ऐसे आदोलन की जरूरत है जो व्यक्ति और राष्ट्र को सभी प्रकार के बधनो से मुक्त कर सके और साथ ही आत्मनिर्भरता और आत्मभिव्यक्ति की शक्ति प्रदान कर सके। ऐसे लोग भी है जो हमारे युवा सम्मेलनो को भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की पिछली कतारो मे बदलना पसद करेगे। लेकिन ये लोग युवा आदोलन के उद्देश्य और महत्व से अनभिज्ञ है।

भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस प्राथमिक रूप से एक राजनीतिक सस्था है इसलिए इसका क्षेत्र प्रतिबधित है। यहा तक कि राजनीतिक समस्या के सबध मे इसके उद्देश्य को खुलकर व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वे युवक युवतिया जो जीवन को समग्रता मे देखते है और जीवन के हर क्षेत्र मे आबादी चाहते है भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस जैसी विशुद्ध राजनीतिक सस्था से असतोष अनुभव करते है। वे एक ऐसे आदोलन की ओर आकृष्ट होना चाहेगे जो मानव की तमाम लालसाओ और हमारे जीवन की आवश्यकताओ को पूर्ण करने की दिशा मे प्रयासरत है। अतएव इससे ध्वनित होता है कि युवा आदोलन मात्र राजनीतिक नहीं है और गैर राजनीतिक भी नहीं है। जीवन की भाति इसका क्षेत्र भी बहुत व्यापक है जिस प्रकार सपूर्ण मे सभी अश अतर्निहित रहते है उसी प्रकार यह निश्चित समझिये कि युवा आदोलन हमारे राजनीतिक विकास का उत्प्रेरक साबित होगा।

युवा आदोलन वर्तमान व्यवस्था से हमारे असतोष का प्रतीक है। यह युगो-युगो की दासता, बर्बरता और उत्पीडन के खिलाफ युवाओ के सघर्ष को व्यक्त करता है। यह तमाम बेडियो को तोडते हुए और मनुष्य की सर्जनात्मक सक्रियता को विकास के अवसर प्रदान करते हुए एक और नये और बेहतर ससार का निर्माण करना चाहता है। अतएव युवा आदोलन आज के आदोलनो पर अतिरिक्त या वाह्य रूप से आरोपित कोई चीज नहीं है। यह एक सच्चा स्वतत्र आदोलन है। इसकी जडे मानव स्वभाव मे गहरे समाई हुई है।

यह आदोलन इसलिए अस्तित्व मे आया क्यो कि यह समय की माग और मानव मन की लालसा को पूरा करता है या पूरा करने का प्रयास करता है। यदि कोई इस आदोलन के निहितार्थ और उद्देश्य से वाकिफ नहीं है तो सिर्फ आदोलन मे भाग लेकर युवा सघो को हथिया कर कुछ नहीं कर सकता। मेरी समझ से युवक और युवतिया एक युवा मघ कहलाने के पात्र तब तक नहीं हो सकते जब तक कि उनमे युवाओ के चारित्रिक लक्षण न हो। जैसा कि मैं पहले सकेत कर चुका हू कि तमाम युवा आदोलनो का मूल लक्षण मौजूदा व्यवस्था से असतोष है और वे एक बेहतर व्यवस्था चाहते है। उनका उद्देश्य सभी बधनो से मुक्ति दिलाना है और ऐसी प्रथाओ और आधिकारिक शक्तियो के खिलाफ सघर्ष छेडना है जो मानवीय अत करण पर बलपूर्वक पाबदिया लगाती है। उनका लक्ष्य आत्मविश्वास और स्वावलबन है। वे अपने बडो को अधानुकरण नहीं करना चाहते। इन परिस्थितियो मे यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हमारे कुछ वरिष्ठ लोग इन आदोलन को नापसद करते हैं।

युवा आदोलन का उद्देश्य हमारे सपूर्ण जीवन का पुनर्निर्माण और एक नये आदर्श से प्रेरणा लेते हुए कार्य करना है। यही आदर्श हमारे द्वारा निर्मित जीवन को एक नया अर्थ और महत्व प्रदान करेगा। यह आदर्श है-पूर्ण स्वतत्रता। स्वतत्रता और आत्मनिर्भरता मे अन्योन्याश्रित सबध है। स्वतत्रता के बिना आत्मनिर्भरता सभव नहीं है।

युवा आदोलन अपनी प्रकृति मे जीवन की साथ सह अस्तित्व बनाये हुए है। हमारे जीवन की भाति इसके भी विधि पक्ष हैं। यदि हम शरीर को तरुण बनाये रखना चाहते है तो हमे खेलकूद और जिमनास्टिक की जरूरत होगी। यदि हमे मन को मुक्त और पुर्शिक्षित करना है तो हमे एक नये साहित्य उच्चतर शिक्षा तथा नैतिकता की स्वथ्य धारणा की जरूरत होगी। यदि हमे समाज को नया रूप देना है तो हमे रूढविचारो और प्रथाओ के स्थान पर नये और स्वस्थ्य विचारो को आश्रय देना होगा। इससे भी आगे हमे मौजूदा सामाजिक और नैतिक मूल्यो का अपने युगीन आदर्शो के आलोक मे पुनपरीक्षण करना होगा और यथासभव हमे मूल्यों के एक नये मानदड को स्थापित करना होगा जो भविष्य के समाज को शासित करेगा।

यह स्वाभाविक है कि विचार और क्रिया की एक नई दिशा का सधान करते हुए हमे मौजूदा आदर्शो निहित स्वार्थो और सत्ता के विरूद्ध आगे बढना होगा। लेकिन हमे इस बात से भयभीत नहीं होना चाहिए। विरोधियो तथा दूसरी अनगिनत बाधाओ के रहते हुए युवा आदोलन की प्रगति पर बुरा प्रभाव पडेगा। ऐसे मौके भी आयेगे जब हम हर ओर घिरे होगे और हमे लगेगा कि हम शेष दुनिया से कटे हुए हैं। ऐसी मुसीबतो मे आयरलैड के महान देशभक्त के इन शब्दो को याद करना चाहिए जो कि उसने भीषण सकट के दौर मे विजयी भाव से ओतप्रोत हो कर कहे थे-"जिस प्रकार एक व्यक्ति ससार का उद्धार कर सकता है उसी प्रकार एक अकेला व्यक्ति आयरलैंड को बचा सकता है।" युवा आदोलन के प्रतिनिधि के रूप मे जिस क्षण आप जीवन के हर क्षेत्र मे *स्वतत्रता के सिद्धान्त को लागू करेगे उस समय बहुतो को अपना शत्रु भी बना लेगे।* निहित स्वार्थ वाले लोग आप के प्रचार कार्य को ध्वस्त करने के उद्देश्य से एकजुट हो जायेगे। यहा तक कि एक अपराजय शत्रु से एक मोर्चा पर लडना आसान है लेकिन इसके साथ-साथ हर मोर्चे पर

तमाम शत्रुओ से लडना बहुत कठिन है अतएव युवा आदोलन के कार्यकर्ताओ को उन दुरजे शत्रुओ से लडने के लिए तैयार करना होगा जिनका कि राजनैतिक कार्यकर्ताओ को सामना करना पडता है।

युवा आदोलन मे दूसरी कठिनाई भी है। जिसका पूर्वानुमान कर लेना चाहिए और जिसको लेकर हमे पहले से सावधान हो जाना चाहिए एक राजनीतिक आदोलन या मजदूर आदोलन मे आप को एक बडी भीड से वास्ता रखना होगा। इस भीड पर काबू पाने के लिए आप को कभी-कभी हटकर भी काम करना पड सकता है। जनता से अपना सपर्क बनाये रखने के सिलसिले मे किसी मौके पर आप को उसके स्तर तक नीचे उतरना पड सकता है। दूसरी युवा आदोलन मे आप को लोकप्रियता का मोह भी छोडना पडेगा। यदि आप के मन मे ऐसी कोई भावना है किन्हीं मौको पर आप को जनमत तैयार करने या लोकप्रिय भावना के ज्वार को रोकने की जिम्मेदारी उठाना पड सकता है। यदि आप अपने राष्ट्रीय जीवन की आधारभूत समस्याओ का समाधान करने की इच्छा रखते हैं तो आप को अपने समकालीनो से मीलो आगे देखना होगा। आम जनता का मन आज भी मान्यताओ से मुक्त होने और भविष्य के गर्भ मे झाकने के स्थिति मे नहीं है। यदि तुम भविष्य की बुराइयो का पूर्वानुमान करने के उपाय सुझा सकते हो तो कोई कारण नहीं जनता इन्हे अस्वीकार करे। ऐसे मौके पर तुम्हे यह साहस जुटाना होगा कि तुम अकेले खडे हो सको और शेष दुनिया से लड सको। हर समय सस्ती लोकप्रियता के प्रवाह मे बहने वाला व्यक्ति न तो स्वय इतिहास बन सकता है और न ही इतिहास की सृष्टि कर सकता है। यदि हमारे मन मे इतिहास निर्माता बनने की आकाक्षा है तो हमे हर प्रकार की गलत फहमियो का सामना करने और किसी सीमा तक उत्पीडन सहने के लिए तैयार रहना चाहिए। अपने भले से भले काम के बदले अपशब्द सुनने के लिए तैयार रहना चाहिए। अपने निकटतम मित्रो द्वारा हताश किये जाने को लेकर तैयार रहना चाहिए।

लेकिन मानवीय प्रकृति मूलत दैवीय होती है। गलतफहमियो, बुराइयो और उत्पीडनो का समय कुछ लम्बा हो सकता है। लेकिन एक दिन इसका अत होता है। यहा तक कि अपने निष्कपट विचारो के लिए हमे मृत्यु का वरण करना पड सकता है। यद्यपि इस मृत्यु के माध्यम से हम अमरत्व को प्राप्त करेगे अतएव हमे किसी भी आपातकाल के लिए तैयार रहना है। काटो के कारण गुलाब की सुन्दरता तिगुनी बढ जाती है जीवन की भी यही स्थिति है। त्याग, कष्ट और उत्पीडन के अभाव मे क्या जीवन बासी और फीका प्रतीत नहीं होगा।

विस्तार से देखे तो युवा आदोलन के पाच पक्ष हैं-राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, भौतिक और सास्कृतिक इस आदोलन का दोहरा उद्देश्य है एक, इस पाच के विभाजन को समाप्त करना। दूसरे आत्मनिर्भरता और आत्मभिव्यक्ति के प्रयासो को प्रोत्साहित करना। इस प्रकार यह आदोलन अपने चरित्र मे ध्वसात्मक भी है और रचनात्मक भी। नाश की बिना निर्माण सभव नहीं है इसीलिए हम प्रकृति मे हर जगह नाश और निर्माण को साथ-साथ देखते हैं, यदि हम यह सोचते है कि नाश बुरा है और निर्माण अच्छा है और यदि हमारा विश्वास है कि नाश के बिना निर्माण सभव है तो हम बडी गलती पर है यदि हम नाश का अर्थ अत मानते हैं तो भी एक भूल करते है जीवन के

किसी भी क्षेत्र मे स्वतत्रता आदोलन के विस्तार का अर्थ है नाश। कभी-कभी घोर विनाश असत्य पाखड दासता और असमानता से कोई समझौता नहीं हो सकता। यदि हमे इन बेडियो को तोडना है तो कठोर प्रहार करना होगा। जब हमारा कर्तव्य आगे बढता है तो न हमे पलायन करना चाहिए और न पीछे मुडकर देखना चाहिए। यदि हमारे भीतर जीवन है-चिनगारी के रहित मात्र मिट्टी के ढेले नहीं है तो हमे रचनात्मक गतिविधि के साथ-साथ नाश को भी स्वीकार करना होगा।

आज भारत और इसके बाहर चलने वाले अनेक आदोलन अपने चरित्र मे सुधारवादी है। ये आदोलन बिना किसी क्रातिकारी परिवर्तन के हमारे जीवन के किनारो को छू रहे है लेकिन हमे सुधार नही क्रातिकारी परिवर्तन की जरूरत है। हमारे निजी और सामूहिक जीवन का पुनर्निर्माण है। इस नवनिर्माण को सभव बनाने के लिए हमे स्वतत्रता की नई धारणा को स्वीकार करना होगा। देश और काल के अनुसार स्वतत्रता के अर्थ मे परिवर्तन होता रहा है। दूसरे देशो की भाति हमारे देश मे भी स्वतत्रता का अर्थ विस्तार होता रहा है। आज अतिम रूप मे स्वतन्त्र का अर्थ है-पूर्ण मुक्ति। यही व्याख्या युवाओ को अपील भी करती है। अधूरी स्वतत्रता को हम लम्बे समय तक स्वीकार नहीं कर सकते। हमे स्वतत्रता की पूरी खुराक चाहिए और हम इसे जीवन के हर क्षेत्र मे चाहते है। यदि हम स्वतत्रता प्रेमी है तो हम किसी भी दासता और असमानता को सहन नहीं कर सकते। चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र हो या आर्थिक या सामाजिक-हर क्षेत्र मे हम स्वतत्रता के सिद्धान्त को पूर्ण रूपेण लागू करना चाहते है। पुरुष और स्त्री सभी मनुष्य समान पैदा हुए। सबको विकास के समान अवसर मिलने चाहिए-हमारा एकमात्र नारा यही है। यह सिद्धान्त कहने मे जितना सरल है व्यवहार मे उतना ही कठिन है। इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए हमे बडी-बडी कठिनाइयो का सामना करना पडेगा।

मित्रो मैं इस बात का सुझाव करने मे अनावश्यक रूप से अधिक समय नहीं लूगा कि युवा आदोलन के विस्तार मे रुचि रखने वालो को किस प्रकार के कार्यक्रम अपनाने चाहिए। इस आदोलन के सिद्धान्त और उद्देश्यो को स्पष्ट करने के साथ ही मेरा काम पूरा हो चुका है। हमारा एक महत्वाकाक्षी आदर्श है सभवत इतना महत्वाकाक्षी कि यह किसी को भी ग्राह्य हो सकता है। हम अपने सपूर्ण जीवन को रूपातरित करना चाहते है। स्वय अपने लिए और मानवता के लिए एक बेहतर दुनिया का निर्माण करना चाहते है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमे कृतसकल्प होना होगा। यह स्वतत्रता का जादुई स्पर्श है जो हमारे सुषुप्त गुणो को जाग्रत कर देगा और हमारे नैतिक सक्रियता का सचार कर देगा। हम स्वय अपने तथा देशवासियो के मन मे मुक्ति की कामना को कैसे जाग्रत करे। यह हमारी प्राथमिक समस्या है यदि हम अपने हृदय की गहराइयो से स्वतत्रता की पुकार लगाते है तो हमे गुलामी की जजीरो और पराधीनता की टीस का एहसास होना चाहिए। जब यह एहसास गहरा हो जायेगा तो हमे लगेगा कि स्वतत्रता के बिना जीवन व्यर्थ है। हमारे इस अनुभव के तीव्र होने पर एक समय ऐसा आयेगा जब हमारी सम्पूर्ण आत्मा स्वाधीनता की उत्कठा से आपूरित हो जायेगी

इस सोपान पर पहुच कर हम स्वतत्रता के आदर्श को जनता तक पहुचाने वाले सिपाही बन सकते है। तब हमे आजादी के नशे मे चूर नर नारियो को घर-घर गाव गाव और शहर शहर

जाकर स्वाधीनता का अलख जगाना चाहिए। इस प्रकार के परिणामस्वरूप हर क्षेत्र से जुडे लोग जीवन की अनुभूति करेगे। राष्ट्र, अर्थव्यवस्था और समाज व्यवस्था सभी मे एक नये आदर्श का स्पदन सुनाई देगा। वह है स्वतत्रता और समानता का आदर्श। मिथ्या मानदड घिसे-पिटे रीति रिवाज और प्राचीन प्रतिबध ध्वस्त हो जायेगे। और धीरे-धीरे स्वतत्रता और भ्रातृत्व पर आधारित एक नयी व्यवस्था अस्तित्व मे आयेगी। तब हम न केवल एक राष्ट्रीय समस्या बल्कि एक विश्व समस्या का भी समाधान करेगे।

भारत विश्व का सार सग्रह है। भारत की समस्याए अपने लघुरूप मे विश्व की समस्याए है। इस प्रकार भारत की समस्याओ के समाधान का अर्थ विश्व की समस्याओ का समाधान है। भारत अकथनीय यातनाओ के बावजूद आज भी जीवित है क्यो कि उसके पास एक लक्ष्य है। भारत को अपनी रक्षा इसलिए करनी है क्यो कि अपनी रक्षा के द्वारा उसे विश्व की रक्षा करनी है। भारत को इसलिए स्वतत्र होना है क्यो कि स्वतत्र भारत विश्व की सस्कृति एव सभ्यता के लिए योगदान कर सकेगा। विश्व भारत के उपहार की व्यग्रता के साथ प्रतीक्षा कर रहा है। इसके अभाव मे विश्व दरिद्र रहेगा।

मित्रो, हमारा दायित्व महान है युवा हर समय और परिस्थिति मे स्वतत्रता की मशाल थामे रहे है हमे दूसरे देशो के युवाओ के समक्ष एक उदाहरण रखना है उन्होने दूसरी जगह जो कुछ प्राप्त किया है। उसे भारत के युवा यहा प्राप्त कर सकते हैं। मुझे कोई सदेह नहीं भारत के युवा अपने दायित्व को पहचानते हैं। मुझे कोई सदेह नहीं कि उनके त्याग, कष्ट और परिश्रम से भारत शीघ्र ही एक स्वतत्र देश होगा। एक ऐसा देश जहा सभी नर नारियो को शिक्षा और विकास के समान अवसर उपलब्ध होगे। भारत के स्वतत्र होने मे लेश मात्र भी सदेह नहीं है प्रश्न केवल यह है कि वह कब स्वतत्र होगा। हम सब गुलाम पैदा हुए है लेकिन हम आजाद मनुष्य की तरह रहने का निश्चय करते हैं। यदि हम अपने जीवन मे भारत को स्वतत्र नहीं देख पाते हैं तो कम से कम हमे भारत को स्वतत्र कराने के प्रयास की आहुति दे देना है। स्वतत्रता का मार्ग एक कटकाकीर्ण मार्ग है लेकिन यह अमरता का मार्ग है। सेट्रल प्राविस के मेरे बहनो और भाइयो। मैं इस पवित्र मार्ग के लिए आप का आह्वान करता हू।

दक्षिण, वाम और जनतांत्रिक व्यवस्था के दायित्व

आल इंडिया ट्रेड यूनियन काग्रेस के अध्यक्ष के रूप मे बयान

6 दिसम्बर, 1929

ट्रेड यूनियन काग्रेस की स्थिति पर मेरा बयान लम्बे समय से अपेक्षित है। मैं बयान को जारी करना सोद्देश्य रूप से टालता रहा हू क्योकि तथ्यों की पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए मुझे समय चाहिए था। मैं 1 दिसम्बर को नागपुर मे नहीं था जब कुछ महत्वपूर्ण घटनाए घटित हुईं। मैं 30 नवम्बर की रात को नागपुर से अमरावती के लिए रवाना हुआ था। वहा मुझे प्रांतीय अध्ययन सम्मेलन की अध्यक्षता करनी थी परिणामत फूट के लिए जिम्मेदार घटनाओ के बारे मे मेरी सुनी सुनाई जानकारी थी। अमरावती से नागपुर लौटने पर सनसनी खेज घटनाए सुनीं और नये पदाधिकारियो के विषय मे जानकारी प्राप्त की। मैंने पंडित जवाहर लाल नेहरू के बयान को बहुत ध्यानपूर्वक पढा जो कि ट्रेड यूनियन काग्रेस की स्थिति का एक प्रशसात्मक उपसहार था। अब मैं इस स्थिति मे हू कि मौजूदा हालात का एक स्पष्ट मूल्याकन कर सकू और इस सबध मे अपना दायित्व निश्चित कर सकू।

आज ट्रेड यूनियन काग्रेस के दक्षिण व वाम पथी धडो की बीच जो आरोप-प्रत्यारोप की स्थिति बनी है सबसे पहले मैं इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति पर खेद प्रकट करता हू। देश मे मजदूर आदोलन के विकास के साथ वामपक्ष अस्तित्व मे आया। बाद मे इसने शक्ति अर्जित कर ली। यह भी स्वाभाविक है। इस बात को लेकर मेरे मन मे कोई संदेह नहीं रह गया। जब मैंने सुना कि अनेक ईमानदार दक्षिण पथियो के आगमन का स्वागत किया गया। उनमे से कुछ लोग जिनके प्रति मेरे मन मे असीम श्रद्धा है यह कहते पाये गये कि एक न एक दिन वामपथी सत्ता मे अवश्य आयेगे। अतएव मैं नहीं समझता कि दक्षिण पंथियो के मन मे वामपथ को लेकर कोई दुर्भावना होगी।

दक्षिण और वामपंथियो के बीच के विवादो और आरोप प्रत्यारोपो के मूल मे इन दोनो के भिन्न दृष्टिकोण रहे हैं। वाम पथ का सबध निश्चित सिद्धान्तो और विशेष मानसिकता से है। ये जन समर्थन मे विश्वास करते हैं दक्षिण पथियो पर व्यक्तिगत आक्रमण मे नहीं। लेकिन उनकी अच्छाई-बुराई को ध्यान मे रखते है। वास्तव मे वाम पथी दक्षिण पथियो पर व्यक्तिगत आक्रमण करने के स्थिति से बचते हुए ही अपने कार्य को आगे बढा सकते हैं। पिछले कर्नाशन पर मतदान से ठीक पहले मैंने ट्रेड यूनियन काग्रेस की कार्यकारिणी की बैठक मे पूरे जोर के साथ इस निवैयक्तिक दृष्टिकोण की पैरवी की थी। किसी प्रकार के दोषारोपण मे लिप्त हुए बिना मैं पूरे आग्रह के साथ यह कहना चाहूगा कि दक्षिण पथियो को अग्रेजी साम्राज्यवाद का दलाल और वाम पंथियो को मास्को का दलाल कहना एक भूल होगी।

मैं जानता हू कि यह गलत फहमी तब शुरू हुई जब 40 000 सदस्यो के साथ "गिरनी कामगार यूनियन" को मान्यता दी गई। दक्षिण पथी यूनियन छोड गये। इसके परिणाम स्वरूप वामपथियो की स्थिति अचानक मजबूत हो गई और इससे दक्षिण पथी नाराज हो गये। यह व्यापक मान्यता प्राप्त करने के लिए कोई वामपंथियो को दोष नहीं दे सकता क्यो कि ऐसा होता तो वे

कार्यकारिणी मे प्रस्ताव नहीं ला सकते थे। यह प्रस्ताव इसीलिए मजूर हुआ कि इसके पक्ष मे निश्चित रूप से दक्षिण पथियो या गैर कम्यूनिस्ट वामपथियो ने मतदान किया था। यह बहुत स्पष्ट है कि कम्युनिस्ट वामपथियो को अप्रत्याशित लोगो से सहायता प्राप्त हुई थी। गिरनी कामगार यूनियन पर मतदान के समय मैं उपस्थित नहीं था लेकिन गिरनी कामगार यूनियन के पक्ष मे मतदान करने वाले कई गैर कम्युनिस्ट मजदूर नेताओ ने मुझे बताया कि उन्होने ऐसा इसलिए किया कि यूनियन पर सत्ता और मालिको का दमन चक्र चल रहा था और उसे समर्थन की जरूरत थी। उन्होने यह भी बताया कि उनके मतदान का यह अर्थ नहीं है कि वे हर मामले मे गिरनी कामगार यूनियन के प्रतिनिधियो का पक्ष लेगे। मैं नहीं जानता कि दक्षिण पथी अचानक कैसे पराजयवादी मानसिकता के शिकार हो गये और उन्होने काग्रेस से समर्थन वापस क्यों ले लिया पडित जवाहर लाल नेहरू ने अपने बयान मे यह पूरी तरह स्पष्ट कर दिया था कि यदि दक्षिण पक्ष के पास समर्थक है तो वह आज भी अपना बहुमत बना सकता है और मैं इस तथ्य को जानता हू कि जिन लोगो ने गिरनी कामगार यूनियन की मान्यता तथा विटले कमीशन के पूर्ण बहिष्कार के पक्ष मे मतदान किया है वे पैन पैसिफिक ट्रेड यूनियन सेक्रेटेरियेट की सबद्धता जैसे प्रश्न पर एक दूसरे से आख नहीं मिला सकते। यदि दक्षिण पथी अपनी जगह कायम हो तो वे यह पायेगे कि जिन्हे वे पक्के तौर पर "लाल" समझते थे उनमें से अनेक ने आपत्तिजनक प्रस्तावो के विरोध मे मतदान किया है। दक्षिण पथियो ने पैन पेसिफिक ट्रेड यूनियन सेक्रेटेरियट के पक्ष मे मतदान करके हालात बिगाड दिये। जिसके बारे मे अब उनका कहना है कि शुद्ध मन के साथ इसके विरुद्ध है। इन परिस्थितियो मे दक्षिण पथियो के ऊपर एक बडा दायित्व आ गया है यदि उनका जनतत्र मे विश्वास ह तो ट्रेड यूनियन काग्रेस मे वामपथियो के बढते महत्व पर उगली नहीं उठा सकते। और न हीं वे गिरनी कामगार यूनियन की मान्यता को लेकर मनमुटाव रख सकते। इसके साथ-साथ उन्हे कमीशन के बहिष्कार के प्रश्न पर ट्रेड यूनियन काग्रेस की कार्यकारिणी समिति के फैसले को स्वीकार करना चाहिए। जिसमे कि वे उपस्थित थे और बहुमत के फैसले का आदर करना चाहिए।

फिलहाल ट्रेड यूनियन काग्रेस को पैन पैसिफिक ट्रेड यूनियन सेक्रेटेरियेट से सबद्ध करने के प्रश्न को ताक कर रख दिया गया है। तत्पश्चात मैं समझता हू कि अब कोई विवाद नहीं रह गया है। "साम्राज्यवाद के विरुद्ध लीग" की सबद्धता दक्षिण पथियो के लिए आक्रमण का पर्याप्त कारण नहीं हो सकती क्यो कि सबद्धता के प्रश्न पर गतवर्ष झरिया काग्रेस मे भी सहमति थी। जिनेवा की अतर्राष्ट्रीय लेबर काफ्रेस मे भागीदारी के प्रश्न पर मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हू कि ऐसे अनेक दक्षिणपथी है जो आज इसके विरुद्ध है। वे सिद्धान्तो के आधार पर आपत्ति नहीं करते लेकिन वे महसूस करते है कि सरकारी खर्चे पर यूरोप आना जाना मजदूर जगत के दूसरे हिस्सों के लिए अवमाननापूर्ण होगा। अतएव, मजदूरो मे ऐसा कोई प्रलोभन नहीं है तो वे अपने अलग-अलग रग-ढग को भुलाकर ऐसा ही करे। किसी भी स्थिति मे अतर्राष्ट्रीय लेबर काफ्रेस मे भागीदारी न करने सबधी ट्रेड यूनियन फैसले का किसी वर्ग या समूह द्वारा विरोध नहीं होना चाहिए। क्योकि यह बहुमत का फैसला है। मै यही बात नेहरू रिपोर्ट वायसराय की उद्घोषणा और पैन पैसिफिक लेवर काफ्रेस के बारे मे कहना चाहूगा।

अत मे मैं दक्षिण पथ के सभी मित्रो और साथियो से साग्रह निवेदन करूगा कि वे अपने मौजूदा रवैये को बदले। यदि वे अपनी सरक्षक सस्था से सबध विच्छेद का निर्णय लेते है तो वे

अपने ऊपर एक बड़ा दायित्व ले रहे हैं। अतत उन्होने यह निर्णय ले लिया है। मेर विनम्र मत मे ऐसा कोई भी कदम खेल भावना विरोधी अप्रजातात्रिक और देशभक्ति से रहित है। सार्वजनिक प्रेस मे जो कुछ छपा है इसके बावजूद मुझे विश्वास है कि ट्रेड यूनियन काग्रेस मे कोई फूट नहीं पडेगी। यहा तक कि यदि दक्षिण पथी यह सोचते है कि वे बहुमत मे है तो यह उनका भ्रम है। इसमे सदेह नहीं कि वे एक प्रभावशाली अल्पमत मे हैं। यदि उन्हे विश्वास है कि उनके द्वारा अपनाये गये सिद्धान्त सही हैं तो व काग्रेस की आगामी बैठक मे अपने को अल्पमत मे बहुमत मे बदल सकते हैं। वामपक्ष ने ट्रेड यूनियन काग्रेस मे उस समय भी कार्य किया जब कि वह मामूली अल्पमत मे था और मुझे कोई कारण नहीं दिखाई देता कि अल्पमत मे पड जाने पर दक्षिण पक्ष को क्यो काग्रेस से बाहर होना चाहिए? मैंने बडी व्यग्रता के साथ स्थिति को समझने की कोशिश की है। और इस निश्कर्ष पर पहुचा हू कि ऐसे कोई कारण नहीं हैं जिनसे फूट पड सके। अभी हाल मे दीवान चमन लाल द्वारा जारी किया गया बयान निस्सदेह दुर्भाग्यपूर्ण है। लेकिन मैं उनसे निवेदन करूगा कि वे अपनी बात पर पुन विचार करें। आज की हालत को देखकर लगता है कि सबद विच्छेद की नीति इस सदेह को समाप्त करने मे मददगार नहीं होगी कि अतत विटले कमीशन के बहिष्कार के कारण दक्षिण पथी नाराज हुए है। विटले कमीशन के सवाल पर विभाजन न केवल अनुचित है बल्कि यह दक्षिण पथियो के दृष्टिकोण से भी नीति विरुद्ध है।

ट्रेड यूनियन काग्रेस ने मुझे आगामी वर्ष के अध्यक्ष के रूप मे चुना है। मैं इस दायित्व को स्वीकार करने का निर्णय ले चुका हू। मुझे लगता है कि ऐसी स्थिति मे जब कि काग्रेस सकट मे है मेरा पीछे हटना दायित्व से मुह चुराना सावित होगा। काग्रेस के दोनो धडो मे मेरे मित्र हैं। मुझे कोई सदेह नहीं है कि मैं उनकी सहानुभूति सहयोग और विश्वास को प्राप्त कर सकूगा यदि जरूरत हुई तो मतभेद दूर करने और सयुक्त कार्यक्रम तैयार करने की गरज से मैं दोनो पक्षो की एक बैठक इस माह के अत तक कभी बुलाउगा।

विद्यार्थियो और उनके आदोलनो के प्रति मेरा रवैया

11 दिसम्बर, 1929 को जारी एक बयान

कुछ समय पहले श्री वीरेन्द्र नाथ दास गुप्ता के द्वारा जारी किये गये एक पैम्फलेट की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया गया जिसमे मेरे ऊपर व्यक्तिगत प्रहार किया गया था और जिसे बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी की वार्षिक बैठक के दौरान सदस्यो के बीच वितरित किया गया था। यह पिछले नवम्बर के बीच की बात है। अनेक विधार्थी मित्रो ने मुझसे इस निवेदन के साथ सपर्क किया कि पैम्फलेट मे गई गलत बयानी का मुझे जवाब देना चाहिए। फिर भी मैंने आज तक दो कारणो से ऐसा नहीं किया है। पहली बात तो यह है कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति के साथ राजनीतिक विवाद मे नहीं पडना चाहता जो कि मुझसे कनिष्ठ है और जिसे मैं अनुजवत मानता हू। दूसरे मैं महसूस करता हू कि यदि मैंने बयान जारी कर दिया जो मुझे दूसरे युवा मित्रो की आलोचना करनी पड़गी। जो अन्य लोगो के बहकावे मे आकर यह सब कर रहे हैं लेकिन इसके बावजूद मेरे स्नेह भावन

है लेकिन मुझे बताया गया कि कुछ हिस्सो मे मेरी चुप्पी का गलत अर्थ लगाया जा रहा है। इसलिए मुझे विद्यार्थी समुदाय के उस बडे हिस्से के हित के लिए कुछ कहना चाहिए जो सामान्यतया मेरे सपर्क मे नहीं रहा है।

मुझे बडी हसी आती है जब मैं देखता हू कि जनता के कुछ लोगो में जिनमे से कुछ स्वय को नेता भी कहते हैं-विद्यार्थी समुदाय के प्रति अचानक प्रेम उमड आया है और जो दूसरो को छात्र-आदोलन के प्रति कर्तव्य की शिक्षा देते पाये जाते हैं। 1928 ई के आरभ मे छात्र आदोलन के उभार से लेकर वर्तमान समय तक छात्र आदोलन के इन नये हितैषियो ने इस आदोलन के कोई रुचि नहीं ली है। इसके लिए कोई खास मदद नहीं की है। मैं इस प्रात के उन गिनेचुने लोगो मे से था जिन्होने इस आदोलन के लिए पूरी-पूरी मदद की और यहा तक कि आज जो लोग मुझ पर प्रहार कर रहे हैं वे भी इस तथ्य से अनभिज्ञ नहीं है। मैंने इस आदोलन की मदद के प्रयास क्यो किये और भविष्य मे भी अपनी योग्यतानुसार मदद करूगा। इसका कारण बहुत ही स्पष्ट है। पहले मैंने-अपने जेल से रिहाई के बाद से ही इस देश मे छात्र आदोलन पर बल देता रहा हू। क्यो कि मैं मानता हू कि विद्यार्थी और युवा इस देश के कर्णधार है। मैं जब विद्यार्थी था तब मेरे अनेक जूनियर और सीनियर साथियो के साथ मुझे अधिकारियों के हाथो उत्पीडन सहना पडा था। स्वर्गीय बाबू मोतीलाल घोष और देशबन्धु चितरजन दास के अलावा बहुत कम लोगो ने हमारी मदद की थी। हमारे देश के विद्यार्थियो का जो उत्पीडन किया जाता है इसका मुझे सीधा-साधा अनुभव है। अत मे इगलैंड मे विद्यार्थियो को जनता और सरकार की दृष्टि मे जैसा सम्मान प्राप्त है और विद्यार्थियो की जैसी हमारे देश मे दुर्गति है, इन दोनो स्थितियो की तुलना करने पर मेरा मन खिन्न हो गया। इन कारणो से मैं विद्यार्थियो के अपमान और अवमानना को अच्छी तरह समझ सकता हू। मैंने यह निश्चय किया कि जब भी मुझ से सहायता के अपेक्षा की जायेगी मैं अवश्य करूगा। आज के दूसरे लोगो की भाति मैं भी विद्यार्थियों के कार्य के प्रति निर्मम और निष्ठुर होता यदि मैने अपने जीवन मे उपर्युक्त अनुभव प्राप्त न किये होते।

मैं स्वीकार करता हू कि पहले के विद्यार्थियो ने जो कार्यनीति अपनाई थी उससे मुझे गहरा दुख पहुचा है। वे भली प्रकार से यह जानते हैं कि मैंने पिछले दिनो मे छात्र हित के लिए कार्य किया है और एक व्यक्ति के रूप मे सदा उन्हे कितना प्यार दिया है? बगाल मे यह एक सुविदित तथ्य है कि अनेक अवसरो पर विद्यार्थियो के प्रति अपनत्व दिखाने के कारण मुझे अधिकारियो और कुछ राष्ट्र विरोधी अखबारो का कोपभाजन बनना पडा है। इसलिए यह देखकर मुझे हसी आती है कि यही अखबार आज छात्र आदोलन के प्रति सद्भाव जता रहे हैं और इस आदोलन का शत्रु सिद्ध करते हुए मुझ पर प्रहार कर रहे है। इन अखबारो ने गाहे-बगाहे लम्बे समय तक छात्र आदोलन पर जमकर प्रहार किये है। लेकिन यदि आज ये छात्र आदोलन की क्षमता और प्रभावशीलता मे विश्वास करने लगे हैं तो वास्तव मे आज का दिन मेरे लिए बडी खुशी का दिन है।

मुझ पर प्रहार करने वाले विद्यार्थियो की मैं एकदम भर्त्सना नहीं करता क्यो कि मैं समझता हू कि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। फिलहाल वे स्वार्थी राजनेताओ के हाथो कठपुतलिया है लेकिन वह दिन दूर नहीं जब वे अपनी गलती महसूस करेगे। इस बीच मैं उन्हे आश्वस्त करना चाहूगा कि मैं उनके प्रति पहले की भाति ही स्नेह भाव रखूगा। उनके प्रति मेरी भावनाए रातो-रात नहीं बदल सकती, भले ही चाहे वे गलतिया करे या मुझे नुकसान पहुचाने की कोशिश करे।

स्वार्थी लोगो द्वारा मेरे ऊपर आलोचना की जो बौछारे होती रहीं हैं मुझे इस सब की जानकारी नहीं है। लिहाजा मैं इन आलोचनाओ का जवाब नहीं दे सकता। लेकिन मैं चाहूगा कि विधार्थियो की एक ऐसी बडी सस्था हो जिसे राजनीतिक साजिशो से कोई मतलब न हो और जो मेरे पिछले व्यवहार की रोशनी मे मेरे बारे मे राय बनाये। मैं विधार्थी समुदाय से सतत रूप से जुडा रहा हू। और यदि इतना काफी है तो मैं विधार्थियो से अपेक्षा करूगा कि वे देखे और प्रतीक्षा करे कि भविष्य मे उनका सच्चा मित्र कौन साबित होता है?

ऊपर मैने जिस पैम्फलेट का जिक्र किया है उसमे कई गलत बाते कहीं गयी है। इनके खडन की जरूरत है। लेखक का कहना है कि मैंने एक प्राइवेट सभा मे कहा था कि छात्र सघ का मुख्य उद्‌देश्य राजनीतिक है। मैंने निजी या सार्वजनिक रूप से कभी ऐसी कोई बात नहीं की। छात्र-आदोलन के विषय मे मेरे विचार सर्वविदित हैं। मैंने हमेशा इस बात की वकालत की है यह विधार्थियो द्वारा चलाया जाने वाला एक स्वतत्र आदोलन है और यह भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस द्वारा चलाये जाने वाले राजनीतिक आदोलन से बिल्कुल भिन्न है। 1930 मे हावडा के राजनीतिक अधिवेशन मे विधार्थियो के दायित्व के बारे मे मैंने जो कहा था उसे यहा दोहरा रहा हू। मैंने कहा था कि परिस्थितियो की यह माग है कि राष्ट्र की पुकार पर विधार्थियो को अपनी पढाई छोडकर त्याग के लिए तैयार रहना चाहिए। जैसा कि दूसरे देशो के विधार्थियो ने भी किया है। लेकिन इस त्याग की जरूरत सिर्फ एक निश्चित अवधि के लिए या यो कहिये सिर्फ साल भर के लिए है। इसी क्रम मे मुझे यह भी बता देना चाहिए कि मुझे याद नहीं आता कि मैने इस पैम्फलेट के लेखक से पिछले कुछ महीनो मे छात्र सघ के उद्‌देश्यो या 1930 मे छात्रो के दायित्व को लेकर कभी कोई बात की हो।

पैम्फलेट मे कहा गया है कि विश्वविधालय परीक्षा व्यवस्था के सुधार और अन्य छात्र कल्याण की योजनाओ को लेकर अखिल बगाल छात्र सघ की गतिविधियो का मेरे कुछ सहयोगियो ने उपहास किया है। मै नहीं जानता कि मेरे लेफ्टीनेट्स से क्या अभिप्राय है लेकिन यहा तक मेरा सबध है मुझे ऐसी किसी गतिविधि की जानकारी नहीं है। इसलिए इनके बारे मे कोई राय बनाने का मुझे कोई अवसर नहीं मिला।

मैमन सिह अधिवेशन की अध्यक्षता के विषय मे तथ्य यह है कि मेरी पहल पर मेरे कमरे मे मैंने डा० आलम सिह को अध्यक्ष निर्वाचित करने के सबध मे दोनो पक्षो (अ० ब० छात्र सघ के प्रतिनिधियो और अधिवेशन की स्वागत समिति) को राजी कर लिया था। मै इस बयान की काट करने के लिए किसी को भी यह चुनौती देता हू कि और मै दावे के साथ कहता हू कि मेरे हस्तक्षेप के बिना डा० आलम की अध्यक्षता मे मैमन सिह अधिवेशन का आयोजन नहीं हो सकता था। लेकिन डा० आलम के लिए यह अधिवेशन सफल नहीं रहा होगा। अपने कलकत्ता निवास के दौरान डा० आलम मेरे अतिथि रहे थे। उनकी उपस्थिति मे मैंने अपने साथियो से अधिवेशन को सफल बनाने के सबध मे निवेदन किया था और जैसा कि देखा गया मेरे इस निवेदन का असर भी हुआ। मैंने छात्रो को समझा दिया कि वे किसी विवाद को शुरू मे ही मेरी जानकारी मे न लाये क्यो कि इस स्थिति मे मैं समूची परिस्थिति पर नजर रखूगा जैसा कि मैंने 1928 ई० मे किया था। जब मैंने छात्रो की ओर से पडित जवाहर लाल नेहरू से अध्यक्षता स्वीकार करने के लिए निवेदन किया था।

अखिल बगाल छात्र सघ के सविधान के अनुसार अध्यक्षता के लिए जिला सघ सुझाव पेश करते हैं। इन सुझावो को ध्यान मे रखते हुए स्वागत समिति को यह अधिकार था कि वह जिसे चाहे अध्यक्ष चुनती। समस्या इसलिए पैदा हुई क्यो कि सामान्य कार्यकारिणी के कुछ अपने राजनीतिक गुट के किसी व्यक्ति को अध्यक्ष बनाना चाहते थे और वे डा० आलम के नाम का छटनी के रूप मे इस्तेमाल कर रहे थे। इन भावी पत्याशी सज्जन वीरेन्द्र नाथ दास गुप्ता का छात्र आदोलन के सभी कोई सबध नहीं रहा। इनका छात्र जीवन भी एक अरसा पहले समाप्त हो चुका था। इनका प्रयोजन सिर्फ यह था कि अपनी पार्टी के एक व्यक्ति को प्रमुखता मे लाकर पार्टी के विजय साबित करना चाहते थे। अपना स्थल बनाने के लिए मैं जो छात्र आदोलन से निकट से जुड़ा रहा, कई छात्र आदोलन मे भाषण और अध्यक्षता करता रहा, मैंमन सिह के छात्र अधिवेशन की अध्यक्षता करने की इच्छा व्यक्त की। मेरे बुरे से बुरे शत्रुओ को भी इस आरोप को लेकर भ्रम नहीं होगा। मैं नौजवान लेखक की इस चतुराई की दाद देता हू कि उसने इस मामले को मेरे ऊपर उलट दिया। हालाकि इतनी कम उम्र मे उसके नैतिक स्खलन को लेकर मैं अफसोस जाहिर करता हू।

अखिल बगाल छात्र सघ के सदस्यो द्वारा स्वागत समिति की कार्यवाही के विरोध का वास्तविक कारण यह था कि वे भविष्य मे अपने किसी आदमी को निर्वाचित करना चाहते थे। जिसके चुनाव के लिए पिछले महीनो उन्होने जी-तोड काम किया था। डा० आलम के प्रति इनका सहयोग भाव एक अनुबोध है। जिसका अर्थ अपनी हार को बराबर करना है। डा० आलम के प्रत्याशी होने पर उन्हे कोई आपत्ति नहीं थी जो अखिल बगाल छात्र सघ कार्यकारिणी के विरूद्ध थे। जब मैंने उनके नाम की पैरवी की तो स्वागत समिति ने तुरत स्वीकार कर लिया।

मैं सोचता हू इस स्थिति मे मुझे आज के विद्यार्थियो के बीच अशाति के मूल कारण पर स्पष्ट टिप्पणी कर देनी चाहिए। विद्यार्थियो के बीच विवाद सीधे-सीधे बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के राजनीतिक गुट के भीतरी विवाद की प्रतिछाया है। मैं हमेशा से कार्य अन्विति की वकालत करता रहा हू और काग्रेसियो के विभिन्न गुटो को नजदीक लाने के प्रयास करता रहा हू। कुछ समय तक इसके अच्छे परिणाम देखने को मिले और एक सामान्य कार्यक्रम तैयार करने मे सभी गुट आपस मे मिल गये। बाद मे उनमे मतभेद पैदा हो गये और उनमे से एक पक्ष ने अपने आप को अलग कर लिया। बहुमत ने मेरे सिद्धान्त नीति और कार्यक्रमो की स्वीकृति दे दी। जबकि असतुष्ट पक्ष अल्पमत के साथ मिल गया। अर्थात वे लोग बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के विरोधी दल से जा मिले और *वर्तमान मे उनके साथ तथा मेरे विरूद्ध कार्य कर रहे है। मेरे विरूद्ध अभियान चलाने* वाले अ० ब० छा० स० के सदस्य आज बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के विशेष गुट के प्रभाव मे है। इस विशेष राजनीतिक गुट द्वारा स्वय उनके तथा छात्र समुदाय के हितो के विरुद्ध इनका इस्तेमाल किया जा रहा है। इस बात का मुझे अफसोस है क्यो कि मेरे मन मे आज भी उनके प्रति पहले जैसा ही स्नेह भाव है। यदि बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के मतभेद आज दूर हो जायें तो मुझे विश्वास है कि दूसरे दिन विद्यार्थियो के बीच मतभेद भी देर हो जायेगे। जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हू कि यह राजनीति गुट अपने किसी व्यक्ति को छात्र सम्मेलन का अध्यक्ष बनाना चाहता था और अखिल बगाल छात्र सघ के कुछ सदस्य उसकी उम्मीदवारी सुनिश्चित करने के लिए साजिशे रचने लगे थे। इस प्रयोजन के लिए कई दलाल जिलो मे भेजे गये। और कुछ मामलो मे केवल

उन सघो को मान्यता दी गई जो अ० ब० छा० स० के राजनीतिक गुट का वर्चस्व स्वीकार करते थे और स्वतत्र रहकर काम करने वालो की उपेक्षा करते थे। इस राजनीतिक गुट के दलालो ने शेष विधार्थियो पर अपनी इच्छा थोपने के प्रयोजन से मनमाने ढग से काम करना शुरू कर दिया। इन कार्यनीतियो के कारण बगाल के विधार्थियो के बीच गहरा असतोष है। मैमन सिह अधिवेशन मे भी रोष व्यक्त किया गया था। मै और डा० आलम दोनो मौजूद थे। डा० आलम की नीति और सहानुभूति के कारण हालाकि निन्दा प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं किया गया लेकिन अधिकाश प्रतिनिधि अखिल बगाल छात्र की कार्यकारिणी के विरुद्ध थे। उन्होने परामर्श दिया कि कार्यकारिणी को प्रतिनिधियो से समझौता कर लेना चाहिए। जहा तक मेरी जानकारी है कार्यकारिणी ने ऐसा नहीं किया।

मै यह पढकर आश्चर्यचकित हू कि मैंने विधार्थियो का गलत इस्तेमाल करने की कोशिश की है। मैंने ऊपर बताये कारणो से शुरू से लेकर अब तक छात्र आदोलन के विकास को प्रोत्साहित किया है। जो छात्र एक राजनीतिक गुट की प्रेरणा से मेरे विरोध मे हैं वे अच्छी तरह जानते है कि छात्र हित के लिए मेरी क्या सेवाए रही हैं? स्वय अपने कारणो से मेरा विरोध करने वालो मे ऐसे अनेक लोग है जो शुरू से ही छात्र आदोलन को किसी भी प्रकार की सहायता किये बिना छात्रो को इस्तेमाल कर रहे हैं।

स्वागत समिति और अखिल बगाल छात्र सघ की कार्यकारिणी के बीच विवाद के प्रति सम्मान के साथ मैं कहना चाहूगा कि मैंने तमाम पत्र व्यवहार और अखिल बगाल छात्र सघ के सविधान का अवलोकन किया और सविधान की दृष्टि से स्वागत समिति अपनी जगह पर सही थी। पैम्फलेट मे श्री सुरेन्द्र मोहन घोष और नलिनी रजन सरकार के विषय मे अनेक अप्रिय टिप्पणिया की गयी है और कुछ बयानबाजी की गई है जो कि साफ तौर पर बेमानी है। लेकिन ये भद्रपुरुष अपनी रक्षा करने मे स्वय समर्थ हैं। मै सिर्फ यह कहूगा कि इन भद्रपुरुषो के साथ मुझे भी इस पैम्फलेट मे घसीट लिया गया है। यह तथ्य इस बात का अतिरिक्त प्रमाण है कि इस पैम्फलेट का उद्देश्य पूर्णत राजनीतिक था और इन कार्यनीतियो के पीछे कई राजनीतिक हस्तिया है। मैं यह भी उल्लेख करना चाहूगा कि डा० आलम ने अपने कलकत्ता निवास के समय मुझसे कहा था कि अखिल बगाल छात्र सघ कार्यकारिणी के कुछ महत्वपूर्ण सदस्यो ने उनसे कहा था कि वे त्यागपत्र देने के लिए तैयार है। यही सबकी इच्छा है लेकिन डा० आलम इस तथ्य को प्रकाश मे नहीं लाना चाहते थे क्यो कि यह एक व्यक्तिगत बातचीत थी। मैं आम लोगो की जानकारी के लिए इस तथ्य का उल्लेख कर रहा हू क्यो कि पैम्फलेट के लेखक ने बयान को चुनौती दी है।

निष्कर्षत मैं इस बात पर खेद प्रकट करना चाहूगा कि अखिल बगाल छात्र सघ की कार्यकारिणी के कुछ सदस्य एक राजनीतिक गुट के षडयत्र का शिकार हो गये है जो फिलहाल बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी मे मेरा विरोध कर रहा है। मैं अपनी देखभाल करने मे सक्षम हू। वे मुझे जो हानि पहुचा सकते हैं, वह नगण्य हैं कि वे छात्र आदोलन के लिए भारी नुकसान पहुचा सकते है। यह मात्र एक साधारण घटना नहीं है कि वीरेन्द्र नाथ दास गुप्ता द्वारा जारी यह पैम्फलेट बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के सदस्यो के बीच उनके कलकत्ता आगमन पर स्यालदाह स्टेशन पर वितरित किया गया और फिर बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के दफ्तर के सामने उसके चुनाव मे बाटा गया। ये पैम्फलेट हजारो की सख्या में छापे गये और विभिन्न स्थानो पर वितरित किये

गये। सब जानते हैं कि ये कुचक्र कौन रच रहा है? इस विवाद को कौन हवा दे रहा है इस पैम्फलेट मे किसी विद्यार्थी या विद्यार्थियो के गुट पर कोई प्रहार नहीं किया गया, सारी आलोचनाए मेरे जैसे कार्यकर्ता के लिए सुरक्षित रही है। मै राजनीतिक क्षेत्र मे इन कार्यनीतियो का अभ्यस्त हो गया हू लेकिन इस बात से मुझे बडी पीडा पहुचती है कि हमारे कुछ होनहार छात्र पुराने छात्रो बाहरी लोगो और राजनेताओ के उकसाने पर स्वय को भुला बैठे है और इन कुत्सि नीतियो से छात्र आदोलन का अहित कर रहे है। लेकिन मुझे पूरी आशा है कि वे जल्दी ही अपनी गलती महसूस करेगे और स्वय यह समझ जायेगे कि कौन शत्रु है कौन उनका मित्र है? इस बीच मे उन्हे आश्वस्त करता हू कि छात्रो और उनके आदोलनो के प्रति मेरा सहयोग का रवैया पूर्ववत जारी रहेगा।

स्वतंत्रता आंदोलन में क्रान्तिकारी रूपांतरण की जरूरत

सेन्ट्रल प्राविंस और बरार छात्र अधिवेशन मे अध्यक्षीय वक्तव्य
अमरावती, 1 दिसम्बर, 1929

मुझे बहुत प्रसन्नता है कि मैंने सेंट्रल प्राविंस और बरार के छात्र सम्मेलन मे भागीदारी की। यह केवल प्रसन्नता ही नहीं बल्कि सौभाग्य की बात है कि मैं इस चरित्र के छात्र सम्मेलन मे भागीदारी कर सका। मैं यह बात आग्रह के साथ और नि संकोच भाव से कह सकता हू कि मैं अपने लोगो के बीच मे भी हू। हालाकि विश्वविद्यालय के द्वार को छोडे हुए मुझे एक दशक बीत गया लेकिन आज भी मैं स्वय को एक अन्य विश्वविद्यालय अर्थात जीवन रूपी विश्वविद्यालय का एक विधार्थी-एक विनम्र विद्यार्थी समझता हू। यह विश्वविद्यालय आप के विश्वविद्यालय से व्यापक है। हालाकि कि मैं इन दिनो जीवन के विश्वविद्यालय मे अपना सबक याद कर रहा हू। फिर भी मैं आपकी कठिनाइयो और समस्याओ, आप के सुख-दुःख और आप की आशाओ आकांक्षाओ को भली प्रकार समझ सकता हू।

फिर भी मेरे मन मे संदेह है कि क्या मैं वाकई एक छात्र सम्मेलन की अध्यक्षता करने योग्य हू? क्यो कि "उत्तम चरित्र" की दृष्टि से देखे तो मेरा विश्वविद्यालय जीवन में कलंक रहा। मुझे आज भी याद है जब मेरे प्राचार्य ने अपने सामने हाजिर किया था और मेरे निष्कासन का आदेश दिया था। उनके शब्द आज भी मेरे कानो मे गूजते है- 'तुम कालेज के सबसे उपद्रवी लडके हो"। यह मेरे लिए एक चिरस्मरणीय दिन था। कई अर्थो मे इसे मेरे जीवन का एक परिवर्तन बिन्दु कहा जा सकता है। यह मेरे जीवन का पहला अवसर था एक जब एक उददेश्य के लिए यातना सहते हुए मुझे एक ऐसे आनन्द की अनुभूति हुई जिसके आगे जीवन की दूसरे आनद फीके पड जाते है। यह मेरे जीवन का ऐसा पहला अवसर भी था जब मेरी सैद्धान्तिक नैतिकता और सैद्धान्तिक देश भक्ति की परीक्षा की गई और जब मैं इन अग्नि परीक्षा मे निरापद रूप से बच निकला तो हमेशा के लिए मेरे भावी जीवन की दिशा तय हो गई।

मित्रो, आप कहेंगे कि मैं अजीब सनकी आदमी हू जो अपना भाषण अपनी आप बीती से शुरू कर रहा हू। लेकिन क्या आप यह नहीं सोचते कि मैं यहा नैतिकता और देशभक्ति पर उपदेश देने नहीं आया हू बल्कि अपने अनुभवो की रोशनी मे आप को कुछ परामर्श देने आया हू? क्या यह तथ्य नहीं है कि केवल उसी पाठ का मूल्य एव महत्व है जिसे अनुभव और उत्पीडन के जरिये याद किया गया है।

भारत मे आज उत्तेजना की लहर है, विचारो के असख्य धाराए और अतर्धारा मे सक्रिय है और विभिन्न आदोलन, जिनमें से कुछ सुधारवादी हैं और कुछ क्रांतिकारी इस देश के रूपातरण मे व्यस्त है। इस विभ्रम की स्थिति मे भविष्य के प्रगति की रूपरेखा निश्चित कर पाना आसान नहीं है। लेकिन वही लोग ऐसा कर सकते है जो युवा है। एक आदर्श से अनुप्राणित है जिनमें ऐतिहासिक चेतना है और राष्ट्र की आत्मा से तालमेल बैठा सकते है। आज के विभिन्न आदोलन का विश्लेषण करने और उनके मूल्यो के विषय मे अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए एक से

अधिक भाषण की जरूरत है। अत मैं इस विषय पर चर्चा नहीं करूगा। लेकिन एक बात मैं अलबत्ता कहना चाहूगा कि यदि हम भारत का नव निर्माण करना चाहते है और इसे एक सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनाना चाहते हैं तो हमे अच्छे और बुरे के विचारो को बदलना होगा। दार्शनिक भाषा मे कहें तो हमे मौजूदा सामाजिक और नैतिक मूल्यों का पुनर्मूल्याकन करना होगा।

यहा तक कि एक आकस्मिक निरीक्षण करने वाला व्यक्ति भी वह समझ सकता है कि आज के बहुत से आदोलन अपने चरित्र मे सतही और उथले है। वे जनता के आतरिक जीवन मे हलचल पैदा किये बिना हमारे सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन को सिर्फ किनारा भर छू पाते है। यह आदोलन एक दम अनुपयोगी नहीं है। लेकिन इनसे राष्ट्रीय जागरण नहीं आ सकता। हमे इन परिस्थितियो मे एक व्यापक जागरण की जरूरत है। राष्ट्र की आत्मा को बहुत गहरे मे झकझोरना है। इस कार्य को हम न्यूनतम सभव समय मे किस प्रकार सपन्न करे- यही हमारी मुख्य समस्या है। हमारी धरती अति प्राचीन है हमारी सभ्यता एक प्राचीन सभ्यता है यद्यपि यह अपने गतिशील चरित्र को खो चुकी है। हम अपने जीवन मे अनगिनत उतार-चढाव देख चुके है और हम समय-समय पर अनेक आघात सह चुके हैं। अतएव यह कोई आश्चर्य की बात नहीं यदि हम आज थकान शिथिलता महसूस करने लगे क्यों कि यह प्रकृति का नियम है कि जीवन रक्षा के लिए समय-समय पर विश्राम और निद्रा आवश्यक है। भले ही हम शिथिल पड गये हो लेकिन हम एक राष्ट्र के रूप में निष्प्राण नहीं हुए है। विचार और रचनात्मक गतिविधि मूलत जीवन की पहचान होती है। एक राष्ट्र और एक व्यक्ति के रूप मे ये लक्षण हमारे भीतर आज भी मौजूद हैं। यदि हम जीवित न होते तो राष्ट्रीय जागृति की हमारी तमाम आशाये निर्मूल थीं। लेकिन आज हम जीवित हैं और एक सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र के निर्माण हेतु सपूर्ण समाधन हमारे पास हैं। इस रूप मे हम एक गौरवशाली भविष्य का स्वप्न देख सकते हैं।

अतएव आज हमे एक राष्ट्रीय जागरण की जरूरत है। जो हमारे जीवन मे एक क्रान्तिकारी रूपातरण लायेगा। ऊपरी सुधारो और सतही समाधानो से बात नहीं बनेगी। यदि आप करना चाहेगे तो आज हमारे सपूर्ण जीवन के कायाकल्प-एक सम्पूर्ण क्राति की जरूरत है। क्राति शब्द को लेकर शर्म महसूस न करे। लेकिन जो क्रान्ति मे विश्वास न करता हो ऐसा मनुष्य मैंने अभी तक नहीं देखा है। विकास और क्रान्ति मे कोई तात्विक अतर नहीं है। क्रान्ति एक सीमित अवधि मे घटित हुआ विकास है, विकास एक लबे समय मे घटित होने वाली क्रान्ति है। लेकिन विकास और क्रान्ति दोनों मे ही परिवर्तन और प्रगति निहित है और प्रकृति मे दोनो के लिए समान स्थान प्राप्त हैं। सच्चाई यह है कि दोनो मे से किसी एक के बिना प्रकृति का काम नहीं चल सकता।

मैं कह चुका हू कि हमे अच्छे और बुरे को लेकर अपने पुराने विचार बदलने होगे। मैं यह भी कह चुका हू कि हमें सपूर्ण जीवन मे एक क्रान्तिकारी रूपातरण चाहिए। यदि हम एक महान राष्ट्र बनाना चाहते हैं और विश्व के अग्रणी राष्ट्रों के बीच सम्मानजनक स्थान प्राप्त करना चाहते हैं तो यह परम आवश्यक है। एक आदर्श के लिए जीने पर ही जीवन का कोई मूल्य एव महत्व है। एक राष्ट्र जी नहीं सकेगा, वास्तव मे उसे जीने का अधिकार भी नहीं है यदि उसमे प्रगति की लालसा नहीं है और वह केवल एक स्वार्थ प्रेरित भावनात्मक प्रयोजन के लिए महानता हासिल करना चाहता है। उसे मानवता को महान बनाने के प्रयोजन से महान बनाने बनने की

आकाक्षा करनी चाहिए ताकि यह संसार मनुष्य के रहने का एक सुन्दर स्थान बन सके।

भारत के पास तमाम बौद्धिक नैतिक और भौतिक ससाधन है जिनमे यहा की जनता को महान बनाया जा सकता है। भारत अपनी गहरी पुरातनता के बावजूद आज भी जीवित है क्यो कि उसे एक बार फिर महान बनना है। क्योकि उसके पास पूरा करने के लिए एक मिशन है।

भारत का पहला मिशन अपने आप को बचाना है। फिर इसके बाद उसे ससार की सस्कृति और सभ्यता के निमित्त योगदान करना है। पचासो अक्षमताओ के बावजूद आज भारत का योगदान कोई थोडा नहीं है। एक क्षण की जरा कल्पना कीजिए जब वह स्वतत्र होगा और अपने विवेकानुसार विकास करेगा तब उसका योगदान कितना होगा।

मुझे विश्वास है कि इन आश्चर्यो को हमारे लोग प्राप्त कर सकते हैं सिर्फ उठ जाने और सतत रूप से सक्रिय होने की जरूरत है। मैं आश्वस्त हू कि एक बार हम जाग गये तो हम थकिया कर आगे बढने वाले पश्चिमी राष्ट्रो को प्रगति के मामले मे पीछे छोड सकते है। इसके लिए हमे एक जादुई छडी की जरूरत है, जिसके हिलाने से हमारा सपूर्ण जीवन आलोकित हो उठे। फ्रास के दार्शनिक बर्गसा ने प्रेरणा की जीवत स्रोत की बात कही थी, जिसके कारण समूचा ससार सक्रियता और प्रगति की ओर आगे बढता है। हमारे राष्ट्रीय जीवन की प्रेरणा का जीवत स्रोत क्या है? यह स्वतत्रता और विस्तार और आत्मभिव्यक्ति की इच्छा है। इस इच्छा का दूसरा रूप दासता के खिलाफ विद्रोह है। यदि तुम स्वतत्र होना चाहते हो, अपने आस-पास के बधनो से मुक्त होना पडेगा और यदि तुम इन बधनो के खिलाफ सफलतापूर्वक विद्राह कर पाते हो तो स्वतत्रता तुम्हारे कदम चूमेगी।

उन लोगो के अतिरिक्त जिनका नैतिक बोध पूर्ण रूपेण मर चुका है हर मनुष्य दासता के बधनों और अवमाननाओ को न्यूनाधिक महसूस करने के लिए बाध्य है। जब यह भावना गहरी हो जाती है दासता और बधन असहनीय हो जाते हैं और दासता के जुए को फेकने की इच्छा प्रबल हो उठती है। स्वतत्रता के आनन्द के स्वाद से यह इच्छा और अधिक बलवती हो उठती है। स्वतत्रता के आनन्द का स्वाद या जो स्वतत्र देशो के निजी अनुभवो से प्राप्त होता है या अध्ययन और सुखद स्थितियो की कल्पना से प्राप्त होता हैं जो कि स्वतत्रता का परिणाम होती है। हमारे देश की मुक्ति के उद्देश्य मे समस्या का मनोवैज्ञानिक पहलू यह है कि हमारे मन को राष्ट्रीय अवमानना और नस्ल भेद के प्रति अधिक से अधिक सवेदनशील बनाया जाए और हमारी स्वतत्रता की इच्छा को गहराया जाए। इतिहास के अध्ययन, आज की अपमानजनक स्थितियो के निरीक्षण, जीवनादर्शन के चिन्तन तथा इन सब से ऊपर दासता और स्वतत्रता की अलग-अलग परिस्थितियो की तुलना के माध्यम से यह सभव हो सकता है।

बैप्टिज़्म, इनिर्शिएन, दीक्षा आदि का मेरे लिए केवल एक अर्थ है-स्वतत्रता के वेदी पर हमारे जीवन का समपर्ण। पूर्ण आत्मसमर्पण एक दिन मे सभव नहीं हो सकता लेकिन जैसे-जैसे हमारे भीतर स्वतंत्रता की इच्छा का स्फुरण होगा हमे एक अनिवर्चनीय आनद की अनुभूति होगी और हम उतना ही अपने जीवन को सार्थक और सोद्देश्य अनुभव करेगे। एक क्रान्ति होगी- हमारे विचारो, भावनाओं और आकाक्षाओ का रूपातरण होगा। हमारे जीवन मे केवल एक चीज का महत्व है वह है स्वतत्रता। इस आदर्श की पुष्टि के लिए हमारे आतरिक जीवन का रूपातरण पुनर्निर्माण होगा। इस क्रमिक रूपातरण का अनुभव प्राय अकथनीय है। जब यह रूपातरण पूर्णता को प्राप्त

होता है हमारा पुनर्जन्म होगा, और सही अर्थो मे हम "द्विज" हो जायेगे। तब हम स्वतत्रता के विषय में ही सोचेगे और उसका ही स्वप्न देखेगे। और हमारी सम्पूर्ण गतिविधियो मे केवल एक ही इच्छा व्याप्त होगी, वह है स्वतत्रता प्राप्ति की इच्छा। साराश यह है कि स्वतत्रता के मतवाले मनुष्य बन जायेगे जिनका जीवन केवल स्वतत्रता के लिए समर्पित होगा।

एक बार जब हमारे हृदय मे स्वतत्रता की इच्छा उद्दीप्त हो जायेगी तब वह अपनी पूर्ति के लिए स्वय एक उपकरण की तलाश करेगी। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमारे शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक गुणो की आवश्यकता पडेगी। हम जो अब सीख चुके हैं उसे अनसीखा करना पडेगा और हमे जो अब तक पढाया नहीं गया है उसे सीखना होगा। स्वतत्रता की लडाई के योग्य स्वय को बनाने के सिलसिले मे हमारे शरीर और मन को एक नये प्रशिक्षण से गुजरना होगा। हमारे जीवन का वाह्य पक्ष भी बदल जायेगा। विलासिता और विश्राम को त्यागना होगा और पुरानी आदते छोडनी होगी। इस प्रकार हमारा सपूर्ण जीवन स्वतत्रता प्राप्ति का एक परिशुद्ध उपकरण बन जायेगा।

मनुष्य अन्तत एक सामाजिक प्राणी है यदि वह शेष समाज से कटा हुआ है तो उसका आत्म परितोष सभव है। व्यक्ति अपने उन्नयन और विकास के लिए समाज पर निर्भर करता है जिस प्रकार कि समाज की निर्भरता व्यक्ति पर है। इससे भी आगे व्यक्ति की प्रगति को कोई मूल्य नहीं है यदि वह सम्पूर्ण समाज के विकास से निरपेक्ष है ऐसा आदर्श को कोई मूल्य नहीं है जिसे एक व्यक्ति ने अगीकार कर लिया है। किंतु समाज ने इसे निरस्त कर दिया है और वह सामूहिक जीवन का अग नहीं बन सका है। यदि स्वतत्रता हमारे जीवन का मूलभूत है हमारी-गतिविधियो का जीवत प्रेरणा स्रोत है तब इसे सामाजिक पुनर्निर्माण का एक आधार भी बनाया जाना चाहिए। यदि एक बार स्वतत्रता के सिद्धान्त को समाज मे व्यवहृत कर दिया गया और इसे सामाजिक पुनर्निर्माण का आधार बना लिया गया तो सामाजिक क्रान्ति मे कोई कमी नहीं रह जायेगी। सपूर्ण समाज के लिए स्वतत्रता का अर्थ होगा-पुरुष के साथ-साथ स्त्री के लिए स्वतत्रता, उच्च जातियो के साथ-साथ दलित वर्गों के लिए स्वतत्रता, केवल धनवानो को नहीं वल्कि निर्धनो के लिए स्वतत्रता, आवालवृद्ध सबके लिए स्वतत्रता। दूसरे शब्दो मे कहे तो सभी वर्गो, सभी अल्पसख्यको और सभी व्यक्तियो के लिए स्वतत्रता। इस प्रकार स्वतत्रता मे समानता अतर्निहित है और समानता से स्वतत्रता की ध्वनि निकलती है। अतएव एक-एक समाज मे स्त्री को कानून के साथ-साथ सामाजिक मामलो मे पुरुष के समान अधिकार प्रदान करना होगा। जन्म के कारण जिन वर्गो या जातियो पर हीनता का ब्राड लगा दिया गया है इसे निर्ममता के साथ नष्ट करना होगा। सामाजिक विकास के मार्ग मे आडे आने वाली आर्थिक असमानताओ को समाप्त करना होगा और सबको शिक्षा और विकास के समान अधिकार के अवसर प्रदान करने होंगे। जवानी को अब अपराध नहीं समझा जायेगा और युवक-युवको को समाज के पुनर्निर्माण और प्रशासन के दायित्व सौंपे जायेगे। समाज, देश, और आर्थिक ससार में एक व्यक्ति किसी दूसरे की भाति ही स्वतत्र होना चाहिए और उसे समान दर्जा मिलना चाहिए। सबको समान अवसर, धन का समान वितरण सामाजिक निषेधो का उन्मूलन, जाति प्रथा का अत और विदेशी शासन से मुक्ति-हम जिस समाज को बनाना चाहते हैं उसके आधार भूत सिद्धान्त ये होने चाहिए।

मित्रो, मैं नही जानता कि मेरे सिद्धान्तो मे आप मुझे कल्पना जीवी समझेगे या एक स्वप्न द्रष्टा। लेकिन यदि मुझे एक स्वप्न दर्शी समझते हैं तो मैं कहूगा कि मैं अपने सपनो से प्रेम करता हू। ये सपने मेरे लिए वैसे ही सच्चे हैं जैसे कि दिन मे एक सडक पर खडे हुए एक व्यक्ति के लिए आस-पास का ससार। इन सपनो से मुझे प्रेरणा और सकल्प शक्ति प्राप्त होती है। सपनो के बिना मैं जी नहीं सकता क्यों कि फिर जीवन मे कोई अर्थ और आकर्षण शेष नहीं रह जाता। मैं जिस सपने को प्रेम करता हू वह है एक स्वतत्र भारत-एक गौरवशाली भारत का सपना। मैं भारत को अपने गृहस्वामी और अपने भाग्य के राजा के रूप मे देखना चाहता हू। मैं चाहता हू कि भारत अपनी थलसेना नौसेना और वायुसेना के साथ एक स्वतत्र गणराज्य हो और स्वतन्त्र देशो की राजधानियो मे उसके राजदूत हो। मैं चाहता हू कि भारत पूर्व और पश्चिम के सन्देश के रूप मे ससार के सामने खडा हो। मैं चाहता हू कि भारत पूर्ण स्वतन्त्रता के एक नये सिद्धान्त के साथ विश्व भ्रमण करे।

आज के विद्यार्थियो आप भविष्य के निर्माता हैं। आप स्वतत्र भारत के उत्तराधिकारी बनने वाले हैं। मेरी इच्छा है कि आप मेरे कुछ सपनो और आकाक्षाओ मे भागीदारी करे। मेरे पास आपको देने के लिए और कुछ नहीं है। क्या आप मेरी भेट स्वीकार करेगे? आप को श्रेष्ठतम आदर्शवाद से ओतप्रोत होना चाहिए। उदात्त आदर्श आप को अर्पित कर सकते हैं वे आदर्श जितने उच्चतर होंगे उतने ही आप को प्रेरित करेंगे और आप के प्रसुप्त गुणो को जाग्रत करेगे। अतएव उठो, जागो। आप का विद्यार्थी जीवन केवल रोजगार पाने की प्रशिक्षण नहीं है। वह जीवन केवल रोजी-रोटी कमाने तक ही सीमित नहीं है। बल्कि यह एक उच्चतर लक्ष्य की तैयारी है। मनुष्य केवल रोटी से जीवित नहीं रह सकता। मैंने आपके समक्ष एक भविष्य का स्वप्न रखा है जो आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। इस भविष्य मे तुम्हे खुद भूमिका अदा करनी है वास्तव मे यह वह भविष्य है जिसका आपको अपने त्याग और परिश्रम मे निर्माण करना है। आप को अपने शरीर और मन को भावी जीवन के समुचित वाहक के रूप मे प्रशिक्षित करना है। आपके आतरिक और वाह्य जीवन से यह पुष्ट हो सके कि आप सेवा के लिए समर्पित हैं। आप की शिक्षा एव सस्कृति को उस लक्ष्य से निर्देशित होना होगा जो कि आप के सामने है। मैं जिस जीवन का आप को परामर्श दे रहा हू वह कष्टपूर्ण हो सकता है लेकिन आप मुझ पर विश्वास करे यह बडा ही आनददायक है। मैं जिस मार्ग के लिए आप का आह्वान कर रहा हू वह काटो भरा हो सकता है। लेकिन क्या यह अविनाशी गौरव की ओर अग्रसर करने वाला मार्ग नहीं है। अतएव आओ एकजुट होकर और कधे से कधा मिलाकर इस श्रेष्ठ की ओर बढे चलो तभी हम अपने मानवीय जीवन को सार्थक बना सकेंगे तथा अधकार दु ख पीडा और यातनाओ मे गुजरते हुए अततोगत्वा हम जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य-परम आनद और अनश्वरता तक पहुच सकेंगे।

वदे मातरम्

बंगाल कांग्रेस का चुनावी विवाद

इलाहाबाद मे पडित मोतीलाल नेहरू का बयान, 17 दिसबर, 1929

इलाहाबाद मे आयोजित कार्य समिति की अतिम बैठक मे मुझे बगाल के चुनावी विवाद को सुलझाने हेतु पच के रूप मे नियुक्त किया गया। यह अप्रिय दायित्व मैंने इस भाव के साथ स्वीकार कर लिया कि मेरे पूर्वाग्रहो के रहते हुए एक स्थानीय जाच बैठाई जानी मेरे लिए सभव नहीं होगा। कार्य समिति के कुछ सदस्यो ने डा० पट्टाभि सीता रमैया की नियुक्ति की सिफारिश की जो कि गवाही लेने वाले कमिश्नर के रूप मे वहा उपस्थित थे। डा० सीता रमैया ने अनिच्छा व्यक्त की और तुरत बैठक छोडकर चले गये। उनकी अनुपस्थिति मे सुभाष चद्र बोस और जे० एम० सेन गुप्ता की मौजूदगी मे इस प्रश्न पर बहस की गई कि कार्य समिति के सदस्यो मे से कौन व्यक्ति इस प्रकार के आयोग के कार्यभार को सभाल सकता है। अतएव अतिम रूप से इस बात पर सहमति हुई कि डा० सीता रमैया से आयोग का दायित्व स्वीकार करने के लिए पुन पूछा जाये। जब यह समझ बन गयी तो सेन गुप्ता और सुभाष चद्र बोस कलकत्ता चले गये। मैं उन्हे डा० पट्टाभि सीता रमैया को मनाने मे सफल हो गया। तदनुसार मैंने सेनगुप्ता और सुभाष चद्र बोस को तार द्वारा सूचित कर दिया कि मेरी ओर से जाच करने के लिए डॉ० पट्टाभि सीता रमैया को नियुक्त कर दिया है।

कार्य समिति की पुष्टि के पुर्वानुमान के आधार पर मैंने यह निर्देश कर दिया कि मौजूदा विवाद के अतिम रूप से सुलझ जाने तक पिछले वर्ष बगाल से चुने गये अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के सदस्य कार्य करते रहेगे।

अब मैं जे० सी० गुप्ता और एस० के० मिश्रा द्वारा उठाई गई आपत्तियों का उल्लेख करता हू। उनकी मुख्य शिकायत यह भी थी कि जब कमिश्नर के सम्पूर्ण साक्ष्य प्रस्तुत कर चुके है, तो भी दूसरे पक्ष ने अपनी दीर्घसूत्री कार्यनीति के कारण विवाद के त्वरित निर्णय को टाल दिया। श्री गुप्ता और मिश्रा ने यह दलील भी रखी कि बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी को एक अवसर दिया जा सकता है कि वह उनके मामले को मेरे सामने रख सके और किसी निकट की तिथि पर उनकी सुनवाई करने के लिए मुझ पर दबाव डाल सके। रिक्त स्थान भरने के अलावा बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी को अपने सविधान के प्रतिनिधियो के चुनाव का अधिकार नहीं है। प्रतिनिधि जिला समितियो द्वारा चुने जायेगे नतीजा यह हुआ कि मैंने जाच स्थगित कर दी।

सुभाष चंद्र बोस का बयान

अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पडित मोतीलाल नेहरू के बयान से मैं बहुत आश्चर्यचकित और क्षुब्ध हू। मुझे भय है कि मुझे उनके बयान की गई कुछ गलत टिप्पणियो का खडन करना है। यदि मैं चुप रहता हू तो जनता के मन के कुछ धारणा बन सकती है।

इलाहाबाद की कार्य समिति की बैठक मे बगाल के विवाद की जाच करने हेतु एक के बाद

एक कई नाम सुझाये गये। जब डा० पट्टाभि सीता रमैया का नाम सुझाया गया तो स्वय डा० सीता रमैया ने यह कहते हुए इसका विरोध किया कि बगाल जैसे महत्वपूर्ण विवाद को सुलझाने का दायित्व किसी असाधारण व्यक्तित्व को सौंपा जाना चाहिए। इसके बाद उनका नाम रोक दिया गया और हम दूसरे नामो पर विचार करने लगे। अन्य लोगो के साथ-साथ हमने पडित मदन मोहन मालवीय के नाम पर भी विचार किया। लेकिन हमे सूचना मिली कि पडित मालवीय इलाहाबाद छोड चुके है। अततोगत्वा हम इस बात पर सहमत हुए कि स्वय अध्यक्ष इस दायित्व को सभालेगा।

कमिश्नर की नियुक्ति के प्रश्न पर इलाहाबाद मे कभी विचार नही किया गया। इस बात से आश्वस्त होने के बाद हम सबने इलाहाबाद से प्रस्थान कर दिया कि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष इस मामले को स्वय अपने हाथों मे ले रहे है। जब कलकत्ता आने के बाद मैने पडित का यह तार पाया कि डा० सीता रमैया इस मामले की जाच कर रहे है तो आश्चर्यचकित रह गया। इस तार से मैं साफ नहीं समझ पाया कि डा० पट्टाभि को कौन से अधिकार प्राप्त किये गये हैं। मैं डा० पट्टाभि की नियुक्ति पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए पडितजी को तुरन्त तार किया लेकिन उन्होने अपने उत्तर मे मुझे आश्वस्त किया कि अतिम निर्णय उनके हाथ मे रहेगा और डा० पट्टाभि को मात्र जाच करने और गवाहिया लेने हेतु कमिश्नर के रूप मे भेजा गया था। मैं जिन्हे पवित्र मानता हू उनके वास्ते से यह कहता हू कि मै कमिश्नर के रूप मे डा० पट्टाभि की नियुक्ति मे शामिल नहीं था। मुझे नियुक्ति की पहली सूचना तब मिली जब मैने कलकत्ता मे पडित जी का तार पाया। पडित मोतीलाल नेहरू ने अपने बयान मे स्वय स्वीकार किया है। मैंने उनकी ओर से डा० पट्टाभि की नियुक्ति का तार पाने के तुरत बाद उन्हे एक तार प्रेषित किया था जिसमे मैंने नियुक्ति को लेकर आश्चर्य व्यक्त किया था। यदि मै इस नियुक्ति के प्रति सहमति देने वाला व्यक्ति रहा होता तो मैं आश्चर्य व्यक्त क्यो करता?

मुझे अत्यन्त खेद है कि अ० भा० का० कमेटी के अध्यक्ष ने श्री जोगेश गुप्ता और सतोष मिश्र के एक पक्षीय बयान को सुनने और डा० पट्टाभि को एक पक्षीय रिपोर्ट को स्वीकार करने के बाद अपने बयान मे कुछ टिप्पणिया की है। उन्होने यह बयान जारी करने से पहले हमे अपनी बात कहने का अवसर नहीं दिया जब कि हमने निवेदन किया था कि अपना फैसला देने से पहले हमारी सुनवाई अवश्य करे। मैं आश्वस्त हू कि यदि पडित जी श्री गुप्ता और मिश्रा की तरह अपना फैसला देने से पहले हमारी सुनवाई भी करते तो इस बयान को जारी करने की जरूरत ही महसूस न होती या फिर बिल्कुल भिन्न रूप से जारी किया जाता। हमे तार द्वारा सूचित कर दिया गया कि वे जाच को फरवरी तक स्थगित कर चुके है फिर इसके बाद डा० पट्टाभि की एक पक्षीय रिपोर्ट और हमारे विरोधी श्री गुप्ता और मिश्रा के बयानो को स्वीकार करने का क्या औचित्य था?

मैं अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप मे इस निर्देश को लेकर भी आश्चर्यचकित रह गया कि अ भा० का० कमेटी को बगाल से चुने गये सदस्य विवाद के अतिम समाधान तक कार्य करते रहेगे। मुझे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के अनेक नवनिर्वाचित सदस्यो के प्रतिरोध की जानकारी मिली है। जो कुछ सेट्रल प्राविस (मराठी) मे घटित हुआ उसकी बगाल की स्थिति से कोई तुलना नहीं है, जैसा कि पडित जी ने अपने बयान मे स्वीकार किया है कि

सेंट्रल प्राविंस (मराठी) मे चुनाव नहीं हुए थे जब कि बगाल मे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के चुनाव बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के नियमानुसार सम्पन्न हुए थे। पडित जी को शायद याद होगा कि उन्होने मुझे इस आशय का तार किया था कि अ०भा० प्र० का० कमेटी तब तक कार्य करती रहेगी जब तक इसके ऊपर किसी को नियुक्त नहीं कर दिया जाता। बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी अपनी विधिक प्रक्रिया द्वारा सदस्यो को निर्वाचित कर चुकी है। इन सदस्यो को काम करने से कैसे रोका जा रहा है।

मौजूदा विवाद के विषय मे कहने के लिए मेरे पास बहुत कुछ है लेकिन मैं किसी बाद के मौके पर कहूगा। यहा मैं सिर्फ इतना कहूगा कि इस बात मे कोई सच्चाई नहीं है कि डा० पट्टाभि ने जाच शुरू करने से पहले इस विवाद को सुलझाने के दिशा मे मैत्री पूर्ण प्रयास किये थे और मैं नहीं जानता कि पडित जी को किसने सूचना दी थी? न ही मैं यह जानता कि श्री जोगेश गुप्ता और सतोष मिश्रा का बगाल के बीस जिलो की ओर से बोलने का अधिकार किसने दिया था। बगाल के सभी जिलो से चुने गये सदस्यों की सूची हमे अभी प्राप्त हुई है हालाकि अनेक सदस्य दूरी के कारण लाहौर जाने मे हिचक सकते है, फिर भी लाहौर काग्रेस मे बगाल का प्रतिनिधित्व अच्छा रहेगा।

यूनियन बोर्ड की स्थापना के विरुद्ध अभियान

बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी मे जारी एक बयान, 20 दिसम्बर, 1929

लोग जागरूक है कि जैसोर जिले की बादा बिल्ला यूनियन मे केन्द्रीय परिषदों की स्थापना के विरुद्ध लगभग छ माह से अभियान चल रहा है। इस अभियान के पहल बादा बिल्ला काग्रेस कमेटी की ओर से की गई है और इस कमेटी के सचिव श्री विजय चन्द्र राय ने इसके नेतृत्व को सभाला। जब जुलाई के अत मे जैसोर मे जिला राजनीतिक सम्मेलन आयोजित हुआ इसमे बडाबिल्ला की स्थिति का जायजा लिया गया और काग्रेस ने इस मामले की जाच के लिए एक समिति नियुक्त की। तब से जैसोर के प्रमुख नेता इस आदोलन मे दिलचस्पी लेने लगे।

जैसोर काग्रेस कमेटी और साथ मे बडाबिल्ला की स्थानीय काग्रेस कमेटी ने हमसे इस अभियान की जिम्मेदारी स्वीकार करने के लिए निवेदन किया था। तत्पश्चात् बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी ने स्थिति की जाच करने और रिपोर्ट देने हेतु एक समिति नियुक्त की। समिति ने स्थानीय परिवेश का निरीक्षण किया और अभियान चलाने को लेकर बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के पक्ष मे रिपोर्ट दी। इसके बाद मैं जैसोर और बडाबिल्ला गया और इस अभियान को चलाने की अपेक्षा से प्रभावित हुआ। इस शाम(20, दिस०) बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी की कार्य समिति की बैठक हुई। उपर्युक्त तथ्यो को ध्यान मे रखते हुए तथा बडाबिल्ला और जैसोर की परिस्थितियो को देखते हुए इस अभियान के दायित्व को स्वीकार करने का निर्णय लिया। इस उद्देश्य के लिए एक प्रतिनिधि समिति का गठन भी कर दिया। बगाल ग्राम स्वशासन अधिनियम, 1919 के तहत सरकार किसी जिले या जिले के किसी भाग मे अपनी इच्छानुसार केन्द्रीय परिषदो की स्थापना कर सकती है। कई इलाको से केन्द्रीय परिषदे पिछले दिनो हटा ली गईं जहा कि लोगो ने इनके गठन का विरोध किया था।

लोगो द्वारा केन्द्रीय परिषदो के गठन के विरोध के अनेक कारण है लेकिन कराधान मे वृद्धि इसका मुख्य कारण है। जैसोर जिले में केन्द्रीय परिषद की स्थापना के बाद ही करो मे वृद्धि हुई। बडाबिल्ला यूनियन मे लोगो ने यूनियन बोर्ड के करो का भुगतान करने से इकार कर दिया और कर बद अभियान" पूरी तेजी के साथ चल पडा। सरकार ने कठोर दमन नीति अपनाई और हमारे महत्वपूर्ण कार्यकर्ताओ सहित अनेक ग्राम वासियो पर मुकदमे चलाये। कर भुगतान न करने वालो की चल सपत्ति को जब्त कर लिया गया और कभी-कभी चुपके से नीलाम कर दी गई। चालीस पचास और साठ रुपये कीमत रखने वाली मवेशी कौडियो के दाम बेच दिए गए फिर भी ग्रामवासी निर्भीक बने रहे। और उन्हे एक सफल अत तक इस अभियान को चलाने को निश्चय किया।

मै जनता और तमाम दलो से साग्रह निवेदन करता हू कि वे अपने मतभेद भुलाकर इस अभियान की सफलता मे योगदान करे।

युवा आदोलन का लक्ष्य

मिदनापुर युवा सम्मेलन मे भाषण, 21 दिसम्बर, 1929

आज आप ने मिदनापुर युवा सम्मेलन का आयोजन किया है और मुझे इसकी अध्यक्षता हेतु आमत्रित किया है। मैने इस निमत्रण को सहर्ष स्वीकार कर लिया है लेकिन जब आप इस सम्मेलन को आयोजित कर रहे हैं तो आपका ध्यान कभी इस ओर भी गया कि राजनीतिक सम्मेलन के बजाय इसे युवा सम्मेलन क्यो कहना चाहिए? देश और देश से बाहर सस्थाओ और आदोलनो का अकाल नहीं है तब युवा आदोलन की क्या आवश्यकता पडी। इस कारण को समझना कोई मुश्किल नहीं है। सभी देश के युवा लोगो मे भारी अधैर्य और असतोष है। उन्हे जीवन की वास्तविकताओ मे अनिर्हित अपने आदर्श की प्राप्ति नहीं होती। वे जो चाहते है उन्हे प्राप्त नहीं होगा। अतएव वे विद्रोही हो उठते है और उनके रास्ते मे आने वाले तमाम व्यक्तियो और सस्थाओ को विस्थापित करने का सकल्प कर लेते है।

आज बहुत से लोग युवा सघो के गठन के लिए प्रयत्नशील है लेकन चद लोग ही युवा आदोलनो के आदर्श लक्ष्य और कार्यक्रम की समझ रखते है। युवा सघो को किसी सामाजिक सस्था की प्रतिकृति सूझना एक भूल होगी और युवा सघ भिन्न नामो और लेबलो से युक्त काग्रेस कमेटिया भी नहीं है। वास्तव में युवा आदोलन अपने आदर्श और कार्यक्रम रखने वाला एक बिल्कुल अलग आदोलन है। अतएव वे लोग जो काग्रेस के नेतृत्व मे असफल रहे हैं वे मानते है कि युवा आदोलन से जुडकर काम करने का कोई महत्व नहीं है। मैं एक बिन्दु की ओर आप का ध्यान आकर्षित कर रहा हू। बगाल के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक नजर डालिये आप देखेंगे कि कितने समर्पित कार्यकर्ता इस आदोलन मे जुटे हुए हैं। मैं शुरू मे एक बात और कह देना चाहता हू कि युवा सघ न तो काग्रेस का उपसगठन है और न एक समाज सेवी सस्था। युवा आदोलन का लक्ष्य नवीन की खोज है और इसके साथ-साथ एक नवीन समाज एक नवीन राज्य और एक राजनीति दर्शन की स्थापना लोगो को एक उच्चतर जीवन की ओर अग्रसर करना। जिसका हृदय एक नवीन

और उच्चतर जीवन की प्राप्ति की आकाक्षा से परिपूर्ण है, वह वर्तमान व्यवस्था के खिलाफ अवश्य विद्रोह करता है।

मनुष्य अपने जीवन लक्ष्य को जानना चाहता है, वह क्यो जीता है और उसका आत्म परितोष कहा निहित है? जब तक उसे इस प्रश्न का सतोषजनक उत्तर नहीं मिलता, उसका जीवन भार स्वरूप हो जाता है और उसके गुण प्रसुप्त बने रहते है। इस प्रश्न का सुराग हर व्यक्ति के पास नहीं है। जो व्यक्ति इस प्रश्न का उत्तर खोजने मे समर्थ नहीं है वह दूसरो की सहायता कैसे कर सकता है? जब कि सपने सबको प्रिय लगते है। हमारे स्वर्गीय नेता देशबधु चितरजन दास का भी एक सपना था। यह सपना उनकी ऊर्जा और आनद का स्रोत था। हम उस सपने के उत्तराधिकारी हैं। हमारी सब गतिविधिया इसी सपने से परिचलित हैं। वह सपना और आदर्श क्या है? जो मैं चाहता हू वह है सपूर्ण स्वतत्रता और एक स्वतत्र राज्य। मैं एक ऐसा समाज चाहता हू जिसमे व्यक्ति को भारी आदेशो के नीचे न दबना पडे। एक ऐसा समाज जिसमे जाति प्रथा नहीं होगी। एक ऐसा समाज जिसमे स्त्री को पुरुष के समतुल्य अधिकार हो और उसे नागरिक और राजनीतिक दायित्व सौंपे जाये, ऐसा समाज जिसमे धन असमानता न हो, जिसमे प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा और विकास के समान अवसर उपलब्ध हो। मैं विदेशी प्रभुत्व से मुक्त राज्य चाहता हू एक ऐसा राज्य जो हमारे समाज के साथ हिल-मिल कर काम करे। इस सब से ऊपर मैं एक ऐसा समाज और राज्य चाहता हू जो भारतीय जनता की तमाम जरूरतो को न केवल पूरा करेगा बल्कि समूचे विश्व के समक्ष एक आदर्श उपस्थित करेगा। मैं ऐसे समाज और राज्य का सपना देखता हू। मेरे युवा मित्रो, मेरे पास आप को देने के लिए इस सपने के सिवा कुछ नहीं है, जिससे मुझे असीम ऊर्जा और आनद की प्राप्ति होती है और जिससे मैं आत्म परितोष की अनुभूति करता हू।

नये समाज को निर्माण समानता के आधार पर होगा व जातिप्रथा को नष्ट करना होगा। स्त्री को तमाम बधनो से मुक्त करना होगा और पुरुष के समान अधिकार देने होगे। धन की असमानता को दूर करना होगा नस्ल जाति और रग के भेद को भुलाकर सबको शिक्षा और विकास के समान अवसर प्रदान करने होंगे।

सक्षेप मे हमें भारत के लिए पूर्ण स्वाधीनता चाहिए जो इस स्वाधीन भारत मे जन्म लेगे उनका राष्ट्रों के समुदाय मे सम्मान किया जायेगा।

दर्शन एव विज्ञान, धर्म एवं कर्म, शिक्षा एव सस्कृति के क्षेत्र मे भारत फिर से अन्य राष्ट्र से श्रेष्ठतर बन जायेगा। अब हमारे कर्तव्यो के विस्तृत वर्णन की जरूरत नहीं है। हम नये भारत के निर्माता हैं। हम सब एक हो जाये और इस पवित्र एव महान कार्य में जुट जायें।

समानांतर सरकार और पूर्ण बहिष्कार

सब्जैक्ट कमेटी की एक बैठक मे प्रति-प्रस्ताव, 31 दिसम्बर, 1929

मैं महात्मा गाधी के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हू कि वे पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव लेकर सामने आये। लेकिन मैं आप के सामने इसलिए हाजिर हू क्यो कि मै महसूस करता हू कि यह एक ऐसा कार्यक्रम नहीं है जिसके माध्यम से हम पूर्ण स्वराज का लक्ष्य प्राप्त कर सके। मेरा सशोधन अपने आप मे पूर्ण और एक व्यावहारिक कार्यक्रम है, मेरे कार्यक्रम के दो मुख्य अग है-रचनात्मक और साथ मे ध्वसात्मक। मैं नहीं समझता कि हम जनता की सदिच्छा पर आधारित एक समातर सरकार बनाये। इस लक्ष्य की प्राप्ति कैसे कर सकते हैं आयरलैड के सिन फ्रीवर्स का उदाहरण हमारे सामने है। मै यह नहीं कहता कि हमारी जनता अपने अभियान मे आयरलैड का अनुकरण करे। लेकिन मै यह बता देना चाहता हू कि इस लक्ष्य की प्राप्ति की एक मात्र योजना समनातर सरकार की स्थापना है।

मुझे विश्वास है कि यदि हम अपने कार्यक्रम को तेजस्वी और सघर्षमय बना लेते है तो हम बाहर के लोगो को इससे जोडने मे सफल हो सकेंगे। मेरा अभिप्राय किसानो मजदूरो और युवाओ से है। इन तबको की काग्रेस के खिलाफ अनेक आर्थिक और सामाजिक परेशानिया है। वे सिर्फ राजनीतिक कष्टो के निवारण से सतुष्ट नहीं है और काग्रेस उनकी आर्थिक और सामाजिक परेशानियो का उपचार नहीं कर पा रही हैं। हम उन्हे अपने दायरे मे लेना चाहते है और उनकी ऊर्जा व ससाधनो का सही इस्तेमाल करना चाहते है। जब तक काग्रेस दलित वर्गो की समस्याओं के साथ जोडकर अपनी पहचान नही बनाती है तब तक काग्रेस अपने राजनीतिक कार्यक्रम को कैसे आगे बढा सकती है?

यदि बहिष्कार उपयोगी कारगर और प्रभावशाली बनाना है तो अपने लक्ष्य को निर्धारित करने से पहले हमे एक सपूर्ण बहिष्कार का कार्यक्रम अमल मे लाना होगा। मुझे आशिक बहिष्कार की कोई उपयोगिता नजर नहीं आती। अदालतो मे वकालत करना और कलकत्ता कार्पोरेशन जैसी सस्था मे प्रवेश के समय राजभक्ति की शपथ लेना स्वाधीनता के सिद्धान्त के अनुकूल है। हमे अपनी सपूर्ण ऊर्जा स्वाधीनता प्राप्ति के कार्य मे लगा देनी है। मेरा सिद्धान्त है-या तो पूर्ण या कुछ भी नहीं। बहिष्कार को अपनाना है तो पूर्ण बहिष्कार होना चाहिए। अदालतो और स्थानीय सस्थाओ मे भागीदारी और काउसिलो के बहिष्कार का कोई औचित्य नहीं है। राजनीति मे कभी-कभी परिस्थितियो की माग को देखते हुए झुकना भी पडता है जैसा कि सिन फ्रीवर्स ने किया था। उसने राजभक्ति की शपथ लेने के बाद ससद मे प्रवेश किया था। इसी प्रकार वहा कम्युनिस्ट भी ससद मे बैठे थे। एक व्यावहारिक दृष्टिकोण से मेरा यह विश्वास है कि स्थानीय सस्थाओ मे जाना स्वाधीनता के सिद्धान्त के प्रतिकूल नहीं है लेकिन मैं कहना चाहता हू कि मेरा विचार है कि इस स्थिति मे पूर्ण बहिष्कार परमावश्यक है। अपनी बात समाप्त करने से पहले मैं महात्मा गाधी द्वारा लाये गये प्रस्ताव के बारे मे दो शब्द कहना चाहूगा। मैं कहना चाहता हू कि दिल्ली घोषणा पत्र पर मैंने हस्ताक्षर नही किये थे और मैं नही चाहता कोई व्यक्ति इसका समर्थन करे जैसा कि हमने आज 31 दिसम्बर को किया। क्या आप दिल्ली घोषणा पत्र के समर्थन को तैयार है क्या आप भारत

के वायसराय की प्रशसा करना पसद करेगे। गोलमेज सम्मेलन एक पाखड है। क्या आप अपने अत करण से प्रस्तावना का अनुमोदन करते है। महात्मा गाधी ने सब्जैक्ट्स कमेटी मे एक आश्वासन दिया था कि जहा तक उनका सबध है, वे सम्मेलन मे जाने का इरादा नहीं रखते। यह सदन के अधिकार मे है यदि आवश्यक हो तो वह इस वाक्याश को रहने दे।

अब जहा "गोलमेज सम्मेलन" शब्द बाद्य बध पर गौर कीजिए, मेरे समझ मे नहीं आता कि हमारे देशवासी इसे गोलमेज सम्मेलन क्यो कहते है? निश्चित रूप से यह "गोलमेज नहीं थी। मेरे अनुसार यह चौकोर मेज सम्मेलन है। गोलमेज सम्मेलन अपने अधिकृत व्यक्तियो के माध्यम से जूझती हुई युद्धरत शक्तियो का एक सम्मेलन है और सम्मेलन मे लिये गये निर्णयो की बाध्यता दोनो पर है। मैं आप से पूछता हू कि-क्या आप को विश्वास है कि भारत की जनता को यह अनुमति दी जाएगी कि वह अग्रेजी हुकूमत से बराबर की शर्तो पर बातचीत करने के लिए अपने प्रतिनिधि भेज सके। क्या आप आश्वस्त है कि सम्मेलन मे लिये गये निर्णयो की ससद द्वारा पुष्टि कर दी जायेगी? जब-जब सधिया हुई आप सब जानते है यहा तक दक्षिण अफ्रीका और अग्रेजी हुकूमत के बीच बातचीत के बाद जो निष्कर्ष निकले उनका दोनो पक्षो ने सम्मान किया। मैं जानता हू कि दक्षिण अफ्रीका के मामले मे जो सविधान तैयार किया गया उसे व्याकरण की अशुद्धि के बावजूद ससद ने स्वीकृति प्रदान कर दी। यहा तक कि ब्रिटिश राजनेता इसकी व्याकरणिक अशुद्धियो को भी ठीक नहीं कर सके। यह सही मायने मे गोलमेज सम्मेलन है लेकिन यहा क्या माजरा है? मैंने सुना है कि शासन प्रमुख और यूरेपियन चैम्बर्स आफ कामर्स अपने प्रतिनिधि भेजेगे। क्या शासन प्रमुखो और अग्रेजो का यूरेपियन चैम्बर्स आफ कामर्स के बीच कोई लडाई जारी है?अग्रेजी राष्ट्र बरकरार है क्या वफादारो और अग्रेजी हुकूमत के बीच कोई लडाई जारी है। तब इन पार्टियो को गोलमेज सम्मेलन मे अपने प्रतिनिधि क्यो भेजने चाहिए।

लेकिन हमारे देश के लोग आज इसे गोलमेज सम्मेलन कहते हैं अब देखना है कि अग्रेज इसे क्या कहते हैं?

ब्रिटिश राजनेताओ ने अपने भाषणो मे उचित कारणो से इसे गोलमेज सम्मेलन नहीं कहा। अध्यक्ष महोदय मैं अपनी बात समाप्त करता हू, मैं पूछता हू कि क्या पिछले कुछ वर्षो से जारी काग्रेस के रचनात्मक कार्यक्रम स्वाधीनता लाने के लिए पर्याप्त हैं। मेरे अनुसार नहीं हैं। नि सदेह इस कार्यक्रम मे सविनय अवज्ञा का सदर्भ है। लेकिन इसी समय मैं कहूगा कि सविनय अवज्ञा का आयोजन इस कार्यक्रम द्वारा सभव नहीं है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जब तक हम युवाओ, किसानो और मजदूरो को सगठित नहीं करेगे तब तक सविनय अवज्ञा हमारे लिए मृग-मरीचिका बनी रहेगी। अतएव, यदि आप इस प्रस्ताव को प्रभावशाली बनाना चाहते है तो मैं निवेदन करूगा कि आप एक प्रभावशाली कार्यक्रम तैयार करे। एक समयानुकूल कार्यक्रम बनाना आवश्यक है इसका विधार्थियो युवाओ और मजदूरो द्वारा स्वागत किया जायेगा।

पिछले वर्ष कलकत्ता काग्रेस मे हमने स्वाधीनता के सिद्धान्त मे परिवर्तन करना चाहा था। यह सभव न हो सका। मैं सोचता हू हम एक वर्ष प्रतीक्षा कर चुके है। मैं निवेदन करूगा कि आप विचार करे इस सिद्धान्त मे परिवर्तन न करके आपने क्या पाया? एक वर्ष व्यर्थ गया। यदि यह सशोधन अभी स्वीकृत नहीं हुआ, ईश्वर ने चाहा तो निकट भविष्य मे शायद अगले वर्ष अवश्य स्वीकृत हो जायेगा।

महात्मा गाधी के प्रस्ताव को देश के युवाओ का समर्थन नहीं मिलेगा। अतएव मै महात्मा गाधी से हालात का जायजा लेने और युवा पीढी के हृदय की भावनाओ को समझने का निवेदन करूगा। अपना स्थान ग्रहण करने से पहले मैं महात्मा को यह प्रस्ताव लेकर सामने आने के लिए एक बार फिर धन्यवाद देता हू।

पूर्ण बहिष्कार का कार्यक्रम

काग्रेस के लाहौर अधिवेशन मे भाषण, 31 दिसम्बर, 1929

अपने प्रकरण पर आने से पहले मैं महात्मा गाधी का पूर्ण स्वराज सम्बधी प्रस्ताव पेश करने के लिए हार्दिक धन्यवाद देना चाहूगा। लेकिन मुझे अपना सशोधन पेश करना पडा क्योकि मेरा विश्वास है कि उनके द्वारा लाया गया प्रस्ताव हमें पूर्ण स्वराज की ओर अग्रसर नहीं कर सकता। मेरा सशोधन अपने लक्ष्य मे पूर्ण सगति रखता है और आज के समय की पुकार के अनुकूल है। मुझे कोई सदेह ही नहीं कि अभी नहीं तो आगामी काग्रेस मे इस सशोधन को देश की युवा पीढी का समर्थन अवश्य प्राप्त होगा।

मेरा कार्यक्रम एक पूर्ण बहिष्कार का कार्यक्रम है। मै नहीं समझता कि दूसरे पहलुओ की उपेक्षा करते हुए बहिष्कार को केवल एक पहलू तक सीमित रखने की कोई उपयोगिता होगी। अदालतो मे जाकर वकालत करना हमारे स्वाधीनता के सिद्धान्त के अनुकूल नहीं होगा। राजभक्ति की शपथ लेकर कलकत्ता कार्पोरेशन जैसी सस्था मे प्रवेश करना भी अनुकूल नहीं है। आप को इन सबका परित्याग क्यो करना चाहिए। इसका एक अन्य कारण है। हमारे सामने दुष्कर कार्य है हमारे कधो पर एक बडा दायित्व है। इसलिए हमे अपनी सपूर्ण ऊर्जा और समय को अपने कार्य मे व्यय करना है। मैं कहना चाहूगा कि इस स्थिति मे यदि आप पूर्ण बहिष्कार के लिए तैयार नहीं है तो आप के द्वारा मात्र काउसिलो के बहिष्कार कोई औचित्य नहीं है।

हमे अपने कार्यक्रम और लक्ष्य मे सगति रखनी होगी। या तो हम पूर्ण बहिष्कार करे या कुछ नहीं। मैं एक अतिवादी हू और मेरा सिद्धान्त है या तो पूर्ण या कुछ नहीं। यदि मैं सार्वजनिक सस्थाओ को हथियाने की बात करता हू फिर मैं प्रत्येक सार्वजनिक सस्था को हथियाना चाहूगा। यदि हम बहिष्कार करते है तो फिर वह पूर्ण बहिष्कार क्यो न हो? और हम अपने ध्यान और ऊर्जा को कुछ अन्य कार्यक्रमो पर केन्द्रित क्यो न करे। अतएव मैं अपने कार्यक्रम के अनुमोदन की पूरे जोर के साथ वकालत करूगा मैं जानता हू आज भारत का जनमत इसके पक्ष मे है।

अब महत्मा गाधी जी के प्रस्ताव के बारे मे दो शब्द कहना चाहूगा। प्रस्तावना मे आप से कहा गया है कि आप दिल्ली घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करने की कार्यसमिति की कार्यवाही का समर्थन करे। साथ ही क्या आप गोलमेज सम्मेलन के सदर्भ को स्वीकृति देने को तैयार है? मैं इसे गोलमेज सम्मेलन नहीं कहूगा। यह निश्चित रूप से गोलमेज नहीं है मैं इसे चौकोर कहूगा। गोलमेज सम्मेलन दो जूझती हुई पार्टियो का सम्मेलन होता है जिसमे दोनो विरोधी पक्षो के अधिकृत व्यक्तियो को

प्रतिनिधित्व होता है। मैं आपसे पूछता हू कि अग्रेजी हुकूमत के प्रतिनिधियो से बातचीत करने हेतु क्या भारत की जनता से अपना कोई प्रतिनिधि भेजने के लिए पूछा गया? क्या हमे आश्वस्त किया गया है कि इस सम्मेलन मे लिये गये निर्णय दोनो पक्षो द्वारा मान्य किये जायेगे? क्या हम आश्वस्त हैं कि सम्मेलन के निर्णय ब्रिटिश ससद के समक्ष पुनर्विचार के लिए प्रस्तुत नहीं किये जायेगे?

आप जानते हैं जब ब्रिटेन और दक्षिण अफ्रीका के बीच सधि हुई जब सम्मेलन में लिखे गये निर्णयों का दोनो पक्षो ने सम्मान किया। इस सच्चाई को मैं जानता हू कि दक्षिण अफ्रीका के मामले मे जो सविधान तैयार किया गया वह व्याकरण की अशुद्धियो के बावजूद अग्रेजी हुकूमत द्वारा स्वीकृत कर दिया गया और ब्रिटिश ससद ने इसकी व्याकरकणिक अशुद्धियो को भी दूर नहीं किया। इसे गोलमेज सम्मेलन कहते हैं। भारत के लिए प्रस्तावित इस सम्मेलन का चरित्र क्या है? साइमन कमीशन और उससे जुडे हुए तमाम लोग वहा होगे और इसके साथ ही सम्मेलन मे लिये गये निर्णय पुष्टि के लिए ससद के समक्ष प्रस्तुत किये जायेगे। सिर्फ भारत ही नहीं यूरोपियन चैंबर्स आफ कामर्स तथा शासन प्रमुख भी सम्मेलन मे अपने प्रतिनिधि भेजेगे। क्या अग्रेजी हुकूमत और यूरोपियन चैंबर्स ऑफ कामर्स व शासन प्रमुखो के बीच कोई लडाई है। क्या सरकार और वफादारो के बीच कोई द्वन्द चल रहा है। मुझे ऐसी किसी लडाई की जानकारी नहीं है। जब इस प्रकार की सस्थाओ को सम्मेलन मे अपने प्रतिनिधि भेजना है तो मैं कहता हू कि यह गोलमेज सम्मेलन नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य से हमारे देश के लोग इसे गोलमेज सम्मेलन कहने पर तुले हुए हैं और अग्रेज इसे गोलमेज सम्मेलन नहीं कहना चाहते है।

एक तर्क के बाद मैं अपना भाषण समाप्त करता हू कि इस प्रस्ताव मे एक रचनात्मक कार्यक्रम तजवीज किया है जिसके द्वारा हम भारत की राजनीतिक मुक्ति प्राप्त कर सकते है। मैं चाहूगा कि सदन इस बात पर विचार करे कि काग्रेस जिस रचनात्मक कार्यक्रम को पिछले कुछ वर्षो से प्रचारित कर रही है क्या वह पूर्ण स्वराज का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए पर्याप्त है। इसमे कोई सदेह नहीं है कि प्रस्ताव मे सविनय अवज्ञा का प्रावधान है। लेकिन मैं कहूगा कि सविनय अवज्ञा तब तक सभव नहीं है जब तक कि हम मजदूर, किसानो और दलित वर्गो को उनके विशिष्ट कष्टो के आधार पर सगठित नहीं करते। यदि मेरा कार्यक्रम अपना लिया जाता है, यह स्वाधीनता के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए पर्याप्त है और प्रभावशाली साबित होगा। मैं प्रस्ताव के समर्थको से निवेदन करूगा कि वे बढती हुई परिस्थितियो और जनता विशेष रूप से युवाओ की भावनाओ को समझे तथा मेरा सुझाव स्वीकार करे।

पूर्ण बहिष्कार

एक साक्षात्कार मे बयान, 2 जनवरी, 1930

भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस मे हुई कल की कार्यवाहियो के परिणाम स्वरूप हमारा पक्ष न्याय सिद्ध हुआ। गत वर्ष हमने कलकत्ता मे स्वाधीनता के सिद्धान्त को अपनाने के सबध मे दवाब डाला था। नि सदेह इसमे हमारी पराजय हुई थी। लेकिन हमने अनुभव किया था कि नैतिक जीत

हमारी ही हुई है। महात्मा गाधी और पडित मोतीलाल नेहरू ने प्रभाव वश जो प्रस्ताव कलकत्ता मे निरस्त किया गया वह लाहौर काग्रेस द्वारा स्वीकृत कर लिया गया। इससे भी महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि स्वय गाधी जी ने यह स्वधीनता का प्रस्ताव पेश किया और पडित मोतीलाल नेहरू ने इसका अनुमोदन किया।

यह पूछना अप्रासंगिक न होगा कि स्वाधीनता के प्रश्न को लगभग टालते रहने से हमें क्या प्राप्त हुआ? मुझे विश्वास है कि यदि यह रास्ता हम पहले अपना लेते तो जितनी प्रगति हमने आज की है उससे कहीं अधिक प्रगति हम पिछले बारह वर्षों के दौरान कर चुके होते।

यह प्रस्ताव लाने के लिए महात्मा गाधी को धन्यवाद देते हुए मैं एक बात की ओर सकेत करना चाहूगा कि जो प्रस्ताव हम लाये हैं वह समय की माग तथा आज की युवा पीढ़ी की भावनाओ के अनुरूप नहीं है और न ही मेरे मतानुसार यह कार्यक्रम स्वाधीनता प्राप्ति के लक्ष्य कारगर है। मुझे अफसोस नहीं है कि मेरा सशोधन अमान्य हुआ। इसी तरह मुझे कोई अफसोस नही था कि कलकत्ता काग्रेस मे मेरा सशोधन पराजित हुआ था। देश को आगामी बारह महीनो मे मेरे सशोधन की अच्छाइयो को स्वीकार करना पडेगा और मुझे इस बात मे तनिक भी सदेह नही कि आगामी काग्रेस मे मेरी मान्यता को स्वीकृति मिलेगी। फिर भी मुझे खेद सिर्फ इस बात का है कि इस बीच काफी मूल्यवान समय नष्ट हो चुका होगा। लेकिन इसके अलावा कोई चारा नहीं है क्यो कि राजनीतिक शिक्षा कभी-कभी एक धीमी प्रक्रिया होती है। विशेष रूप मे उस समय जब कि प्रमुख नेता व्यावहारिक रूप से विरोधी पक्ष का साथ दे रहे हो।

बहिष्कार के प्रश्न को लेकर मैं अपनी स्थिति एक बार फिर स्पष्ट कर देना चाहता हू। जैसा कि मैंने कल के खुले सत्र मे अपने भाषण मे कहा था कि मात्र विधानसभाओ का बहिष्कार बेकार है। मैं उनके दभ को बटाने मे मदद कर सकता हू जिन्हे काग्रेस के स्वराज कार्यक्रम अपना लेने मे पीडा पहुचती थी। यह बात सभी के बारे मे है। यह जानकर अचरज होता है कि जितने बहिष्कार के कट्टर समर्थक पूर्ण बहिष्कार को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। जिनकी पैरवी मैं कर चुका हू। दो कारणो से विधानसभाओ और अन्य सार्वजनिक सस्थाओ के बहिष्कार का समर्थन किया जा सकता है। पहला स्वाधीनता के सिद्धान्त को स्वीकार करना और उसमे सत्य निष्ठा की शपथ ग्रहण एक कठोर नैतिक दृष्टिकोण से असगत लगती है। दूसरा इन सस्थाओ के बहिष्कार से हम अपनी ऊर्जा और समय बचा सकते हैं तथा इन्हे समानान्तर सरकार के गठन के काम मे लगा सकते हैं।

इस दृष्टिकोण से मुझे यह उचित और परामर्श योग्य जान पड़ता है कि या तो हम इन सस्थाओ का पूर्ण बहिष्कार करे या विकल्प के रूप मे वे जैसी है उन्हे वैसा ही अकेले छोड़ दिया जाए। विधायिकाओ के भीतर कानून बनाने की प्रक्रिया मे मदद करना गलत है। ठीक वैसे ही अदालतो के भीतर कानून के प्रशासन मे मदद करना समान रूप से गलत है। यदि विधायिकाओ मे राजभक्ति की शपथ लेना गलत है तो अन्य सार्वजनिक सस्थाओ मे शपथ ग्रहण करना भी समान रूप से गलत है। फिर भी जब काग्रेस का प्रस्ताव पारित हो चुका है तो इस समय इसकी गुणवत्ता पर चर्चा करने का कोई औचित्य नहीं है।

हमारा पहला और सबसे महत्वपूर्ण कार्य स्वाधीनता के पक्ष मे व्यापक अभियान चलाना है। इस अभियान से एक नयी मानसिकता के निर्माण मे मदद मिलेगी और इस नई मानसिकता से

हम एक नया कार्यक्रम अपनाने मे सक्षम होंगे। एक ऐसा कार्यक्रम जिसे कि काग्रेस अभी निरस्त कर चुकी है।

हम मे से जिन्हे यह विश्वास है कि युवाओ, मजदूरो, किसानो और समाज के अन्य शोषित वर्गो को सगठित करना ही स्वाधीनता प्राप्ति का सही मार्ग है। वे बिना समय नष्ट किये अपना कार्य जारी रखे। वह दिन दूर नहीं है जब काग्रेस अपने आप को साम्राज्यवादी और पूजीवादी प्रभाव से मुक्त कर लेगी और एक लडाई छेंडेगी व नया कार्यक्रम अपनायेगी। यदि काग्रेस इसमे असफल होती है तो मुझे कोई सदेह नहीं कि कोई दूसरा सगठन मैदान मे आगे आयेगा और जनता का प्रवक्ता बन जायेगा।

असवैधानिक निर्णय

फ्री प्रेस के लिए साक्षात्कार मे दिया गया बयान, 7 जनवरी, 1930

अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की बैठक के पहले दिन (27 दिसम्बर) मैंने अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की कार्य समिति के उस निर्णय के विरोध मे अपील करना चाही थी जिसके तहत बगाल के नव निर्वाचित सदस्यो को काम करने से रोका गया था। मेरा विचार यह था कि बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी ने नियमानुसार अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के लिए सदस्यो का चुनाव किया है। अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के सदस्यो की सूची की रिक्तिया भरने सहित बगाल प्र० का० कमेटी के सभी कार्यों को उच्चाधिकारियो ने अनुमोदन किया है तब मुझे कोई कारण नहीं दिखाई देता कि बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी द्वारा निर्वाचित सदस्यों की वैधता को स्वीकार न किया जाए। बगाल प्र का० कमेटी के अधिकार और गरिमा के परिरक्षक के नहते मुझे नव निर्वाचित सदस्यो के लिए लडना पडा था। जब अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पडित मोती लाल नेहरू ने हमारी पार्टी के सभी सकल्पो और प्रस्तावो (सदन के स्थगन प्रस्ताव सहित) को नामजूर कर दिया तब हमारे सामने बहिर्गमन के अलावा कोई चारा नहीं रह गया। मेरी समझ मे कोई भी आत्म सम्मान प्रिय व्यक्ति ऐसी स्थिति मे ठीक यही करता। यह बात सोच से परे थी कि हम नव निर्वाचित सदस्यो को छोडकर सब्जैक्ट कमेटी की बैठक मे शामिल होते। हमारे बहिर्गमन का असर हुआ। डा० बी० सी० राय के प्रयासो का धन्यवाद। दूसरे दिन एक समझौता हुआ और जे० एम० सेन गुप्ता की अनिच्छा के बावजूद कार्यसमिति और सब्जैक्ट कमेटी के सदस्य नव निर्वाचित सदस्यो को स्वीकार करने के लिए राजी हो गये। इसके उपरात हमने एक समूह के रूप मे सदन मे प्रवेश किया।

अतिम दिन (1, जनवरी, 1930) हमे प्रतिरोध के रूप मे फिर सदन से बहिर्गमन करना पडा। इस बार यह अ० भा० का० कमेटी के नये अध्यक्ष पडित जवाहर लाल नेहरू और अ० भा० का० कमेटी मे बहुमत के निर्णय के विरुद्ध एक प्रतिरोध था। जब हम बैठक मे आये थे तो हम मे से कोई नहीं जानता था कि आधा घटा बाद ही हमे बाहर जाने के लिए विवश होना पडेगा। मैं समझता हू कि जे० एम० सेन गुप्ता यह जानकर प्रसन्न हुए थे कि हमने नयी पार्टी बनाने

की भूमिका के रूप मे बहिर्गमन किया है। मुझे खेद है कि उन्होने ऐसा ही किया और मै सिर्फ यही कह सकता हू कि दूसरो पर आरोप लगाकर उन्होने निष्पक्ष और सही सोच के लोगो की नजर मे अपने आप को गिरा लिया है। तथ्य यह है कि 1 जनवरी की अ० भा० का० कमेटी की बैठक की घटनाए कहावत का "आखिरी तिनका'' सिद्ध हुई। काग्रेस के सत्र के दौरान अध्यक्ष ने हमारी पार्टी के सदस्यो के साथ उपेक्षापूर्ण व्यवहार किया और कार्यसमिति ने हमे सहायता करने के बजाय सीधे-सीधे अध्यक्ष का समर्थन किया। यह इन परिस्थितियो का चरम बिन्दु था। जब *पडित जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गाधी और कुछ अन्य नेताओ ने एक नयी सजातीय पार्टी बनाने* का निर्णय ले लिया और कार्यसमिति के अनुभवी सदस्यो को उनकी असगत मानसिकता के कारण बाहर करने का निश्चय कर लिया। यह असाधारण प्रक्रिया काग्रेस के सविधान के विरुद्ध थी और वर्तमान रीति नीति से ठीक बिपरीत थी। कार्यसमिति के लिए सामूहिक रूप से 10 सदस्यो की एक सूची पेश करने के लिए महात्मा गाधी की सेवाए ली गयीं। इन सूची मे श्री निवास आयगर प्रकाश और मेरे नाम शामिल नहीं थे तथा डा० पट्टाभि सीता रमैया और जय रामदास दौलत राम के नाम शामिल थे। जबकि डा० पट्टाभि के प्रति सदन मे अच्छी राय नहीं थी और जयराम दास दौलत राम अभी-अभी घोर साप्रदायिक व्यक्ति के रूप मे जाने जाते थे। हमने महसूस किया इस सूची को पेश करने मे नेतागण महात्मा गाधी के नाम का गलत लाभ उठा रहे है। हमे सबसे पीडा दायक बात यह लगी कि कार्यसमिति मे हमारे पुराने साथियो ने इतना शिष्टाचार भी नहीं दिखाया कि इस प्रकार का बेतुका कदम उठाने से पहले हमसे सपर्क कर लेते। यदि उन्होने यह कदम उठा ही लिया है तो तमाम सभावनाओ पर विचार करते हुए हमारा अलग रहना ही बेहतर है।

जब महात्मा गाधी द्वारा मूल सूची प्रस्तावित की गयी तो सत्यमूर्ति ने सशोधन के रूप मे कुछ अन्य नामो का प्रस्ताव रखा। इस मुकाम पर नेताओ ने नये नामों को मतदान हेतु पेश करने के लिए जी तोड कोशिश की ताकि सशोधन को आगे ही न बढाया जा सके। जमनालाल बजाज ने सुझाया कि अतिरिक्त नामो पर विचार करने से पहले सदन को महात्मा गाधी की सूची का ध्यान रखना चाहिए। यह सशोधन को निरस्त करने और मूल सूची का सामूहिक रूप से अनुमोदन *करने के लिए महात्मा गाधी के नाम का उपयोग करने की शातिराना चाल थी। सत्यमूर्ति ने इस* प्रक्रिया का विरोध किया जो पूरी तरह अजतात्रिक था और असवैधानिक था। पडित मोती लाल नेहरू उठ खडे हुए और बोले कि इस पर सदन के सदस्यो का मत लेना चाहिए कि वे जमनालाल बजाज और सत्यमूर्ति से किसके द्वारा सुझाये गये प्रावधान को चाहते है? सत्यमूर्ति ने पडित जी का यह कहते हुए विरोध किया कि यह अजतात्रिक और असवैधानिक है तथा प्रावधान प्रश्न को सदन के समक्ष मतदान हेतु पेश नहीं किया जाना चाहिए क्योकि यह अल्पमत और बहुमत से ऊपर की चीज है। इसके बाद अध्यक्ष ने अपना निर्णय दिया कि यह सुझाव अजतात्रिक और असवैधानिक नहीं है और उन्होने प्रावधान के प्रश्न को मतदान हेतु सदन मे प्रस्तुत करने की अनुमति दे दी। अध्यक्षीय निर्णय स्पष्ट रूप से पक्षपात पूर्ण और गलत था और इस मुकाम पर हमे प्रतिरोध मे बहिर्गमन कर देना चाहिए था। लेकिन हमने सोचा कि सदन को हमारे साथ न्याय करने का एक अवसर देना चाहिए। यह सभव भी लगता कि सदन हमारे पक्ष मे निर्णय कर दे।

लेकिन 62 के विरुद्ध 48 से इस पावधान के पक्ष मे निर्णय दे दिया जिसने तमाम सशोधनो को अमान्य कर दिया।

जब परिणाम घोषित हो गया तो आगे किसी अपील की आशा नहीं रह गयी और हमने अध्यक्ष व नेता की कार्यवाही और बहुमत की स्वेच्छाचारिता के विरुद्ध प्रतिरोध मे बहिर्गमन किया। इसके उपरात पडित जवाहर लाल नेहरू ने घोषणा की कि वे फिर से नामाकन और मतदान की अनुमति देगे। यह घोषणा अध्यक्ष के द्वारा की गई दूसरी भूल थी। उनकी पहली भूल यह थी कि उन्होने सदन के मतदान हेतु एक प्रावधान प्रस्तुत किया जो कि सार्वभौमिक था। उनकी दूसरी गलती सदन के निर्णय को कुचलना था जब कि वे पहले ही मतदान करा चुके थे और परिणाम घोषित कर चुके थे। यह साफ तौर पर अपनी भूल को सुधारने के उद्देश्य से किया गया पुनर्विचार था। दुर्भाग्य से भूल करने मे उन्हे विलम्ब हो चुका था क्यो कि तब तक हम बाहर जा चुके थे।

मैने अध्यक्ष पडित जवाहर लाल नेहरू के इस बयान का तीव्र विरोध किया कि हमने उनके निर्णय की प्रतीक्षा किये बिना जल्दबाजी मे बहिर्गमन किया। इसके विपरीत जब कि हम उतनी देर तक अपनी जगह पर बैठे रहे जब तक कि हमे न्याय पाने की आशा बनी रही। जब हमने यह महसूस किया कि कार्यसमिति या अ० भा० का० कमेटी मे से हमे किसी की ओर से न्याय नहीं मिलने वाला है तब हमारे सामने बहिर्गमन के सिवा कोई विकल्प नहीं था। नयी पार्टी बनाने की बात बहिर्गमन के बाद छिडी। तमाम हालात और विशेष रूप से इस तथ्य पर विचार करने के बाद कि नेतागण एक सजातीय पार्टी के रूप मे समूहबद्ध हो चुके है हमे लगा कि अपने अस्तित्व को बनाये रखने का एक ही तरीका है कि हम एक पार्टी के रूप मे समूहबद्ध हो जाये। सक्षेप मे यह वास्तविकता के विषय मे हमारा भाग्य है। मैं उपर्युक्त परिस्थिति के विषय मे जल्द ही एक सिद्धान्त बयान जारी करूगा।

बहुमत की निरकुशता

बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप मे बयान, लाहौर 8 जनवरी, 1930

1 जनवरी को अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की बैठक से हमारे बहिर्गमन को लेकर अखबारो मे छपी गलत रिपोर्टो को ध्यान मे रखते हुए और उसी बैठक मे पडित जवाहर लाल नेहरू की टिप्पणियो पर गौर करते हुए जो कि उन्होने एक प्रेस विज्ञप्ति मे भी दोहराई है, हमे यह जरूरी लगता है कि हम अपने द्वारा उठाये गये कदम का स्पष्टीकरण देने के लिए एक पूरा बयान जारी करे।

अध्यक्ष की वह कार्यवाही जिसने हमे सदन से बाहर जाने के लिए विवश किया अपने किस्म की कोई पहली घटना नहीं थी। यह असवैधानिक और अप्रजातात्रिक कार्यो की श्रृखला का चरम बिन्दु था जिसे और अधिक सहन नहीं किया जा सकता था। शुरू से अध्यक्ष के मन मे सदन के

जाता। इस प्रकार अध्यक्ष ने सशोधन को गिराने हेतु सदन मे मतदान की अनुमति देकर गलती की ऐसा कहने के बाद दूसरी गलती उन्होने यह की कि सदन के निर्णय को बदल दिया। हमारे समर्थको के बाहर जाने के बाद अध्यक्ष ने जो प्रक्रिया अपनाई, वह सविधान की धारा 84 के विपरीत थी जिसके अनुसार अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के सदस्यो के बीच से कार्य समिति का चुनाव किया जाना चाहिए। अध्यक्ष का यह बयान कि अध्यक्ष के द्वारा अपनी केबिनेट के मनोनयन की एक प्रथा चल पडी है और अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी इस केबिनेट का अनुमोदन कर देती है पूर्णत असत्य है। गोहाटी मे कार्यसमिति के सदस्यो के नाम केवल अवकाश प्राप्त कार्यसमिति ही नहीं, वर्तमान सदस्यो द्वारा प्रस्तावित किये गये थे और सभी प्रस्तावित नामो पर मतदान हुआ था। मद्रास मे डा० असारी का यह सुझाव गिरा दिया गया था कि वह अपनी केबिनेट चुन सकते है तथा उनके और अन्य लोगो द्वारा प्रस्तावित नामो पर मतदान हुआ था। कलकत्ता मे सूची पर दोनो पार्टियो की सहमति थी और श्री निवास आयगर, सुभाष बोस, सरदार शार्दूल सिंह, पडित जवाहरलाल नेहरू और सत्यमूर्ति के नामो को जोडकर अल्पमत की पार्टी को पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया गया था और बिना किसी विभाजन के सूची मजूर हो गयी थी।

पडित मोतीलाल नेहरू का आग्रह था कि सदन को अपनी प्रक्रिया अपनाने का अधिकार है और आगे नामाकन रोकने का बाबत सेठ जमनालाल बजाज का प्रस्ताव नियम विरुद्ध नहीं है। महात्मा जी ने यथा सभव बडे कौशल के साथ अपना प्रस्ताव रखा लेकिन जिन तर्को का उन्होने सहारा लिया वे स्वीकार नहीं थे। गाधी जी ने आश्चर्यजनक रूप से यह आग्रह किया कि कार्यसमिति केबिनेट के भाति होती है और कोई भी किसी सदस्य को अध्यक्ष पद नहीं थोप सकता। केबिनेट पद्धति के मायने पार्टी की सरकार होती है। क्योकि एक केबिनेट मे समान विचारो के लोग होते है अर्थात उन्हे एकमत तथा एक ही पार्टी का होना चाहिए। केबिनेट पद्धति की शुरूआत करके महात्मा जी ने स्वत रूप से दलीय पद्धति को निमत्रण दे दिया है और वे लोग जो मतभिन्नता रखते थे या मानसिकता के स्तर पर गाधी जी की पार्टी से तालमेल नहीं रखते थे, या तो राजनीतिक रूप से निष्क्रिय हो जाते या स्वय को एक पार्टी के रूप मे आबद्ध कर लेते।

हमारी राय मे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी 1921 से ही युद्ध की अवस्था मे कार्य कर रही है। अत युद्धकालीन केबिनेट के भाति कार्यसमिति को भी मिलीजुला होना चाहिए। इस कारण पिछले समय में पडित मालवीय जैसे नेताओ को कार्यसमिति मे स्थान दिया गया। यद्यपि उस समय वह काग्रेस की नीति एव कार्यक्रम के पूर्णत विरुद्ध थे और उनका इसी कारण गत वर्ष कलकत्ता में काग्रेस के दो स्कूलो का कार्यसमिति मे प्रतिनिधित्व हुआ। महात्मा जी ने यह भी कहा कि कार्यसमिति मे समान विचारो के लोग होने चाहिए। किसी के लिए भी यह आश्चर्य की बात होगी कि पडित जवाहरलाल नेहरू और महात्मा जी मे ही विचारो की समानता नहीं है और उनकी मानसिकता मे कोई असामजस्य नहीं है। हम नहीं जानते कि भारत की नयी पीढी इस खबर को किस रूप मे लेगी। कई लोगो को यह एक खबर होगी। पडित जवाहर लाल नेहरू अब अपने स्वाधीनता लीग के साथियो की अपेक्षा डोमिनियन दर्जे के साथियो के अधिक निकट है।

महात्मा जी ने यह भी कहा कि ऐसा चुनीदा होना चाहिए कि वह यथासभव सविनय अवज्ञा के कार्य मे सक्षम हो सके। वर्तमान में सविनय अवज्ञा भारत मे केवल एक जगह जारी है। वह

जगह है बगाल के जैसोर जिले मे बडाबिल्ला जहा कि ग्रामीणो ने बडा जोखिम और हानि उठाते हुए यूनियन बोर्ड को कर चुकाने से मना कर दिया। लेकिन प्रातीय काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष को जिसने सविनय अवज्ञा को अपनाया कार्यसमिति के योग्य नहीं समझा गया। अब हम जनता पर यह फैसला छोडते है कि हमारा अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की बैठक से प्रतिरोध के रूप मे बहिर्गमन करना कितना उचित था।

अब भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस ने स्वाधीनता के सिद्धान्त को अपना लिया है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु देश को तैयार करने का कार्य आरभ कर दे। इस लक्ष्य की ओर बढने के लिए हमे समूचे प्रात मे एक व्यापक अभियान चलाना होगा। पूर्ण स्वराज्य के सदेश को बगाल के घर घर मे ले जाना होगा। इसी सिलसिले मे काग्रेस ने यह फैसला किया है कि सविनय अवज्ञा आदोलन नहीं चलाया जाए जहा पर अनुकूल परिस्थितिया है। जैसोर जिले मे यूनियन बोर्ड के करो का भुगतान बद कर दिया गया है और यूनियन बोर्ड की व्यवस्था के खिलाफ बगावत के रूप मे सविनय अवज्ञा आदोलन शुरू हो चुका है। मुझे मालूम है कि बगाल मे ऐसे कई जिले हैं जहा यूनियन बोर्ड बदनाम हो चुके है और बोर्डो को खत्म करना चाहते है। मै उन जिलो की काग्रेस समितियो से निवेदन करूगा कि वे हालात का जायजा ले और यदि जरूरी हो तो अपने कार्यक्षेत्र मे यूनियन बोर्ड के विरूद्ध अभियान छेडेगे। मुझे यह कहते हुए हर्ष है कि 24 परगना जिले के डायमड हार्बर सब डिवीजन मे जहा यूनियन बोर्ड कायम होने वाले थे पहले ही यूनियन बोर्ड के विरूद्ध आदोलन छिड गया है।

मुझसे कई मित्रो और सहकर्मियो ने पूछा है कि जब वे गावो मे स्वाधीनता अभियान चलाये तब उन्हे क्या सकारात्मक कार्य करना चाहिए। मैं उन्हे परमर्श दूगा कि वे हर गाव मे काग्रेस समिति कायम करने का पर्याप्त प्रयास करे और समिति के समक्ष निम्नलिखित त्रिस्तरीय कार्यक्रम रखे –

1 ग्राम काग्रेस समिति को एक ग्राम सेना का गठन करना चाहिए जो सुरक्षा का काम देखेगी। इसमे गाव के चौकीदार होगे और गाव के लोगो को पुलिस की जरूरत नहीं पडेगी।

2 ग्राम काग्रेस समितिया गाव वालो को अदालत मे जाने से रोकेगी और उन्हे प्रेरित करेगी कि वे अपने विवाद काग्रेस समितियो के द्वारा सुलझायेगे।

3 ग्राम काग्रेस समिति को अग्रेजी माल के बहिष्कार की मुहिम प्रभावशाली ढग से चलानी चाहिए। इसके साथ-साथ स्वदेशी उद्यमो को प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे कि ग्रामीण जन आर्थिक रूप से आत्म निर्भर बन सके।

मै एक सप्ताह के भीतर विभिन्न जिलो के कार्यकर्ताओ की एक बैठक आमत्रित करूगा और उनसे उपर्युक्त कार्यक्रम के बारे मे विचार विमर्श करूगा। साथ ही इस सबध मे उनके सुझाव मागूगा।

स्वाधीनता का प्रस्ताव

कलकत्ता के हरीश पार्क की एक सभा मे भाषण, 10 जनवरी, 1930

काग्रेस की भीतर मतभेदो का होना अपरिहार्य है लेकिन एक बार किसी मामले पर एक निर्णय ले लिया जाए तो सबको इसका पालन करना चाहिए।

पूर्ण स्वाधीनता को हमारा लक्ष्य बनाने की बाबत प्रस्ताव पारित हो चुका है लेकिन अभी इस बात की जाच करनी बाकी है कि यह प्रस्ताव कितना उपयोगी साबित होगा। जहा तक इसकी उपयोगिता की बात है आयरलैंड का इतिहास इसका उपयुक्त उदाहरण पेश करता है। आइरिश राष्ट्रवादियो ने न केवल पूर्ण स्वाधीनता को अपना लक्ष्य घोषित करने का प्रस्ताव पारित किया बल्कि पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा भी कर दी। इस घोषणा मे अपनी सक्रिय भूमिका निभाने वाले कुछ लोगो ने अपने सस्मरणो मे लिखा है कि यद्यपि मुट्ठी भर लोगो ने इस घोषणा का समर्थन किया था। उस समय यह जरूरी भी था क्योकि राष्ट्र तब तक जाग्रत नहीं हो सकता जब तक कि उसके सम्मुख एक लक्ष्य प्रस्तुत न किया जाए। इसके बाद आयरलैड के सम्पूर्ण राष्ट्रीय दृष्टिकोण मे आमूल परिवर्तन हो गया।

लाहौर मे की गई घोषणा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय मानस ने अब तक इस घोषणा को स्वीकार क्यो नहीं किया था। यह जानने के लिए काग्रेस के चवालीस वर्ष के इतिहास को जानना जरूरी है। काग्रेस के प्रारभिक 15 वर्षो की कार्यवाहियो की मुख्य विशेषता थी–वफादारी के प्रस्ताव पारित करना। शताब्दी के अत तथा वर्तमान युग के आरभ के साथ राष्ट्रीय दृष्टिकोण मे एक परिवर्तन घटित हुआ।

केशवचन्द्र सेन, स्वामी विवेकानन्द और जगदीश चन्द्र बसु जैसे स्वनामधन्य भारतीय पाश्चात्य सस्कृति के सम्पर्क मे आये और उन्होने बताया कि भारतीय किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र की तुलना मे किसी भी दृष्टि से हीन नहीं है और वे अतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता मे अपना वजूद बनाये रख सके है। विशेष रूप से स्वामी विवेकानन्द ने आत्मनिर्भर प्राप्त करने की अनिवार्य माग पर बल दिया।

इस आदर्श ने पहले साहित्य मे अभिव्यक्ति पायी फिर इसका राजनीति मे प्रसार हुआ। हमारे युवाओ ने फिर यह जानना चाहा कि वह राष्ट्र जिसने राममोहन या सर सैयद जैसे लोग पैदा किये आज पतन की अवस्था मे क्यो है। वे इस समाधान के लिए व्यग्र थे और इस व्यग्रता ने उन्हे जापान, आयरलैंड और अन्य देशो का इतिहास पढने के लिए प्रेरित किया। लोगो की मानसिकता मे एक परिवर्तन आया और धीरे-धीरे उन्होने (वफादारी की प्रस्तावो के) समर्थन मे रूचि दिखानी शुरू कर दी।

इसके परिणाम स्वरूप काग्रेस के राजनेताओ के बीच दरार पड गयी। आगे चलकर उग्रपथी और नरम पथी दल बन गये। नागपुर मे उग्रपथियो की जीत हुई जो कि सूरत मे अल्पमत मे थे।

वर्तमान शताब्दी के आरभ मे बगाल के युवाओ ने जिस लक्ष्य को अपनाया था अब वह पूरा होने वाला था।

लाहौर मे स्वाधीनता का प्रस्ताव निर्विरोध रूप से स्वीकार कर लिया गया। इसकी आम राय से स्वीकृति के पीछे दो कारण हो सकते थे। इसमे मूल सिद्धान्त मे कोई परिवर्तन नहीं किया गया। दूसरे क्यो कि सरकार के रवैये से समाधान की आशा नही रह गयी थी महात्मा गाधी ने यह प्रस्ताव रखा और पडित मोती लाल नेहरू ने इसका समर्थन किया। इससे जाहिर होता है कि वे लक्ष्य की ओर मुड चुके है। निश्चित रूप से यह युवाओ की महान विजय थी।

अब स्वाधीनता के लक्ष्य की ओर ले जाने वाले इस कार्यक्रम को लेकर केवल एक समस्या खडी हो सकती है। फिर भी यह आम पैमाने पर एक जुझारू अभियान हमेशा चलाया जा सकता है। बडाबिल्ला की तरह स्वाधीनता की भावना को जाग्रत करने वाला और सविनय अवज्ञा को प्रेरित करने वाला प्रचार कार्यक्रम अगले बारह महीनो मे हम भी आसानी के साथ चला सकते हैं।

जहा तक प्रचार कार्यक्रम की बात है इसके बारे में हम नौकरशाही का रवैया जानते हैं। जादुई लालटेन (प्रोजेक्टर) के भाषणो के खिलाफ पहले से ही कई मुकदमे चल रहे है। सरकार इतनी कुपित है कि न केवल भाषण कर्ताओ को गिरफ्तार किया है और उन पर मुकदमे चलाये गये हैं बल्कि वे उपकरण भी जब्त कर लिये गए है।

ब्रिटेन प्रचार की कला मे पुराना उस्ताद है। पिछले युद्ध के दौरान उन्होने जर्मनी के विरूद्ध तटस्थ देशो मे सघन तथा व्यापक दोनो प्रकार के प्रचार अभियान चलाये और मिथ्या आरोप लगाया कि वह निर्मम अत्याचार कर रहा है। जर्मनी के वान लुडल डार्फ और अन्य युद्ध विशेषज्ञो ने बाद मे बताया कि उन्होने पहले तो इन बातो की उपेक्षा की लेकिन उन्होने अपनी गलती महसूस की और तटस्थ देशो मे प्रचार का प्रबध किया। लेकिन उन्होने पाया कि यह मैदान पहले ही अंग्रेजो द्वारा कब्जाया जा चुका है।अब इस कार्य को रूस बडे प्रभावशाली ढग से कर रहा है और इसी लिए ब्रिटेन उसे नापसद करता है। मै यह नहीं कहूगा कि मै घृणा करता हू जब-कि हथियारो मे और दूसरे ससाधनो मे रूस की ब्रिटेन से कोई तुलना नहीं है।

विद्यार्थियो के प्रति

कलकत्ता इजीनियरिंग कालेज मे भाषण, 15 जनवरी, 1930

मैं नही जानता कि आपने मुझे जो सम्मान दिया है मैं उसके कितने योग्य हू। लेकिन मै इतना जरूर जानता हू कि मेरे सामने जीवन का एक लक्ष्य है और मै इसको प्राप्त करने के उत्तम प्रयास कर रहा हू। हर मनुष्य और हर राष्ट्र निरतर निर्माण और ध्वस की प्रक्रिया से गुजरता रहता है। ध्वस और निर्माण मे कुछ न कुछ छुपा रहता है और यदि हम ध्वसशेषो के ऊपर नया निर्माण करने मे असफल होते है तो हमारा जीवन व्यर्थ जाता है। मनुष्य का जीवन प्रकृति के इस आधारभूत नियम से परिचालित होता है। कोई मनुष्य तब तक महान नहीं बना जब तक

वह अपने जीवन काल मे बर्बाद नहीं हुआ है। उसे एक महान निर्माता भी होना चाहिए। रचनात्मक और ध्वंसात्मक शक्तियो के इसी खेल के द्वारा मानव जीवन की अभिव्यक्ति पाता है।

आज यहा मैंने इस कालेज मे वास्तविक रचनात्मक कार्य के तमाम लक्षण देखे। इस प्रकार के अनेक प्रयास 1921 के वर्ष मे किये गये थे। इनमे से कुछ प्रयास समय के दमन के सामने टिके रहे कुछ चूक गये। यदि सरकारी प्रभाव के दायरे से बाहर हम किसी सस्था की सफलता चाहते है तो इसके लिए ऐसे शिक्षण प्रशिक्षण की जरूरत है जिससे विद्यार्थी अपनी आजीविका अर्जित कर सके और अपनी आकाक्षाओ की पूर्ति कर सके। शास्त्रो मे केवल विद्या के लिए विद्या पर बल दिया गया है लेकिन इन्हीं शास्त्रो मे यह भी कहा गया है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सब जीवन के अस्तित्व पर ही निर्भर करते है। जीवित रहते हुए ही जीवन को सफल बनाया जा सकता है। हम अपने चारो तरफ जीवन को कुचल देने की साजिशे देख रहे है और प्रकृति भी इसमे शामिल दिखायी देती है। इसके बाद शिक्षा को इस साध्य का साधन बनाते हुए हमे जीवन की इस रणभूमि मे एक लडाई जीतनी होगी। आर्थिक प्रतिफल नहीं मिलता तो कोई भी व्यक्ति सरकारी सस्थाओ की परवाह नहीं करेगा। जो विद्यार्थी इस कालेज से बाहर जायेगे वे अपनी प्रशिक्षण की योग्यता के आधार पर आत्मनिर्भर रहेगे। अतएव इस कालेज का भविष्य उज्जवल होगा। शीघ्र ही यह एक महत्वपूर्ण शिक्षा केन्द्र बन जायेगा। वास्तव मे यही हमारा अतिम लक्ष्य है। लेकिन एक बात हमे याद रखनी चाहिए कि जब तक हम इस महान आदर्श को ध्यान मे नही रखेगे इस लक्ष्य मे कभी भी विचलित हो सकते है। अभी हम छोटी सस्थाओ से शुरूआत कर सकते है और मुझे विश्वास है कि शीघ्र ही वे एक शक्ति बनकर उभरेगी। नि सदेह इस प्रकार की सस्थाओ का भविष्य उज्जवल होता है क्योकि इसी प्रकार की मानवीय बुनियादो पर महान सस्थाओ के भवन खडे होते है। सगठन कर्ताओ की आस्था और श्रम के द्वारा यह सस्था अपने उद्देश्य मे सफल होगी।

हमारे देश की आम स्थिति ऐसी है कि हमे अपने किसी उद्यम मे बाहर की सहायता नहीं मिलती है। स्वतत्र देश अपनी जनता को विकास का पूरा-पूरा अवसर देते है। हमारे देश मे ठीक विपरीत स्थिति है। यहा हमे भारी अडचनो का सामना करते हुए अपनी निजी प्रेरणा और शक्ति के बूते पर सफलता प्राप्त करनी है।

फिलहाल मैं दो तरह के कामो मे व्यस्त हू। जब भी इस देश मे ध्वसात्मक कार्यों की बाढ आई है मैं इसमे कूद पडा हू और जब रचनात्मक कार्यो का दौर चला है मैंने इनसे जुडने मे कोई सकोच नही दिखाया। इन सघर्षकारी और विपरीत शक्तियो के बीच जीवन कभी-कभी दूभर हो जाता है।

इस कालेज को लेकर मैं आप को आश्वस्त करता हू कि यदि प्रबधकगण इस आदर्श से प्रेरित है तो सफलता सुनिश्चित है। मुझे विश्वास है वे इस आदर्श और प्रेरणा को आत्मसात कर चुके है अन्यथा उन्होने यह कार्य शुरू न किया होता। इसमे कोई सदेह नहीं कि उन्होने काफी धन खर्च किया है और इस लक्ष्य के लिए अपेक्षित त्याग किया है।

जहा तक डिग्री और डिप्लोमा की बात है यह सुखद है। देश के हालात इस हद तक बदल गये है कि लोग इनकी ज्यादा परवाह नहीं करते। अभी हाल मे जिन्होने राष्ट्रीय सस्थाओ मे प्रवेश लिया था उनमें से अनेक प्रतिभाशाली लडके थे। कुछ वापस चले गये लेकिन कुछ ने अच्छा प्रयास किया। उनमे से अनेक को मै जानता हू जिनमे साहस और क्षमता है। उनमे से कोई भी बी० ए० या एम० ए० नहीं है। यहा तक कि व्यक्तिगत और आज की क्षमता दोनो ही दृष्टियो से वे डिग्री धारियो से बेहतर है।

पहले लोग पी० एच० डी० या डी० एस० सी० की डिग्रिया लेने के लिए विदेश जाया करते थे। लेकिन जापानी केवल सीखने के लिए बाहर जायेगे। उनमे से कोई महज डिग्री लेने के लिए नहीं जाना चाहेगा। यही भावना केवल हमारे लोगो मे उपज रही है। हमारे लोग भी कृत्रिमता की उपेक्षा करना सीख गये है और चीजो को सिर्फ उनकी गुणवत्ता के आधार पर परखने लगे है। मैं ऐसे अनेक लोगो को जानता हू जिनके पास डिग्रिया नहीं है। लेकिन वे बडी दक्षता के साथ कार्य कर रहे है। एक बार एक प्रिटिग प्रेस मे हमने देखा कि विदेश मे प्रशिक्षण प्राप्त इजीनियर ने मशीने लगाई थी। लेकिन ये मशीने जाम होकर रह गई। उसी दौरान मैं एक कारखाने मे गया वहा दो सौ मशीने बहुत सुगमता से काम कर रही थी। यह देखकर मैने उस इजीनियर का पता लगाना चाहा। मालिक ने बताया कि ये मशीने सिर्फ 40/- रुपये पाने वाले एक फोरमैन ने लगाई है। मैंने हमारी मशीनो को चलाने मे उसी व्यक्ति की सहायता ली।

कुल मिलाकर मैं आपसे यह कहना चाहता हू कि इस प्रकार की सस्थाये आज हमारे देश मे अपरिहार्य हैं। प्रबधको को चाहिए कि वे अपनी दृष्टि और क्षमता के अनुसार इन सस्थाओ का विकास करे। ऐसी सस्थाओ की सफलता के साथ ही उनके जीवन लक्ष्य की पूर्ति होगी।

मैं आप को नहीं बता सकता कि इस दिशा मे वास्तव मे मेरी सामर्थ्य क्या है लेकिन मै आप को आश्वस्त कर सकता हू कि जो मुझसे बन पडेगा मैं अवश्य करूगा।

जिन गुणो से लोग प्रतिष्ठा अर्जित करते है वे गुण हमारे लोगो मे विद्यमान है। समय और अवसर साथ नहीं दे रहे है। लेकिन हमारे तमाम प्रयास सफल होगे यदि हमारे भीतर उन्हे रचने की शक्ति होगी। हमारे सामने एक लक्ष्य है जब हम स्वाधीनता प्राप्त कर लेगे तब हम अपने विकास की उच्चतम सीमा को छू लेगे। मैं विधार्थियो से पुन कहूगा कि वे इस लक्ष्य के साथ सस्था से बाहर जाये कि उन्हे पैरो पर खडे होकर अपने जीवन को सफल बनाना है। उन्हे जीवन सग्राम मे पौरुष के साथ उतरना चाहिए और भौहो के पसीने से अपनी आजीविका अर्जित करनी चाहिए।

(मूल बंगला से अनुवाद)

बंडाबिल्ला सत्याग्रह के बारे में कुछ और बातें

बडाबिल्ला के स्थिति पर बयान, जैसोर, 17 जनवरी, 1930

जैसोर जिले के बडाबिल्ला से चला रहे सत्याग्रह अभियान के सबध मे एसोसिएड प्रेस आफ इडिया द्वारा जारी बयान की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया गया है। यह कहना सरासर गलत है कि व्यावहारिक रूप मे सत्याग्रह अभियान समाप्त हो गया है। समाप्त होने की बात तो दूर सत्याग्रह अभी पूरे जोर के साथ चल रहा है और यह केवल एक सम्मानजनक समझौते के साथ ही समाप्त होगा। ताजा रिपोर्ट बताती है कि एक ओर सरकारी दमन चल रहा है दूसरी ओर ग्रामीण पूरे दृढ निश्चय के साथ इस दमन का मुकाबला कर रहे हैं।

एसोसिएड प्रेस आफ इडिया द्वारा दी गई यह खबर बहुत बासी है कि अभियान के एक स्थानीय नेता विजय चन्द्र रे अपने मुकदमे की सुनवाई का इतजार कर रहे हैं। न केवल विजय बाबू बल्कि उनके सभी साथी बहुत पहले गिरफ्तार हो चुके हैं और अब वे अपनी सुनवाई के इतजार मे हैं। लेकिन नये कार्यकर्ताओ ने पहले ही उनका स्थान ले लिया है।

यह खबर भी बासी है कि जिला बोर्ड के अधिकारी आदोलन को रोकने की कोशिश कर रहे हैं क्यो कि वे शुरू से ही इस आदोलन के विरूद्ध कार्य कर रहे है।

इसी तरह यह बात भी गलत है कि कुर्क की गई सपत्ति से बहुत आमदनी हो रही है क्यों कि तथ्य यह है कि चालीस पचास और साठ रुपये कीमत के मवेशी सिर्फ आठ आने या एक रुपये मे बेचे गये।

ग्रामीण लोग भी अब पहले की तरह नहीं रहे जैसा कि एसोसिएड प्रेस बताना चाहती है बल्कि वे अब मिलिट्री पुलिस कैम्प मे बदल चुके हैं और मेरी बडाबिल्ला की यात्रा से अब तक आदोलन न केवल जैसोर जिले की दूसरी यूनियनो मे फैल चुका है बल्कि समीपवर्ती जिलो मे इसका उभार हो रहा है।

कलकत्ता के मेयर के नाम पत्र

सेवा मे,
मेयर,
कलकत्ता निगम,

अलीपुर कोर्ट
23 1 30

मान्यवर,

मुझे अपने कुछ पार्षद मित्रो से सूचना मिली है कि निगम ने अपनी कल की बैठक मे सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया कि मैं अपने पार्षद के रूप मे त्यागपत्र पर पुनर्विचार करू। इस प्रस्ताव के लिए मैं हृदय से आभारी हू। इस प्रस्ताव मे सदन का मेरे प्रति विश्वास झलकता है और निगम के कार्यकाल के दौरान मेरी जो सेवाए रही है यह उन सेवाओ का सम्मान भी है। मै इस प्रस्ताव की भूरि-भूरि प्रशसा करता हू क्योकि मैं अपने साथियो के साथ जेल जाने की तैयारी कर रहा हू। मै सोचता हू कि मुझे एक वर्ष की जेल काटनी है। ऐसे मे मेरे त्यागपत्र वापस लेने से कोई मतलब हल नहीं होगा। यदि मै जेल मे होते हुए भी अपने पद पर बना रहता हू तो यह मेरे मतदाताओ के प्रति अन्याय होगा। निगम ने सर्वसम्मति से मुझसे त्यागपत्र वापस लेने का आग्रह किया। इस हेतु मैं उनका पुन धन्यवाद करता हू।

भवदीय
सुभाष चद्र बोस

बडाबिल्ला सत्याग्रह और बगाल काग्रेस

23 जनवरी, 1930 को जारी बयान

आज हमसे से कई एक वर्ष की कठोर कारावास की सजा उठाने वाले है इन परिस्थितियो मे हमे जैसोर और बडाबिल्ला की चिता होना स्वाभाविक है। ईश्वर बडाबिल्ला के लोगो को शक्तिशाली नौकरशाही से लडने की शक्ति प्रदान करे। इससे पहले मिदनापुर के लोगो ने ऐसी ही एक लडाई छेडी थी और सरकार पर दबाव डाला था कि वह स्थानीय यूनियन बोर्ड को वापस ले। जैसोर के उदाहरण का पालन करते हुए बगाल के दूसरे जिलो मे भी यूनियन बोर्ड के विरोध मे लडाई शुरू हो चुकी है। यह देखते हुए सदेह की कोई गुजाइश नहीं रह जाती है कि बडाबिल्ला की जनता जिस निष्ठा और त्याग भावना के साथ महान लक्ष्य के प्रति समर्पित है उसे निश्चित सफलता मिलेगी। वह अदम्य साहस और त्याग के साथ कष्ट सहते हुए अपना सघर्ष जारी रखे यह हमारी उनसे पुरजोर अपील है। हम जैसोर के लोगो से अपील करते है कि वे बडाबिल्ला की सहायता करे। उनके सहयोग के बिना अकेला बडाबिल्ला क्या कर सकता है।

अत मे हम ईश्वर से प्रार्थना करते है कि बडाबिल्ला के सत्याग्रह आदोलन से नयी शक्ति

का रूप ले और बगाल के साथ-साथ समूचे देश की जनता के मन मे एक नये उत्साह का सचार करे।

हम जेल जाये इससे पहले मैं बगाल के काग्रेस जनो से तीव्रता के साथ अपील करूगा कि वे अपने मतभेदो को भुलाकर नौकरशाही की विरूद्ध एक सयुक्त मोर्चा बनाये। काग्रेस कार्यकर्ताओ के बीच ताजा उभरे मतभेदो को अब अथाह गहराई मे दफन कर देना चाहिए

अब यह बात बहुत साफ है कि सरकार क्रूर दमन की नीति पर अमल कर रही है। जब सरकार सगठित और कृत सकल्प है तो हमे भी स्वाधीनता के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उसी प्रकार सगठित और कृत सकल्प होना चाहिए।

लोग इस बात से बाखबर है कि बगाल सरकार की दमनकारी नीतियो के चलते हुए हमारे ज्यादातर जिलो के कार्यकर्ताओ पर बडी सख्या मे मुकदमे चलाये जायेगे। इसके लिए एक ओर धनराशि की आवश्यकता पडेगी तथा दूसरी ओर अपने कार्यकर्ताओ की बचाव के लिए वकीलो की सहायता भी चाहिए। यदि हम अपने कार्यकर्ताओ के बचाव के लिए उचित प्रबध नहीं करते हैं तो हम अपने दायित्व निर्वाह मे असफल होगे।

इससे सबधित एक प्रश्न और है जिसको लेकर मैं लोगो का विश्वास जीतना चाहूगा और सहानुभूति व समर्थन की अपील करूगा। बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी की आर्थिक स्थिति चिता जनक है। एक ओर हम कर्ज मे चल रहे है दूसरी ओर हमे काग्रेस के वर्तमान कार्यक्रम को जारी रखने और बड़ाबिल्ला सत्याग्रह अभियान तथा बगाल मे स्वयसेवी आदोलन चलाने के लिए फौरी आर्थिक सहायता की जरूरत है। मैं उदार लोगो से अपील करता हू कि वे मौजूदा सकट मे हमारी सहायता के लिए आगे आये और अपने बटुए का मुह खोल दे। मै उन्हे आश्वस्त कर सकता हू कि यदि बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी आर्थिक टूटन का शिकार नहीं हुई तो यहा तक कि हमारी अनुपस्थिति मे भी बगाल का आदोलन पूरे वेग और उत्साह के साथ जारी रहेगा।

अखिल भारतीय मजदूर सघ (एटक)

23 जनवरी, 1930 को जारी बयान

साथियो

आज के इतिहास मे एक गभीर सकट हमारे सामने है। हम सरकार की दमन नीति की चक्की मे पिस रहे है। अतएव मजदूर आदोलन से जुडे सभी लोगो का यह परम कर्तव्य है कि वे स्वय को सगठित करने और मजबूत बनाने मे कोई कसर न उठा रखे। देश के मजदूरो ने मुझे अखिल भारतीय मजदूर सघ का अध्यक्ष चुनकर जो सम्मान दिया है इस हेतु मैं उनका हार्दिक आभार प्रकट करता हू। आज मुझे इस बात का खेद है कि मुझे भारत की मनोनुकूलन सेवा करने की आजादी नहीं मिल पा रही है। सरकारी दमन के अलावा अखिल भारतीय मजदूर सघ, मजदूर नेताओ मे व्याप्त असतोष के रूप मे एक अन्य गभीर समस्या का सामना कर रहा है। इस मौके पर मैं सभी मजदूर नेताओ और आम मजदूरो से पुरजोर अपील करता हू कि वे मजदूरो के सहायतार्थ

आगे आये और परीक्षा की घडी मे उसके साथ खडे हों। मजदूरो का उद्देश्य न्याय और मानवता कर उद्देश्य है।

मुझे कोई सदेह नहीं कि इस उद्देश्य मे सफलता मिलेगी। भारत के मजदूर जागेगे और इस आदोलन को सफलता और गरिमा प्रदान करेगे।

बगाल के स्वय सेवी

23 जनवरी, 1930 को जारी बयान

ऐसा लगता है कि बगाल के स्वय सेवियो से प्रशासन नाराज चल रहा है। अतएव यह उचित समय है जब मुझे बगाल के युवाओ से बडी तादाद मे स्वयसेवी सेना मे भर्ती होने की अपील करनी चाहिए। जो पहले से सदस्य है कि वे पूरे मन से काम करे और यह देखे कि हमारी अनुपस्थिति मे सेना के कार्य को किसी प्रकार की हानि न पहुचे। मुझे कोई सदेह नहीं कि सरकार की दमन नीति सेना के अनुशासन और सगठन को मजबूत बनाने मे सहायक सिद्ध होगी।

हमारे एन० सी० ओ के अधिकारियो पर सचमुच मे एक बडी जिम्मेदारी है। उन्हे हमारे सामान्य सैनिको के सामने एक उदाहरण पेश करना होगा। मुझे उनमें तथा हमारे सामान्य सैनिको मे पूर्ण विश्वास है कि इस अवसर पर उनमे एक नया उभार पैदा होगा।

सुभाष चद्र बोस
जनरल आफीसर कमाडिग
बी० वी० अलीपुर कोर्ट

स्वाधीनता दिवस

कलकत्ता के नागरिको से अपील, 24 जनवरी 1930

यह एक साधारण घटना से कहीं अधिक बडी बात है कि हमे 26 जनवरी से पहले हिरासत मे ले लिया गया। इस दिन को देश भर मे स्वाधीनता दिवस के रूप मे उत्सवित किया जायेगा।

यह हो सकता है कि सरकार यह सोचती हो कि हमारे 26 जनवरी से पहले जेल जाने से स्वाधीनता दिवस मे रुकावट पैदा हो जायेगी। अतएव मे कलकत्ता के नागरिको से अपील करता हू कि वे स्वाधीनता दिवस को इस महान शहर मे सम्मानपूर्ण ढग से मनाये जिसके नागरिक होने का हमे गर्व है। मुझे सदेह नहीं है कि इस अवसर पर हमारी अनुपस्थिति से कोई फर्क नहीं पडेगा बल्कि इससे हमारे साथी नागरिको के इस आयोजन को सफल बनाने मे प्रयत्नो मे तेजी आयेगी।

जेल डायरी

अलीपुर सेंट्रल जेल, 7-15 फरवरी, 1930

7 2 30 पिछली रात एक नयी परेशानी खडी हो गई। हमारे ग्रुप का प्रेम सिंह यह कहने लगा कि जब तक लाहौर जेल के राजनीतिक बंदी उपवास करेंगे, वह भी सहानुभूति में उपवास करेगा और भूखहडताल जारी रखेगा। रात को अंतिम रूप से बंद होने से पहले हमने उससे सविस्तार चर्चा की। लेकिन वह अपने निश्चय पर डटा रहा। सुबह जब हम चाय पर गये तो वहा प्रेम सिंह नदारद था। पूछताछ से पता चला कि वह भी बिस्तर पर ही है। फिर हमने निर्णय लिया कि उसे यह कदम उठाने से रोका जाए क्योंकि एक बार उसने उपवास शुरू कर दिया तो उसका मनोबल और अधिक बढेगा। शायद फिर वह अपनी प्रतिज्ञा को भग करने मे स्वय को लज्जित अनुभव करेगा। हम सब उसके कमरे मे गये और उससे इस बारे मे बात की। डा० दास गुप्ता हमारे मुख्य प्रवक्ता बने और बहुत समझाने बुझाने के बाद वह उपवास तोडने पर राजी हुआ। उसके खाना खा चुकने के बाद हम चक्कर पर निकले।

सुबह से चक्कर से लौटने पर हमने सुना कि महानिरीक्षक कारावास दौरे पर आयेंगे। यद्यपि वे आये लेकिन हमारे बाडे मे प्रवेश नहीं किया।

इसके बाद तीन वकील मित्र बारोडापाइन, मृत्युजय चट्टोपाध्याय और वीरेन्द्र नाथ सेन गुप्ता हमसे मिलने आये। एक लम्बे अरसे बाद बारोडा बाबू को देख करके पुलकित हो उठा। यो कहिये कि उनके पीछे माताजी, पिताजी, दीदी और मेजो बाउ जी आदि आये। श्याम दास कविराज उनके साथ थे। वे एक घटे के आस-पास यहा रहे थे। वे राष्ट्रीय ध्वज की घटना के बारे मे जानने को उत्सुक थे कि यह कहा से आया और इसका क्या हुआ? कारावास शायद मित्रो और सगे सबधियो के व्यवहार को जितना प्रभावित करता है उतना कोई अन्य घटना नहीं कर सकती।

8 2 30 आज शनिवार है। सुबह सुपररिटेंडेट आया। हमने अपने कार्यक्रम के बारे में बात की और उसने हमे स्कूल मे पढाने का परामर्श दिया जो कि जूनियर बंदियो के लिये बनाया गया था। सच्चाई यह है कि यह सुझाव हमने ही कुछ समय पहले दिया था और इस व्यक्ति ने नामजूर कर दिया था। अब उसका विचार बदल गया था। इस बात की हमे बडी प्रसन्नता हुई। ऐसा लगता कि उसकी जेल महानिरीक्षक से बात हुई थी। इसी से उसके विचारो मे परिवर्तन आया। उसने यह भी बताया कि बदियो को चरखा चलाना सिखानें में हमारी सहायता ली जायेगी। जब एक बार उन्हे पता चला कि जेल मे खद्दर बनायी जा सकती है तो इसके बाद वहा चरखा हमेशा बना रहा।

फिर बाहर से खाना मगाने की बात चली। उसने कहा कि भविष्य में वह सप्ताह मे केवल एक बार खाना मगाने की अनुमति देगा। चावल और दाल जैसे अनाज फिर मगाये जा सकते है।

9 2.30 आज छुट्टी का दिन रविवार है। आज के दिन कैदी अपने कपडे धोते है और आराम करते हैं। अत हमने निर्णय लिया कि आज हम कताई नहीं करेगे। इसके बजाय हम अपने कमरे धोने बिस्तरो को हवा लगाने और कपडे धोने के बाद परस्पर बातचीत करेंगे और इस

प्रकार यह दिन बीता। शाम को मृत्यजय बाबू और कुछ वकील आये। मुकदमे के बारे मे बात करनी थी। आफिस जाने पर मैंने पाया कि घर से बडी सख्या मे किताबे लायी गयीं है। मैं राजनीतिक बदियो के उपचार के बारे मे सरकार को लिख चुका था। डिप्टी जेलर ने मुझे सूचित किया कि *महानिरीक्षक ने हमारे लिए यह सदेश भेजा है कि मामला विचाराधीन है। मेरे द्वारा लिखे गये* पत्र की प्रतिलिपि नीचे दी जा रही है। डायरी मे शामिल नहीं किया गया है-सपादक।

10 2.30 आज सोमवार है और सामान्य निरीक्षण का दिन है। आज के दिन कैदियो से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी निजी वस्तुओ (जैसे "कम्बल चड्ढी- बनियान प्लेट और कटोरा) का मुआयना कराये और निरीक्षण हेतु अधिकारी के आगमन की प्रतीक्षा करे। अधिकारी अर्थात सुपरिटेडेट आता है और हर अहाते मे जाकर उनकी वस्तुओ का निरीक्षण करता है। *यदि कोई शिकायत है तो कैदी उन्हे दर्ज करा सकते है। सुबह निरीक्षण को लेकर कैदियो* की भीडभाड के कारण हम अपने सुबह के चक्कर पर नहीं निकल सके। आज यह सब हुआ।

पिछले कुछ दिनो से प्राय धूप मे लम्बी बहसे चल रही थीं। विभिन्न देशो मे स्वाधीनता सग्राम, बगाल की सस्कृति एव शिक्षा चीन का आधुनिक इतिहास रूस और आयरलैंड समाज शास्त्र, नृविज्ञान और आधुनिक मनोविज्ञान जैसे विषयो पर बहसे हुई। यहा तक महात्मा गाधी को भी नहीं छोडा गया। एक नृपेन बाबू कई नौजवानो के साथ महात्मा गाधी को लेकर काफी उग्र रूप मे तर्क करने लगे। एक ओर नृपेन बाबू अकेले थे दूसरी ओर तर्क करने वाले तमाम नौजवान कई घटो की बहस की बाद स्थगन हुआ। उनकी (नौजवानो)धमकी यह थी कि आज का कोई नेता यदि अपने अनुयायियो की ओर कोई ध्यान नहीं दे पाता है ता उसे अपने नतृत्व के अधिकार से वचित हो जाना चाहिए और यदि नृपेन बाबू इस बात को लेकर अपनी राय नहीं बदलते है तो उनके अनुयायी विद्रोह कर सकते है। इसके परिणामस्वरूप जो चर्चा स्थगित हुई थी वह हमेशा के लिए बद हो गयी।

11 2 30 *मगलवार, आज जब मेजर दत्ता हमारे अहाते मे आये उस समय कुछ गडबडी* हुई, निचली मजिल पर कुछ कोठरियो मे पर्दो के रूप मे कबल टगे हुए थे यह देखकर सुपरिटेंडेंट ने कारण जानना चाहा। हमारे विचार से यह नियम के विरूद्ध नहीं था। कोठरी मे रहने वाला सामने खडा था लेकिन उससे कुछ नहीं कहा गया। इसके बजाय सार्जेट ने गोली दाग दी। इससे कोठरी मे रहने वाला भूपेन्द्र रक्षित क्रुद्ध हो उठा। कहने की जरूरत नहीं कि हमारे जैसे राजनीतिक बदी अपने अपमान को लेकर बहुत सवदेनशील होते है। ऐसे मौको पर हम उत्तेजित हो उठते है और यह उत्तेजना उन्मुक्त हो जाती थी। बहरहाल भूपेन्द्र बाबू उस सुपरिंटेडेट से काफी गुस्से मे बातचीत करने लगे। दत्ता ने दरवाजे पर कम्बल टागने का कारण जानना चाहा। भूपेन्द बाबू ने कहा कि इसे सर्दी से बचने के लिए टागा गया है। यहा मुझे यह बता देना चाहिए कि हर कोठरी मे एक दरवाजा और एक खिडकी थी। दरवाजे लोहे के सरियो से बने हुए थे। इनमे से अदर का सब कुछ देखा जा सकता था। दरवाजे की ठीक विपरीत दिशा मे छत के खभे के पास खिडकी थी। लोहे की सलाखो की खिडकिया थीं। दत्ता ने जाते हुए कहा कि इस प्रकार के पर्दो का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए हानिकर होता है। उनके बच्चे रात भर दलान मे सोये। इस पर से भूपेद्र बाबू ने कहा कि इस कोठरी की बात कुछ अलग है। दत्ता साहब को स्वय ठहर कर

देखना चाहिए कि यहा कि यहा कैसा लगता है? एक जूनियर आफीसर के सामने इस प्रकार की बाते सुनकर दत्ता आग-बबूला हो गये और बिना कुछ कहे बाहर चले गये और उस दिन हम उससे मिल नहीं सके।

वह क्रोध की मन स्थिति मे अपने आफिस गया और आदेश दिया कि -1।। किसी को कम्बल या पर्दा टागने की अनुमति नहीं है। 121 ऊपरी मजिल पर रहने वालो को चाहिए कि मिलने के लिए नीचे आये। सार्जेंट ने हमे सकोच के साथ यह सूचना दी। लेकिन उस दिन दफ्तर की ओर से ये आदेश हमे प्राप्त नहीं हो सके।

सुपरिटेडेट के हमारे रवैये को लेकर हमने आपस मे चर्चा की। दूसरी सुबह जब वह आया तो उसके मन मे अभी भी पुकार थी। हमने निर्णय लिया कि हम उससे मिलने नीचे नहीं जायेगे। उसे ऊपर आना होगा। पर्दे अब भी वही थे। सिर्फ उनकी तादाद बढ गयी थी। पहले वह दूसरे अहाते मे गया जहा भूपेन्द्र बाबू और अन्य मित्र थे। नृपेन बाबू के अखबार को लेकर उसकी कुछ अनबन हो गयी थी। जब वे विचाराधीन कैदी था तब उन्हे अखबार दिया जाता था। सजा मिल जाने के बाद भ्रमवश उन्हे अखबार दिया जाता रहा। हालाकि कानून के नजरिये से उन्हे अखबार नहीं मिलना चाहिए था। जब यह बात मेजर की जानकारी मे आयी तो अखबार भेजना बद करा दिया। इस बात को लेकर नृपेन बाबू और मेजर मे अनबन हो गई।

इसके बाद दत्ता साहब हमारे अहाते में आये और करीब डेढ घटे तक उनसे चर्चा हुई। उन्होने बडे दु ख के साथ एक बात कही कि उनका सीधे-सीधे अपमान हुआ है। और उनकी अवज्ञा करने के लिए दूसरे अहाते मे भी पर्दे टाग दिये गये आदि-आदि। हमने महसूस किया कि नगण्यमुद्दो को लेकर कटुता का बढावा उचित नहीं होगा। यदि लडना ही है तो बडे मुद्दों को लडा जाना चाहिए। हमने सफाई पेश की कि दोनो पक्षो के बीच गलत फहमी के कारण यह समस्या पैदा हुई और पर्दे उनका अपमान करने के लिए नहीं टागे गये थे। हममे से अनेक लोग कुछ समय तक पर्दे टागे रहे लेकिन उन्होने इस नगण्य चीजो की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। इससे उनका चित्त शात हुआ और हमे भी प्रसन्नता हुई।

दोपहर के आस-पास मुझे बुलाया गया। सर्वोच्च अधिकारी मुझसे कुछ कहना चाहते थे। पहले मुझे चिंता हुई कि कहीं व्यक्तिगत कारणो से तो मुझे नहीं बुलाया गया या इसका तबादले से तो सबध नहीं है। मुझे अचानक याद आया कि इसी तरह मेरा बेहरामपुर जेल से माडले जेल के लिए तबादला किया गया था। जहा मैं 1925 में एक राजनीतिक बदी था। बहरहाल दफ्तर पहुचने पर मैंने महसूस किया कि भय का कोई कारण नहीं है। दत्ता साहब ने मुझे भेंट के लिए बुलाया था। हम एक घटे के ऊपर कैदियो के वर्गीकरण और विशेष प्रकार की भूख हडताल पर चर्चा करते रहे। बडी देर बाद जब मुझे थकान महसूस होने लगी तब हमारी बैठक बर्खास्त हुई। सर्वोच्च अधिकारी अपने आवास पर गये और मैं अपनी कोठरी में वापस हुआ।

13 2 30 मगलवार, इस सुबह फिर समस्या खडी हो गई लेकिन प्राथमिक स्तर पर ही खत्म कर दिया गया और यह गभीर रूप नहीं ले सकी। सुबह जब हम अपने चक्कर पर निकले, सार्जेंट ने तमाम पर्दे हटा दिये। प्रेमसिह उस समय बाहर नहीं गया था जब सार्जेंट उसक पर्दा हटाने आया। उन दोनो के बीच कहासुनी हो गई। लौटने पर अन्य लोगो ने भी पहले की तरह पर्दे टाग लिये। जब सर्वोच्च अधिकारी के आने का समय हुआ तब सार्जेंट ने हमसे कहा कि

हम नीचे मिलने के लिए आये। कहने की जरूरत नहीं कि उस क्षण हम नीचे जाकर सार्जेंट या उसके अफसर को खुश करने की मन स्थिति मे नहीं थे। लेकिन परिस्थितिक कारणो से इस सुबह मेजर दत्ता हमारे अहाते मे नहीं आये थे।अत दिमाग कुछ ठडा हुआ। दोपहर के दो बजे थे। हम सब उघ रहे थे कि दत्ता साहब अकेले आ गये। अपने स्वभाव के अनुसार एक लबा व्याख्यान शुरू कर दिया। व्याख्यान का मुख्य विषय कैदियो के लिए शिक्षा नीति था। उन्होने सुझाव दिया कि यदि हमारी रूचि हो तो हम अवयस्क कैदियो की शिक्षा का दायित्व सभाल ले। इसके उपरात उन्होने रिहायी के बाद कैदियो की देखभाल और हिन्दू कैदियो की मृत्यु हो जाने पर उनके लिए अतिम सस्कार जैसे मुद्दो पर बातचीत की। उन्होने कहा कि हम अग्रेजो के विपरीत अपने कैदियो के कल्याण की बहुत कम चिता करते है। एक डेढ घटे बाद वे चले गये। उनके भाषण की समाप्ति का इतजार करते-करते डिप्टी जेलर और सिपाही थक गये थे।

14.2 30, इस सुबह सर्वोच्च अधिकारी इधर नहीं आये। बारह बजे के आस पास जब हम भोजन से निवृत्त हुए, डिप्टी जेलर दत्ता साहब का सदेश लेकर आया। सदेश यह था कि श्री युक्त उर्मिला देवी मुझसे और भूपेन्द्र बाबू से मिलने आयीं है। जब हम वहा पहुचे तो हम मेजर साहब से एक बहस मे उलझ गये। हम करीब दो घटे तक उनके साथ साथ रहे। दत्ता साहब के कमरे से हमने सुना कि बस मे नौजवानो का समूह "बदे मातरम्' पुकार रहा है। पहले हमने सोचा कि श्री ज्ञानाजननियोगी जेल आये होगे। लेकिन द्वार पर रुका। इसके बजाय वह अर्ली पुर की ओर बढ गया। अहाते मे लौटने के डेढ घटे बाद हमने बार-बार 'बदे मातरम की ध्वनि सुनी।

अब लगा कि यह ध्वनि हमारी ओर बढ रही है। आखिरकार मे नारे जेल के द्वार पर लगाए जाने लगे। अब यह स्पष्ट हो गया कि ज्ञानाजन बाबू आ चुके है उत्तेजना वश हमने भी स्वागत मे नारे लगाने शुरू कर दिये। युवा और वृद्ध सभी ने साथ दिया। हमारी उत्तेजना को देखते हुए यूरोपीय अहाते के एक कैदी ने पूछा "क्या आप सब बाहर जा रहे है? हमारा उत्तर था न और अधिक लोग भीतर आ रहे है। इसकी प्रतिक्रिया मे उसने कहा "हुर्रा'। नये राजनीतिक कैदियो के आगमन की प्रसन्नता को केवल कैदी ही महसूस कर सकते है। हमारे अहाते मे पहुचने पर ज्ञान बाबू का गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया। इस उत्साह को देखकर सामान्य कैदी आश्चर्य चकित रहे गये और पूछने लगे "इनके साथ क्या हुआ? विकृत चेहरे के साथ जेलर वराडे मे आया, यह जानने के लिए कि क्या हुआ? बाहर की गतिविधियो को लेकर हमारे बीच पूछताछ जारी रही। फिर हस्वेमामूल हम शाम के चक्कर पर निकल गये।

आज जेल के भीतर दो महत्वपूर्ण घटनाए हुई। पहली श्री निखिल नाथ वद्योपाध्याय पाच वर्ष के कैद के बाद रिहा कर दिये गये। उन्हे दक्षिणेश्वर बम प्रकरण मे सजा हुई थी। दूसरी मेचुआ बाजार बम प्रकरण की एक विशेष अदालत के सामने सुनवाई होनी थी। इस प्रकरण से सबधित बारह या तेरह युवा कैदी जेल मे थे। निखिल बाबू के बारे मे एक बात कहना जरूरी लगता है उनका तबादला बगाल की एक जेल से दिल्ली जेल मे किया गया था। वहा वे अकेले थे और उन्होने भीषण कष्ट सहे थे। धीरे-धीरे हालात सुधरे कुछ समय पहले उन्हे फिर कलकत्ता जेल मे स्थानातरित कर दिया गया था।

15 2.30 शनिवार आज सुबह मेजर दत्ता हमारे अहाते मे ज्यादा देर नहीं रुके। मैंने सोचा कि यह शुभ लक्षण है क्योकि एक बार उन्होने बोलना शुरू किया तो लम्बा व्याख्यान दे डालते। उनकी वाणी के प्रवाह को देखकर लगता था कि उन्हे अध्यापक या धर्मोपदेशक होना चाहिए था।

इसके बजाय गलती से वे जेल विभाग मे डाक्टर हो गये। लेकिन हम बच नहीं सके और एक नयी समस्या खडी हो गई। कल यानि शुक्रवार को प्रेमसिह ने मुझसे कहा था कि वह जिन चीजो को प्राप्त करने का पात्र है, उनका कोटा उसे नहीं मिल रहा है। (जैसे-कुर्सी, अभ्यास पुस्तिका और कागज आदि) और दूसरे दिन यानि शनिवार को वह इस मामले को सर्वोच्च अधिकारी के सामने रखेगा। उसके रवैये को देखते हुए मैं समस्या को भाप गया। मैंने तुरत वार्डर से कहा कि वह दफ्तर को सूचित करे कि प्रेमसिह को जरूरी सामान नहीं मिल रहा है और वह बहुत व्यग्र है। फिर मैंने डिप्टी जेलर अनिल बाबू से कहा कि प्रेमसिह बहुत आक्रामक हो चुके है क्यो कि उनके पास कोई नहीं पहुचा है और इस दिशा मे शीघ्र ही कुछ किया जाना चाहिए।

मेयर के रूप में अभिभाषण

कलकत्ता निगम की सभा, 27 सितम्बर, 1930

मेरे कारावास मे रहते हुए आप ने मुझे इस शहर के मेयर के रूप मे निर्वाचित किया। इस हेतु मैं आप के प्रति हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करता हू। मैं इस सदन के सभी सदस्यो और डिप्टी मेयर द्वारा मेरे प्रति भावनाओ को लेकर भी आप का अत्यत आभारी हू। मैं एक क्षण के लिए भी यह नहीं सोच सकता कि मैं इस महान सम्मान के किसी भी तरह योग्य हू। मैं इस बात को लेकर सचेत हू कि यदि मेरा कोई गुण है तो वह केवल यह है कि मैं हमारे स्वर्गीय नेता देश बधु चित्तरजन दास का प्रबल अनुयायी हू और मैं स्वीकार करूगा कि यदि मुझमे कोई गुण है तो यही है कि मैंने उस मशाल का अनुगमन करने की कोशिश की जिसे कि उन्होने राष्ट्र का उत्थान करने हेतु अबाध स्वच्छन्दता के साथ अपने हाथ मे थामा था। यह स्वच्छन्दता हर भावुक बगाली का गुण है।

नगरपाल और पार्षद गुण मैं नहीं सोचता कि आप मुझमे लम्बे भाषण की अपेक्षा रखते है। मैं वहीं हू जिसे महात्मा गाधी ने एक बार "वैधानिक दृष्टि से मृत" कहा था। लेकिन मेरा विश्वास है कि इस वर्ष की जनवरी मे निगम के सम्मुख जो समस्याए थीं वे आज भी बदस्तूर बनी हुई है। यदि हम इन समस्याओ का समाधान करना चाहते हैं तो यह बेहतर होगा कि हम पूर्व के इस मुख्य शहर के प्रथम मेयर के प्रथम भाषण की ओर ध्यान दे। मै उनके भाषण के कुछ अश उद्धृत करूगा। आशा है आप मेरा साथ देगे। मुझे विश्वास है कि हम सब इस भाषण को हमारे नगर निगम के इच्छा-पत्र के रूप मे लेगे। इस महान भाषण मे देश बधु चित्तरजन दास ने कहा था

"पिछले दस पद्रह वर्ष से मैंने जिस बडे काम को हाथ मे लिया है, वह एक अखिल भारतीय जनमच का निर्माण करना है। जिसमे विभिन्न समुदायो और विभिन्न रुचियो के लोग होगे लेकिन वे एक राष्ट्र के रूप मे सयुक्त और सधबद्ध होगे। इस निगम मे मैंने इस दिशा मे पर्याप्त कार्य किया है। मैं यह मानता हू कि आप यह पायेगे कि समूची जाति की समृद्धि के मार्ग मे किसी के साप्रदायिक हित आडे नहीं आयेगे। जाति से मेरा अभिप्राय भारतीय जनता या विशेष रूप से कलकत्ता के नागरिको से है।

यहा मेरा विश्वास है कि हमारे पास केवल भारतीय राष्ट्रवाद का दर्शन ही नहीं है बल्कि नागरिक शास्त्र और गैर राजनीति का सच्चा सबध भी है।"

फिर देश बधु ने आगे कहा

"यह भारतीय लोगो का महान आदर्श है कि वे गरीब को "दरिद्र नारायण' समझते है। उनके अनुसार ईश्वर गरीब के रूप मे आता है और भारतीय मन के अनुसार गरीब की सेवा ही ईश्वर सेवा है। अतएव, मैं आपकी गतिविधियो को गरीबो की सेवा मे प्रेरित करने की कोशिश करूगा। आपने मेरे द्वारा बनाये गये कार्यक्रम मे देखा होगा कि इसके अधिकाश बिन्दुओ का सबध गरीबो की आवास, नि शुल्क प्राथमिक शिक्षा और नि शुल्क स्वास्थ्य सहायता मे है। सभी वरदान गरीबो के लिए है। यदि निगम को इस दिशा मे सीमित सफलता भी मिलती है तो यह स्वय न्याय सिद्ध करेगा।"

मुझे विश्वास है कि इस कथन मे जो कि उनके दर्शन के सारतत्व से युक्त है हमे यह बात मिलेगी जिसे आधुनिक शब्दावली मे समाजवाद का आधार कहा जाता है और यदि आप इस कार्यक्रम के परीक्षण हेतु आगे बढेगे तब आप को मेरी यह बात सही जचेगी कि उन्होंने आध्यात्मिक आवरण मे जो सदेश दिया है, वह अपने सार तत्व मे आधुनिक यूरोप का समाजवाद ही है। देशबन्धु ने नये निगम के अमली कार्यक्रम के रूप मे कुछ बिदु निर्धारित किये थे। नि शुल्क प्राथमिक शिक्षा गरीबो को नि शुल्क स्वास्थ्य सहायता, शुद्ध और सस्ते पोषण आहार की आपूर्ति बस्तियो और तग इलाको मे स्वच्छता गरीबो के आवास के आसपास के इलाको का विकास बेहतर यातायात सुविधाये और अत मे कम खर्च पर सक्षम प्रशासन।

एक बार फिर, यदि मैं उनकी नीति और कार्यक्रम को आधुनिक भाषा मे प्रस्तुत कर सकता हू तो मै कहूगा कि ये नीतिया और कार्यक्रम आधुनिक यूरोप के समाजवाद और फासीवाद का सश्लेषण है हमारे पास न्याय समानता और प्रेस के आदर्श है जो कि समाजवाद का आधार है। इसके साथ ही साथ हमारे पास फासीवाद की समानता और अनुशासन है जो कि आज के यूरोप मे विद्यमान है।

सज्जनो, अब मैं अनेक समस्याओ के समाधान की दिशा मे हमारे द्वारा किये गये आज तक के प्रयासो का एक सक्षिप्त विवरण आप के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हू। आशा है आप धैर्य के साथ मेरा साथ देगे। ये समस्याये हैं-शिक्षा आवास सडके स्वास्थ्य सहायता, नालिया और प्रकाश।

1923-24 मे मात्र 19 स्कूल थे। अब 1 सितम्बर 1930 को यह सख्या बढकर 218 हो गई है। इनमे से 137 स्कूल लडको के है और 81 लडकियो के। 1923-24 मे निगम के स्कूलो मे विधार्थियो की कुल सख्या 2468 थी जबकि 1 अप्रैल, 1930 को इनकी सख्या 26,560 थीं जिनमे से 15562 लडके थे और 10998 लडकिया थी। कुल विधार्थियो मे से 6808 मुस्लिम

समुदाय के विद्यार्थी थे। स्कूल मे जाने की आयु वाले बच्चो की संख्या एक लाख है। इनमे एक चौथाई से भी कम निगम के स्कूलो मे जाते हैं।

* 1923-24 मे शिक्षा पर होने वाला व्यय डेढ लाख रुपये था। 1929-30 मे यह व्यय एक लाख से कुछ ऊपर तक पहुच गया। निगम ने पाच माडल स्कूल खोले हैं और दो निर्माणाधीन है।

स्कूल जाने की उम्र वाले बच्चो मे से लगभग दो तिहाई बच्चे पहले से ही स्वैच्छिक आधार कलकत्ता के स्कूल मे मौजूद है। अतएव मैं सोचता हू कि अब अनिवार्यता का नियम लागू करने का समय आ पहुचा है। निगम पहले ही वार्ड न० 9 मे शुरूआत करने का निर्णय ले चुका है। जहा विशेष रूप से अनुकूल परिस्थितिया हैं। सरकारी मजूरी की प्रतीक्षा, इसमे सफलता मिलते ही समूचे कलकत्ता मे अनिवार्यता लागू कर दी जायेगी।

1927 मे अध्यापको के लिए एक ट्रेनिग कालेज शुरु किया जा चुका है। बडी संख्या मे अध्यापक प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

निगम ने 2 फरवरी, 1925 को योजना तैयार करने हेतु एक विशेष समिति गठित की है। समिति की 12 बैठके हो चुकी है। तिलजला की पुल न० 4 की दक्षिणी ओर 60 फुट सीवर रोड के पास जगह का चुनाव भी कर लिया है। समिति ने 8 ब्लाक वाले माडल को भी स्वीकृति दे दी है। प्रत्येक ब्लाक के मे 4 सूट होगे। जमीन की कीमत सहित प्रत्येक ब्लाक पर तेरह हजार रुपये की लागत आयेगी (बावन हजार रुपये मे ऐसे चार ब्लाको के निर्माण को स्वीकृति दे दी है)

निगम ने 15 फरवरी, 1928 को इस मामले करे पुनर्विचार के लिए समिति के पास भेज दिया है। समिति ने अपनी अंतिम रिपोर्ट मे निम्न लिखित स्थलो की सिफारिश की है -

(अ) तिलजला मे 60 फुट सीवर रोड के पास निगम का एक 2 बीघा का प्लाट।

(ब) योमनि पुर लेन से लगी हुई दलू सरकार लेन मे निगम एक साथ 3 3/4 बीघा का प्लाट।

जहा तक तिलजला के स्थल की बात है पुराने माडल के इस सुझाव के साथ सिफारिश कर दी गई है कि ऐसे दो इलाको का निर्माण अविलम्ब कराया जाये। जहा तक दलू सरकार लेन की बात है सर्वेक्षण द्वारा तैयार किये माडल को स्वीकृति दे दी गई है। जिसके प्रत्येक ब्लाक मे 4 कमरे, 4 रसोई दोनो ओर एक-एक सटा हुआ बराडा और एक शौचालय होगा। समिति ने प्रति ब्लाक पच्चीस हजार रुपये की अनुमानित लागत पर ऐसे चार ब्लाको के अविलब निर्माण की सिफारिश कर दी है। समिति ने आगे ये सिफारिश भी की है कि यदि यह योजना सफल हो जाती है तो मजदूर और गरीब वर्गो के आवासीय भवनो के निर्माण पर एक लाख रुपये सालाना खर्च किये जायेगे।

15 जुलाई, 1930 को निगम द्वारा यह रिपोर्ट इस निर्देश के साथ स्वीकार कर ली गई है कि यह योजना आगामी वर्ष से लागू होगी और अगले बजट मे इसके लिए उचित प्रावधान रखा जायेगा।

निगम डामर की सडकों पर पाच लाख रुपये सालाना खर्च करता है। इसके साथ ही निगम

* ऐसा प्रतीत होता है कि यह आकडा रिकार्ड में गलत दर्शाया गया है —सम्पा०

सडको की मरम्मत पर सात से दस लाख रुपये सालाना खर्च करता है। यातायात की व्यस्तता के कारण सडको की सही स्थिति मे लाना बहुत कठिन है। नये निगम के अस्तित्व मे आने से काफी पहले निगम की समिति ने उन सडको की सूची तैयार की थी जिनका पक्की नींव के साथ पूर्ण निर्माण किया जाना है। उस समय के आकडो को देखते हुए इस कार्य पर 21 लाख रुपये की लागत आने का अनुमान किया था। सडक निर्माण दिन-ब-दिन विशिष्ट होता जा रहा है। अत निगम को इस समस्या की ओर शीघ्र ही ध्यान देना होगा।

निगम स्वास्थ्य सहायता की सुविधाए देता है। नये निगम की शुरूआत मे निगम की 7 डिस्पैंसरिया थीं। निगम ने 1923-24 मे स्वास्थ्य सहायता एक अनाथालय प्रसूति और बाल कल्याण सहित कुल 3,60,000 रुपये व्यय किये थे। 1928-29 मे यह व्यय 7,20,000 रुपये तक पहुच गया और नये बजट मे इसके लिए 8,66,000 रुपये का प्रावधान है। फिलहाल निगम के पास 13 डिस्पैंसरिया हैं। इनमे से एक यूनानी है और दूसरी विशेष रूप से होम्योपैथी के उपचार के लिए हैं। इस समय अस्पतालो के अनुदान की राशि चार लाख रुपये है जबकि यह राशि 1923-24 में केवल 1,18,000 रुपये थी।

निगम ने जलाशय की योजना को निरस्त कर दिया है। इसमे बहुत बडी राशि का अनुपयोगी व्यय शामिल था। इसके स्थान पर निगम ने विशेषाधिकारी डा० बी० एन० डे द्वारा तैयार की गई दो योजनाओ को मजूरी दे दी है-एक योजना भीतरी नालिया तथा दूसरी योजना पानी की निकासी से सबंधित है।

नालियो की मौजूदा व्यवस्था बेकार हो चुकी है। समय को देखते हुए इस मामले पर विचार-विमर्श हो रहा है। इस मामले को जितनी जल्दी हो सके तुरत हाथ मे लेना होगा।

आगामी कुछ वर्षो मे निगम की यह मुख्य चिता होगी।

यह एक विशेष हित की बात है कि निगम ने एक योजना हाथ मे ली है। इसे भी विशेषाधिकारी-द्वारा तैयार किया गया है। यह योजना नगर पालिका भवन हाग स्ट्रीट भवन और हाग बाजार में बिजली की आपूर्ति के लिए है। मै समझता हू कि इससे बिजली के बिल मे 70,000 रुपये की बचत होगी।

अतएव, निगम के हित को ध्यान मे रखते हुए इस योजना को शीघ्र ही कार्यान्वित करूगा।

सज्जनो, मैं आशा करता हू कि मेरी इन टिप्पणियो से यह बात साफ हो चुकी होगी कि नया निगम 1924 से ही शहर की समस्याओ के समाधान की दिशा मे प्रयत्नशील है। मैं एक क्षण के लिए भी हमारे प्रयत्नो से सतुष्ट नहीं हू। दूसरी ओर मैं यह मानता हू कि सडक शिक्षा आवास और विशेष रूप से सहायता प्राप्त क्षेत्रो के विकास की समस्याओ की दिशा मे अभी बहुत कुछ करना शेष है। हम इन समस्याओ को जितना महत्व देगे उतना ही समूचे शहर का भला होगा।

सज्जनो, सदन मे समय-समय पर इस बात को लेकर भय व्यक्त किया जाता है कि इस महान शहर मे नये निगम के हाथो कुछ निश्चित समुदायो या समूहो को नुकसान उठाना पडेगा। मुझे इस भय का कोई औचित्य प्रतीत नहीं होता। मुझे विश्वास है कि सभी समुदायो के प्रति निष्पक्ष और ईमानदार रहने के प्रश्न को लेकर सदन के सभी सदस्यगण सहमत हैं। मै इस सदन के यूरोपीय सदस्यो को बता सकता हू कि इस अनुमान के लिए कोई गुजाइश नहीं है कि हमारे हाथो

चौरगी को कोई नुकसान नहीं पहुचेगा। हम चौरगी और अहीरी-टोला क्षेत्रो की स्थिति के अतर को महसूस करते है लेकिन हमारा उद्देश्य चौरगी को अहीरी-टोला के स्तर पर नीचे ले आना नहीं है बल्कि हम अहीरी-टोला को चौरगी के स्तर तक ऊंचा उठाना चाहते है।

हमारे मुसलमान दोस्तो के मन मे समय-समय पर यह भय उत्पन्न हुआ है कि हमारे हाथो उनके हितो को नुकसान पहुचेगा। मैं अपने सदन के कुछ दोस्तो का धन्यवाद करता हू कि उन्होने मुझे लेकर कुछ कृपापूर्ण टिप्पणिया की हैं। मैं अपने मित्रो को याद दिलाना चाहूगा कि 16 जुलाई, 1924 को मैंने नियुक्तियो के मामले मे मुस्लिम समुदाय के दावो को लेकर एक बयान दिया था। वह बयान पूरे दायित्व बोध के साथ और सोच-समझ कर दिया गया था और मै इस मेयर की कुर्सी से कहता हू कि आज भी मे इसे बयान के एक-एक शब्द के प्रति निष्ठावान हू। मै इस बयान मे निहित नीतियो को कितना प्रभावी बना सकूगा यह केवल मुझ पर नहीं बल्कि इस सदन पर निर्भर करता है। जहा तक मेरा सबध है और मुझे विश्वास है जहा तक सदन मे काग्रेस दल का सबध है हम इस शहर के नागरिक जीवन मे शामिल सभी समुदायो के प्रति निष्पक्ष और ईमानदार रहे हैं।

पिछली जनवरी मे मेरे पार्षद के रूप मे त्यागपत्र को लेकर एक मित्र ने एक टिप्पणी की थी। उस मित्र ने इसे मेरी 'राजनीतिक बदमिजाजी' बताया था। मैं नही समझता कि मैं कभी इस बीमारी से ग्रस्त हुआ हू जिसे उन्होने 'राजनीतिक बदमिजाजी' की सज्ञा दी है। अलबत्ता, मैं राजनीतिक प्रश्नो पर अपने कठोर विचार रखता हू लेकिन कोई कारण नहीं जचता कि मेरे मित्र ने मेरे इस आचरण को 'राजनीतिक बदमिजाजी' क्यो कहा? इस आरोप के उत्तर मे मैं सिर्फ-इतना कहूगा कि अपने त्यागपत्र के दौरान मैं इस सदन से बाहर था। यह तथ्य इस बात का पर्याप्त कारण है कि मैंने पिछली जनवरी मे त्यागपत्र क्यो दिया?

मैं अब आपके बीच वापस आते हुए हर्ष की अनुभूति कर रहा हू। मै आपके बीच मुख्य कार्यकारी अधिकारी और पार्षद के रूप मे रहा हू और अब आपने मुझे सर्वोच्च सम्मान दिया है जो कि आप दे सकते हैं। आपके बीच मे रहना मेरे लिए आनद का स्रोत ही नहीं बल्कि एक विशेषाधिकार है और मैं आशा करता हू कि हमारे महान नेता देशबन्धु चित्तरजन दास ने 1924 के मध्य मे जिस कार्य का आरम्भ किया था, वह कार्य आपके सहयोग से पूर्णता तक अवश्य पहुचेगा।

लोगों के मन मे इस बात को लेकर कुछ भय है कि हम आज की परिस्थितियो को देखते हुए जनहित के प्रश्नो को अधिक महत्व नहीं दे पायेगे जो कि करदाताओ के प्रतिनिधि होने के नाते हमारा दायित्व बनता है। सदन मे इस पक्ष के मेरे कुछ मित्रो ने आरोपो के उत्तर दे दिये हैं। मुझे अपने महान नेता के शब्दो मे एक बार फिर यही कहना है कि "जीवन समग्र होता है।" आप नागरिक शास्त्र की राजनीति और अर्थशास्त्र को पृथक नहीं कर सकते। ये तमाम समस्याए परस्पर गुथी हुई है और जीवन के एक क्षेत्र के हितो के सबध जीवन के दूसरे क्षेत्र के हितो से है।

इसमे कोई सदेह नही कि भारत क्राति की प्रसव वेदना से गुजर रहा है। यह अहिंसक क्राति हो सकती है, यह अहिंसक क्राति है लेकिन क्राति एक जैसी ही हुआ करती है। हम प्रशासन के

मौजूदा रूप मे क्रातिकारी परिवर्तन चाहते है और जहा तक मेरी बात है, मुझे यह स्वीकार करने मे कोई हिचक नहीं है कि मेरे मन मे न्याय, समानता और प्रेम के आदर्शो पर आधारित सामाजिक व्यवस्था वाले एक स्वतत्र भारत का स्वप्न है।

मित्रो, आज समूचा राष्ट्र एक नये भारत के निर्माण को लेकर अपने आप को सबोधित कर रहा है। क्या कोई व्यक्ति गभीरता से यह बात स्वीकार कर सकता है कि कलकत्ता के नागरिक जीवन को समूचे राष्ट्र से अलग कर दिया गया। यदि आप न्याय समानता और प्रेम के आदर्शो के आधार पर अपने राष्ट्रीय जीवन का निर्माण करना चाहते है तो क्या यह जरूरी नही लगता कि इन्हीं सिद्धातो के आधार पर हम कलकत्ता के नागरिक जीवन का पुनर्निर्माण करे? मे नहीं समझता कि हमारी अग्रेजो से कोई अनिवार्य कलह है। हम दोनो के लिए दुनिया बहुत पर्याप्त है। हम स्वतत्र मनुष्यो और मित्रो की भाति रहना चाहते है। मुझे विश्वास है कि वे अपने हृदय की गहराइयो से हमारी इच्छा की सदाशयता को महसूस करेगे। हम उस दिन के लिए लालायित है जब भारत मे स्वतत्रता और समूचे विश्व मे शाति होगी। मुझे केवल यह कहना है कि जब तक भारत स्वतत्र नहीं होता है तब तक समूचे विश्व मे शाति सभव नही है।

कलकत्ता की यातायात व्यवस्था की समस्याओ के बारे मे

बगाल बस सिडिकेट की बैठक मे भाषण

श्याम बाजार, 19 अक्टूबर, 1930

आपने मुझे इस बैठक मे आमत्रित किया और इतना स्नेह व सम्मान दिया इस हेतु मै आपका हार्दिक धन्यवाद करता हू। आपने यह अच्छा किया कि आज की बैठक मे अपनी समस्याए प्रस्तुत करने से पहले राय ललित कुमार मित्तर के नाम का उल्लेख किया जिनके निधन मे न केवल बस सिडिकेट को बल्कि निगम और साथ-साथ जनता को गहरा धक्का लगा है। मैने 1924 मे कहा था कि ललित बाबू जैसे सुसस्कृत और प्रबुद्ध युवक की सेवाओ से देश अत्यधिक लाभान्वित होगा। उनके कलकत्ता निगम के कार्यकाल के दौरान एक पार्षद के रूप मे उनकी योग्यता भली-भाति सामने आ चुकी थी। शहर की जनता वास्तव मे उनकी ऋणी है।

इसके स्थान पर सचिव के नाम का उल्लेख करना भी सर्वथा उचित है। हमारी सबसे अक्षमता यह है कि हम किसी एक काम मे निश्चय के साथ सलग्न नहीं होते। देश की एक निश्चित समस्या के प्रति अडिग निष्ठा से इस दिशा मे हमे दूरगामी सफलता प्राप्त होगी।

आज आपने मेरे सामने ढेर सारी समस्याए रख दी है। मै नहीं जानता कि मैं अपने उत्तरो मे आपको सतुष्ट कर पाऊगा या नहीं। हमने आज तक शहर की यातायात समस्या को गभीरता के साथ नहीं लिया है। हर स्वतत्र देश मे परिवहन को नियमित बनाने के लिए एक परिवहन मत्रालय होता है। लेकिन यह हमारे देश मे नहीं है और इसलिए इसके अधिकार पुलिस के पास

चले गए हैं। हमे आशा है जब हम सत्ता प्राप्त कर लेगे, तब हम परिवहन मत्रालय से इस प्रश्न पर बात करने की स्थिति मे होगे।

आप कह चुके है कि निगम के पास इसका अधिकार है और मै भी कहता हू कि हा उसे यह अधिकार प्राप्त है लेकिन मैं नही जानता कि यह अधिकार पर्याप्त है। जो थोडा बहुत अधिकार है उसका प्रयोग नहीं किया गया। जहा तक आपके इस सुझाव की बात है कि सडको को नई व्यवस्था दी जाये या नहीं सडके बनाई जाए तब निगम की निर्माण समिति को परामर्श देने के लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया जाये। इस सबध में यह कहना चाहूगा कि निगम के अन्य क्षेत्रो मे कार्यरत उपसमितियो की भाति यातायात के लिए भी एक उपसमिति का गठन कर देना चाहिए। वर्तमान निर्माण समिति मे बस सिडिकेट के प्रतिनिधियो को भी ले लिया जाये यदि ऐसा करने से कानूनी अडचन न आये। यदि किसी कारण से बस सिडिकेट के सदस्य नहीं लिये जाते है तो एक विशेष उपसमिति का गठन किया जा सकता है।

लाइसैंसिग बोर्ड को लेकर निगम कुछ नहीं कर सकता। यह पूरी तरह सरकार का काम है। हम केवल इसे आगे बढा सकते है। इसकी मजूरी सरकार पर निर्भर करती है।

आपने एकाधिकार की बात की थी। हम कभी किसी को एकाधिकार नहीं देना चाहते। ट्रामवेज कम्पनी ने अपना भाडा अब तक कम नहीं किया है क्यो कि उनका एकाधिकार है लेकिन बस कम्पनी के आ जाने पर अब उनका एकाधिकार समाप्त हो चला है।

आपने शाम बाजार ट्राम डिपो को हटाने का प्रस्ताव रखा है। यदि हम यह कार्य कर सके तो अवश्य करेगे।

जहा तक पेय जल की सुविधाओ की बात है मैं यह कहना चाहता हू कि मैं जब 1924 मे निगम मे था तब मैंने सडक किनारे विश्रामगृह बनाने का प्रस्ताव रखा था और एक योजना बनाई गई थी। कुछ स्थानो पर एक दो विश्रामगृह बनाये भी गये थे लेकिन बाद मे यह योजना असफल हो गई। यदि कोई व्यक्ति हमे योजना बना कर देता है तो हम उसका स्वागत करेगे।

हम अभी ट्रामवेज कम्पनी की ओर अपने हाथ नहीं बढा सकते है। पिछली जून मे हमारे पास एक अवसर था लेकिन वह हाथ से निकल गया। अब हमे अगले सात वर्ष तक प्रतीक्षा करनी होगी। जब मैं यह देखूगा कि कोई पक्षपात नहीं हो रहा है, तब शीघ्र ही एक नया अनुबन्ध किया जायेगा।

इस प्रसग मे मैं आपसे एक बात कहना चाहूगा। जब आपका एक शक्ति के रूप मे उदय होगा दूसरे लोग आपको बाटना चाहेगे। अतएव, आप को हमेशा सतर्क रहना है कि आप किसी ऐसी दलगत राजनीति के बहलावे मे न आ जायेगे जो आपके भीतर अपना रास्ता बना सकती है। दूसरे यदि आप अपने सगठन को दीर्घजीवी बनाना चाहते हैं, तब आपको सचेत रूप से मजदूर और मालिको के बीच किसी विवाद को अनुमति नहीं देनी चाहिए। सगठन के हित मे मजदूरो को सभी सुविधाए दी जानी चाहिए क्योकि उनके सुख मे ही मालिको का लाभ है।

स्वदेशी की रक्षा मे

बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप मे बयान, 25 नवम्बर, 1930

अपनी पावन यात्रा के दौरान मुझे वहा के हौजरी उद्योग की रक्षा देखने का अवसर मिला। जो मुझे मिले, वे किसी भी देशभक्त भारतीय को सतर्क कर देने के लिए पर्याप्त है। मैने व्यक्तिगत रूप से सभी चालू मिलो का निरीक्षण किया और मैने उन मिलो के मालिको व प्रबधको से लम्बी बातचीत की।

एक आश्चर्यजनक तथ्य जो मुझे मिला, वह यह है कि 1930 मे बहिष्कार आदोलन के बावजूद सभी मिलो की दशा बिगड गई थी। पाबना हौजरी की माग बहुत नीचे गिर चुकी थी। इसके परिणामस्वरूप हर मिल के सामान्य उत्पादन मे गिरावट आ गई थी। कई मशीने बेकार पडी थी, काम के घटे कम हुए थे, बडी सख्या मे कर्मचारी बेरोजगार कर दिये गये थे, नौ मे से दो मिल बद हो गये थे और कुछ तबाही के कगार पर पहुच चुके थे।

अपने द्वारा एकत्र सूचना के आधार पर मुझे इस दुरावस्था के प्राथमिक रूप से दो कारण दिखाई देते है। पहला, मौजूदा आर्थिक सकट के कारण बगाल-विशेष रूप से उत्तरी बगाल और पूर्वी बगाल मे पाबना हौजरी की माग मे तेजी के साथ गिरावट आई है। दूसरे जापानी प्रतिस्पर्धा ने गभीर अडचन पैदा कर दी और भारतीय बाजार मे सस्ती जापानी हौजरी की बाढ आ गई है। इसके अलावा विदेशी हौजरी मिले और पाबना के बाहर अन्य भारतीय मिले पाबना मिल के प्रति ब्राडो का इस्तेमाल कर रही हैं। वे अपने उत्पादनो के ऊपर 'पाबना फिनिश्ड' और "पाबना क्वालिटी" आदि ब्राडो की मुहर लगा देती है।

मुझे मिलो की अधिकारीगण देशभक्त व्यक्ति प्रतीत हुए और वे विदेशी धागे को त्याग कर अपने उत्पादनो को पूर्ण रूप से स्वदेशी बना रहे है। लेकिन सबकी यह शिकायत है कि उन्हे उत्तम कोटि का स्वदेशी धागा पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध नहीं हो पाता। इन कारणो से स्वदेशी धागे और स्वदेशी रगाई वाली वस्तुओ की भारतीय खरीददार और व्यापारी पसद नहीं करते और विदेशी धागे से बनी हौजरी की माग बढ जाती है। भारतीय जनता के लिए यह जरूरी है वह अपनी रूचियो को बदले और स्वदेशी हौजरी को प्रोत्साहित करे। मुझे लगता है कि जनता की वर्तमान रूचि बरकरार रही तो पाबना की हौजरी मिलो के सामने दो विकल्प बचे रहते है-यदि वे विदेशी धागे का प्रयोग नहीं करने का निर्णय ले चुके है तो धीरे-धीरे मिले बद कर दे या फिर हौजरी बनाने के लिए विदेशी धागे का प्रयोग आरम्भ कर दे।

यह सच है कि आज देश मे उपलब्ध भारतीय धागे से बनी हौजरी स्वच्छ बुनावट की दृष्टि से विदेशी धागे से बनी हौजरी से कमतर है लेकिन शुद्ध स्वदेशी माल गुणवत्ता मे कमतर नहीं है। अतएव यदि भारतीय लोग थोडे-बहुत कम स्वच्छ बुनावट की स्वदेशी हौजरी को प्राथमिकता देने लगते हो सभी मिले विदेशी धागे को तुरत त्याग देगी। मुझे पूरा विश्वास है कि यदि सारे तथ्य भारतीय उपभोक्ता के सामने रख दिये जायेगे तो वह किसी दूसरे माल की तुलना मे स्वदेशी उत्पादन को पसद करेगा। भले ही विदेशी की तुलना मे उसकी बुनावट कमतर हो।

इस सिलसिले मे भारतीय कताई मिलो का ध्यान हौजरी धागे की माग की ओर आकृष्ट करना चाहूगा। यह उचित समय है कि कई मिलो ने 18 से 22 तक हौजरी धागे बनाना शुरू कर दिये हैं और मुझे विश्वास है कि यदि वे इस काम को जारी रखते है तो उन्हे एक तैयार बाजार मिल जायेगा।

फिलहाल पाबना मे 9 हौजरी मिले हैं जिनमे से दो बद हो चुकी हैं। इस आशाजनक व्यवसाय मे लाखो रुपये व्यय हो चुके है। इस उद्योग को बगाल की रचनात्मक सेवा को प्रोत्साहन करने का श्रेय जाता है।

लोग कई वर्षो तक कम सफाई वाला बग लक्ष्मी कपडा ऊचे दामो पर खरीदते रहे और मुझे कोई सदेह नहीं कि इस मौजूदा प्रसग मे भी वे कम सफाई वाली पाबना हौजरी तुरत खरीदेगे लेकिन पहले उनके सामने सारी स्थिति स्पष्ट कर देनी चाहिए। मै इस तथ्य की ओर भी जनता का ध्यान आकर्षित करना चाहूगा कि पाबना की अधिकाश मिले अर्थाभाव और बैंकिंग असुविधाओ का कष्ट उठाती रही हैं। यदि उन्हे बेहतर बैंकिंग सुविधाए मिलती है तो वे उद्योग मे विस्तार कर सकती है और इसके द्वारा कम लागत पर अधिक उत्पादन किया जा सकता है।

काग्रेस का कार्यक्रम और युवा

मेयर तथा प्रात की काग्रेस पार्टी के नेता के रूप मे भाषण, 11 दिसम्बर, 1930

मै सोमवार रात्रि की दु खद घटनाओ पर गहरा खेद प्रकट करता हू क्योकि मैं महसूस करता हू कि वे घटनाए काग्रेस के कार्यकम की अस्थायी विफलता का अपराध-स्वीकार है और साथ मे देश की सम्पूर्ण युवा पीढी को प्रभावित करने की दिशा मे काग्रेस नेताओ की अस्थायी विफलता का भी अपराध-स्वीकार हैं।

मुझे आशा है कि जब हमारी भावनाओ का ज्वार कम होगा तब हम घटनाओ के कारणो की गहराई से छानबीन करेगे जिनसे हम सबको गहरा आघात पहुचा है। यह सिर्फ इन घटनाओ के लिए जिम्मेदार युवाओ को 'गुमराह' करना भर नहीं है। यह एक प्रकट तथ्य है कि आज का भारत शीघ्र ही स्वतन्त्रता चाहता है। यह भी एक प्रकार तथ्य है कि इस देश मे ऐसे लोग भी हैं, भले ही उनकी सख्या कम हो, जो केवल काग्रेस के कार्यक्रम का अनुसरण करते हुए स्वतत्रता नहीं चाहते बल्कि वे किसी भी कीमत पर और किन्हीं भी साधनो द्वारा स्वतत्रता चाहते है।

जहा तक काग्रेस पार्टी का सबध है, वह अपनी नीति और कार्यक्रमो को बार-बार स्पष्ट करती रही है। आज सारा ससार इस बात को जानता है कि भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस अहिंसा की सिद्धात मे विश्वास करती है। लेकिन काग्रेस नेताओ के प्रयासो के बावजूद महात्मा गाधी से लेकर गाव के सामान्य कार्यकर्ताओ के प्रयासो के बावजूद हम इस देश की युवा पीढी की मस्तिष्क और निर्णय को प्रभावित करने में क्यो असफल रहे हैं? हम इसलिए असफल रहे है क्योकि काग्रेस का

कार्यक्रम अब तक स्वतत्रता प्राप्त नहीं कर सका। मेरा दृढ विश्वास है कि आगे चल कर हम स्वतत्रता अवश्य प्राप्त कर लेगे लेकिन जब तक हम अपनी सफलता से यह सिद्ध नहीं कर देते कि काग्रेस का कार्यक्रम ही केवल अपनाने योग्य कार्यक्रम है। तब तक मैं नहीं समझता कि देश की शतप्रतिशत जनता को हम अपने सिद्धात के अनुरूप बदलना कैसे सभव होगा?

मैं आप के समक्ष एक तथ्य प्रस्तुत करना चाहूगा। मै आप से यह सोच विचार करने की अपेक्षा करूगा कि पिछले दो वर्षो के दौरान सरकारी नीतियो ने क्या हमारे देशवासियो के मन पर सुखद प्रभाव छोडा है? मैं पिछले दिनो जारी किये गये कुछ अध्यादेशो को सदर्भित कर रहा हू। मैं जेल मे था मैंने सरकार के कई जिम्मेदार लोगो से बात की थी और मैंने उनके लिए यह बात स्पष्ट कर दी थी कि यदि ये अध्यादेश एक के बाद एक जारी होते रहे यदि जन सभाओ और-जलूसो पर प्रतिबन्ध लगा रहा, यदि हमारे ऊपर प्रेस अध्यादेश जैसे अध्यादेश थोपे जाते रहे और इनके द्वारा तमाम खुली गतिविधियो के रास्ते बद कर दिये गये तो काग्रेस के नेता यह सिद्ध करने मे सफल नहीं होगे कि उनका कार्यक्रम ही सबसे प्रभावशाली कार्यक्रम है। ये अध्यादेश स्वाधीनता की चेतना को नष्ट नहीं कर पायेगे क्योकि यह असभव है-बल्कि भूमिगत आदोलन को प्रोत्साहित करेगे। मुझे अफसोस है कि मेरे सबसे बुरे पुर्वानुमान आज सही साबित हुए। मैं हर व्यक्ति को आश्वस्त कर सकता हू कि चाहे वह मेरा देशवासी हो या अग्रेज-कि भारत ने स्वाधीनता प्राप्ति के लिए अहिंसा के सुगम मार्ग का चुनाव कर लिया है। मुझे विश्वास है कि कुछ अस्थाई दोषो के बावजूद हमारे देशवासी इस मार्ग पर अडिग रहेगे और भविष्य मे इस मार्ग का अनुसरण करते हुए स्वतत्रता प्राप्त कर लेगे। लेकिन जब तक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो जाती है मुझे आशा है कि हम केवल प्रस्ताव करने, भर्त्सना करने या युवाओ के "गुमराह' को गुमराह सिद्ध करने मे ही सतोष का अनुभव नहीं करेगे बल्कि इसी समय हमे उन गहरे मनोवैज्ञानिक कारणो की खोज करनी होगी जो इस प्रकार की दुखद घटनाओ के लिए जिम्मेदार है।

मित्रता के प्राचीनतम सूत्र

स्काटिस चर्च कालेज, कलकत्ता मे भाषण, शुक्रवार, 12 दिसम्बर 1930

इतिहास मे महान धर्म प्रचारक सम्राट के रूप मे विख्यात अशोक ने दो हजार दो सौ वर्ष पहले पश्चिमी विश्व को धर्म का प्रेरणास्पद सदेश प्रेषित किया था। बाद के समय मे उस विचार प्रवाह की धाराए बदल गयीं। फिर भी ईसा के बौद्धिक मुक्ति के सदेश के साथ का प्राचीन धर्म के धर्मोपदेशक आये, तब हमारी प्राचीन भूमि पर पुनर्जागरण के युग का सूत्रपात हुआ। एक अन्वेषण की चेतना ने हमारी बुद्धि को विस्तार दिया और हमारे मस्तिष्क को जीवत बनाया। हमे प्रसन्नता है कि आज हम उस जागरण की शताब्दी मना रहे हैं।

जिन्होने इस नव जागरण मे योगदान दिया वे हमारे कृतज्ञता व पूर्ण धन्यवाद के पात्र है। विचार के क्षेत्र मे हम क्राति की सतान हैं। उन्होने जो शिक्षा की ज्योति प्रज्जवलित की थी वह

आज देदीप्यमान है। हम न केवल प्रकृति के रहस्यो को ही देख महसूस और जान सकते है, बल्कि हम अपने मन मे गहरे अतरालो मे भी झाक सकते है और इन सबसे ऊपर हम अपने सास्कृतिक दाय से पूर्ण परिचय प्राप्त कर सकते हैं।

गतिविधि के विभिन्न क्षेत्रो मे व्यस्त रहते हुए हम महसूस करते है कि इस कालेज की शिक्षा का प्रभाव जाने या अनजाने हमारे प्रत्येक आचरण मे प्रतिबिबित होता है और मैत्री का वह दृश्यमान सूर्य सूत्र हर समय हमारे मन मे रहता है जिसने हमे सहानुभूति और प्रेम मे बाध रखा है। यहा मित्रता के सबसे पहले सबध जिन्होने आज हमारे जीवन को आलोकित किया है।

हमारे कालेज ने सहज सौ वर्ष पूरे किये है अक्सर हम इसको बधाई देते हुए स्वयं को ही बधाई देते है क्यो कि हम यह नहीं भूल सकते कि हम ही कालेज है और हम है। हम प्रार्थना करते है कि इसकी दूसरी शताब्दी इस पहली शताब्दी से कहीं बेहतर हो।

मौलाना मुहम्मद अली की स्मृति को श्रद्धांजलि

कलकत्ता निगम के मेयर के रूप मे निगम की बैठक के लिए एक संदेश, 7 जनवरी, 1931

मुझे खेद है कि पहले की व्यस्तताओ के कारण मै बुधवार को शहर मे अनुपस्थित रहा और अतएव निगम की बैठक मे आने मे असमर्थ रहा। तदनुसार मै मौलाना मुहम्मद अली की स्मृति को श्रद्धाजलि के रूप मे कुछ पक्तिया प्रेषित कर रहा हू। इग्लैंड मे हिन्दू और मुसलमानो के बीच सौहार्द के प्रयास करते हुए उनका आकस्मिक निधन एक दुखद घटना है। उनके निधन से देश को अपूर्णीय क्षति हुई है। आज उनकी भविष्यवाणी याद आती है। उन्होने कहा था कि या तो मै स्वराज लेकर ही भारत लौटूगा या फिर इग्लैंड मे ही मरूगा। मौलाना मुहम्मद अली के रूप मे हमने दुर्लभ साहसी और महान आत्मा देश भक्त खो दिया है, जो दो दशक तक स्वतत्रता सग्राम के अग्रिम मोर्चे पर रहे और इसके लिए कष्ट उठाये। उन्होने "कामरेड" के लिए कार्य किया। उन्होने प्रेस और मच के माध्यम से आश्चर्यजनक प्रभाव उत्थान किया। फिर उन्होने मुस्लिम लीग और मुस्लिम विश्वविद्यालय के लिए कार्य किया। युद्ध के दिनो मे तुर्की का समर्थन किया, असहयोग और खिलाफत आदोलन के दौरान नजरबद हुए उनकी ये तमाम गतिविधियो सर्वविदित है। मै इस विस्तार मे नहीं जाना चाहता। मौलाना मुहम्मद अली की गतिविधिया केवल अपनी मातृभूमि के हित साधन तक सीमित नही थी। उनकी दृष्टि का क्षितिज बहुत व्यापक था। एक सर्व एशिया सघ उनके जीवन का स्वप्न था। यह वास्तव मे एक त्रासदी है कि स्वर्गीय मौलाना जैसा प्रभावशाली व्यक्तित्व जो आने वाले दिनो मे बेहतर भूमिका अदा कर पाते इतनी अल्पायु मे हमारे बीच मे विदा हो गये। अन्य देशो मे इतनी आयु मे तो लोग जवान दिखाई देते है। भारत के सार्वजनिक जीवन की यह एक त्रासदी है मौलाना मुहम्मद अली की अल्पायु मे मृत्यु इसका एक और दृष्टात है।

मुझे याद करते हुए गर्व हो रहा है कि स्वर्गीय मौलाना से मेरी व्यक्तिगत आत्मीयता थी। अतएव उनका निधन मेरे लिए एक व्यक्तिगत क्षति है। फिर भी ईमानदारी के साथ यह कहूगा कि मैं पिछले दिनो मे सार्वजनिक विषयो को लेकर उनसे सहमत नहीं रहा हू। तथापि आज यह उपेक्षणीय बात है क्यो कि मौलाना जन कल्याण की भावना से प्रेरित थे और वे सहमत न होते हुए भी सेवा कार्य करते रहते थे।

यद्यपि मौलाना मुहम्मद अली अपेक्षाकृत अल्पायु मे दिवगत हो गये लेकिन वे अपने पीछे जन सेवा का एक गौरवशाली इतिहास छोड गये है। अपने कार्यो के बल पर वे अपने देशवासियो के हृदय मे सदैव विद्यमान रहेगे और भविष्य मे अजन्मी पीढियो को प्रेरणा देते रहेगे।

मैं श्री रज्जाक द्वारा लाये गये प्रस्ताव का हृदय से अनुमोदन करता हू और मै अपनी तथा अपने साथियो की ओर से श्रीमती मुहम्मद अली शौकत अली और उनके शोक सतप्त परिवार को सात्वना देता हू। ईश्वर दिवगत आत्मा को शाति प्रदान करे।

आंशिक क्षमा का कोई अर्थ नहीं

महात्मा गाधी और अन्य काग्रेस नेताओ की रिहाई से सबधित वायसराय के निर्णय पर बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और कलकत्ता के मेयर के रूप मे भाषण, 25 जनवरी, 1931

यह मेरी दायित्वहीनता होगी यदि मैं काग्रेस कार्य समिति के अन्य नेताओ का रिहा करने की दिशा मे महामहिम वायसराय द्वारा उठाये गये उत्साहपूर्ण कदम की सराहना न करू। लेकिन मैं यह आशा भी करता हू कि वे अपने कार्य का एक तार्किक निष्कर्ष तक पहुचने का साहस दिखायेगे।

मै समझता हू कि रिहाई के तुरत बाद कार्यसमिति के सदस्यो को सर्वोच्च अधिकारी के प्रस्ताव विचार विमर्श करने का अवसर मिलेगा। यदि वे इस प्रस्ताव को विचार के योग्य मानने का निर्णय कर लेते है और अपनी बातचीत को तैयार हो जाते हैं तब महामहिम के लिए यह आवश्यक हो जायेगा कि वे एक सामान्य क्षमा की घोषणा करें।

वास्तव मे यदि कार्यसमिति इस प्रस्ताव को एक दम ठुकरा देती है तब मै सरकार के आगे किसी क्षमादान की अपेक्षा नहीं करूगा। कार्यसमिति 15 सदस्यो का एक लघु निकाय है और इस प्रकार के महत्वपूर्ण प्रश्न पर अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी को अनदेखा करते हुए निर्णय नहीं करेगी जो कि 350 सदस्यीय एक वृहत्तर सस्था है।

इसके बदले अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी इस प्रश्न पर अतिम रूप से निर्णय लेने के लिए काग्रेस का एक विशेष रूप से सत्र बुला सकती है। अनेक महत्वपूर्ण काग्रेसी नेता अभी जेल मे हैं जो कि कार्यसमिति के सदस्य नहीं है। जब तक वे रिहा नहीं हो जाते तब तक मुझे डर है कि काग्रेस के लिए किसी निर्णय पर पहुचना असभव होगा।

आज जब कि बातचीत प्रगति पर है, देश मे शातिपूर्ण वातावरण रहना चाहिए। शाति बनाये रखने के लिए बातचीत शुरू होने के साथ ही एक सामान्य क्षमा की घोषणा कर देनी चाहिए।

इसके साथ ही तमाम दमनकारी तरीको को वापस ले लेना चाहिए क्यो कि यदि समूचे देश मे दमन जारी रहा, तमाम बातचीत और समझौते के प्रयास निष्फल जायेगे।

मैंने वायसराय के प्रस्ताव की गुणवत्ता और वास्तविक क्षमा के विषय मे अपनी धारणा पर सोद्देश्य रूप से कोई टिप्पणी नहीं की है। मैं इन दोनो बिन्दुओ पर एक बयान जारी कर चुका हू और जो मैं कह चुका हू जो कलकत्ता के कल के अखबारो मे प्रकाशित हो चुका है और जो कुछ कह चुका हू उसे यहा दोहराने की जरूरत नहीं है। मैं केवल एक बात जोडना चाहूगा कि महामहिम गर्वनर जरनल यदि समझौते को लेकर गभीर है तो उन्हे पूर्ण क्षमा प्रदान करने का साहस बटोरना होगा जैसा कि मैंने परामर्श दिया है। मुझे कोई सदेह नहीं है कि आशिक क्षमा व्यर्थ है।

क्षमा का प्रश्न

अलीपुर जेल से रिहा होन पर रेमजे मैक्डोनाल्ड के प्रस्ताव पर बयान, 25 जनवरी, 1931

हाल ही मे ब्रिटिश ससद की ओर प्रधानमत्री द्वारा लाया प्रस्ताव भारतीय जनता के मन मे कोई उत्साह नहीं जगा सका है। यह प्रस्ताव जैसा है उस रूप मे हमे स्वाधीनता नहीं दिला सकता। यहा तक कि यह हमे स्वतत्रता प्राप्त करने की स्वतत्रता भी नहीं दे सकता जो कि विश्व के विभिन्न भागो मे दूसरे गुलाम देशो की भाति भारत की एक आकाक्षा है। यदि मैं बगाल के मन को ठीक तरह से जानता हू तो मैं कहूगा कि इस प्रकार का अशालीन और असतोषजनक प्रस्ताव बगाल को स्वीकार नहीं होगा। जैसा कि मुझे लगता है कि मुझे विश्वास है कि इस विषय को लेकर देश के अन्य भागो मे भी बगाल की भाति ही भावनाए होगी।

जहा तक मेरा सबध है भारत के लक्ष्य प्रश्न को लेकर मेरी स्थिति बहुत स्पष्ट रही है। मेरा ईमानदारी से हमेशा विश्वास रहा है कि न केवल भारतीय जनता की भलाई के लिए स्वतत्रता आवश्यक है बल्कि विश्व शाति के लिए स्वय अग्रेजो के हित मे भी स्वतत्रता आवश्यक है। भारतीय और अग्रेजो की बीच कोई अनिवार्य कलह नहीं है, न किसी भी कीमत पर होनी चाहिए। भारत और इग्लैड उसी क्षण मित्र बन सकते है और बन जायेगे बशर्ते कि उन्हे वे सब अधिकार मिल जाये जो कि अग्रेजो को इग्लैड मे मिले हुए है। यदि भारत वास्तविक अर्थो मे स्वतत्र नहीं होता है तो विश्वशाति की स्थापना असभव है। जब मैंने 1928 मे कलकत्ता काग्रेस मे स्वतत्रता के लक्ष्य को लेकर अपना सशोधन प्रस्तुत किया था तब पूरे दायित्व बोध के साथ मैंने ऐसा किया था और मुझे विश्वास था कि बगाल के मन का प्रतिनिधित्व कर रहा हू। नि सदेह कलकत्ता काग्रेस मे यह सशोधन गिर गया किंतु एक वर्ष बाद लाहौर काग्रेस मे इसे स्वीकार कर लिया गया और यह प्रस्ताव उन लोगो द्वारा स्वीकृत किया गया जिन्होंने कलकत्ता काग्रेस मे इसके विरोध मे मतदान

किया था। मैं नहीं जानता इस स्थिति मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से यह कैसे कहा जा सकता है कि वह मौजूदा प्रस्ताव को एक सम्मानजनक समझौते की बातचीत के प्रस्थान बिन्दु के रूप मे ले।

मुझे आशा है कि मैं गलत नहीं समझ रहा होउगा। मैं एक सम्मानजनक के विरुद्ध नहीं हू। इसके विपरीत मैं चाहता हू कि इस प्रकार के समझौते की सभावनाओं की तलाश करनी चाहिए। लेकिन समझौते की तमाम बातचीत वास्तविक हृदय परिवर्तन द्वारा आगे बढनी चाहिए। इस बात का इससे बडा प्रमाण कुछ नहीं हो सकता कि बातचीत शुरू होने के साथ पूर्ण क्षमा की घोषणा कर दी जाए। इस क्षमा मे बगाल अध्यादेश के तहत गिरफ्तारी ऐसे ही अन्य आदेश और हिंसक अथवा अहिंसक अपराधो के तहत गिरफ्तारिया आदि तमाम चीजे शामिल होनी चाहिए। हिंसा के लिए गिरफ्तार क्रान्तिकारी कैदियो के क्षमा के विषय मे मैं कह सकता हू कि यद्यपि हम हिंसा की भर्त्सना करते हैं फिर भी यह बात हमे नहीं भूलनी चाहिए कि कोई यदि हिंसा के मार्ग पर आगे बढ गया है तो उसका यही विश्वास रहा है कि वह अपने उत्तम प्रयासो से अपने देश की सेवा कर रहा है। 1921 मे आयरलैंड की घटना से जुडे लोगो तथा कमाडेट को जिन्हे मृत्युदड दिया गया है क्षमा दान दिया जाना चाहिए। मैं यह बात भी जोडना चाहूगा कि इस क्षमा के अतर्गत देश के विभिन्न भागो मे चल रहे षडयत्र के मुकदमे भी वापस ले लेने चाहिए।

मेरा कोई अदाजा नहीं है कि क्षमादान की घोषणा के जेल मे बद मजदूरो को नजरअदाज किया जा सकता है। इसलिए मैं उनके मुकदमो की ओर विशेष ध्यान दिलाना चाहूगा क्योकि भारत के स्वाधीनता सग्राम मे मजदूरो का बडा योगदान है। इसके साथ-साथ मेरठ षड्यत्र मुकदमे को भी वापस ले लेना चाहिए। यदि क्षमा के प्रश्न को उचित भावना के साथ नहीं लिया गया तो मुझे डर है कि समझौते के प्रयास विफल हो सकते है।

स्वाधीनता का मार्ग

बबई प्रस्थान की पूर्व सध्या पर जारी बयान, 15 मार्च, 1931

मैं बहुत पहले से स्वाधीनता के लिए आग्रह शील रहा हू-इस बात मे तनिक भी सदेह या सकोच नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य से मुझे कुछ ऐसी परिस्थितियो का सामना करना पडा है मेरी सोच के अनुसार जो कि हमे स्वाधीनता के लक्ष्य तक हमे मुश्किल मे ले आयेगी। हमारे सामने समस्या यह है कि हमें आज की परिस्थिति मे क्या करना चाहिए। ताकि हमे जल्द से जल्द स्वाधीनता मिल सके। मैं पहले ही चुका हू कि मैं इसके तरीको के बारे मे अपना मन बनाने मे अब तक असमर्थ रहा हू।

मैं महात्मा गाधी से साक्षात्कार करने और मार्गदर्शन हेतु बबई जा रहा हू। वहा से लौटने के पश्चात ही मैं अपने देशवासियो से यह कहने की स्थिति मे होउगा कि वर्तमान परिस्थितियो में अपनी प्रिय मातृभूमि की सर्वोत्तम सेवा हेतु हमे कौन सा उचित तरीका अपनाना चाहिए।

सामान्य क्षमा के लिए मांग

महात्मा गाधी जी के साथ दिल्ली आगमन पर बयान, 20 मार्च, 1931

मैने बबई मे और कई घटे की दिल्ली यात्रा के दौरान महात्मा गाधी से लबी बातचीत की है। जब तक मैं कलकत्ता मे नहीं पहुच जाता हू तब तक फिलहाल मुझे यह बात बता पाना सभव नहीं है कि समझौतो की शर्तों को लेकर मेरा दृष्टिकोण क्या है। लेकिन मैं आम लोगो की जानकारी मे एक मुख्य समस्या लाना चाहता हू जिसका आज बगाल सामना कर रहा है। काग्रेस पार्टी को जो क्षमा प्रदान की गई है उससे 800 के आस-पास राजनीतिक बदी बाहर रह गये है। जिन्होने अपने स्वार्थ के लिए त्याग नहीं किया है बल्कि अपने देश को स्वतत्रता दिलाने के लिए कष्ट सहे है। हमे इस तथ्य को नहीं भुला सकते कि बगाल की आम जनता मे उनके कष्ट और त्याग के प्रति सहानुभूति है यहा तक कि उनके तरीके सब मजूर नहीं थे। अतएव सामान्य क्षमा के अतर्गत जब तक सभी वर्गों के राजनीतिक बदी नहीं आ जायेगे तब तक बगाल का जनमत समझौते की शर्तों को स्वीकार नहीं कर सकता। यह क्षमा भले ही तुरत प्रदान न की जाए। कम से कम गोलमेज सम्मेलन के पहले इस पर अमल किया जा सकता है।

सिर्फ अकेला बगाल इस समस्या से नहीं गुजर रहा है। दूसरे प्रात विशेष रूप से पजाब और सयुक्त प्रात भी समस्या ग्रस्त है जहा पक्षता पूर्ण क्षमा प्रदान की गई है। जन असतोष का मुख्य कारण यह है कि स्थानीय सरकारे बदियो को मुक्त करते समय गाधी-इर्विन समझौते की भावना का पालन नहीं कर रही हैं जिसके परिणामस्वरूप सविनय अवज्ञा और राष्ट्रद्रोह के मुकदमे वाले अब भी जेल मे बदी बने हुए हैं। समझौते के तहत बगाल अध्यादेश द्वारा गिरफ्तारिया की गई। बगाल मे सतीशसेन जैसे प्रमुख काग्रेस कार्यकर्ता को अब तक रिहा नहीं किया गया। मध्य प्रात मे नागपुर के श्री अवारी और बेतूल तथा मडला जिलो के वन सत्याग्रहियों को रिहा नहीं किया गया। बबई मे श्री राजा और श्री जानी जैसे राजद्रोही बदियो को रिहा नहीं किया गया और शोलापुर तथा चिरनौर के बदी भी अब तक जेल मे है।

पजाब के लोगो की एक लबी सूची है और हम सयुक्त प्रात मे काकोरी षड्यत्र के बदियो को भी नहीं भुला सकते। बगाल मे अब तक मुक्त न किये गये राजनीतिक बदियो की सख्या 800 है और बिना सुनवाई के जिन्हे सजा दे दी गई उनकी सख्या लगभग 450 है। चित्तगौंग मे हथियारो की लूट, मेरठ षडयन्त्र, मैंमनसिह, ढाका में तार काटने, मुशीगज मे पोस्ट आफिस की लूट, राजशाही मेल की लूट बारीसाल डकैती और ऐसे ही अनेक षडयत्रकारी मुकदमो के अतर्गत विचाराधीन कैदियो की सख्या 100 से अधिक है। फिर सविनय अवज्ञा और राजद्रोह के बदी 100 के लगभग है जिन्हे अभी रिहा नहीं किया गया है-कलकत्ता निगम के पार्षद डॉ० नारायण राय जैसे सजायाफ्ता क्रान्तिकारियो की सख्या लगभग 100 है। मैंमनसिह वेयर हाउस मुकदमे और भौनीपुर दगे के मुकदमे मे लगभग 50 लोग बद है। उनमे से एक बाबा गुरदित्त सिह है। लिलुआ हडताल और ऐसी ही अन्य हडतालो के तहत लगभग 25 मजदूरो को बदी बनाया गया जिनमे लिलुआ के शांतिराम मडल और कलकत्ता निगम के पार्षद मदन मोहन बर्मन भी शामिल है। अत मे किंतु उतने ही

महत्वपूर्ण दिनेश गुप्ता और रामकृष्ण विश्वास है जिन्हे मृत्यु दड दिया गया है। अतएव बगाल मे अब तक जिन्हे रिहा नहीं किया गया है उन राजनीतिक बदियो की कुल सख्या 800 है। इस प्रकार कोई भी व्यक्ति सरलता से बगाल की वर्तमान जनभावनाओ को समझ सकता है।

मुझे आशा है, समझौते की शर्तो मे जो भी प्रावधान हो सरकार एक व्यापक और सामान्य क्षमादान की घोषणा करेगी। जिसके अतर्गत राजनीतिक बदियो के साथ-साथ मजदूर बदी भी शामिल होगे ताकि गोलमेज सम्मेलन से पहले देश मे एक अनुकूल वातावरण का निर्माण किया जा सके।

स्वतंत्रता सग्राम का लक्ष्य और कार्यक्रम

अखिल भारतीय नौजवान सभा के कराची अधिवेशन मे अध्यक्षीय भाषण (वक्तव्य) 27 मार्च, 1931

मित्रो और साथियो,

आज हम एक महान त्रासदी की छाया मे मिल रहे है। हमारा मन इतना भरा हुआ है कि हम बोल नहीं सकते। हमारे देश के इतिहास के ऐसे कठिन क्षणो मे आपने मुझसे सम्मेलन की अध्यक्षता का आग्रह किया है। इस हेतु मैं आप का कृतज्ञ हू।

हम यहा उस सामाजिक व्यवस्था और राष्ट्र के विषय मे विचार विमर्श हेतु एकत्र हुए है जो मनुष्यता और चरित्र के विकास मे सहायक होगा और जो सामूहिक मानवता के उच्चतम लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा देगा। हम उन तरीको की खोज भी यहा करना चाहते है जिनसे हम शीघ्र ही स्वतत्रता प्राप्त कर सके। निष्कर्ष के रूप मे जिन सिद्धातो को हमारे सामूहिक जीवन का आधार बनना चाहिए, वे है समानता, न्याय, स्वतत्रता अनुशासन और प्रेम। अतएव समानता लाने के लिए हमे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सभी प्रकार की गुलामी से मुक्ति चाहिए तथा हमे पूर्ण रूपेण स्वतत्र होना चाहिए।

साराश यह है कि मैं भारत मे एक समाजवादी गणराज्य चाहता हू। जो सदेश मुझे देना है, वह एक समग्र और सर्वोतोन्मुखी स्वतत्रता का सदेश है। जब तक क्रान्तिकारी तत्वो का उदय नहीं होता है हम स्वतत्र नहीं हो सकेगे। हम क्रान्तिकारी तत्वो को यह नया सदेश दिये बिना लाभबद नहीं कर सकते जो हृदय से निकलकर सीधे हृदय मे प्रवेश करता है।

काग्रेस की नीति और कार्यक्रम मे मूलभूत कमजोरी यह है कि काग्रेस क नेताओ के सोच मे अत्यत अस्पष्टता और मानसिक प्रतिबध है। उनके कार्यक्रम म क्रान्तिकारिता ही नहीं बल्कि समझौते भी है। अर्थात भूस्वामी और किसान के बीच समझौता पूजीपति और मजदूर के बीच समझौता तथाकथित उच्च वर्गो और शोषित वर्गो के बीच समझौता पुरुष और स्त्री के बीच समझौता।

मैं नहीं समझता कि काग्रेस का कार्यक्रम देश को स्वाधीनता दिला सकता है। मेरे अनुसार जो कार्यक्रम स्वाधीनता दिला सकता है, वह इस प्रकार है –

1 समाजवादी कार्यक्रम पर किसानो और मजदूरो का सगठन।

2 कठोर अनुशासन के तहत स्वयसेवक दलो के रूप मे युवाओ का सगठन।

3 जातिप्रथा का अत और सभी प्रकार के सामाजिक और धार्मिक अध-विश्वास का उन्मूलन।

4 ग्रामीण महिलाओ के बीच स्वाधीनता के सिद्धात और नये कार्यक्रम का प्रचार करने हेतु महिला सघों का गठन।

5 अंग्रेजी माल के बहिष्कार का गहन कार्यक्रम।

6 नयी नीति और कार्यक्रम के प्रचारार्थ नये साहित्य की रचना।

गाधी-इर्विन समझौता का जिक्र करने से पूर्व मैं लाहौर मे दी गई फासियो के बारे मे कुछ कहना चाहूगा। भगतसिह उस विद्रोह की भावना का प्रतीक था जो देश के इस छोर से लेकर उस छोर तक फैला हुआ है। वह भावना अपराजेय है और वह मशाल कभी बुझ नहीं सकती! जिसने इस भावना को उद्दीप्त किया है। भारत को स्वतत्रता की आशा करने से पहले अभी अनेक सपूतों की कुर्बानी देनी पड़ सकती है। हाल की फासिया मुझे इस बात का स्पष्ट सकेत लगती है कि अभी सरकार के पक्ष पर कोई हृदय परिवर्तन नहीं हुआ है और एक सम्मानजनक समझौते का समय अभी नहीं आया है।

गाधी-इर्विन समझौते मे निहित सधि के बारे मे मैं इतना कह सकता हू कि यह अत्यन्त असतोषजनक एव चिन्ताजनक है। मुझे सबसे अधिक दुःख इस बात का है कि सधि मे रेखांकित हमारी शक्ति की तुलना मे हम आज कहीं अधिक शक्ति अर्जित कर चुके समझौते मे पहले से चली आ रही कमजोरिया हैं लेकिन अब वह समझौता एक पूर्ण तथ्य है। आज की स्थिति मे हमारे सामने यह प्रश्न है कि हम क्या करे? मैं एक क्षण के लिए भी उनकी देशभक्ति पर प्रश्न चिन्ह नहीं लगाता जो इन समझौते की शर्तों के लिए जिम्मेदार है। अतएव, हमारे लिए यह बेहतर होगा कि हम कोई सकारात्मक कार्य करे जो हमारे राष्ट्र तथा राष्ट्र की अपेक्षाओ को सशक्त बनाए। इस उद्देश्य के लिए मैंने अपने कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई है। हमारे देशवासियो मे से एक क्रान्तिकारी वर्ग इस कार्यक्रम को अच्छी तरह से निभा सकेगा। यह कार्यक्रम हमारे काग्रेस नेताओ की बीच परस्पर द्वन्द्व को प्रोत्साहित नहीं करेगा क्यो कि इस आपसी द्वन्द्व से हम कमजोर होंगे और सरकार मजबूत होगी। इस सब से ऊपर हमे दूसरो की आलोचना करने मे सयम बरतना होगा। विनम्र और सयमी होने से हमे कोई हानि नहीं होगी अपितु कुछ लाभ ही होगा।

भारत विश्व की इमारत की शहतीर है और एक स्वतत्र भारत सपूर्ण विश्व से साम्राज्यवाद का विनाश कर देगा। अतएव, इस अवसर पर हमे जाग जाना है और भारत को स्वतत्र बनाना है ताकि मानवता की रक्षा की जा सके।

भारत का ऐतिहासिक मिशन

कराची मे अखिल भारतीय नौजवान सभा मे भाषण, 5 अप्रैल, 1931

मेरे प्रिय मित्रो,

आपने मुझे कराची मे अखिल भारतीय नौजवान सभा के दूसरे सत्र के कार्यक्रम की जानकारी की अध्यक्षता हेतु आमन्त्रित किया है। मैं आप का केवल इसलिए आभारी नहीं हू कि आपने मुझे अध्यक्ष बनाकर सम्मान दिया। बल्कि इसलिए भी हू कि आप ने मुझे असीम स्नेह प्रदान किया। आप हमारे इतिहास के भीषण समय मे यह सम्मेलन कर रहे हैं और मैं केवल आशा करता हू कि मैं उन समस्याओ पर कुछ रोशनी डाल सकूगा जो हमारे मार्ग मे बाधा के समान खडी हैं।

आरभिक युगो से ही मानवता चीजो की बेहतर व्यवस्था की खोज मे रही है। यह खोज पूर्व और पश्चिम दोनो मे समान रूप से जारी रही है और इस खोज के पीछे न केवल ऋषि और स्वप्न दृष्टा रहे हैं बल्कि राजनीतिक भी रहे है। विभिन्न कालो मे समाज के भिन्न-भिन्न आदर्श रहे है। लेकिन इनके पीछे मूल भावना एक ही रही है। पूर्व मे लोगो ने एक आदर्श गणराज्य का स्वप्न देखा। कभी साधको ने प्रकृति की ओर पीछे लौटना चाहा, फिर बाद के कालो मे उन्होने अतीत के खडहर के ऊपर कुछ महान और आदर्श निर्माण करने के लिए पुरानी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था को बदलना चाहा था।

इन सार्वभौमिक मानवीय प्रयासो के मूल मे मनोवैज्ञानिक आवेग रहा है कि मनुष्य अपनी वर्तमान व्यवस्था और वातावरण से असतोष अनुभव करता है और एक क्रान्तिकारी परिवर्तन की इच्छा रखता है। इस आवेग से प्रेरित होकर मनुष्यो ने असहायता की स्थिति मे मानवीय अस्तित्व से परे और पृथ्वी से परे दैवीय शक्ति की ओर आशा भरी दृष्टि से देखा। जहा मानवीय आत्मा आदर्श परिस्थितियो के बीच एक आदर्श जीवन जी सकती थी। दूसरे लोगो ने भिन्न मार्ग अपनाया और यह कहा कि दैवीय शक्ति या स्वर्ग का साम्राज्य हमारे मन मे ही है। धरती पर अधिकतम शाति और आनद की प्राप्ति हेतु उस दैवीय शक्ति को तपस्या पूजा और प्रार्थना से अर्जित किया जा सकता है।

हमे इन दोनो वैचारिक समुदायो से कोई लेना-देना नहीं है। न हम किसी को स्वीकार कर सकते हैं और न ही निरस्त कर सकते हैं हमारा सबध उस राष्ट्र और सामाजिक ढाचे से है जो हमे अधिकतम सुख उपलब्ध करायेगा। मनुष्यता और चरित्र विकास मे सहायक होगा और हमारे सामूहिक मानवता के स्वप्न को साकार करेगा। हम उन तरीकों की खोज मे भी रुचि रखते हैं जो उपर्युक्त तथ्य की शीघ्र प्राप्ति मे सहायक होंगे।

एक बेहतर व्यवस्था की खोज मे मानवता युगो-युगो से अधकार और प्रकाश के धुधले से गुजरती रही है। धर्म, दर्शन और साहित्य ने इस धुधले आदर्श पर कुछ प्रकाश विकीर्ण करने का प्रयास किया है। समय-समय पर हर सभ्य देश द्वारा इस दिशा मे किये गये प्रयत्नो का अध्ययन करना एक रोचक अनुभव है। लेकिन फिलहाल यह अध्ययन हमे तात्कालिक समस्या से विचलित

कर सकता है। यह मान लेना पर्याप्त होगा कि मानवता आज प्रगति के सिद्धात को अपना चुकी है और इसके विरोधी सिद्धात और उसके विरोधी सिद्धात अर्थात, मनुष्य के पतन और हाल के सिद्धात को निरस्त कर चुकी है। यह प्रगति का सिद्धात हमारी चर्चा का प्रस्थान बिन्दु हो सकता है।

यदि हम विभिन्न प्रकार समाज-राजनीतिक आदर्शो का तुलनात्मक विश्लेषण करे, जिन्होने मानवीय व्यवहार और गतिविधि को प्रेरणा दी है तो हम कुछ सामान्य सिद्धातो तक पहुच जायेगे। आत्म गवेषण और आत्म निरीक्षण करने के उपरात भी हम ऐसे ही निष्कर्ष पर पहुचेगे। किसी भी मार्ग का अनुसरण करते हुए मैं इसी निष्कर्ष पर पहुचा हू कि न्याय, समानता, स्वतत्रता अनुशासन और प्रेम ही हमारे सामूहिक जीवन का आधार है। इस बात मे किसी तर्क की गुजाइश नहीं है कि हमारे समूचे कार्य व्यापार और सबध न्याय की भावना से नियत्रित होते है। न्याय एव निष्पक्ष होने की स्थिति मे हमे सभी मनुष्यो के साथ समान व्यवहार करना होगा। मनुष्य को समान बनाने की स्थिति मे हमे उन्हे स्वतत्र करना होगा। समाजार्थिक या राजनीतिक व्यवस्था मे गुलामी की विद्यमानता स्वतत्रता को समाप्त कर देगी और तरह-तरह की असमानताओ को जन्म देगी। अतएव समानता स्थापित करने के सिलसिले मे हमे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सभी प्रकार की गुलामी से मुक्त होना होगा और हमे पूर्णरूपेण स्वतत्र होना चाहिए। लेकिन स्वतत्रता का अर्थ अनुशासनहीनता या स्वेच्छाचार नहीं है। स्वतत्रता मे कानून की अनुपस्थिति नहीं होती। आत्मानुशासन केवल स्वतत्रता प्राप्त कर लेने के बाद ही आवश्यक नहीं है। बल्कि स्वतत्रता के दौरान भी आवश्यक है। अतएव जीवन के आधार के रूप मे एक व्यक्ति या समाज के लिए अनुशासन अनिवार्य है। अत मे न्याय समानता स्वतत्रता और अनुशासन के सिद्धातो मे प्रेम के आदर्श का समावेश होता है। जब तक हम मानवता के प्रति प्रेम की भावना से प्रेरित नहीं होगे तब तक हम दूसरो के प्रति न्याय नहीं कर सकते न मनुष्यो के साथ समान व्यवहार कर सकते न स्वतत्रता आदोलन के लिए त्याग कर सकते और न ही उचित प्रकार का अनुशासन लागू कर सकते। मेरे मतानुसार मे पाच सिद्धात हमारे सामूहिक जीवन का आधार हो सकते है। मै आगे यह भी कहूगा कि यही सिद्धात समाजवाद के आधार है जैसा कि मैने समझा है और मै भारत मे इसी समाजवाद की स्थापना देखना चाहूगा।

मेरी मान्यता है कि भविष्य मे भारत के समाजार्थिक राजनीतिक सरचना को विकसित करने मे सक्षम हो जायेगा जो कि कई मानो मे विश्व के लिए एक सबक होगा। जिस प्रकार आज बोलेशेविज्म ने मानवता के लिए गई उपयोगी शिक्षाये दी हैं लेकिन मैं नहीं मानता कि अमूर्त सिद्धातो को ज्यो का त्यो लागू किया जा सकता है। मार्क्सवादी सिद्धातो को जब रूस मे लागू किया गया तब रूस मे बोलेशेविज्म का उदय हुआ। इसी प्रकार जब भारत में समाजवाद लागू होगा तब एक विशेष प्रकार का भारत मे समाजवाद लागू होगा विकसित होगा, उसे हम भारतीय समाजवाद कह सकेगे। वातावरण, जातीय स्वभाव, सामाजिक आर्थिक परिस्थितियो को कलम की ठोकर से नहीं उडाया जा सकता। अतएव परिस्थितिया हर सिद्धात को प्रभावित और परिवर्तित करती है, तब कहीं कोई भी सिद्धात यथार्थ मे परिवर्तित होता है।

बाहर से प्रकाश और प्रेरणा ग्रहण करते हुए हम यह बात नहीं भुला सकते कि हमे किसी व्यक्ति का अधानुकरण नहीं करना चाहिए। हमे केवल वही बाते आत्मसात करनी चाहिए जो हमारी राष्ट्रीय आकाक्षाओ और राष्ट्रीय प्रतिभा के अनुरूप हैं। इस कहावत मे बडी सच्चाई छुपी हुई कि-"जो एक व्यक्ति के लिए आहार है, वह दूसरे व्यक्ति के लिए विष हो सकता है।" अतएव मैं उन लोगो को एक चेतावनी देना चाहता हू जो बोलेशेविज्म के तरीको का अधानुकरण करने के लिए लालायित है। बोलेशेविज्म के सिद्धातो के बारे मे यह कह सकता हू कि वर्तमान मे ये सिद्धात प्रायोगिक अवस्था से गुजर रहे है। रूस के लोगो मे न केवल मार्क्स के मूल सिद्धात से अलगाव बढने लगा है बल्कि सत्ता प्राप्त करने से पूर्व लेनिन द्वारा प्रतिपादित सिद्धातो से भी अब दूरी बढने लगी है। यह अलगाव रूस की उन विशिष्ट परिस्थितियो की देन है जिन्होने मूल मार्क्सवाद या बोलेशेविज्म सिद्धात से सशोधन हेतु दबाव डाला। इसमे बोलेशेविज्म द्वारा अपनाये गये तरीको के विषय मे मैं इतना कह सकता हू कि वे भारतीय परिस्थितयो मे उपयुक्त नहीं है। इसके प्रमाण स्वरूप मैं कह सकता हू कि साम्यवाद के सार्वभौमिक एव मानवीय आकर्षण के बावजूद साम्यवाद *भारत मे अपना मार्ग नही बना सका। इसका मुख्य कारण यह है कि उनके द्वारा अपनाये तरीके* एक दूसरे से विच्छिन्नता को प्रेरित करते हैं। सभावित मित्रो और सहयोगियो को जीतने की प्रेरणा नहीं देते।

सक्षेप मे जैसा कि मैं कह चुका हू मै भारत मे एक साम्यवादी गणराज्य चाहता हू। समाजवादी राज्य का वास्तविक रूप क्या होगा-इसकी व्याख्या आज करना सभव नहीं है। हम फिलहाल समाजवादी राज्य के मुख्य सिद्धातो और अभिलक्षणो की रूपरेखा बना सकते है।

मेरा केवल एक सदेश है- सर्वतोन्मुखी स्वतत्रता। हमे राजनीतिक स्वतत्रता चाहिए जिसके द्वारा हम ब्रिटिश सम्राज्यवाद से मुक्त स्वाधीन भारतीय राज्य के सविधान की रचना कर सके। हर व्यक्ति के मन मे यह बात स्पष्ट होनी चाहिए कि स्वाधीनता का अर्थ ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्ति है और इस बिन्दु पर कोई अस्पष्टता और मानसिक प्रतिबध के लिए गुजाइश नहीं होनी चाहिए। दूसरे हम पूर्ण आर्थिक मुक्ति चाहते है। प्रत्येक व्यक्ति को कार्य का अधिकार और जीवन यापन योग्य मजदूरी मिले। हमारे समाज मे कोई निकम्मा नहीं होगा सबको समान अवसर होगे। इन सबसे ऊपर धन का एक न्यायपूर्ण और समान वितरण होगा। इस प्रयोजन के लिए राष्ट्र को उत्पादन के साधनो पर नियत्रण रखना आवश्यक होगा। तीसरे हम पूर्ण सामाजिक समानता चाहते है। कोई जाति नहीं होगी कोई दलित वर्ग नहीं होगे। प्रत्येक व्यक्ति के पास समाज मे समान अधिकार होगे और समान हैसियत होगी। इसके साथ-साथ लिग भेद या सामाजिक हैसियत या कानून के आधार पर कोई असमानता नहीं होगी और हर क्षेत्र मे स्त्री का पुरुष के समान अधिकार प्राप्त होगे।

अतएव, हमारे पास समाज के हर समूह या वर्ग व्यक्ति के लिए एक सदेश है जो किसी भी रूप मे उत्पीडित है। हमारे पास राजनीति कार्यकर्ताओ मजदूरो भूमिहीन आर सपत्ति हीन लोगो समाज के तथाकथित दलित वर्गो और स्त्रियो के लिए एक सदेश है। हमारे समाज मे ये शोषित एव दलित वर्ग क्रान्तिकारी शक्तियो का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि हम उन्हे *सर्वतोन्मुखी स्वतत्रता*

का शुभकामना संदेश दे सकते हैं तो मुझे कोई संदेह नहीं कि वे तुरंत ही प्रेरणा लेगे। जब तक इन क्रान्तिकारी तत्वो का उद्धार नहीं होता है, हम स्वतत्रता प्राप्त नहीं कर सकते। हम क्रान्तिकारी तत्वो को वह नया सदेश दिये बिना लाभबद नहीं कर सकते जो हृदय से निकलकर सीधे हृदय मे प्रवेश करता है।

काग्रेस की नीति और कार्यक्रम मे मूलभूत कमजोरी यह है कि काग्रेस नेताओ की सोच मे अत्यत अस्पष्टता है और मानसिक प्रतिबध हैं। उनके कार्यक्रम मे क्रान्तिकारिता ही नहीं बल्कि समझौते भी है, अर्थात् भूस्वामी और किसान के बीच समझौता, पूजीपति और मजदूर के बीच समझौता, तथाकथित उच्च वर्गो और शोषित वर्ग के बीच समझौता, पुरुष और स्त्री के बीच समझौता। ये समझौते उन लोगो के लिए आदर्श स्थिति हो सकते हैं जो वर्तमान सतुलन को बनाये रखना चाहते हैं। लेकिन मुझे इस बात मे सदेह है कि ये समझौते समाज मे क्रान्तिकारी तत्वो को जाग्रत कर सकते हैं। केवल ये तत्व ही स्वतत्रता प्राप्त कर सकते हैं। मुझे इस बात मे भी सदेह है कि मौजूदा समझौतो के चलते हुए भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस स्वतत्रता दिला सकती है। स्वतत्रता के लिए यह एक तुच्छ कीमत चुकानी होगी। लेकिन क्या इस तुच्छ कीमत से हमे स्वतत्रता मिल सकती है। मुझे गभीर सदेह है।

हम इस भीषण समस्या का सतही समाधान नहीं चाहते। अतएव, हमे एक क्रान्तिकारी उग्रवादी कार्यक्रम की जरूरत है। मैं इस परिचयात्मक सबोधन प्रश्न के विस्तार मे नहीं जाऊगा बल्कि इस कार्यक्रम की मुख्य विशेषताओ पर रोशनी डालना चाहूगा। मैं पांच सिद्धातो के विषय मे आरभ मे ही कह चुका हू। स्वतत्रता के विभिन्न पक्षो को ध्यान मे रखते हुए हम अपनी गतिविधियो को निम्नलिखित आधारों पर चला सकते हैं।

1 समाजवादी कार्यक्रम पर किसानो और मजदूरो का सगठन।

2 कठोर अनुशासन के तहत स्वयसेवको के दलो के रूप मे युवाओ का सगठन।

3 जाति प्रथा का अत और सभी प्रकार के सामाजिक और धार्मिक अधविश्वास का उत्मूलन।

4 ग्रामीण महिलाओ के बीच स्वाधीनता के सिद्धात और नये कार्यक्रम का प्रचार करने हेतु महिला सघो का गठन।

5. अग्रेजी माल के बहिष्कार का गहन कार्यक्रम।

6. नये सिद्धात की व्याख्या और नयी पार्टी के गठन हेतु देश व्यापी प्रचार।

7 नयी नीति और कार्यक्रम के प्रचारार्थ नये साहित्य की रचना।

जिन मजदूर और साथियो को यह नया सिद्धात और कार्यक्रम अपील करता है उन्हे यह विचार करना चाहिए कि वे स्वय को काग्रेस के वामपक्ष के रूप मे सगठित करना चाहते हैं या नहीं? पहली बात तो यह है कि मान भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की एक परपरा है और विश्व मे एक प्रतिष्ठा है। दूसरे बाद की पीढियो ने इसके लिए भीषण त्याग किया है। यदि वामपक्ष ठीक

तरह से सगठित हो जाता है मुझे कोई सदेह नहीं कि वह वक्त जल्द की आयेगा जब काग्रेस की बागडोर उनके हाथ मे आ जायेगी। एक बार यह पार्टी अपने निजी कार्यक्रम के साथ अस्तित्व मे आ जाती है तब यह वर्तमान व्यवस्था और वर्तमान कार्यक्रम का एक मात्र विकल्प बन जायेगी।

मित्रो, मेरे समापन करने से पहले आप मुझसे अपेक्षा जरूर करेगे कि मैं सरकार एव काग्रेस की कार्यसमिति के बीच हुए समझौते को लेकर अपने विचार व्यक्त करू। लेकिन इससे भी पहले मैं एक घटना का उल्लेख करना चाहूगा जिससे समूचा भारत क्षुब्ध है। मेरा आशय सरदार भगत सिह और उसके साथियो की फासी से है। यह एक ऐतिहासिक घटना है, इसमे भविष्य के लिए बहुत से सबक छुपे हुए हैं और मैं आप से अनुरोध करूगा कि आप इस घटना के विस्तार मे अवश्य जाए।

भगत सिह नहीं रहा। भगत सिह जिन्दाबाद। भारत की जनता लाहौर मे हुई त्रासदी के अत की महीनो तक व्यग्रता से प्रतीक्षा करती रही। अब अत आ ही गया। इस त्रासदी पूर्ण नाटक का पटाक्षेप ऐसे दृश्य पर आकर हुआ है जिसमे गहन करूणा एव अविस्मरणीय त्याग का भाव निहित है और यह दृश्य अवर्णीय है। आरभ से अत तक यह नाटक इतना विविधापूर्ण और जीवत रहा कि हम उत्सुकता वश साधे बैठे रहे। इसका अत भगत सिह और जतीन्दास मेहता के आत्मबलिदान के साथ हुआ। हम दो खास तरह की शहादतो को हर्ष और श्रद्धा के साथ टकटकी लगाये देखते रहे जो कि हमारे हाल के इतिहास की उपज है। जतीन की शवयात्रा एक प्रकार से लम्बी विजय यात्रा थी। इसी प्रकार भगत सिह की फासी एक त्याग एव तपस्यापूर्ण कृत्य था जो समूचे राष्ट्र को प्रेरणा देगा। कोई आश्चर्य नहीं कि लाहौर षड्यत्र ने भारत के हृदय को बहुत गहरे मे आदोलित किया है। लेकिन क्या सरकार इसे महसूस करती है? मैं फिर कहता हू "भगत सिह नहीं रहा। भगत सिह जिन्दाबाद। भगत सिह एक व्यक्ति नहीं है वह विद्रोह की भावना का प्रतीक है जिसका प्रभाव भारत के एक छोर से उस छोर तक है। यह भावना अपराजेय है। इस भावना की ज्योति कभी बुझेगी नहीं, अतएव, हम भगत सिह, सुखदेव, और राजगुरू के दिवगत होने का शोक नहीं मनाते। भारत को स्वाधीनता की आशा मे कई सबूतो का बलिदान करना पड सकता है। लेकिन हम इसलिए दु खी है क्योकि उन्हे इस समय मरना पडा जब देश के मुख्य राष्ट्रवादी सगठन-भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस और सरकार ने एक समझौते की घोषणा की है। हरकिशन लाल, दिनेश गुप्ता और रामकृष्ण विश्वास जैसे भारत के सपूतो के भाग्य मे क्या है इसका सरलतः से अनुमान नहीं किया जा सकता। अतएव पूरे जोर के साथ यह प्रश्न पूछा जा *सकता है कि ऐसे समझौते का क्या मूल्य है यदि इसी प्रकार की निराशाजनक गतिविधिया जारी* रहती है और यदि हम अपने सर्वश्रेष्ठ नायको की जीवन की रक्षा नहीं कर सकते?

यह तर्क दिया जा सकता है कि समझौते मे मृत्युदड के विधान को लागू करने के सबध मे कोई बात नहीं की थी। मैं इस बिन्दु से सहमत हू लेकिन क्या हम जान सकते है कि समझौते का उद्देश्य क्या है? इस बात को सभी लोग मानेगे कि समझौते का उद्देश्य गोलमेज सम्मेलन की बातचीत से पूर्ण देश मे शातिमय वातावरण की स्थापना करना है ताकि सौमनस्यपूर्ण वातावरण मे बिना किसी कटुता और पूर्वग्रह के विचार विनिमय हो सके। यदि फासिया दी जाती रहेगी और बडी सख्या मे राजनीतिक बदी जेल मे बने रहेगे तो क्या शातिपूर्ण वातावरण बन सकेगा? यदि

सरकार समझौते की शर्तो से इतनी ज्यादा बधी रहेगी, यदि वे अपना हिस्सा मागने के लिए आतुर रहे तो यह कैसे आशा की जा सकती है कि बातचीत या विचार-विमर्श के समय वे सत्ता छोडने के लिए तैयार हो जायेगे? यह बात बेइमानी नहीं है कि महात्मा गाधी की बातचीत से पूर्व हृदय परिवर्तन पर बल देते रहे है। यदि सरकार ऐसे ही नौकरशाही द्वारा चलायी जाती रही और यदि ऐसे ही प्रतिशोधात्मक मानसिकता बनी रही तो यह सरकार स्वेच्छापूर्वक भारत के शासन को जन प्रतिनिधियो के हाथो मे नही सौपेगी। यह तर्क दिया जा सकता है कि हम सत्ता के हस्तातरण की बातचीत भारतीय सिविल सेवा या भारत सरकार से नहीं करेगे बल्कि ब्रिटिश केबिनेट या साथ-साथ ब्रिटिश जनता से करेगे। लेकिन यदि पुलिस की ज्यादती की पूछताछ और मृत्युदड के लघुकरण के बारे मे ब्रिटिश सरकार को वहा मौजूद व्यक्ति की बात माननी पडी। इससे हम यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि सत्ता का हस्तातरण जैसे व्यापक प्रश्न पर सरकार उसी व्यक्ति की इच्छा से परिचलित होगी।

अतएव हाल की फासिया इस बात का स्पष्ट सकेत है कि सरकार के पक्ष पर कोई हृदय परिवर्तन नहीं हुआ है। अभी एक सम्मानजनक समझौते की परिस्थिति परिपक्व नहीं हुई है। स्वराज का आनद उठाने से पूर्व अभी हमे उत्पीडन और त्याग का एक लम्बा रास्ता तय करना है। मेरी बात स्पष्ट करने के लिए आयरलैंड के ताजा इतिहास से उदाहरण काफी होगा। कार्क के लार्ड मेयर मैकस्वी ने अपने कारावास के प्रतिरोध स्वरूप हडताल पर बैठे जब वे मृत्यु के निकट पहुच गये तब अग्रेजो और आयरलैंड वासियो की ओर से राजा से अपील की गई कि वे अपने शाही अधिकार का प्रयोग करते हुए मैकस्वी की जान बचाये। राजा इससे द्रवित हुआ लेकिन उसने अपने सचिव के द्वारा यह घोषणा की कि वह कुछ नहीं कर सकता क्योकि उसके मत्री माफी के खिलाफ है। अतएव राजा को ही झुकना पडा। आयरलैंड मे इस घटना का प्रभाव यह हुआ कि अग्रेजो के विरूद्ध लडाई मे कटुता बढती गयी। कुछ समय बाद दोनो पक्षो ने एक समझौते की जरूरत महसूस की तब राजनीतिक बदियो को क्षमादान का प्रश्न उठा और सिन-कीन नेताओ ने राजनीतिक बदियो की रिहाई की माग की इनमे से बदी भी शामिल थे जिन्हे मृत्युदड की सजा सुनाई गयी थी। इनमे वे भी कैदी शामिल थे जिन्हे मृत्यु दड की सजा सुनाई गयी थी। ब्रिटिश ससद ने मृत्यु दड के बदी सिऑन मेक्यान के अलावा सभी राजनीतिक बदियो को आजाद कर दिया। इस पर से सिन-कीन नेताओ ने धमकी दे दी कि यदि सियान को चौबीस घटे के अदर रिहा नही किया गया तो वे समझौते को तोड देगे। धमकी के जवाब मे जिस केबिनेट ने देशव्यापी आदोलन के बावजूद मैक्सीने को बचाने के प्रार्थना ठुकरा दी थी उसी केबीनेट ने सिऑन मेक्यान को चौबीस घटे के अदर रिहा कर दिया। मैक्सीने को जान गवानी पडी। क्यो कि अभी तक समझौता नहीं था। सिऑन मेक्यान बच गये क्यो कि अग्रेजो के पक्ष पर हृदय परिवर्तन हो चुका था। क्या हम भारतीय इतिहास मे यही आदर्श स्थापित नहीं कर सकते।

ऐसे बहादुर बनो जैसे कि भगतसिह और उसके साथी थे। उन्होने मायाचना नहीं की। उन्होने अपना सर्वस्व त्याग देने की ठान ली ताकि भारत स्वतत्र हो जाए। लेकिन सारा देश चाहता था कि उनका जीवन बचाया जा सके। यदि सधि की घोषणा हो चुकी थी यदि शातिपूर्ण वातावरण बनने लगा था ऐसी स्थिति मे इन तीन बहादुरो को बचाया जा सकता था और उनका राष्ट्रीय

पुनर्निर्माण के कार्य मे सदुपयोग किया जा सकता था। देश के सभी राजनीतिक दलो और सभी विचारो के लोगो ने मृत्युदड के लघुकरण को लेकर सच्चे मन से अपनी भावनाए व्यक्त की। इस दिशा मे लोगो ने हर सभव प्रयास किये किन्तु एक प्रयास और किया जा सकता था। जब समझौते की बातचीत चल रही थी तब देश प्रमुख राष्ट्रवादी सगठन होने के नाते भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस का क्रान्तिकारियो और भारत की लेबर पार्टी के प्रति समर्थन व्यक्त करना चाहिए था। काग्रेस यह नहीं चाहती थी कि वह लेबर पार्टी के क्रान्तिकारियो से जुडकर अपनी पहचान बनाये। यह बात सरलता से समझी जा सकती है कि जब इन दोनो दलो का अस्तित्व है और दोनो अपने-अपने तरीको से राष्ट्र की मुक्ति के लिए प्रयत्नशील है। अतएव दोनो दलो की सहभागिता से ही शाति स्थापित हो सकती है।

इस परिस्थिति मे सरकार की ओर से एक उदारतापूर्ण सकेत आ जाये तो इसका दोनो दलो और समूचे देश पर गहरा असर होगा। उस पक्ष से ऐसा कोई उदारतापूर्ण सकेत आने के बाद यदि कोई समूह दल या व्यक्ति इसके प्रति उदासीनता दिखाता है तो वह दुनिया की आखो मे गिर जायेगा। सरकार को दोनो ही स्थितियो मे कोई नुकसान नही होगा। यदि वह मेल-मिलाप के जरिये देश के उग्रवादी दलो को मजूरी दे देती है तो यह उसकी नैतिक विजय होगी। यदि मेल मिलाप नहीं हो पाया तो वे एक बार दमन चक्र चलायेंगे और उसे न्यायोचित भी सिद्ध करेगे।

सरकार की तरह काग्रेस ने भी गलती की। सधि-वार्ता के दौरान काग्रेस को समूचे देश की बात करनी चाहिए थी जिस प्रकार कि क्रान्तिकारियो और मजदूर दलो के तरीको से जुड़कर अपनी पहचान बनाते हुए सिन-फीन ने समूचे आयरलैड की बात की थी। काग्रेस भली भाति उनकी मागो को रख सकती थी। लेकिन ऐसा करने मे काग्रेस असफल रही। इस असफलता के कारण देश और विश्व मे उसकी साख गिरी है। काग्रेस इसी प्रकार का रवैया भगतसिह और उसके साथियो के मृत्युदड के लघुकरण की याचिका के समय अपना सकती है जिसे कि सरकार ने नामजूर कर दिया था।

यदि काग्रेस औपचारिक रूप से भगतसिह और साथियो के मृत्युदड के लघुकरण की माग रखती तो इससे उसे किसी प्रकार की हानि नही होती बल्कि वह दुनिया की नजरो मे ऊची उठ जाती और भगतसिह की जीवन रक्षा भी कर सकती थी। भले ही सरकार इस माग को नामजूर कर देती लेकिन काग्रेस को यह सतुष्टि तो होती कि उसने अपना दायित्व निर्वाह किया। फिर कोई भी व्यक्ति काग्रेस से यह शिकवा शिकायत न करता कि उसने भगतसिह को बचाने की दिशा मे कुछ नहीं किया।

गाधी-इर्विन समझौते के विषय मे मै यही कह सकता हू कि यह अत्यन्त असतोषजनक और निराशापूर्ण है। मुझे विशेष दुख इस बात है कि समझौते के समय हमारी शक्ति उससे कहीं ज्यादा थी जितनी कि समझौते की अतर्वस्तु से प्रकट होती है। मै यहा सक्षेप मे समझौते के कुछ असतोषजनक बिदुओं का उल्लेख करना चाहूगा -

1 बगाल अध्यादेश (बगाल क्रिमिनल एमेडमेट एक्ट) और बर्मा अध्यादेश जैसे अध्यादेशो को रद्द नहीं किया जिनके द्वारा बिना सुनवाई के मात्र सदेह के आधार पर लोगो को गिरफ्तार किया गया।

2 अर्थदड को लौटाने और जब्तशुदा सपत्ति से सबधित प्रावधान सतोषजनक नहीं हैं।

3 पुलिस की ज्यादतियो की जाच से सबधित माग को नहीं ठुकराना चाहिए था। विशेष रूप से काग्रेस द्वारा यह माग उठाये जाने के बाद ऐसा नहीं करना चाहिए। इसके साथ-साथ काग्रेस को गढवाली पुलिस कर्मियो का पक्ष लेना चाहिए था जिन्होने निहत्थे लोगो पर गोली चलाने से इन्कार कर दिया था और जिन्हें बर्खास्त कर दिया गया। सरकार ने तमाम ज्यादतियो के बावजूद अपने आदमियो को नीचा दिखाने से इकार कर दिया जब कि काग्रेस अपने लोगो का पक्ष नहीं ले सकी।

4 काग्रेस को विलायती माल का बहिष्कार बद नहीं करना चाहिए था। विशेष रूप से जब यह सविनय अवज्ञा आदोलन का अग नहीं था। सविनय अवज्ञा आदोलन आरभ होने से हम विलायती माल का बहिष्कार करते थे किन्तु दुर्भाग्य से अब नहीं कर सकते। अतएव हम सविनय अवज्ञा आदोलन से पूर्व की तुलना मे अब बहीं बुरी स्थिति मे है।

5 नमक बनाने के प्रावधान उचित नहीं है। नमक एक सीमित क्षेत्र के भीतर ही बनाया जा सकता है।

6 धरने (पिकटिंग) के स्थानो को लेकर प्रतिबध सविनय अवज्ञा आदोलन के पहले से भी अधिक बढ गया है। यदि ये प्रतिबध इसी तरह लगे रहे तब धरना देना असभव नहीं तो कठिन अवश्य हो जायेगा।

7 इन सबसे ऊपर क्षमादान से सबधित प्रावधान अत्यन्त असतोषजनक है। पहले सविनय अवज्ञा के सभी बदी अभी तक जेल मे बने हुए है और समझौते की शर्तो के मुताबिक क्रान्तिकारी और लेबर पार्टी के बदियो की क्षमा का दावा पेश नहीं कर सकते। फासी के आदेश रोके नहीं जायेगे। चित्तगोग असलाखाने की लूट और मेरठ षड्यत्र के मुकदमे जारी रहेगे। पजाब के मार्शल ला बदियो की भाति राजनीतिक बदी 10 या 12 वर्ष तक जेल मे बने रहेगे। अतिम किन्तु महत्वपूर्ण बात यह है कि बिना सुनवाई के बदी बनाये गये बगाल के लोगो को रिहा नहीं किया जाना है तब इस क्षमादान का क्या मूल्य है? मैं यह बात पुन रेखाकित करूगा कि हिंसक और अहिंसक बदियों मे भेद करना काग्रेस का एक कर्तव्य है। यह बात 1929 ई० के दिल्ली घोषणापत्र मे नहीं थी। महात्मा गाधी के ग्यारह सूत्रो मे भी इसका जिक्र नहीं था।

समझौते की शर्तो के सतोषजनक चरित्र समझने के लिए और किसी दलील की जरूरत नहीं है। दस्तावेज देखने के बाद कोई व्यक्ति आसानी से यह समझ सकता है कि काग्रेस ने पराजित मानसिकता के साथ यह समझौता स्वीकार किया है। कई जगह हमारे आत्म सम्मान को ठेस पहुचाने वाली भाषा का प्रयोग किया गया है। यदि समझौते के समय हमारी स्थिति वास्तव मे कमजोर थी-तो मैं ज्यादा प्रतिरोध नहीं जताऊगा लेकिन क्या हम इतने कमजोर हैं? मुझे सदेह है।

लेकिन अब यह समझौता सपन्न हो चुका है और प्रश्न यह है कि कोई आक्रामक कदम उठाने से पहले हमे सोच विचार कर लेना चाहिए। नकारात्मक आलोचना मे अपनी ऊर्जा नष्ट

करने के बजाय हमे कुछ सकारात्मक और सार्थक कार्य करना चाहिए। मै समझौते की शर्तो के लिए जिम्मेदार लोगो की देश भक्ति पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगा रहा हू। इस प्रवृत्ति से दूर रहते हुए हमारे लिए यह बेहतर होगा कि हम कोई सकारात्मक कार्य करे जिससे हमारा राष्ट्र और राष्ट्र की मागे मजबूत हो। इस प्रयोजन के लिए मैं आरभ मे ही एक कार्यक्रम की रूप रेखा प्रस्तुत कर चुका हू जिसे हमारे देश का क्रान्तिकारी बहुत सरलता से अपना सकता है और चला सकता है। इस कार्यक्रम मे काग्रेस नेताओ के साथ कलह की कोई गुजाइश नहीं है क्यो कि कलह से हम लोग कमजोर होगे और सरकार मजबूत होगी। इन सबसे ऊपर हमे दूसरे लोगो की आलोचना करते समय आत्मसयम का परिचय देना चाहिए। विनम्रता और सयम से हमे हानि के बजाय लाभ ही होगा। यदि हमारी कार्यक्रम मे आस्था है तो हमे अपनी पूरे सामर्थ्य के साथ लागू करना चाहिए। यदि हमारा कार्यक्रम सत्य पर आधारित है तो हमारे देशवासी भावी समय मे इसे अवश्य स्वीकार करेगे क्यो कि अतत इस ससार में सत्य की विघमानता ही रहेगी। मित्रो मैं आप का अत्यधिक मूल्यवान समय ले चुका हू लेकिन मैं अपनी बात समाप्त कर चुका। हमे अदम्य साहस किन्तु विनम्रता के साथ अपना कार्य आरभ कर देना चाहिए। मेरे मन मे एक पूर्ण रूपेण स्वतत्र भारत का सकल्प है। भारत को विश्व सस्कृति एव सभ्यता मे भारी योगदान करना है। यही मेरे जीवन का लक्ष्य है और यही मेरे जीवन का स्वप्न है। समूचा विश्व उत्सुकता के साथ भारत के इस उपहार की प्रतीक्षा कर रहा है। भारत एक नयी आर्थिक समाजार्थिक व्यवस्था और राष्ट्र के रूप मे विश्व को अतिम उपहार देगा जो कि समूची मानवता के लिए एक पाठ होगा। भारत विश्व रूपी इमारत की शहतीर है और स्वतत्र भारत विश्व से साम्राज्यवाद का अत कर देगा। अतएव हमे इस अवसर पर उठ जागना चाहिए ताकि मानवता की रक्षा की जा सके।

बगाल के काग्रेसजनो के समक्ष चुनौतीपूर्ण कार्य

बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के चुनाव के अवसर पर नई दिल्ली मे प्रेस के लिए बयान 11 अप्रैल, 1931

मुझे पूरी आशा है कि कराची काग्रेस के सुखद समापन के बाद बगाल मे चलने वाला विवाद सदा के लिए समाप्त हो जायेगा। समूचा देश महसूस करता है कि स्वतत्रता सग्राम का अत नहीं हो गया है अतएव हमारे बीच कोई मतभेद है तो उन्हे दूर कर लेना चाहिए और नौकरशाही के सामने एक सयुक्त मोर्चा पेश करना चाहिए। लेकिन प्रातीय और स्थानीय सगठनो की एकता के अभावो मे अकेली काग्रेस की एकता प्रभावहीन होगी।

शीघ्र ही प्रसन्नता पूर्वक काग्रेस चुनाव होने जा रहे है और बगाल को प्रातीय काग्रेस कमेटी के पुर्नगठन का अवसर मिल जायेगा। मैंने हमेशा बगाल की प्रातीय काग्रेस कमेटी को सर्वोच्च राजनीतिक सगठन के रूप मे देखा है और इस सस्था की गरिमा बनाने के दिशा मे मैंने यथा सामर्थ्य प्रयास किये है। यह कार्य मुझे सुखद और सरल प्रतीत नहीं हुआ है और मेरी मान्यता है

कि प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की गरिमा सद्भाव और अनुशासन के बिना किसी प्रांत मे राजनीतिक जीवन और गतिविधि सभव नहीं है। इस सस्था का मुखिया कोई भी हो उसे निर्भीकता के साथ अपना दायित्व निर्वाह करना चाहिए।

कहने की जरुरत नहीं कि जहा तक हमारे अधिकार क्षेत्र के बात है कार्यकारिणी स्वय यह देखेगी कि न्यायपूर्ण स्वच्छ और निष्पक्ष रूप से चुनाव सम्पन्न हुए हैं। कांग्रेस सदस्यो की सूची बनाने हेतु प्रमाणिक कांग्रेस जनो को हर सुविधा प्रदान की जायेगी और यह आशा की जाती कि जिला कांग्रेस कमेटिया भी कांग्रेस के सदस्यो के नामाकन में पूरी सहायता करेगी। बगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी के पुर्नगठन और बगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के लिए सदस्यो के मनोनयन के सबध मे जिला कांग्रेस कमेटियो और बगाल प्रदेश कमेटी मे उनके प्रतिनिधियो की इच्छाओं का सम्मान किया जायेगा।

बडे खेद की बात है कि कराची मे कार्यसमिति के समक्ष इस आशय का एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया कि बगाल के चुनाव की निगरानी के लिए एक रेफरी की नियुक्ति की जानी चाहिए। कार्यसमिति के समक्ष ऐसा प्रतिवेदन केवल बगाल की ओर से प्रस्तुत किया जैसे कि सभी प्रांतो मे अकेला बगाल ऐसा है जो स्वय अपने चुनाव नहीं करा सकता। ऐसी प्रार्थना बगाल के प्रति अन्याय है विशेष रूप से तब जब कि पिछले मौके पर पंडित मोतीलाल नेहरू एक खोजपूर्ण जाच के बाद बगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी की गतिविधियों की सराहना कर चुके है। सौभाग्य से कार्यसमिति ने इस प्रस्ताव का नामजूर कर दिया और मुझे कहते हुए खुशी है कि महात्मा गाधी हमे आश्वस्त कर चुके हैं कि वे बगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी की यथासभव सहायता करेंगे और उन्होने आशा व्यक्त की है कि कार्यसमिति बेहतर ही करेगी।

मुझे आशा है और प्रार्थना करता हू कि हम सर्वोच्च राजनीतिक सगठन अर्थात बगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सद्विचार से प्रेरित होंगे और इस सस्था को यह तय करना है कि जनहित मे हमारी सेवाओं का किस रूप मे इस्तेमाल किया जाना है। मुझे विश्वास है कि यदि हम इस सद्विचार से प्रेरित होगे तो अपने मतभेदो को दूर कर सकते हैं और नौकरशाही के समक्ष एक सयुक्त मोर्चा भी प्रस्तुत कर सकते हैं।

एकता के लिए अपील

एक बयान, 13 अप्रैल 1931

मैं इस निश्चय के साथ कलकत्ता लौटा था कि मैं बगाल मे जारी आतरिक कलह को दूर कर दूगा। यह इसलिए जरुरी हो गया है कि बगाल राष्ट्रीय आदोलन मे अधिकतम योगदान कर सके और अपने योगदान का पूर्ण श्रेय मिल सके। इसमें कोई सदेह नहीं कि घरेलू कलह के कारण बगाल की प्रतिष्ठा कम हुई है और यह जरुरी है कि हम अविलब इस कलह को समाप्त करें। इस प्रयोजन के साथ मैं प्रत्येक व्यक्ति की तकलीफों का एक जायजा लेना चाहूगा और यथासभव उनके निराकरण के उपाय सुझाउगा।

मैं परसो जारी बयान मे कह चुका हू कि बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी को सर्वोच्च राजनीतिक सस्था स्वीकार कर लेने मे ही हमारी समस्याओ का समाधान निहित है। हर काग्रेस कार्यकर्ता का यह कर्तव्य है कि वह अपनी सेवा बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के विवेक पर छोड दे। वह जैसे चाहे इस सेवाओ का इस्तेमाल करे। प्रांत या जिले मे किसी प्रतिद्वन्द्वी सस्था को अस्तित्व मे नहीं आना चाहिए क्योंकि इन सस्थाओ से देश भर मे काग्रेस सगठन की प्रतिष्ठा और एकता पर बुरा प्रभाव पडेगा।

मेरा निजी विचार यह है कि राजनीतिक कार्यकर्ताओ को अपवाद स्वरूप परिस्थितियो को छोडकर प्राय धन और सम्मान के पदो से बचना चाहिए। मैंने स्वय पिछले वर्षो मे ऐसा कोई पद नहीं लिया, मुझे आशा है कि मैं भविष्य मे भी ऐसा कभी नहीं करूगा। दुर्भाग्य से गत वर्ष परिस्थितियो ने मुझे भी ऐसे मेयर के पद हेतु खडे होने के लिए बाध्य किया। बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी का विचार था कि मेयर का पद किसी का एकाधिकार नहीं होना चाहिए और यह तय पाया गया कि डा० बी० सी० राय को मेयर के पद हेतु खडा करना चाहिए। बडे विवाद के बाद अप्रैल 1930 मे काग्रेस म्यूनिसपल पार्टी ने सर्वसम्मति से यह सकल्प पारित किया कि श्री जे० एम० सेनगुप्ता को मेयर चुना जायेगा और पुनर्निर्वाचन की स्थिति मे डा० बी० सी० राय का मेयर चुना जायेगा। इस व्यवस्था को बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी ने स्वीकृति दे दी। जब पुनर्निर्वाचन का समय आया दुर्भाग्य से काग्रेस म्यूनिसिपल पार्टी के एक हिस्से ने पिछले सकल्प को अनदेखा करते हुए श्री सेनगुप्ता को पुन मेयर बनाने की चाल चली। बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के खिलाफ विद्रोह की श्रृखला से यह आखिरी कदम था। इस विद्रोह को सहन करना प्रातीय काग्रेस कमेटी के लिए मुश्किल था। परिणामस्वरूप बगाल मे काग्रेस सगठन के अनुशासन और एकता के हित मे यह जरूरी समझा गया कि श्री सेनगुप्ता के विरुद्ध मेयर और महापौर पद हेतु मुझे खडा किया जाए।

अब परिस्थिति बदल चुकी है और मुझे मेयर बने रहना जरूरी नहीं रह गया है। इस कारण मैंने पार्टी की बैठक मे सहर्ष यह प्रस्ताव रखा कि आगामी वर्ष श्री सेनगुप्ता को मेयर के रूप मे मनोनीत किया जाये। वे हर प्रकार इस सम्मान के योग्य है और मुझे कोई सदेह नहीं है कि वे इस उच्च पद के साथ न्याय करेगे। इस व्यवस्था से मुझे बगाल और इससे बाहर काग्रेस के कार्य को आगे बढाने हेतु समय मिल सकेगा। मुझे लगता है कि आज के हालात मे हमे कठोर परिश्रम करना होगा ताकि काग्रेस की पताका लहराती रहे।

मैं यह भी महसूस करता हू कि इस निर्णय से बगाल के वातावरण को स्वच्छ करने मे सहायता मिलेगी और इसके द्वारा काग्रेस कार्यकर्ताओ मे एकता कायम हो सकेगी। मैं चाहूगा कि हर काग्रेस कार्यकर्ता यह प्रदर्शित करे कि उसका एक मात्र उद्देश्य जनसेवा है पदलोलुपता नहीं। जब तक कोई पद उस पर लाद न दिया जाए तब तक वह उस पद को स्वीकार न करे। प्रबुद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ के बीच कोई प्रतिद्वदिता या प्रतिस्पर्द्धा जैसी चीज नहीं होनी चाहिए। यदि कोई प्रतिस्पर्धा है तो वह सेवा और त्याग की प्रतिस्पर्धा है और जहा तक मेरी बात है मैं अपने देशवासियो के हृदय को ही केवल अपना सिहासन समझता हू।

सिलहट कांग्रेस विवाद का समाधान

बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप मे प्रेस के लिए बयान, 17 अप्रैल 1931

मुझे यह घोषणा करते हुए प्रसन्नता है कि सिलहट के घरेलू विवाद को सुलझाने के दिशा मे हमने कुछ सुराग पा लिया है। सिलहट मे दोनो पक्षो के प्रतिनिधियो से बातचीत करने के बाद परस्पर स्वीकृति के आधार पर निम्नलिखित व्यवस्थाए की गयी हैं। इस व्यवस्था से न केवल जिला काग्रेस कमेटी का स्वस्थ पुनर्गठन हो सकेगा बल्कि सिलहट का विवाद भी सुलझ जायेगा।

1 सिलहट की जिला काग्रेस कमेटी के पुनर्निर्वाचन को मद्देनजर रखते हुए बगाल प्रदेश काग्रेस कमेटी दर्ज की गई शिकायत पर गौर नहीं करेगी। इस बीच पुरानी काग्रेस कमेटी, श्री हरेन्द्र चौधरी जिसके अध्यक्ष हैं, वैध काग्रेसी कमेटी के रूप मे कार्य करती रहेगी।

2 हमेशा के लिए शिकायत की गुजाइश दूर करने के उद्देश्य से सिलहट काग्रेस समिति के सचिव द्वारा हस्ताक्षरित सदस्यता पुस्तिकाए सिलहट के बृजेन्द्र नारायण चौधरी को निर्गत की जायेगी। ये पुस्तिकाए सिलहट काग्रेस समिति के सचिव को दी गयी पुस्तिकाओ के अलावा होगी।

3 सिलहट जिला काग्रेस समिति की वार्षिक आम सभा 10 मई 1931 को सिलहट मे होगी। बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के अध्यक्ष इस बैठक के अध्यक्षता करेगे ताकि दोनो पक्ष सतोष का अनुभव कर सके। वे बैठक के समय व स्थान का निश्चय करने के लिए सिलहट जिला काग्रेस समिति के सचिव से आग्रह करेगे।

4 सिलहट जिला काग्रेस समिति के पुनर्गठन के बाद नव गठित समिति बगाल प्रदेश काग्रेस समिति हेतु सदस्यो के चुनाव की व्यवस्था करेगी।

5 जिन्होने 3 मई 1931 तक सदस्यता ग्रहण कर ली है केवल वही 10 मई को होने वाले चुनाव मे मताधिकार के पात्र होगे।

6 3 मई तक नामाकित सदस्यो की सूची आधान्नो और शुल्क (यदि कोई है) सहित 5 मई तक जिला काग्रेस समिति के कार्यालय मे पहुच जायेगी। बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के अध्यक्ष मतदाता सूची की गणना तथा इससे सबधित आपत्तियो के निराकरण हेतु एक जिम्मेदार व्यक्ति को नियुक्त करेगे। वही यह निर्णय करेगे कि काग्रेस समिति की शाखा विशेष जिला काग्रेस समिति से सबद्ध है या नहीं? उनके द्वारा किसी समिति को असबद्ध घोषित किये जाने की स्थिति मे यदि उस शाखा समिति का कोई सदस्य अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करना चाहता है तो उसे जिला काग्रेस समिति के पास पूरा शुल्क जमा कराना चाहिए।

मुझे आशा है कि सिलहट मे दोनो पक्ष अपने पुराने मतभेदो को भुला देगे। पुन मेल-मिलाप कायम करने के लिए मेरी सेवाए अर्पित हैं। सिलहट की महत्वपूर्ण समस्याओ को मद्देनजर रखते हुए सामजस्य की तीव्र आवश्यकता है।

फरीदपुर को लेकर मेरी जानकारी मे कुछ शिकायते आयीं हैं। मैं शिकायतकर्ताओ को पहले ही आश्वस्त कर चुका हू कि मैं सामजस्य स्थापित करने की पूरी कोशिश करूगा। मै आशा करता हू कि मुझे थोडा समय दिया जायेगा। इस बीच मे वे स्वय देखेगे कि फरीदपुर के काग्रेसजनो के बीच कोई कटुता शेष नहीं रहेगी।

प्रतिष्ठित भारतीय वास्तुकार एस० सी० चटर्जी के कार्य के बारे मे

निवर्तमान मेयर के रूप मे भाषण, 19 अप्रैल 1931

मुझे पूरी आशा है कि भविष्य मे कलकत्ता निगम श्री चटर्जी के मार्ग का अधिक से अधिक अनुसरण करेगा और इसके द्वारा भारतीय स्थापत्य को उन्नति के पथ पर अग्रसर करेगा।

भारत के प्रसिद्ध वास्तुकार श्री चन्द्र चटर्जी से भेट होने से पहले मैं आश्चर्य के साथ यह सोचा करता था कि भारत अपनी वास्तुकला की विशिष्ट शैली का विकास कैसे कर सकेगा जैसे कि उसने मुद्रण की एक विशेष शैली विकसित करने मे सफलता प्राप्त कर ली है। तुरत बाद ही मुझे एक अखबार मे श्री चटर्जी के कुछ लेख पढने को मिले और उनसे विचार विमर्श किया। इस विचार विमर्श के बाद मेरे मन मे उनके प्रति प्रशसा का भाव और अधिक बढ गया।

श्री चटर्जी विशिष्ट भारतीय चरित्र से युक्त वास्तुकला की नयी शैली के शिखर पुरुष के रूप मे सही समय पर हमारे सामने आये। उनके शिल्प मे पाश्चात्य और विदेशी प्रभाव भी देखे जा सकते है लेकिन आधुनिक परिस्थितियो से जुडते हुए वे भारत और विश्व को बहुत कुछ नया दे सकते हैं।

समस्त भारतीयो के लिए यह गौरव की बात है कि श्री चटर्जी भारतीय वास्तुकला के पवित्र उद्देश्य को लेकर पिछले दिनो अमरीका मे रहे और वहा से बहुत अच्छा प्रभाव छोडने मे सफल हुए। श्री चटर्जी जब से प्रकाश मे आये है कलकत्ता का निगम का निर्माण विभाग उनके प्रभाव मे ही काम कर रहा है और निगम के मुख पत्र म्यूनिसिपल गजट ने उनके लेख प्रकाशित किये है।

यद्यपि मैं एक मामूली आदमी हू फिर भी मैंने श्री चटर्जी के जीवन का बडी रुचि के साथ अनुसरण किया है और मैं भविष्य मे यह जारी रखूगा। उनकी सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाए है। क्यो मैं जानता हू कि उनकी सफलता का अर्थ भारतीय वास्तुकला के पुनर्जागरण का विकास और विश्व सभ्यता की समृद्धि है।

मेरे जीवन का स्वप्न

फरीदपुर के अंबिका मेमोरियल हाल मे भाषण, 20, अप्रैल, 1931

यह मेरे जीवन का एक स्मरणीय दिन है जब मैने सुख-सुविधाओ के जीवन की लीक छोडकर संघर्ष के क्षेत्र मे कदम रखा जिसके प्रति हर युग के युवाओ के मन मे आकर्षण रहा है। तब से मैंने उस निगम को लेकर खेद व्यक्त नहीं किया। आप पूछ सकते है कि मैंने यह निर्णय क्यो लिया? मैने एक गौरवशाली स्वप्न के कारण यह निर्णय लिया. इस स्वप्न ने मुझे भारत माता को हर प्रकार की श्रृखलाओ से मुक्त करने और विश्वसमुदाय मे एक गौरवशाली स्वप्न प्राप्त करने की दृष्टि दी और यदि मेरे जीवन मे वह दिन कभी नहीं आया कि मैं अपने स्वप्न को साकार होता देख सकू तो मैं इस स्वप्न को अपने देश वासियो के लिए दाय के रूप मे छोड जाऊगा ताकि वे इसे साकार करे।

हर जगह स्वप्न द्रष्टाओ ने राष्ट्र की सत्ताए कायम की हैं। मेजिनी को पागल करार ठहरा दिया गया था जब उसने स्वतत्र इटली के स्वप्न को अभिव्यक्ति दी थी। उस पर कमोवेश अत्याचार किये गये। ये अत्याचार उन शक्तियो की ओर से हुए जो युवा आदोलनकारियो को नापसद करती थी और यह भी जानती थी कि इन युवाओ के स्वप्न में वे बीज है जो एक दिन उनके अस्तित्व को चुनौती बन सकते है। इसलिए मैंने सुविधाओं के जीवन का मार्ग छोड दिया और पद व प्रतिष्ठा की लालसा को परित्याग कर दिया।

फरीदपुर कांग्रेस विवाद का समाधान

फरीदपुर जिले के काग्रेस कार्यकर्ताओ के बीच के भारी मतभेदो को सुलझाने पर एक बयान, 23 अप्रैल, 1931

देश की मौजूदा हालत को मद्दे नजर रखते हुए जो कि काग्रेस जनो मे एकता की माग करती है यह आवश्यक हो गया है कि फरीदपुर के काग्रेस जन अपने मतभेदो को दूर करके जिले में एक मजबूत काग्रेस संगठन का निर्माण करे। इस प्रयोजन से मैंने मतभेद दूर करने के लिए फरीदपुर मे दोनो पक्षो से बातचीत की है। दोनो पक्षो का निम्न लिखित व्यवस्था पर सहमत होना एक शुभ लक्षण है और समस्या का सही समाधान है -

1. विरोधियो द्वारा जनवरी, 1931 मे चुनी गई जिला काग्रेस समिति के विरूद्ध दर्ज की गई शिकायते व याचिकाए वापस ले ली जायेगी।
2. जनवरी मे निर्वाचित जिला काग्रेस समिति फरीदपुर की वैध जिला काग्रेस समिति के रूप में कार्य करती रहेगी।

3. आगामी जून मे जिला काग्रेस समिति के दोबारा चुनाव होगे।

4. चुनाव से पूर्व 25 मई, 1931 तक सदस्यो के नामाकन की सुविधा प्रदान की जायेगी। आगामी 25 मई तक जो सदस्य बन चुके है वही मताधिकार के पात्र होगे।

5. जिला काग्रेस समिति, भग सब डिवीजन काग्रेस समिति की समाप्ति और इसके सदर सब डिवीजन काग्रेस समिति के विलयन से उत्पन्न समस्याओ का ध्यान रखेगी और आगामी जिला चुनावो से पहले इसे एक स्वतत्र काग्रेस सब डिवीजन बनायेगी।

यह आशा की जाती है कि उपर्युक्त व्यवस्था से सभी समस्याओ और शिकायतो का निराकरण हो सकेगा और जिला काग्रेस समिति मे अनुशासन कायम होगा। यह भी आशा की जाती है कि इस व्यवस्था से दोनो पक्षो का हृदय परिवर्तन होगा एकता बढेगी और जनता की दृष्टि मे जिला काग्रेस समिति की प्रतिष्ठा मे वृद्धि होगी।

मैं व्यक्तिगत रूप से यथाशक्ति प्रयास करूगा कि जिला काग्रेस चुनाव मे रिटर्निग आफिसर की नियुक्ति को लेकर कोई शिकायत न हो। मेरा यह प्रयास भी होगा कि यदि कोई चुनाव विवाद खडा होता है तो शिकायतकर्ताओ को उचित न्याय मिले।

मैमन सिह की घटना और उसके बाद

कलकत्ता मे प्रेस के लिए जारी एक बयान, 25 अप्रैल 1931

सुबह के अखबारो मे मैमन सिह की घटनाओ के बारे में पढकर मुझे गहरा दु ख हुआ। अखबार की खबरो के आधार पर वास्तविक घटना और उसके कारणो की प्रमाणिकता को लेकर कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन रिपोर्टो और लोगो से पूछताछ के आधार पर निम्नलिखित तथ्य सामने आते हैं -

नेत्रकोना मे दो सभाये होनी थी। राजनीतिक पीडित अधिवेशन और जिला छात्र अधिवेशन की अध्यक्षता क्रमश जे० एम० सेनगुप्ता और पूर्ण चन्द्रदास को करनी थी। नेत्रकोना के जिला छात्र अधिवेशन की प्रतिद्वंदिता मे मैमनसिह मे अन्य छात्र अधिवेशन के आयोजन से गलतफहमिया पैदा होना शुरू हुई। बडी सख्या मे विधार्थियो ने इसका तीव्र विरोध किया। सेनगुप्ता के आगमन पर आयोजको ने उनसे अनुरोध किया कि वे समझौता करा दे। यहा तक उन्होने सेनगुप्ता के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि नेत्रकोना के मूल छात्र अधिवेशन के अध्यक्ष बन जाये और समझौता करा दे। इस प्रस्ताव के आधार पर सेनगुप्ता ने समझौता क्यो नहीं कराया? इतने दूर बैठकर यह कहना मुश्किल है। सेनगुप्ता ने अपने बयान मे कहा था कि वे समझौते की खातिर मैमनसिह अधिवेशन को छोडने के लिए तैयार हैं। लेकिन मैमनसिह की स्वागत समिति उनके आडे आ गई। सभवत यदि वे स्वागत समिति के सदस्यो को समझाते बुझाते तो उन्हे समझौता कराने मे सफलता मिल सकती थी। उस स्थिति मे सेनगुप्ता दोनो अधिवेशनो की अध्यक्षता नहीं कर सकते थे और वे एक विशिष्ट बन जाते। दुर्भाग्य से वे मैमनसिह के प्रतिद्वन्द्वी गुट का मन नहीं जीत सके।

मुझे इस बात का गहरा दुःख है कि विद्यार्थियों के आपसी विवाद के कारण सेनगुप्ता का अपमान हुआ। इसी तरह गत वर्ष जब कलकत्ता में मेयर के चुनाव के दौरान युवा लोगों ने डा० बी० सी० राय के प्रति सार्वजनिक रूप से असम्मान व्यक्त किया तब मैंने हमारे युवाओं के भीतर बढ़ती गई अनुशासनहीनता पर गहरी चिन्ता प्रकट की थी। आज की परिस्थितियों में जिम्मेदार नेताओं का कर्त्तव्य बहुत स्पष्ट है। उन्हें ऐसी किसी भी सभा की अध्यक्षता करने से इन्कार कर देना चाहिए जहां गुटबाजी के कारण सामान्य शिष्टाचार तक नहीं रह गया है।

मुझे अफसोस है कि सेनगुप्ता के प्रेस में छपे बयान में बंगाल कांग्रेस समिति को लेकर एक टिप्पणी है जिसमें बंगाल प्रदेश कांग्रेस समिति की कार्यकारिणी के प्रति चापलूसी की गंध आती है। बंगाल प्रदेश कांग्रेस समिति एक ऐसी संस्था है जिसमें बंगाल के सभी जिलों के विभिन्न गुटों के सदस्यों का प्रतिनिधित्व है। यदि बंगाल प्रदेश कांग्रेस के कुछ सदस्यों का झुकाव एक ओर है तो अन्य सदस्यों का झुकाव दूसरी ओर है। मैमनसिंह के विद्यार्थियों के बीच का विवाद पूरी तरह स्थानीय मामला है और जनता 1929 में मैमनसिंह में आयोजित प्रांतीय छात्र अधिवेशन के दौरान उठे विवाद को भूली नहीं होगी। यदि कोई बंगाल प्रदेश कांग्रेस समिति के कुछ सदस्यों की चापलूसी इसलिए करता है कि वे स्थानीय मामले में दखल देंगे तो यह सरासर गलत है। इस चापलूसी से आपसी सद्भाव बढ़ाने में मदद नहीं मिलेगी।

लोग जागरूक हैं कि बंगाल में कांग्रेस जनों की बीच एकता स्थापित करने के गंभीर प्रयास चल रहे हैं। सिलहट और फरीदपुर के विवादों को सुलझाने के बाद हमें जो उपलब्धि हुई उसने सभी शांतिप्रिय लोगों को उत्साहित किया है। मुझे आशा है कि वे मैमनसिंह की घटनाओं को लेकर हताश नहीं होंगे। मैमनसिंह के कांग्रेसजनों से अनुरोध करूंगा कि छात्रों के बीच विवाद को न उकसायें और सौमनस्य स्थापित करने के प्रयास करें।

कुष्ठिया नगर पालिका का चुनाव

कुष्ठिया के मतदाताओं से अपील, 10 मई 1931

कांग्रेस ने कुष्ठिया के नगरपालिका प्रशासन को अपने हाथ में लेने का निर्णय लिया है। यदि भारत के लाखों लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाली कोई संस्था हो सकती है तो वह कांग्रेस है क्यों कि कांग्रेस का आदर्श ही जनता का आदर्श है। महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस यह घोषित कर चुकी है स्वाधीनता प्राप्ति ही उसका लक्ष्य है और वह व्यावहारिक रूप से इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कृत संकल्प है। पूर्ण स्वाधीनता की प्राप्ति का अर्थ है—जनता की गरीबी, पीड़ा और दासता से मुक्ति। इसलिए जितनी कांग्रेस की शक्ति बढ़ेगी उतने ही जनता के दुःख हल्के होंगे और दासता की अवमानना के निजात पाना आसान होगा। इसी कारण स्वर्गीय देशबन्धु ने निगम के भवन पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया था।

कुष्ठिया की जनता ने विभिन्न रूपो मे काग्रेस के प्रति सदेह व्यक्त किया है। पिछले सविनय अवज्ञा के दौरान कुष्ठिया के व्यापारियो ने काग्रेस कोष के लिए उदारता पूर्वक दान दिया था। नागरिको ने बाजार मे विदेशी कपडे की बिक्री असभव कर दी थी। स्त्रियो ने गहने उतार दिये थे, युवा लोग हसते हुए चेहरे के साथ जेल भेजे गये। कुष्ठिया से आज अतीत की भाति अपेक्षा की जाती है। हमे आशा है कि काग्रेस की गरिमा और सम्मान मे वृद्धि होगी।

कुष्ठिया के नागरिको से मेरी पुरजोर अपील है कि तमाम निजी स्वार्थो और आपसी मतभेदो को तिलाजलि देकर वे काग्रेस को विजयी बनायेगे ताकि कुष्ठिया नगर पालिका के कार्यालय पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जा सके।

(यह भाषण मूल बगला मे है)

पूर्ण स्वाधीनता और उसका अर्थ

नौआखाली मे भाषण, 15 मई 1931

हम जीवन के सपूर्ण क्षेत्रो मे सर्वप्रकार की पूर्ण स्वाधीनता चाहते है। पूर्ण स्वाधीनता घर मे दीपक की भाति है जिसके प्रज्जवलित होते ही घर का कोना-कोना आलोकित हो उठता है। पूर्ण स्वाधीनता समानता के समाजवादी आदर्श पर आधारित होगी। रूस और इटली ने अपने-अपने रास्ते अपनाये और भारत के पास समानता और जनतात्रिक राज्य की अपनी अलग व्याख्या होगी। भारतीय दर्शन विविधताओ के एकत्व की शिक्षा देता है। इससे स्वाधीन भारत का आधार तैयार होगा। उपनिषद युग से लेकर रामकृष्ण विवेकानन्द तक विविधता मे जीवन का आदर्श रहा है। हमारे भीतर पूर्व और पश्चिम का सगम होगा। हम विविधता पूर्ण संस्कृति और परपरा के आधार पर विशुद्ध भारतीय ढग से एकता बद्ध होकर सभ्यता का आधार तैयार करेगे। भारतीय आदर्श युद्ध नहीं, प्रेम है और प्रेम उस सभ्यता के आधार का निर्माण करेगा। युवाओ को इस महान समस्या का समाधान करना है और उस लक्ष्य की प्राप्ति करनी है। विभिन्न युवा या दूसरी सस्थाये काग्रेस रूपी नदी की सहायक नदिया है। छोटी सस्थाओ को काग्रेस के खिलाफ विद्रोह नहीं जताना चाहिए। जैसा कि स्वागत समिति के अध्यक्ष ने जताया है। उन्हे काग्रेस को मजबूत करना चाहिए। काग्रेस ने मिस मेमो के माध्यम से भारत के विरुद्ध अपने अंतिम हथियार का इस्तेमाल किया लेकिन भारतीय नारीत्व ने एक वर्ष के सतह सघर्ष के दौरान अपनी साहसिक गतिविधियो से इसे झूठा सिद्ध कर दिया। भारतीय स्वाधीनता माताओ और बहनो से त्याग की अपेक्षा करती है और उनके अभाव मे भारतीय राष्ट्रीयता एक झूठी चीज होगी।

देश बन्धु ने जो हमसे कहा था हम उसे भूल चुके है। हम अपनी जातीय चेतना को खो चुके है। हम गुटबाजी मे बट गये है और एक सयुक्त बगाल के आदर्श को भुला चुके है। क्या

भौगोलिक एकता पर्याप्त है? नहीं। हमे अपने अतीत की भांति भारतीय राष्ट्रीयता के निर्माण मे योगदान करने वाले उस विचार को पुन सक्रिय करना होगा। मैं सभी से अपील करता हू और हर दृष्टिकोण से पूर्ण स्वाधीनता के लक्ष्य को स्वीकार करता हू और आप अधिक से अधिक त्याग के लिए तैयार रहे। जैसा कि महात्मा गाधी ने कहा था कि जनता को न्यूनतम त्याग करना है। लेकिन युवा वर्ग को अधिकतम त्याग हेतु तैयार रहना है। युवाओ को एक प्रभावशाली कार्यक्रम तैयार करना है जो उनके शरीर को स्वस्थ बनायेगा उनके दिल को मजबूत करेगा और उनमे त्याग भावना भर देगा। हमें हजारो जतीनदास चाहिए हमे नि स्वार्थ और स्वावलम्बी युवा चाहिए। युवा ही भावी भारत का निर्माण करेगे। यहा स्त्री पुरुष, किसान-मजदूर और सभी लोगो को उनका अधिकार मिलेगा।

(मूल बगला से अग्रेजी मे अनुवाद)

युवा और भारत का भविष्य

नोआखाली युवा अधिवेशन मे भाषण, 17 मई 1931

हमे बगाल मे जतीनदास जैसे हजारो युवकों की जरूरत है जिनमे उसके समान स्वरहित भावना का समावेश हो।

हमे जातीय चेतना से युक्त नवयुवको का व्यापक समुदाय चाहिए क्यो कि युवा ही भावी भारत का निर्माण करेगे। जहा स्त्री पुरुष मजदूर किसान, सभी स्वतत्रता के आनद की अनुभूति करेगे। मैं आप का आह्वान करता हू कि आप को भविष्य मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी है और आप को मातृभूमि को दासता से मुक्ति दिलाने के अलावा और किसी काम मे ध्यान नहीं बटाना है।

मैं मेजिनी और इटली का एक उदाहरण दे सकता हू। उन दिनो लोग सैकडा गुटो मे बटे हुए थे तथा स्वतत्रता के मार्ग मे अनेक विघ्न बाधाए थी। लेकिन ये तमाम बाधाये मेजिनी के अदम्ब को क्षीण नहीं कर सकीं और उसे इटली की स्वतत्रता के लक्ष्य से विचलित नहीं कर सकी। स्वाधीनता केवल वाद-विवाद से प्राप्त नहीं की जा सकती। बल्कि इसे वास्तविक साधना और कर्मयोग तथा मातृभूमि के वेदी पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने के बाद प्राप्त किया जा सकता है। बाद के युवाओं में व्यग्रता देखी गयी है और जीवन के लक्षण के रूप मे यह स्वागत योग्य है और यह सत्य की खोज का सकेत है। विश्व भर के युवा आदोलनो मे इस प्रवृत्ति को देखा जा सकता है।

अग्रेज भारत के विरुद्ध अपने शस्त्रागार के अंतिम शस्त्र के रूप मे मिस मेयो को उपयोग कर चुके हैं। लेकिन भारतीय नारीत्व ने इस दुष्प्रचार को एक वर्ष के सतत सघर्ष के माध्यम

से मिथ्या सिद्ध कर दिया है। भारतीय स्वाधीनता अपनी माताओ और बहनो से त्याग की अपेक्षा करती है और उनके बिना भारतीय राष्ट्रीयता आधी-अधूरी हैं।

कृपया बगाल की मौजूदा राजनीति को देखिये। आज देशबन्धु की बात को हम भूल गये हैं। हम अपनी जातीय चेतना खो चुके है और गुटबाजी मे फस गये है। ऐसा इसलिए हुआ है कि हमने सयुक्त बगाल के आदर्श को विस्तृत कर दिया है। मात्र भौगोलिक एकता पर्याप्त नहीं होगी हमे आज उसी विचार को पुनरुजीवित करना है जिसने अतीत मे भारतीय राष्ट्रीयता के निर्माण मे महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

संकटग्रस्त उत्तर बगाल

एक अपील, 22 मई, 1931

लोग इस बात को बखूबी जानते हैं कि उत्तर बगाल पर सकट के बादल छाये हुए है। तमाम केन्द्रों मे गैबधा एक ऐसा केन्द्र है जिसे भारी क्षति पहुचाई गयी है। यहा भुखमरी विपदा और गरीबी की भयानक कहानिया रोज सुनने को मिलती है। यह कहा जाता है कि अकेले गैबधा सब डिवीजन मे 3 लाख लोग चपेट मे आ चुके है। यहा यथासभव अविलब रूप से राहत कार्य के कदम उठाये जाने चाहिए। मै समझता हू कि गैबधा काग्रेस समिति कार्य के आरभ कर चुकी होगी। मैं जनता से उदारता पूर्ण सहयोग की अपील करता हू। सभी चदे मौलवी महीउद्दीन अध्यक्ष गैबधा काग्रेस समिति के नाम भेजे जाने हैं।

भारत की स्वतंत्रता का अर्थ है मानवता की रक्षा

मथुरा मे आयोजित उत्तर प्रदेश नौजवान भारत सभा के अधिवेशन मे भाषण 26 मई, 1931

मित्रो, आप ने मुझे आप जैसे देशभक्त कार्यकर्ताओ और स्वतत्रता प्रेमियो से व्यक्तिगत सपर्क का अवसर दिया। इस हेतु मेरा हार्दिक आभार स्वीकार कीजिए। आप ने मुझे जो सम्मान दिया है मैं उसके योग्य नहीं हू। मुझे अपनी योग्यता के कारण यह सम्मान नहीं मिला है बल्कि मेरे जैसे सहकर्मी के प्रति यह आपका स्नेह भाव है।

इस प्रकार की किसी सभा मे सम्मिलित होने पर मेरे मन मे एक प्रश्न उठता है "जब हमारे पास भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस जैसी सर्वोच्च सस्था है तो अलग से नौजवान भारत सभा के आदोलन की क्या जरूरत है?" इस प्रश्न के एक उपर्युक्त उत्तर से सभी सदेह दूर हो जायेगे। गलत फहमिया

दूर हो जायेगी और अन्य सस्थाओ की सापेक्षता मे नौजवान भारत सभा की स्थिति भी परिभाषित हो सकेगी।

नौजवान भारत सभा का आदोलन कोई स्थानीय या प्रातीय गतिविधि नहीं है। यह एक अखिल भारतीय आदोलन है। यह आदोलन देश के विभिन्न भागो मे विभिन्न नामो से चल रहा है और इसकी पद्धतियां और कार्यक्रम भी भिन्न हो सकते हैं। तथापि देश-भर मे इस आदोलन का मूल चरित्र एक है। इस आदोलन के जन्म के मूल मे अनिवार्य कारण रहे हैं।

मौजूदा व्यवस्था को लेकर असतोष और अधर्म की भावना तथा क्रान्तिकारी परिवर्तन की तीव्र इच्छा इस आदोलन के मनोवैज्ञानिक कारण हैं। इस आधारभूत भावना मे ध्वसात्मक और रचनात्मक दोनो प्रकार के तत्व शामिल हैं। युवा मन जो पुरातन अनुपयुक्त और प्रभावहीन प्रतीत होता है, उसे वह नष्ट करने की इच्छा रखता है और कुछ नवीन, उपयोगी और सुदर की रचना करना चाहता है। उसकी इन इच्छाओं को कोई भी वर्तमान आदोलन सस्था या सगठन अभिव्यक्ति देने मे समर्थ नहीं है। इसलिए युवाओ ने एक आदोलन चलाने और एक नया सगठन खडा करने की जरूरत महसूस की जो उनकी ध्वसात्मक एव रचनात्मक वृत्तियो और इच्छाओ को खुलकर व्यक्त होने का अवसर दे सके।

भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस को कुछ निश्चित सीमाओ मे काम करना पडता है। इस दायित्व बोध का बोझ है जो कि अपनी आरभिक अवस्थाओ युवा सगठनो पर नहीं होगा। भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस को जहा तक सभव हो सके समूचे देश को अपने साथ लेकर चलना है। इसलिए इसकी गति कुछ धीमी पड जाती है। इसके अलावा काग्रेस प्राथमिक रूप से एक राजनीतिक सस्था है और सामान्यतया वह गैर राजनीतिक प्रश्नो के प्रति झुकाव नहीं दिखा सकती।

अत मे, समूचे देश को साथ लेकर चलने के सिलसिले मे काग्रेस को सभी वर्गों, समुदायो और विचारो के लोगो की इच्छाओ और हितो का ध्यान रखना पडता है।

अपने चरित्र और विचारधारा में पूर्णत क्रान्तिकारी युवा सगठन भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की तुलना मे सोच व अमल के स्तर पर अधिक स्वतत्र है। उन्हें फिलहाल अपने साथ पूरे देश को लेना होगा लेकिन उनका प्राथमिक लक्ष्य युवाओ को एकताबद्ध करना ही नहीं है। भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की भाति दायित्व बोध से दबे हुए हैं। फलत वे जितने तेज चाहे चल सकते है। किसी व्यक्ति या समुदाय की परवाह किये बिना निर्भीक रूप से जितने चाहे क्रान्तिकारी बन सकते हैं।

मानव-इतिहास मे यह होता आया है कि मातृसस्था का उग्रवादी धडा आगे चलकर एक स्वतत्र सगठन बना लेता है। जिसके माध्यम से वह अपनी इच्छाओ एव आकाक्षाओ को अभिव्यक्ति दे सके।

दो भिन्न सगठनो का द्वन्द से बचते हुए सामाजिक हित मे कार्य करना इन सगठनो के सदस्यो पर निर्भर करता है। आज हम देखते हैं कि भारत के अनेक भागों में युवा सगठनो और भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस में कोई टकराव नहीं है, वहीं कुछ दूसरे भागों में यह टकराव विद्यमान है।

युवा सगठनो और काग्रेस के बीच अनावश्यक द्वद्व को टालने के सिलसिले मे दो बाते जरूरी है। युवा सगठनो को चाहिए कि वे काग्रेस के साथ मिलकर कार्य करें और काग्रेस को युवा सगठनो की इच्छा-आकाक्षाओ का सम्मान करना चाहिए। सच्चाई यह है कि जहा काग्रेस का तत्र युवाओ के हाथो मे है यह तत्र युवाओ के प्रति सहानुभूति रखता है, वहा प्राय द्वद्व की गुजाइश ही नहीं रहती।

मेरा यह निश्चित मत है कि भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस और युवा सगठनो के कोई पारपरिक विरोध-भाव नहीं है। यदि कोई विरोध या गलतफहमी है तो वह हमारी पैदा की हुई है। दोनो पक्षो की सदाशयता से इसे आसानी से दूर किया जा सकता है। यदि भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस और नौजवान भारत सभा के बीच विरोध-भाव और गलतफहमिया दूर नहीं हुई तो मुझ जैसे पूर्ण कालिक काग्रेस कार्यकर्ता, जो युवा आदोलन के नेता भी रहे है, बडी अडचन मे पड जायेगे।

नौजवान भारत सभा को भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की सापेक्षता मे एक पोषक आदोलन मान लिया जाये तो यह मेरे विचारो को सही अभिव्यक्ति दे सकेगा। युवा आदोलन सख्या की चिन्ता नहीं करेगा। यह समाज मे केवल युवा तत्वो को एक सूत्र मे बाधेगा। यह मात्र राजनीतिक आदोलन नहीं होगा क्योकि इसका सबध मानवीय जीवन के हर क्षेत्र से होगा और यह एक नयी समाजार्थिक व्यवस्था एव राष्ट्र के निर्माण हेतु प्रयत्नशील रहेगा। यह रोजमर्रा की सतही समस्याओ मे दिलचस्पी नहीं लेगा बल्कि हमारे जीवन की गहनतम समस्याओ मे दिलचस्पी लेगा और उनका समाधान करेगा। यदि दोनो ओर सदिच्छा है तो बिना किसी द्वद्व के यह सब किया जा सकता है।

नौजवानो को यह बात समझनी चाहिए कि काग्रेस राष्ट्र को सकेतित करती है। अतएव इस सस्था की महिमा को ठेस पहुचा कर कुछ भी कर पाना सभव न होगा। उन्हे सहयोग की भावना से कार्य करना चाहिए। यदि उनकी ऐसी इच्छा है तो वे काग्रेस के भीतर दक्षिण पथी और पुरातन पथी वर्ग को प्रभावित करने के लिए जिगर के रूप मे काम करे।

काग्रेसजनो को चाहिए कि वे नौजवानो की ओर सदेह व हताशा की दृष्टि से न देखे। उन्हे यह याद रखना चाहिए कि अतत नौजवान ही भावी भारत के उत्तराधिकारी है। उनकी इच्छाओ व आकाक्षाओ की सराहना करनी चाहिए और उनके प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए। यदि दोनो पक्ष मित्रता के भाव से प्रेरित हो मुझे विश्वास है द्वद्व या गलतफहमिया आसानी से दूर हो सकती है।

अखिल भारतीय नौजवान सभा के कराची अधिवेशन के अतिम सत्र मे मैने नौजवानो को परामर्श दिया था कि काग्रेस से बाहर रहकर और विरोध मे काम करने के बजाय उन्हे काग्रेस के वामपक्ष के रूप मे स्वय को सगठित करना चाहिए। इससे उनकी शक्ति बढेगी और काग्रेस की महत्ता कम नहीं होगी। काग्रेस देश को राजनीतिक स्वतत्रता दिलाने का सकल्प ले चुकी है। यह एक प्रगतिशील तथा जनमत के प्रति जवाबदेह सस्था है। इसकी एक गौरवशाली परपरा तथा अतर्राष्ट्रीय ख्याति है। अतीत की सतत पीढियो के महान बलिदानो ने इस सस्था का निर्माण किया है। इसके अतीत और वर्तमान के नेता राजनीतिक क्षितिज के देदीप्यमान नक्षत्र है और अत मे मैं पूछ सकता हू-"आप धरती पर महात्मा गाधी जैसा नेता अन्यत्र कहा पा सकते है?'

यदि काग्रेस भारत के लिए स्वतत्रता का सकल्प न ले चुकी होती, यदि काग्रेस जनमत के प्रति गैर जवाबदेह एक प्रतिक्रिया वादी सस्था रही होती, यदि सभी काग्रेस नेता स्वार्थी और गैर देश प्रेमी रहे होते, तब मैं अपने नौजवान साथियो को काग्रेस से भिन्न रास्ता अपनाने का परामर्श दे सकता था। लेकिन जैसा कि आज लगता है, काग्रेस अन्य लोगो की भाति नौजवानो की भी है क्योकि वे ही भावी भारत के कर्णधार है। मैं यहा तक कहूगा कि यह अन्य लोगो की तुलना मे नौजवानो की अधिक है। अतएव देश भर के नौजवान सच्चे मन से काग्रेस मे शामिल हो जाये, उसके साथ मिलकर काम करे तो काग्रेस की बागडोर जल्द ही उनके हाथो मे आ जायेगी।

मैं कह चुका हू कि नौजवान भारत सभा का आदोलन कोई स्थानीय या प्रातीय गतिविधि नहीं है। मैं इससे आगे यह कहूगा कि यह एक सार्वभौमिक प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है। यहा तक कि स्वतत्र राष्ट्रो मे भी युवा आदोलन का अस्तित्व है। कारण यह है कि इस आदोलन का उद्देश्य हमारे समग्र जीवन-व्यक्तिगत एव सामूहिक की पुनर्रचना है और जब तक इस लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो जाती, युवा आदोलन का अस्तित्व समाप्त नहीं हो सकता।

आदिकाल से ही मानवता चीजो की बेहतर व्यवस्था खोजने के लिए प्रयत्नशील रही है। पूर्व और पश्चिम मे न केवल ऋषियो और स्वप्नद्रष्टाओ द्वारा जारी रही है बल्कि राजनेता एव राजनीतिवेत्ता भी इस खोज मे सलग्न रहे है। हर युग मे एक आदर्श समाज की कल्पना एक भिन्न रूप मे की गयी है लेकिन इसके पीछे मूल भावना एक ही रही है। पूर्व मे लोगो ने "धर्म राज्य" का स्वप्न देखा। पश्चिम मे लोगो ने एक आदर्श गणराज्य का स्वप्न देखा। कभी-कभी लोगो ने प्रकृति की मूल अवस्था मे लौटने का प्रयास किया। दूसरे कालो मे उन्होने सदियो पुराने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढाचे को समूल नष्ट करके अतीत खडहरो पर नव निर्माण करने के प्रयास किये।

एक बेहतर व्यवस्था की खोज मे मानवता युगो-युगो के अधकार और प्रकाश के धुधलके से गुजरती रही है। धर्म दर्शन और साहित्य ने इस धुधलके आदर्श पर कुछ प्रकाश विकीर्ण करने का प्रयास किया है। समय-समय पर इस दिशा मे हर सभ्य देश द्वारा किये गये प्रयत्नो का अध्ययन करना एक रोचक अनुभव है। लेकिन यह अध्ययन हमे तात्कालिक समस्याओ से विचलित कर सकता है। यह मान लेना पर्याप्त होगा कि मानवता आज प्रगति के सिद्धात को अपना चुकी है और इसके विरोधी सिद्धात अर्थात् मनुष्य के पतन और ह्रास के सिद्धात को निरस्त कर चुकी है। यह प्रगति का सिद्धात हमारी चर्चा का प्रस्थान बिन्दु हो सकता है।

यदि हम विभिन्न समाज-राजनीतिक आदर्शों का तुलनात्मक विश्लेषण करें, जिन्होने मानवीय व्यवहार और गतिविधि को प्रेरणा दी है, तो हम कुछ सामान्य सिद्धात तक पहुच जायेगे। आत्म गवेषणा और आत्म निरीक्षण करने के उपरात भी हम ऐसे ही निष्कर्षो पर पहुचेगे। किसी भी मार्ग का अनुसरण करते हुए मैं इसी निष्कर्ष पर पहुचा हू कि न्याय, समानता, स्वतत्रता, अनुशासन एव प्रेम हमारे सामूहिक जीवन का आधार है। इस बात में किसी तर्क की गुजाइश नहीं है कि हमारे समूचे कार्य व्यापार और सबध न्याय की भावना से नियत्रित होते हैं। न्याय और निष्पक्ष होने के प्रयास में हमें सभी मनुष्यों से समान व्यवहार करना होगा। मनुष्य को समान बनाने

के प्रयास मे उसे स्वतत्र करना होगा। समाजार्थिक या राजनैतिक व्यवस्था मे गुलामी की विद्यमानता स्वतत्रता को समाप्त कर देगी और भाति-भाति की असमानताओ को जन्म देगी। अतएव समानता स्थापित करने के सिलसिले मे हमे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सभी प्रकार की गुलामी से मुक्त होना होगा। हमे पूर्ण रूपेण स्वतत्र होना चाहिए। लेकिन स्वतत्रता का अर्थ अनुशासनहीनता और स्वेच्छाचार नहीं है। स्वतत्रता मे कानून की अनुपस्थिति नहीं होती। आत्मानुशासन केवल स्वतत्रता प्राप्त कर लेने के बाद ही आवश्यक नहीं है बल्कि स्वतत्रता के दौरान भी आवश्यक है। अतएव जीवन के आधार के रूप मे एक व्यक्ति या समाज के लिए अनुशासन अनिवार्य है। अत मे, न्याय, समानता, स्वतत्रता और अनुशासन के सिद्धातो मे आदर्श का समावेश होता है। जब तक हम मानवता के प्रति प्रेम की भावना से प्रेरित नहीं होगे तब तक दूसरो के प्रति न्याय नहीं कर सकते, न मनुष्यो के साथ समान व्यवहार कर सकते न स्वतत्रता के लिए त्याग कर सकते और न ही उचित प्रकार का अनुशासन लागू कर सकते। मेरे मतानुसार ये पाच सिद्धात हमारे सामूहिक जीवन का आधार हो सकते हैं। मैं आगे यह भी कहूगा कि यही सिद्धात समाजवाद के आधार हैं जैसा कि मैंने समझा है और मैं भारत मे इसी समाजवाद के स्थान देखना चाहूगा।

मेरी मान्यता है कि भविष्य मे भारत एक समाजार्थिक राजनीतिक सरचना को विकसित करने मे सक्षम हो सकेगा जो कि कई मायनो मे विश्व के लिए एक सबक होगा। जिस प्रकार आज बोलशेविज्म ने मानवता के लिए कई उपयोगी शिक्षाए दी हैं लेकिन मैं यही नहीं मानता कि अमूर्त सिद्धातो को ज्यो का त्यो लागू किया जा सकता है। मार्क्सवादी सिद्धातो को जब रूस मे लागू किया गया तब रूस मे बोलशेविज्म का उदय हुआ। इसी प्रकार जब भारत मे समाजवादी सिद्धात लागू होगे, तब तक विशेष प्रकार का समाजवाद विकसित होगा। इसे हम भारतीय समाजवाद कह सकेगे। वातावरण, जातीय स्वभाव और समाजार्थिक परिस्थितियो को कलम की एक ठोकर से नहीं उडाया जा सकता। अतएव ये परिस्थितिया हर सिद्धात को प्रभावित और परिवर्तित करती है, तब कहीं कोई भी सिद्धात यथार्थ मे रूपातरित होता है।

बाहर से प्रकाश और प्रेरणा ग्रहण करते हुए हम यह बात नहीं भुला सकते कि हमे किसी व्यक्ति का अधानुकरण नहीं करना चाहिए। हमे केवल वहीं बाते आत्मसात करनी चाहिए जो हमारी राष्ट्रीय आकाक्षाओ और राष्ट्रीय प्रतिभा के अनुरूप है। इस कहावत मे बड़ी सच्चाई छुपी हुई है कि- "जो एक व्यक्ति के लिए आहार है वह दूसरे व्यक्ति के लिए विष हो सकता है।" *अतएव मैं उन लोगो को एक चेतावनी देना चाहता हू जो बोलशेविज्म के तरीको का अधानुकरण* करने के लिए लालायित हैं।

बोलशेविज्म के सिद्धातो के बारे मे यह कह सकता हू कि वर्तमान मे ये सिद्धात प्रायोगिक अवस्था से गुजर रहे है। रूस के लोगो मे न केवल मार्क्स के मूल सिद्धात से अलगाव बढने लगा है बल्कि सत्ता प्राप्त करने से पूर्व लेनिन द्वारा प्रतिपादित सिद्धातो से भी अब दूरी बढने लगी है। यह अलगाव रूस की उन विशिष्ट परिस्थितियो की देन है जिन्होने मूल मार्क्सवाद या बोलेशविक सिद्धात मे सशोधन हेतु दबाव डाला। रूस मे बोलेशविक द्वारा अपनाए गए तरीको के बारे मे मैं इतना कह सकता हू कि वे भारतीय परिस्थितियो मे उपयुक्त नहीं है।

इसके परिणामस्वरूप मैं कह सकता हू कि साम्यवाद के सार्वभौमिक एव मानवीय आकर्षण के बावजूद साम्यवाद भारत मे अपना मार्ग नहीं बना सका। इसका मुख्य कारण यह है कि उनके द्वारा अपनाए गए तरीके, एक दूसरे से विच्छिन्नता को प्रेरित करते है, सभावित मित्रो और सहयोगियो को जीतने की प्रेरणा नहीं देते।

सक्षेप मे, जैसा कि मैं कह चुका हू, मैं भारत मे एक समाजवादी गणराज्य चाहता हू। समाजवादी राज्य का वास्तविक रूप क्या होगा–इसकी व्याख्या आज करना सभव नहीं है। हम फिलहाल समाजवादी राज्य के मुख्य सिद्धातो और अभिलक्षणो की रूपरेखा बना सकते है।

मेरा केवल एक सदेश है-सर्वतोन्मुखी स्वतत्रता। हमे राजनीतिक स्वतत्रता चाहिए जिसके द्वारा हम ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्त स्वाधीन भारतीय राज्य के सविधान की रचना कर सके। हर व्यक्ति के मन मे यह बात स्पष्ट होनी चाहिए कि स्वाधीनता का अर्थ ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्ति है और इस बिन्दु पर कोई अस्पष्टता और मानसिक प्रतिबध के लिए गुजाइश नहीं होनी चाहिए।

दूसरे, हम पूर्ण आर्थिक मुक्ति चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को कार्य का अधिकार और जीवन-यापन योग्य मजदूरी मिले। हमारे समाज मे कार्य मे कोई निकम्मा नहीं होगा। सबको समान अवसर होगे। इन सब से ऊपर धन का एक न्यायपूर्ण और समान वितरण होगा। इस प्रयोजन के लिए राष्ट्र को उत्पादन के साधनो पर नियत्रण रखना आवश्यक होगा।

तीसरे हम पूर्ण सामाजिक समानता चाहते है। कोई जाति नहीं होगी, कोई दलित वर्ग नहीं होगे। प्रत्येक व्यक्ति के पास समाज मे समान अधिकार होगे और समान हैसियत होगी। इसके साथ-साथ लिग भेद या सामाजिक हैसियत या कानून के आधार पर कोई असमानता नहीं होगी और हर क्षेत्र मे स्त्री को पुरुष के समान अधिकार प्राप्त होगे।

अतएव हमारे पास समाज के हर समूह की आवाज या व्यक्ति-जो किसी भी रूप मे उत्पीडित है, के लिए सदेश है। हमारे पास राजनीतिक, कार्यकर्ताओ, मजदूरो, भूमिहीन और सम्पत्तिहीन लोगो, समाज के तथाकथित दलित वर्गों और स्त्रियो के लिए एक सदेश है। हमारे समाज मे ये दलित और शोषित वर्ग क्रान्तिकारी शक्तियो का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि हम उन्हे सर्वतोन्मुखी स्वतत्रता का शुभकामना सदेश दे सकते हैं तो मुझे कोई सदेह नही कि वे तुरत ही प्रेरणा लेगे। जब तक इन क्रान्तिकारी तत्वो का उद्धार नहीं होता है, हम स्वतत्रता प्राप्ती नहीं कर सकते। हम क्रातिकारी नखरे को वह नया सदेश दिए बिना नामबद नहीं कर सकते जो मानवीय जीवन को एक नया अर्थ और एक नई दिशा देता है।

पिछले तीस वर्षों और विशेष रूप से दस-बारह वर्षों के दौरान भारत मे अनगिनत पाश्चात्य सिद्धातो या "वादो" की बाढ सी आ गयी है। इनमे से कुछ सिद्धात सही अर्थो मे पाश्चात्य है क्यो कि वे पूर्व से भिन्न पश्चिम की विशिष्ट परिस्थितियो की उपज है। कुछ सिद्धात जैसे समाजवाद केवल सतही रूप से पाश्चात्य हैं। इसलिए कि वे केवल पाश्चात्य लोगो द्वारा प्रचारित किये ग है। जबकि वास्तविकता यह है कि ये सिद्धात भिन्न रूपो और भिन्न रूपो मे पूर्व और पश्चिम दोनो मे मानवता को प्रेरणा देते रहे है।

पश्चिमी विचारो की अनायास बाढ से एक वैचारिक उत्तेजना और कभी-कभी एक वैचारिक विभ्रम की स्थिति पैदा हो गयी। लोग एकदम यह निर्णय नहीं ले सके कि उन्हे क्या ग्रहण करना और क्या त्यागना है। लेकिन अब हम धीरे-धीरे अपना मार्ग खोज रहे है और हम स्वस्थ और वाछित वृत्तियो को समझने लगे है। हम जो ग्रहण कर रहे है वह मात्र विदेशी विचारो का अधानुकरण नहीं है, बल्कि पूर्व एव पश्चिम का सश्लेषण है। इस सिलसिले मे धीरे-धीरे एक मान्यता और हमारे भीतर घर करती जा रही है। सबसे पहले हम उसी सिद्धात को आत्मसात करने के लिए लालयित होगे जो बहुत गहरे मे हमारी मुक्ति से जुडा हुआ है। उदाहरण के लिए आज ऐसे लोग भी है जो यह महसूस करते है कि हम रूस के बोलशेविज्म पर ईमानदारी के साथ अमल करे तो भारत की रक्षा की जा सकती है और हमारा अस्तित्व सार्थक हो सकता है। लेकिन अब यह आस्था क्षीण हो चली है। पहली बात यह है, यह महसूस किया जाने लगा है कि जाति के स्वभाव समाजार्थिक परिस्थिति और वातावरण की अनदेखा करके एक अमूर्त सिद्धात को किसी देश मे लागू नहीं किया जा सकता है, इन कारको के रहते हुए एक सिद्धान्त किसी देश मे अनुपयुक्त साबित हो सकता है जबकि भिन्न परिस्थितियो मे यह उपयुक्त साबित हो सकता है। दूसरे हम यह महसूस करने लगे है कि सामान्यतया हम जिन "माडलो" को अपनाने की होड करने लगते है वे अपने-आप मे एक अपूर्ण प्रयोग हैं और कोई नहीं जानता है कि ये प्रयोग किस रूप मे पूर्ण होगे।

इन तमाम कारणो से हम अपनी प्रगति मे मानवीय तत्व के मूल्य एव महत्व को समझने लगे है, हमने यह सोचना शुरू कर दिया है कि कोई सिद्धात हमारी रक्षा नहीं कर सकता जब तक कि हम अपने समाज मे एक बेहतर मनुष्य की रचना नहीं करते। यह इतिहास का एक अनुभव भी है और इसीलिए युगो-युगो मे सिद्धात की खोज के साथ-साथ बेहतर मनुष्य की खोज भी जारी रही है। कभी ग्रीक दार्शनिको ने श्रेष्ठ मनुष्य की खोज की, कभी भारतीय मनीषियो ने गुरू' या "अवतारो" को खोजा और फिर कभी जर्मन नीत्शे ने अतिमानव की तलाश की। अतएव एक बार फिर यह बात हमे समझ लेनी चाहिए कि कोई भी आयातित या अपनी ही मिट्टी से उपजा हुआ सिद्धात या "वाद" हमारी रक्षा नहीं कर सकता जब तक कि हम अपेक्षाकृत एक श्रेष्ठ और आदर्श मनुष्य की रचना नहीं कर लेते।

सामाजिक या आर्थिक या राजनीतिक सस्थाए अनुकूल परिस्थितियो का निर्माण करके मानवीयता के विस्तार और चारित्रिक विकास मे सहायक तो हो सकती हे लेकिन अत प्रेरणा को जन्म नहीं दे सकती। यह अत प्रेरणा ही हमे मनुष्य बनाती है। मनुष्य इस अत प्रेरणा की ही बाह्य अभिव्यक्ति है। अत प्रेरणा या तो जन्मजात होती है या एक महतर आत्मा से गृहीत होती है या हमारे भीतर की जिजीविषा से उत्पन्न होती है।

नौजवान भारत सभा आदोलन या युवा आदोलन जैसे देशव्यापी सगठनो के केन्द्र समूचे देश मे होने चाहिए। इन केन्द्रो मे हमारे बीच से श्रेष्ठ लोगो को लेना चाहिए। नवयुवक और नवयुवतियो के प्रशिक्षण का प्रबध किया जाना चाहिए जो कि हमारे भावी कार्यकर्ता होगे। इसे एक बहुमुखी प्रशिक्षण होना चाहिए जिसमे युवाओ की शारीरिक बौद्धिक और नैतिक विकास की सभावनाए हो। जब तक हमारे पास इस प्रयोजन को लेकर सस्थाओ का ताना बाना नहीं होगा युवा आदोलन का विकास कदापि नहीं होगा।

जब ये कार्यकर्ता प्रशिक्षण प्राप्त कर लेगे और कार्य हेतु सक्षम हो जायेगे, तब वे बाहर जाकर देश को सगठित कर लेगे।

देश को सगठित करने हेतु मैं निम्नलिखित कार्यक्रम सुझाउगा -

1 समाजवादी आधार पर किसानो और मजदूरो का सगठन।

2 कठोर अनुशासन के तहत स्वय सेवको के दलो के रूप मे युवाओ का सगठन।

3 सभी प्रकार के सामाजिक और धार्मिक अधविश्वासो के उन्मूलन हेतु व्यापक आदोलन।

4 ग्रामीण महिलाओ के बीच स्वाधीनता के सिद्धात और नये कार्यक्रम का प्रचार करने हेतु महिला सघो का गठन।

5 नयी नीति और कार्यक्रम के प्रचारार्थ नये साहित्य की रचना।

6 युग के नये विचार को लोकप्रिय बनाने हेतु देशव्यापी प्रचार।

जब हमारे युवा कार्यकर्ता विधिवत् रूप से प्रशिक्षण प्राप्त कर ले और नये विचार से ओतप्रोत हो जाये, तब उन्हे अपने समाज के क्रान्तिकारी तत्वो को आदोलित करने और समाज के अपेक्षाकृत पिछडे हुए वर्गो के गतिविधिया चलाने का काम हाथ मे लेना चाहिए। मुझे लेश मात्र भी सदेह नही कि समानता और सर्वांगीण स्वतत्रता का यह नवीन सदेश प्राणवायु का काम करेगा और समूचे राष्ट्र को प्रेरणा देगा। हमारे देश जैसे विशाल देश मे जनता के हृदय मे स्वतत्र होने की इच्छा जितनी जल्दी उत्पन्न होगी, वह उतनी ही जल्दी दासता की बेडियो से मुक्त हो जायेगी।

मित्रो, मैं आपका काफी मूल्यवान समय ले चुका हू, मैं समझता हू यह पर्याप्त है। मै एक बार फिर आपका धन्यवाद करता हू कि आपने मुझे अपने बीच आमत्रित किया और विचार विनिमय का अवसर दिया। मुझे पूर्ण आशा है कि जव हम यहा से एक नया सकल्प और नयी प्रेरणा लेकर वापस जायेगे तब हम पूरी गभीरता और अदम्य साहस के साथ अपना कार्य कर सकेगे। हमारे युवाओ के मन मे एक पूर्ण स्वतत्र और मुक्त भारत की आकाक्षा उत्पन्न होनी चाहिए। उनके भीतर आजादी का नशा हो। भारत के समक्ष एक महान चुनौतीपूर्ण कार्य है-उसे अपनी रक्षा करना है और इसके बाद मानवता को भी बचाना है। आज भारत विश्व भर मे साम्राज्यवाद की डाट है। अतएव भारत की स्वतत्रता विश्व से साम्राज्यवाद का अत कर देगी। इसलिए भारत की रक्षा करना जरूरी है।

इसके अलावा उसकी रक्षा करना इसलिए भी जरूरी है कि सस्कृति और सभ्यता के क्षेत्र मे भारत के योगदान के अभाव मे विश्व अधूरा है। मैं जोखिम उठाकर और आलोचना का पात्र बनने के बाद भी हमेशा यह बात कहता रहा हू कि भारत को अभी विश्व के लिए बहुत कुछ नवीन और मौलिक चीजे देना है और समूचा विश्व उत्सुकता के साथ उस उपहार की प्रतीक्षा कर रहा है। भारत एक अतिम उपहार के रूप में विश्व के लिए एक नवीन समाजार्थिक व्यवस्था एव राष्ट्र प्रदान करेगा जो कि समूची मानव जाति के लिए एक शिक्षा होगी। मित्रो अतएव उठो और स्वतत्र भारत का सकल्प करो अपने मन मे यह दृढ विश्वास रखो कि भारत की स्वतत्रता का अर्थ मानवता की रक्षा है।

सम्पूर्ण बंगाल के कार्यकर्ताओ से अपील

बगाल प्रदेश काग्रेस समिति से सबधित वक्तव्य'

2 जून, 1931

मैं समस्त बगाल के काग्रेसजनो का आभारी हू कि बगाल प्रदेश काग्रेस समिति की कार्यकारिणी और उसके समर्थको के विरुद्ध चल रहे निन्दा अभियान के बावजूद वे बडे ही शानदार तरीके से बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के इर्द-गिर्द एकत्र हुए है। अब तक प्राप्त सूचनाओ से यह पता चला है कि बगाल के 32 मे से 26 जिलो मे हर महीने चुनाव हो रहे है। केवल छ जिलो की काग्रेस समितियो ने रिटर्निंग आफिसरो को सहयोग करने से इन्कार किया है। हमे यह सूचना भी मिली है कि इन छ जिलो मे जिला काग्रेस समितियो को लेकर भारी जन-असतोष है और जिला काग्रेस समितियो के विद्रोह के बावजूद चुनाव मे काटे की लडाई की उम्मीद है। जैसोर जैसे जिलो मे उप-सभागीय और शाखा काग्रेस समितिया जिला काग्रेस के खिलाफ प्रस्ताव पारित कर चुकी हैं। यह भी लगता है कि उपर्युक्त छ जिलो मे से कुछ जिलो (जैसे ढाका) मे जिला काग्रेस समिति के समर्थक चुनाव मे भाग ले रहे है और वे नामाकन पत्र भर चुके है लेकिन श्री सेनगुप्ता के विद्रोह के कारण अचानक उनका रवैया बदल गया है। बगाल प्रदेश काग्रेस यह निर्णय ले चुकी है कि इन छहो जिलो मे उचित रूप से चुनाव कराये जाने है। यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि जिस क्षण मे श्री सेनगुप्ता ने बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के खिलाफ बगावत शुरू की है सभी 32 जिले प्रातीय चुनावो को लेकर बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के निर्देशो का पालन कर रहे है।

मै समस्त बगाल के काग्रेसजनो से अपील करता हू कि हमारे विरुद्ध प्रेस और मच के स्तर पर चल रहे निन्दा अभियान के बावजूद वे अपने मन मे धीरज बनाये रखे। मै सबको आश्वस्त करता हू कि यदि पूरे प्रात से प्रातीय चुनावो की अनियमितताओ को लेकर कोई भी घटना बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के ध्यान मे लायी जायेगी तो समिति इस पर शात मन से विचार करेगी और यह ध्यान रखेगी कि किसी को शिकायत का कोई मौका न मिले। जहा तक निन्दा अभियान की बात है, मेरी सबको यही सलाह है कि इसकी उपेक्षा की जाये ताकि इसमे लिप्त लोग अभियान को बद करने के लिए बाध्य हो जाये। जनता हमारे पिछले त्याग और सेवाओ का ध्यान रखते हुए हमारे बारे मे फैसला करेगी। हमारा अत करण स्वच्छ है और हम जानते है कि निहित स्वार्थो के शोर-शराबे के बावजूद देश का दिल मजबूत है और देश हमारे साथ है।

गैर जिम्मेदाराना आरोप

देशवासियो से एक अपील, 11 जून, 1931

कार्यसमिति ने यह उचित निर्णय किया है कि बगाल का विवाद किसी मध्यस्थ के पास भेज देना चाहिए जिसका निर्णय अतिम होगा। समिति ने यह निर्णय भी लिया है कि बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के चुनाव जारी रहेगे जब तक कि मध्यस्थ स्थिति का जायजा लेते हुए कोई अलग हटकर निर्देश नहीं देता है। सभवतया अब तक अधिकाश जिलो मे चुनाव सम्पन्न हो चुके है और केवल छ जिलो मे चुनाव शेष रह गये है।

मैं हर सबधित व्यक्ति से चुनाव मे सहयोग करने की अपील करता हू जिन्हे चुनाव को लेकर कोई भी शिकायत है वे मध्यस्थ श्री अनय को अपनी परेशानी से अवगत कराये। सामान्य परिस्थितियो मे बगाल प्रदेश काग्रेस समिति शिकायतो की जाच करेगी और उचित न्याय देने की कोशिश करेगी। अब कार्य समिति ने हस्तक्षेप किया है इसलिए हम यह दायित्व मध्यस्थ के लिए सहर्ष सौपते है। कार्य समिति ने इच्छा व्यक्त की है कि प्रेस और मच के स्तर पर हमले बद होने चाहिए। मुझे कहते हुए गर्व है कि हमारी पार्टी पिछले पखवाडे के दौरान तरह-तरह की उत्तेजना के बावजूद धैर्य का परिचय देती रही है। लेकिन मै आज और अधिक धैर्य की उपेक्षा करूगा। हमारा पक्ष मजबूत है, हम दूसरे पक्ष पर हमला करने की कोशिश नहीं करेगे और अचानक निन्दा नहीं करेगे। इस प्रकार की कार्यनीति हमारे लक्ष्य को लाभ पहुचाने के बजाय अनावश्यक हानि पहुचायेगी।

हमे मध्यस्थ को कार्य करने के लिए बगाल मे एक सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने का यथासभव प्रयास करना चाहिए। यदि हम ऐसा कर पाते है तो मध्यस्थ को कार्य करना आसान होगा और हमारी कठिनाइयो का तत्काल निवारण हो जायेगा। आज की कटुता आगे लम्बे समय तक जारी नहीं रहनी चाहिए। यदि हम अपने देश से प्रेम करते हैं तो हमे जल्द विवाद सुलझाने की चेष्टा करनी चाहिए। यदि हम आज से ही बगाल मे सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने का सकल्प ले ले तो हम इस कार्य को कर सकते है।

मध्यस्थ का निर्णय जो भी हो वह अतिम होगा। बगाल निष्ठा के साथ उस निर्णय को स्वीकार करेगा। केवल ऐसा करने पर ही हम पुरानी कटुताओ का अत कर सकते है और बगाल के राजनीतिक इतिहास मे एक नया अध्याय जोड सकते हैं।

हम एक नहीं अनेक कारणो से शुरू से ही इस मध्यस्थता का स्वागत करते रहे है। हमारे खिलाफ सार्वजनिक रूप से गभीर आरोप लगाये गये। हम पर रिश्वत, भ्रष्टाचार, धोखाधडी, ठेकादारी आदि जैसे आरोप लगाये गये। यह त्रासद है कि इतने वर्षो की जन सेवा के बाद जनता की अदालत मे हमारे ऊपर ऐसे जघन्य अपराधो की आरोप लगाये गये। हम अब तक इन आरोपो को मित्रभाव से लेते रहे। लेकिन अब हम न्याय चाहते है आखिरकार हमने अपने प्रिय देश के लिए कुछ तो त्याग किया है और कष्ट सहे है और मेरे अन्य सहकर्मियो के त्याग के मुकाबले मेरा त्याग फीका पड जाता है जो कि आज भी सींखचो के पीछे जेल मे बने हुए है। यदि हमने अतीत मे भारत

के स्वाधीनता आदोलन को आगे बढाने की दिशा मे कुछ कार्य किया है तो हम भविष्य मे और अधिक करने की आशा करते है, क्योकि हम जीवन की शुरूआत से ही स्वय को देश की सेवा के लिए समर्पित कर चुके है। क्या यह उचित और न्याय है कि अपने सार्वजनिक जीवन की इस अवस्था मे हमे रिश्वत भ्रष्टाचार, धोखाधडी और ठेकेदारी जैसे आरोपो का उत्तर देना पडे? क्या हम अपने प्रिय देशवासियो से सुरक्षा की अपेक्षा नहीं कर सकते? भविष्य मे हम जिनके सेवक बने रहने की आशा करते है, एक काग्रेस कार्यकर्ता की अदालत मे किसी सुधार की आशा नही है। अतएव मैं स्नेह पूर्ण सुरक्षा प्राप्त करने के लिए अपने देशवासियो की ओर देखता हू। मैं कार्य समिति को बता चुका हू कि यदि श्री सेनगुप्ता उन आरोपो को सही सिद्ध कर देते है जो कि उन्होने हम पर लगाये है, तो हम सार्वजनिक रूप से स्वय को जन सेवा हेतु अयोग्य घोषित कर देंगे। दूसरी ओर इन आरोपो को सिद्ध करने मे उनके असमर्थ रहने पर हम कार्य समिति की ओर से पूर्ण सुरक्षा और विपुल सहयोग की अपेक्षा करेंगे। पिछले वर्षो मे हमने अपनी सामर्थ्यानुसार सेवाए अर्पित की है और हम भविष्य मे इन सेवाओ को जारी रखने की इच्छा रखते है यह हमारे देशवासियो की मर्जी है कि उन्हे हमारी सेवाए चाहिए या नहीं? यदि वे चाहते है तो हमारे खिलाफ गैर जिम्मेदारी से लगाये गये आरोपो का उपयुक्त उत्तर देते हुए एक बार फिर हमारे प्रति स्नेह एव विश्वास व्यक्त करे।

मजदूर सघ और बेरोजगारी की समस्या

अखिल भारतीय मजदूर सघ काग्रेस (एटक) के सत्र मे अध्यक्षीय भाषण, कलकत्ता, 4 जुलाई, 1931

मुझे इस बात मे सदेह है, यदि हम दावा करते है कि पिछले अठारह महीनो मे मजदूर सघ ने अपनी ताकत बढाने मे कोई सफलता प्राप्त की है। बल्कि मैं यह कहना चाहूगा कि इस दौरान आदोलन को गहरा धक्का लगा है। इस क्षति के अनेक कारण रहे है लेकिन मेरे विनम्र मत मे दो कारण बहुत महत्वपूर्ण है। पहला कारण–नागपुर मे पैदा हुई फूट है और दूसरा कारण है सविनय अवज्ञा आदोलन की शुरूआत से उत्पन्न मार्गातरण। हमारे कुछ साथी यह सोच सकते है कि इस फूट ने हमे कमजोर नहीं किया। लेकिन मैं इस विचार से सहमत नहीं हू क्योकि कम से कम इस समय मेरे मन मे कोई सदेह नहीं है कि हम इस फूट से ही कमजोर हुए है। अतएव मै उन लोगो मे से एक हू जो फूट को लेकर गभीरता से खेद व्यक्त करते है और यदि सभव हुआ तो हम अपने कार्यकर्ताओ को एकजुट करेंगे। मैं इस स्थिति का हृदय से स्वागत करूगा। जहा तक दूसरे कारक की बात है मै ऐसा सोचता हू कि सविनय अवज्ञा आदोलन के बडे आकर्षण के कारण देश के जनता का ध्यान मजदूर सघ आदोलन की ओर से हट गया। भिन्न परिस्थितिया मे मजदूर सघ आदोलन, सविनय अवज्ञा आदोलन से लाभान्वित हो सकता था और दूसरे शक्ति प्राप्त कर सकता था। लेकिन इस मौके पर मजदूर सघ आदोलन की सामान्य प्रगति भी बाधित हो गयी है।

विभिन्न व्यक्तियो और समूहो द्वारा मजदूर सघ के कार्यकर्ताओ मे एकता स्थापित करने के प्रयास समय-समय पर किये जाते रहे है। अतएव मैं यह बात साफ तौर पर कहना चाहता हू कि वे मुख्य समस्याए क्या है जिनसे हम जूझ रहे है और इस हालत मे हम किस तरह एकता कायम कर सकते है। मुख्य मुद्दे ये है - (1) विदेशी सबद्धता का प्रश्न (2) जेनेवा मे प्रतिनिधित्व (3) मजदूर सघ काग्रेस के प्रस्तावो का आदेशात्मक चरित्र।

पहले मुद्दे के बारे मे मेरा यह विचार है कि फिलहाल हमे किसी विदेशी सबद्धता की जरूरत नही है। भारतीय मजदूर सघ आदोलन अपनी देख-रेख स्वय करने मे सक्षम है। हमे हर क्षेत्र मे सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए और यहा तक कि दुनिया के किसी भी कोने से मिलने वाली सहायता स्वीकार करनी चाहिए। लेकिन हमे एम्सटर्डम या मास्को के निर्देशो के आगे आत्म समर्पण नहीं करना चाहिए। भारत अपने तरीके खुद खोजेगा और अपने वातावरण एव अपनी विशिष्ट आवश्यकताओ के अनुरूप खुद को ढालेगा।

जेनेवा मे प्रतिनिधित्व को लेकर मुझे डर है कि हमने इस मुद्दे को जरूरत से ज्यादा अहमियत दे दी है। हमारे लिए यह बेहतर होगा कि इस प्रश्न पर हम खुले मन से सोचे और हर वर्ष इस प्रश्न पर एक निर्णय ले। हमे समय से पहले एक ही बार मे यह निर्णय नहीं ले लेना चाहिए कि हम जेनेवा मे कोई प्रतिनिधि भेजेगे या नही। व्यक्तिगत रूप से मुझे जेनेवा मे कोई विश्वास नहीं है। फिर भी यदि कोई साथी इस प्रश्न पर हर वर्ष निर्णय लेने की तज्जवीज से सतुष्ट है तो मुझे इसमे कोई आपत्ति नहीं है।

मजदूर सघ काग्रेस के प्रस्तावो के आदेशात्मक चरित्र के बारे मे मुझे डर है कि यदि मजदूर सघ को काग्रेस के वजूद मे रहना है और काम करना है तो किसी तरह का समझौता नहीं हो सकता। यदि हमे देश के मजदूर वर्ग की हमदर्दी हासिल करनी है तो मजदूर सघ काग्रेस के प्रस्तावो की बाध्यता काग्रेस से सबद्ध सभी सघो पर होनी चाहिए। मजदूर सघ काग्रेस को एक शिक्षित सघ या एक सर्वदलीय सभा की तरह मान लिया जाना एक आत्मघाती कदम होगा।

मजदूर सघ एकता के प्रश्न पर मेरी स्थिति बहुत स्पष्ट है। मैं एकता चाहता हू क्योकि इसके द्वारा हम एक सुदृढ और सशक्त सघ बना सकते है। यदि हम दुबारा लडते है और बट जाते है तब हमे जोड-तोड की एकता के प्रयासो की फिलहाल जरूरत नहीं है। मजदूर सघ काग्रेस एक सार्वजनिक सम्पत्ति है। काग्रेस मे शामिल होने और अपनी उपस्थिति जताने हेतु सभी सघो का स्वागत है। यदि इसके द्वारा काग्रेस का पद किसी दल विशेष के हाथो मे चला जाता है तब कोई वैधानिक रूप से आपत्ति नहीं कर सकता। अतएव मैं सभी सघो को मजदूर सघ काग्रेस मे शामिल होने और कार्यकारिणी को कब्जाने के लिए आमत्रित करता हू यदि उनकी ऐसी इच्छा हो।

हमारे कुछ कार्यकर्ता महात्मा गाधी और लार्ड इर्विन के बीच हुए समझौते के प्रति काफी लगाव महसूस करते है। मैं इस समझौते पर नुक्ताचीनी नहीं करना चाहता क्योकि यह शव की चीर फाड करने जैसा होगा। समझौता सम्पन्न हो चुका है और अब हम उसे भुला सकते है।

हम भविष्य की अपेक्षाओ के अनुरूप स्वय को तैयार करते हुए अपने समय एव ऊर्जा का सदुपयोग कर सकते है। पिछले वर्ष एक सस्था के रूप मे मजदूर सघ काग्रेस का सविनय अवज्ञा आदोलन मे कोई लेना-देना नहीं था। लेकिन अब यह आदोलन मे से अपेक्षाकृत एक बडा हिस्सा ले सकती है जो कि मिलने वाला है। इस हिस्से को प्राप्त करने के सिलसिले मे आज से ही प्रयास शुरू कर देना चाहिए।

भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के कराची अधिवेशन मे एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसे अब मौलिक अधिकार प्रस्ताव के नाम से जाना जाता है। इस प्रस्ताव के विषय मे विभिन्न मत प्रकाश मे आये है। कुछ लोगो ने अनुपयुक्त और असतोषजनक बताते हुए इसकी भर्त्सना की है जब कि कुछ लोगो ने इसे सार्थक और भावपूर्ण बताया। मुझे ये दोनो दृष्टिकोण एकागी प्रतीत होते है। फिर भी यह प्रस्ताव असतोषजनक हो सकता है किन्तु इसमे कोई सदेह नही कि यह मजदूर व किसानो की मान्यता और समाजवाद की दिशा मे एक निश्चित कदम के सदर्भ मे पुरानी परपरा से एक प्रस्थान को सूचित करता है। इस प्रस्ताव का मूल्य इसके बाह्य रूप मे न होकर इसके आतरिक रूप मे है। इस प्रस्ताव की वास्तविक अतर्वस्तु की अपेक्षा इसकी सभावनाए अधिक प्रभावित करती है। जब तक सतोष नहीं होता तब तक इस प्रस्ताव की अतर्वस्तु मे सशोधन परिवर्धन जारी रहेगे। हमे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि इस उद्देश्य के लिए पहले ही एक समिति कार्य कर रही है।

इस समय देश की जनता गोलमेज सम्मेलन के परिणाम की प्रतीक्षा कर रही है। मुझे नही लगता कि अग्रेजी हुकूमत की वर्तमान मानसिकता के रहते हुए इस सम्मेलन का कोई सतोषजनक परिणाम निकलेगा। आगे गोलमेज सम्मेलन कुछ इस प्रकार का है कि इसमे जायज मत्रो को बलपूर्वक रखा जाना अत्यत कठिन है। जब सम्मेलन का परिणाम घोषित हो जाये तब जनता जैसा चाहे उचित कदम उठाये। जनता को चाहिए कि वह उस मनोवैज्ञानिक क्षण को न खोये।

काग्रेस के नागपुर सत्र मे बिटले कमीशन के बहिष्कार का निर्णय लिया गया था। कमीशन ने अपनी रिपोर्ट जारी कर दी है। यदि मैं एक तर्कशास्त्री के रूप मे सोचता तो मुझे इस रिपोर्ट की एकदम उपेक्षा कर देनी चाहिए थी लेकिन मै ऐसा नहीं करूगा। वह चाहे अच्छा हो बुरा हो चाहे नगण्य हो हमे ऐसे किसी दस्तावेज की अपेक्षा नही करनी चाहिए जो जनता के सामने आ चुका है और जनता जिसका गभीर रूप मे नोटिस लेने व आलोचना करने के लिए बाध्य हो।

मैं शुरू मे ही यह कहना चाहूगा कि किसी आयोग विशेष की रिपोर्ट का उसकी अतर्वस्तु मे निहित नहीं होता बल्कि बाद मे सामने आने वाली इसके परिणामो मे निहित होता है। क्या आयोग पर होने वाले व्यय न्यायसगत होगा? यह वह प्रश्न है जिसे एक सडक का आदमी भी पूछेगा। हम भारतीय ऐसी अनेक रिपोर्ट देख चुके है जो महज रिपोर्ट साबित हुई है और जिनका कोई सार नहीं निकला है। हम ऐसी रिपोर्टो के परिणाम को लेकर शकालु और सदेहवादी हो गये है। मै यहा तक कह सकता हू कि पिछले वर्षो मे कुछ आयोगो की रिपोर्टो की खुलकर भर्त्सना की गयी क्योंकि सरकार इन रिपोर्टो की अच्छी बातो को लागू करने मे भी असफल साबित हुई।

मौजूदा रिपोर्ट मे मजदूरो के कल्याण कार्यो की समस्या पर पर्याप्त बल दिया है। यद्यपि मैंने ब्रिटले कमीशन के बहिष्कार के पक्ष मे मतदान किया है लेकिन मुझे यह कहने मे कोई सकोच नहीं है कि यदि इस सिफारिश को लागू किया जाता है तो आज के हालात मे यह एक सुधार होगा। फिर भी मैं जोर देकर कहता हू कि इस रिपोर्ट मे अनेक महत्वपूर्ण प्रश्नो पर उचित रूप से विचार नही किया गया है। आज मजदूर कार्य का अधिकार चाहते है। नागरिको को रोजगार मुहैया कराना राज्य की जिम्मेदारी है। यदि राज्य इसमे असफल होता है तो उसे मजदूरो के भरण-पोषण की जिम्मेदारी लेनी होगी। दूसरे शब्दो मे मजदूर नागरिक केवल मालिक की दया पर नहीं है कि मालिक उन्हे अपनी इच्छानुसार सडक पर खदेड दे और भूखा मरने के लिए छोड दे। कठोर नियमो के लागू होने के कारण देश का उद्योग सकट मे है। मैं मालिको की कठिनाइयो से अनभिज्ञ नही हू। उन्हे अपने पुराने कर्मचारियो को रख पाना असभव सा हो गया है और वे छटनी पर मजबूर हो गये है। लेकिन यहा तक कि इन मामलो मे मालिक अपनी जिम्मेदारी से बरी नही हो सकता और मालिक से यह कहा जाना चाहिए कि अपने अच्छे दिनो मे उसने गरीब मजदूरो की मदद से अपार धन कमाया है तब अपने बुरे दिनो मे वह मजदूरो को उनके भाग्य मे नहीं छोड सकता। जब तक इस छटनी की समस्या का सतोषजनक समाधान नहीं होता तब तक इस देश मे औद्योगिक शाति स्थापित नहीं हो सकती।

जैसे एक व्यक्ति कार्य के अधिकार का दावा कर सकता है वैसे ही वह जीवन-यापन योग्य मजदूरी का दावा भी कर सकता है। क्या आज भारत मे कारखाने के मजदूर को जीवनयापन योग्य मजदूरी मिलती है। जूट के कारखानो और कपडो मिलो को देखिए। वे अपने अपार लाभ का कितना अश गरीब और उत्पीडित मजदूरो के कल्याण पर खर्च करते है? मैं जानता हू कि वे यह कहेगे कि बाद मे उनके दुर्दिन आ गये। उनकी यह बात मानते हुए भी क्या हम यह पूछ सकते कि पिछले इतिहास के दौरान उन्होने कितना सग्रह कर लिया है? मैं यहा भारतीय रेलवे के बात नहीं भुला सकता। आजकल वे कठोर नियम लागू करने मे व्यस्त है लेकिन आजकल निर्मम छटनी करने पर तुले हुए है उनकी उन मजदूरो के प्रति कुछ जिम्मेदारी बनती है जिनके द्वारा उन्होने पहले धन कमाया है। हम चाय बागान के मालिको का उदाहरण ले सकते है। उन्होने कितना मुनाफा कमाया है और आज वे अपने मजदूरो के साथ कैसा व्यवहार कर रहे है? क्या यह तथ्य नही है कि कई इलाको मे गरीब मजदूरो को पुराने जमाने की दासता की स्थिति मे ढकेल दिया है। तब भारतीय मजदूर के लिए जीवन यापन योग्य मजदूरी और शालीन व्यवहार प्राप्त करने की दिशा मे श्रम आयोग ने क्या सिफारिश की? उन्होने जूट और कपड़ा उद्योग मे न्यूनतम मजदूरी का प्रावधान किया है। लेकिन क्या हम आश्वस्त हो जाये कि न्यूनतम मजदूरी का अर्थ जीवन-यापन मजदूरी है।

मैं व्हिटले कमीशन की विभिन्न सिफारिशो के विस्तार मे नहीं जाना चाहता। फिर भी मैं एक बिन्दु की ओर सकेत करना चाहूगा जो ऊपर से देखने से अमहत्वपूर्ण लगता है लेकिन भारत मे मजदूर आदोलन के विकास के सदर्भ मे काफी दिलचस्प है। रिपोर्ट के मुताबिक "मजदूर सघ अधिनियम की धारा 22 मे इस प्रकार का सशोधन होना चाहिए कि एक पजीकृत मजदूर सघ के पदाधिकारियो मे से कम से कम दो तिहाई लोग उस उद्योग के कर्मचारी होने चाहिए जिसमे

कि वह सघ सबधित है। आयोग को यह जानना चाहिए कि भारत मे बाहरी लोग या लोग या कर्मचारी अक्सर मजदूर सघ के पदाधिकारी चुने जाते है क्योकि मालिक लोग मजदूरी करने वाले पदाधिकारियो किसी न किसी थोते बहाने उत्पीडित करते रहते है अतएव यदि कर्मचारियो को पदाधिकारी बनने पर बाध्य किया गया तब मालिको द्वारा उनके उत्पीडन को रोकने के कुछ प्रबध किये जाने चाहिए। अन्यथा उत्पीडन की मौजूदा नीति जारी रही तो कर्मचारियो का पदाधिकारी बनना असभव हो जायेगा।

साराश यह है कि बेराजगारी, छटनी और मजदूरो के लिए जीवन-यापन योग्य मजदूरी की समस्याओ से उचित ढग से नहीं निबटा गया। आयोग द्वारा अपनाये गये सुधार कार्यक्रम मे कई बिन्दु बडे आकर्षक है लेकिन इस कार्यक्रम को कौन लागू करने वाला है? क्या मौजूदा श्रम विरोधी सरकार से कुछ अपेक्षा की जा सकती है? अतएव श्रमिक समस्या अततोगत्वा एक राजनीतिक समस्या है। जब तक भारत मे समाजवादी न सही-एक जनतात्रिक सरकार नहीं बन जाती तब तक मजदूरो को लाभ पहुचाने वाला कोई सुधार-कार्यक्रम लागू नहीं हो सकता। रिपोर्ट से यह बात स्पष्ट है कि व्यावहारिक रूप से हर बात सरकार पर छोड दी गयी है। रिपोर्ट मे इस सबध मे कुछ नहीं कहा गया है कि मजदूर किस प्रकार सरकारी मशीनरी को हस्तगत या प्रभावित कर सकते हैं जब तक ऐसा नहीं हो जाता रिपोर्ट का मजदूरो के लिए कोई लाभ नहीं होगा। आयोग को नये सविधान के सिलसिले मे वयस्क मताधिकार की सिफारिश करनी चाहिए। इसके साथ-साथ या विकल्प के रूप मे प्रातीय और केन्द्रीय विधायिका मे मजदूर प्रतिनिधियो के लिए कुछ सीटे आरक्षित की जा सकती है।

पिछले वर्षो के अस्थाई गतिरोध के बावजूद मजदूर सघ आदोलन अवश्य फलेगा-फूलेगा। विचारो की विभिन्न धाराए और उपधाराए कभी-कभी मजदूर सघ के कार्यकर्ताओ के सामने किकर्तव्यविमूढता की स्थिति पैदा कर देते है कि वे किस मार्ग का अनुसरण करे। एक ओर दक्षिण पथी लोग है जो सुधार कार्यक्रम को सर्वोपरि मानते है। दूसरी ओर हमारे वामपथी मित्र है यदि मै उन्हे सही समझा हू, जो मास्को के अनुयायी है। हम उनके विचारो से सहमत हो या न हो लेकिन हम उन्हे समझने मे असफल नहीं हो सकते। इन दोनो समूहो के बीच मे एक समूह और है जो समाजवाद-तेजस्वी समाजवाद का आकाक्षी है लेकिन वह चाहता है कि भारत को अपना निजी समाज और निजी पद्धतिया विकसित करनी होगी। मै इस समूह के साथ जुडने का विनम्र दावा करता हू।

मेरे मन मे कोई सदेह नहीं है कि भारत के साथ-साथ विश्व की मुक्ति समाजवाद पर निर्भर करती है। भारत को दूसरे राष्ट्रो से लाभ उठाना चाहिए लेकिन भारत को अपनी आवश्यकता और परिवेश के अनुरूप अपनी पद्धतिया विकसित करनी चाहिए। किसी भी सिद्धात को व्यवहार मे लाते समय आप भूगोल या इतिहास की कदापि उपेक्षा नहीं कर सकते। यदि आप ऐसा करेगे तो असफल होगे। अतएव भारत को अपना समाजवाद विकसित करना चाहिए। जब सारी दुनिया समाजवाद का प्रयोग कर रही है, फिर हम क्यो न करे? यह हो सकता है कि भारत जिस समाजवाद को विकसित करेगा, वह कुछ नवीन होगा और विश्व के लिए कल्याणकारी होगा।

मजदूर संघ आदोलन के लिए अपनाया गया मार्ग

मजदूर सघ काग्रेस मे मास्को के खतरे पर बयान,
11 जुलाई, 1931

अब मजदूर सघ काग्रेस का कलकत्ता सत्र समाप्त हुआ। यह पिछले सप्ताह की घटनाओ की समीक्षा करने का समय है। यह याद होगा कि 1928 मे आयोजित झरिया सत्र मे भावी तूफान के चिन्ह दिखाई देने लगे थे लेकिन वास्तव मे तूफान आया नहीं। यहा तक कि झरिया मे सुपरिभाषित दलो को अलग से पहचाना जा सकता था। एक ओर श्री जोशी और उनके साथियो के नेतृत्व वाले दक्षिण पथी धडा था जिसे भारत मे मजदूर सघ आदोलन का सस्थापक कहा जा सकता है। दूसरी ओर बम्बई गुट के नेतृत्व मे मास्कोवादी कम्युनिस्ट थे जो आदर्शो पद्धतियो और कार्य नीतियो के मामले मे मास्को का अधानुसरण करते थे। उपर्युक्त दोनो दलो के अलावा कुछ ऐसे लोग भी थे जो इनमे से किसी को नहीं मानते थे लेकिन उस समय वे एक दल के रूप मे सगठित नहीं थे। वे निश्चित रूप से समाजवाद के पक्षधर थे और वे एक युयुत्सु कार्यक्रम चाहते थे। लेकिन वे मास्को के पिछलग्गू नहीं बनना चाहते थे और उन्हे पैन पैसिफिक सैक्रेटरीएट की धुन पर नाचना पसद नहीं था।

मजदूर सघ काग्रेस के नागपुर सत्र मे इस तीसरे गुट ने बम्बई की गिरनी-कामगार यूनियन की मान्यता बिटले कमीशन का बहिष्कार जैसे कई महत्वपूर्ण मामलो मे मास्कोवादी कम्युनिस्टो के साथ मतदान किया था। परिणाम यह हुआ कि दक्षिण पथी इन प्रश्नो पर निष्क्रिय साबित हुए। दुर्भाग्य से खेल भावना के रहते हुए उन्होने पराजय स्वीकार नहीं की और ट्रेड यूनियन काग्रेस मे अलग होकर ट्रेड यूनियन फेडरेशन का गठन कर लिया। नागपुर सत्र मे मास्कोवादी कम्युनिस्टो ने पूरे सचिवालय को हथियाने की कोशिश की लेकिन तीसरे गुट के दबाव के कारण उन्होने अनिच्छापूर्वक मुझे अध्यक्ष के रूप मे स्वीकार किया। मैं बडी विषम स्थिति मे था क्योकि एक ऐसा व्यक्ति सचिव था जिससे मैं कार्यनीति और पद्धतियो को लेकर बिल्कुल भी सहमत नहीं था। मै फिर भी इस आस्था के साथ काम करता रहा कि आखिरकार अच्छे दिन भी आयेगे। लेकिन हमारे मास्कोवादी कम्युनिस्ट नागपुर की सफलता पर इतरा उठे थे। यह सफलता उन्हे तीसरे गुट के समर्थन के कारण मिली थी। यह तीसरा गुट हर उस व्यक्ति को ट्रेड यूनियन काग्रेस से बाहर कर देना चाहता था जो कि उनके काकस मे शामिल नहीं था।

वे एक वर्ष से भी अधिक समय तक भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस और ट्रेड यूनियन काग्रेस के सभी उन हिस्सो के विरुद्ध निरतर अभियान चलाते रहे जो कि उनसे जुडे हुए नहीं थे। जब कलकत्ता मे काग्रेस अधिवेशन हुआ तो वे इसी प्रयोजन से तैयार होकर आये। लेकिन शुरू मे ही बिना किसी नई यूनियन की सहायता के यह सिद्ध हो गया कि वे अल्पमत मे है। यह बात समझ लेने पर उन्हे तुरत ही यह अहसास हो गया कि सचिवालय पर कब्जा नहीं कर पायेगे। उनका यह अनुमान सही था क्योकि ट्रेड यूनियन काग्रेस मे से अधिसख्य लोग भी देश पाडे और उनके काकस से पीछा छुडाना चाहते थे। पिछले वर्ष के दौरान श्री देश पाडे के सचिवत्व मे ट्रेड यूनियन काग्रेस मृतप्राय हो गयी थी। श्री गिनवाला के यहा दफ्तर लगाना पडा वर्ष के अत तक सचिव ने किसी पत्र का

उत्तर नहीं दिया। कोषाध्यक्ष श्री गिनवाला ने शिकायत की कि सचिव ने निकाली गई राशि का हिसाब नहीं दिया है।

आगे कलकत्ता काग्रेस मे प्रत्यय-पत्र समिति ने श्री देश पाडे के गुट के विरोध और गिरनी कामगार यूनियन के गुट के पक्ष मे मतदान किया था। इसके परिणाम स्वरूप श्री देश पाडे स्वत ही काग्रेस से बाहर हो जायेगे। इसलिए उन्होने सत्र को ठप्प करने का निर्णय किया। हाल के अदर उन्होने शोर-शराबा किया और अध्यक्ष से लेकर हर किसी सदस्य को अपमानित करने की ठान ली। बाहर उन्होने बडी सख्या मे गुडे जमा कर रखे थे कि सकेत मिलते ही हाल पर धावा बोल दे। श्री देश पाडे का गुट और उनके कुछ बगाली अनुयायी (जिनका नेतृत्व सयोग से सर्वश्री बकिम मुखर्जी और भूपेन दत्ता कर रहे थे)बराबर हाल मे निकलते रहे और गुडो को सूचना देते रहे यद्यपि स्वय सेवको का प्रबध स्वागत समिति के हाथो मे था फिर भी देश पाडे ने उन्हे परे हटा दिया और दरवाजे पर कुछ अपने लोग तैनात कर दिये। इन लोगो ने गुडो को अदर आने की अनुमति दे दी।

ये सब घटनाए इसलिए होती रहीं क्योकि हम और स्वागत समिति के सदस्य उन लोगो से खुले झगडे को टालते रहे थे। मैंने इसी माह की पाच तारीख को कार्यकारी परिषद और काग्रेस के खुले सत्र को स्थगित कर दिया था इसलिए कि कार्यवाही चलाना असभव हो गया था। लेकिन सचिव ने अध्यक्ष को सूचित किये बिना इसी 6 तारीख को 8 बजे अलबर्ट हाल मे कार्यकारी परिषद की बैठक बुला ली। इस प्रक्रिया को लेकर मजदूरो के असतोष के कारण देशपाडे का गुट बैठक नहीं कर पाया। बैठक बुलाने के उतावलेपन मे आखिरकार उन्हे कलकत्ता शहर छोडना पडा और उन्होने अपनी यह बैठक शहर से दूर मटियाबुर्ज के बाजार मे आयोजित की।

दूसरे दिन कार्यकारी परिषद और खुले सत्र की बैठक टाउन हाल मे हुइ लेकिन देशपाडे गुट इसमे उपस्थित नहीं रहा।

मास्कोवादी कम्युनिस्ट और उनके बगाली अनुयायी अब सेल रूप मे ट्रेड यूनियन काग्रेस से अलग हो चुके थे। वे गुडागर्दी सहित तमाम आपत्तिजनक तरीके अपना चुके थे। उन्हे आशा थी कि इन तरीको के द्वारा वे तीसरे गुट को काग्रेस से बाहर कर सकते हैं जिस तरह कि उन्होने नागपुर मे दक्षिणपथियो को बाहर खदेड दिया था। लेकिन कलकत्ता मे उनका वास्ता कठोर व्यक्तियो मे पडा था। तीसरे गुट यानी समाजवादी गुट ने यह निश्चय कर लिया था कि वे काग्रेस के अदर ही रहेगे और हर सभव लडाई लडेगे। जब वे बहुमत मे थे तब वे मास्कोवादी कम्युनिस्टो द्वारा बाहर नहीं किये जा सके। लेकिन अब यदि वे अल्पमत मे है तो वे काग्रेस से अलग नहीं होंगे। मास्कोवादी कम्युनिस्ट भारत मे ट्रेड यूनियन के स्वस्थ विकास के लिए एक गभीर खतरा है और सभवत हम उन्हे मैदान नही छोड सकते। समाजवादी आज भारत मे एक दल के रूप मे अपनी पहचान बना चुका है जिसके पास एक आदर्श कार्यक्रम एव विचारधारा है। वे देश के हर दल के साथ सहकार भाव से काम करना चाहते है लेकिन इनमे से किसी-कम से कम मास्कोवादी कम्युनिस्टो के वर्चस्व को स्वीकार नहीं कर सकते।

पिछले सप्ताह की घटनाओ मे एक अशोभनीय बात यह थी कि बगाल प्रदेश समिति के विरोधी दल ने ट्रेड यूनियन काग्रेस की कार्यकारी परिषद की बैठक मे अव्यवस्था पैदा करने मे

देशपाडे गुट की मदद की। सर्वश्री बंकिम मुखर्जी, भूपेन गुप्ता और उनके मित्र, जो कि श्री देशपाडे के अनुयायी हैं, बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के प्रति नि सदेह विद्वेषी नहीं थे। लेकिन राष्ट्रीय काग्रेस में उनके वे साथी जो बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के विरोधी थे और जिन्हें ट्रेड यूनियन काग्रेस से कोई मतलब नहीं था, अव्यवस्था पैदा करने मे देश पाडे गुट के साथ क्यो शामिल रहे?

श्री देश पाडे की नजर मे हमारे गुट का दोष यह था कि हम मास्को के आज्ञापन के विरोधी हैं और हम मे से अनेक भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के सदस्य एव महात्मा गाधी के अनुयायी हैं। हम उनके साथ चीख-चीख ये नारे नहीं लगा सकते थे-"राष्ट्रीय काग्रेस मुर्दाबाद" और "महात्मा गाधी मुर्दाबाद"। हमारी इच्छा एक मिथ्या ढग के अधीन आगे बढने और मिथ्या दावो के अधीन काम करने की नहीं थी। जो काग्रेसी है, वे श्री देश पाडे और उनके मित्रो के बावजूद काग्रेसी रहेगे। हम अत तक भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस और आल इडिया ट्रेड यूनियन काग्रेस के बीच मित्रवत् सबध बनाये रखने के प्रयास करेगे और हम भारत के मामले मे मास्को के वर्चस्व के विरुद्ध लडेगे क्योकि हमारा विश्वास है कि ऐसा करने पर ही हम भारत और मजदूर सघ आदोलन के हितो की रक्षा कर सकते है। हम इस बात से सतुष्टि अनुभव करते हैं कि हमने जो रास्ता चुना है, अततोगत्वा भारत की जनता उस स्वीकार करेगी।

भारत की रक्षा का अर्थ मानवता की रक्षा है

नराइल मे संबोधन, 17 जुलाई, 1931

देवियो, सज्जनो और मेरे युवा मित्रो,

मैं सोचता हू कि आपको उन व्यक्तियो की मनोवृत्ति और आदर्शों को समझना चाहिए जिन्होंने आपकी सेवा तथा देश की स्वतत्रता के लिए कार्य किया है। आपको निश्चय ही यह जानने का अधिकार है।

आपको विदित है कि अग्रेज इस देश मे पहले एक व्यापारी के रूप मे आये। राजसत्ता के लोभ ने उन्हे राजनीतिक शक्ति हस्तग्रस्त करने के लिए प्रेरित किया। बगाल मे हम सब भली-भाति जानते हैं कि वे किस प्रकार हमारे शासक बने। उन्होने सत्ता प्राप्त करने के लिए जो साधन अपनाये, उन्हे निष्कपट नहीं कहा जा सकता।

मित्रों, आप जानते हैं कि भिन्न सस्कृतियो वाले कितने राष्ट्र भारत मे आये और अतत भारतीय राष्ट्र का एक अग बन गये। इस स्वैच्छिक मेल-जोल ने हमारी सस्कृति एव सभ्यता को पर्याप्त रूप से समृद्ध किया। फिर भी अग्रेज भारतीयों के साथ साम्राज्य की इस प्रवृत्ति का हठधर्मी के साथ विरोध करते रहे। दूसरी ओर वे भारत पर अपनी जीवन-शैली एव सस्कृति को थोपने का प्रयास करते रहे।

भारत मे अग्रेजी राज के आरभ में यह प्रश्न उठा कि भारत को शिक्षा मे अग्रेजी भाषा को

अपनाना चाहिए? राजा राम मोहन राय का आग्रह था कि इस भाषा को सीखे बिना हमारी उन्नति नहीं होगी, हम पाश्चात्य तौर-तरीके स्वय पश्चिमी लोगो से सीखे बिना अपनी रक्षा नहीं कर सकते। इस प्रकार हमने अग्रेजी भाषा एव साहित्य का अध्ययन शुरू किया।

फिर भी, यथा समय प्रतिक्रिया व्यक्त हुई। राष्ट्र मे आत्मचेतना जाग्रत हुई और स्वाधीनता के प्रयत्न शुरू हुए। लेकिन लोग यह नहीं जानते थे कि इसे कैसे प्राप्त किया जाये। देश सही मार्ग की खोज मे अधेरे मे भटक रहा था। समस्या यह थी कि देश मे विभिन्न सास्कृतिक जातिगत और धार्मिक तत्वो का सश्लेषण कैसे किया जाये। क्या विस्मयकारी विविधता और भिन्नता के मूल मे कोई एकता भी थी, जिसे भारत ने प्रदर्शित किया।

इस अवस्था मे श्री रामकृष्ण का आगमन हुआ और उन्होने समस्या का सदा के लिए समाधान कर दिया। उन्होने घोषणा की कि समस्त धर्म उसी सर्वशक्तिमान पिता के चरणो की ओर ले जाते है। सार्वभौमिक सहिष्णुता और प्रेम के आधार पर भारत के सभी धर्मों का सश्लेषण भारत की राष्ट्रीयता के विकास का स्थायी आधार बनेगा।

जब लोगो ने इस आधारभूत सत्य को ग्रहण किया तब उन्हे यह अनुभूति हुई कि धर्म ही नहीं जीवन की सभी पहलुओ मे, धार्मिक एव सास्कृतिक विविधताओ के रहते भी एक राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

विविधता मे एकता के सत्य की पूर्ण अनुभूति किये बिना हम धार्मिक सामाजिक या राजनीतिक किसी भी क्षेत्र मे सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। इन विविधताओ के मूल मे एक एकता है, बाह्य रूपो से भयभीत हुए बिना हमे इस मूलभूत एकता को ग्रहण करना है और इस सुरक्षित आधार पर हमारे व्यक्तिगत एव सामूहिक जीवन का निर्माण करना है।

तदनतर स्वामी विवेकानन्द का आगमन हुआ, जब भारतीय राष्ट्रीयता का आधार सुरक्षित हुआ। स्वामी जी ने स्वतत्रता का सदेश सुनाकर लोगो मे जीवन की चेतना जाग्रत की। उन्होने महसूस किया कि केवल स्वतत्रता का प्रकाश ही जीवन को आलोकित कर सकता है। अपने लेखन और भाषणो के माध्यम से उन्होने घोषणा की कि, "स्वतत्रता आत्मा का गीत है।' निसदेह विवेकानन्द आत्मिक स्वतत्रता की बात करते थे लेकिन यह एक निर्विवाद तथ्य है कि जब आत्मा जाग्रत हो जायेगी तब जीवन के हर क्षेत्र मे जागरण की अभिव्यक्ति दृष्टिगत होगी। एक स्वस्थ व्यक्ति के शरीर के हर अवयव मे जीवन की दीप्ति दिखाई देती है। इसके विपरीत यदि वह अस्वस्थ है, तो अग-प्रत्यग से शिथिलता और विक्षिप्ता प्रकट होती है। यही बात एक राष्ट्र के सदर्भ मे सत्य है। जब एक राष्ट्र के हृदय मे स्वतत्रता की इच्छा जडे जमा लेती है वह जीवन के हर क्षेत्र मे फैल जाती है।

स्वतत्रता के इस नवजात विचार को नया रूपाकार देने के लिए अरविंद घोष का आगमन हुआ। उन्होने घोषणा की कि "ब्रिटिश नियत्रण से मुक्त पूर्व-स्वायत्तता ही हमारा आदर्श है।' यह एक उद्धत एव प्रेरणास्पद आदर्श था। बगाल ही नहीं, समूचे भारत मे जीवन की स्फूर्ति दौड गयी। हृदय की उत्कठा को वास्तविक अभिव्यक्ति मिली और समूचा देश जैसे कि पुकार उठा

"मेरे हृदय के पीछे आखिरकार एक मनुष्य है।" मित्रो, उस समय इस लहजे मे बोलने का साहस करने वाले कितने भारतीय नेता थे? इस प्रकार पच्चीस वर्ष पूर्व वर्तमान राष्ट्रवाद का विकास हुआ।

इस देश के स्वतत्रता सग्राम के इतिहास को तीन विशिष्ट अध्यायो मे विभाजित किया जा सकता है। यथा-स्वदेशी आदोलन क्रान्तिकारी आदोलन एव असहयोग आदोलन। स्वदेशी आदोलन का उत्थान मार्ले-मिटो सुधारो के आने के साथ हुआ। जनता के एक वर्ग ने इसे स्वीकार कर लिया शेष ने इसके प्रति सतोष व्यक्त किया। लेकिन इस देश के युवा, जिनके हृदय मे स्वतत्रता जडे जमा चुकी है इन सुधारो को मात्र एक बहाने बाजी समझते थे और इसीलिए उन्होने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्रान्तिकारी पद्धतियो को अपनाया।

क्रान्तिकारी गतिविधियो के पश्चात् असहयोग आदोलन शुरू हुआ। एक अहिसक क्राति थी इसलिए कि पहली बार सामान्य जन स्वतत्रता सग्राम मे शामिल हुए। यह बात तीव्रता के साथ महसूस की गयी कि यदि देश के छोटे-बडे अमीर-गरीब सभी लोग एकजुट होकर शासको से अपना सहयोग वापस ले ले तो भारत मे साम्राज्यवाद टुकडे-टुकडे हो कर बिखर जायेगा। मुट्ठी भर अग्रेज इतने विशाल देश को कैसे शासित कर पायेगे? सज्जनो, पूरे जैसोर जिले पर हुक्म चलाने वाले कितने अग्रेज है? उनका शासन केवल सभव है कि हम उन्हे सहयोग करते हैं। मैं एक उदाहरण दूगा। जब मैं बरहमपुर जेल मे था एक कैदी के सबधी और मित्र उससे मिलने आये। कैदी ने उनसे कहा, "आप मेरे परिवारजनो को जाकर बता दे कि मैं यहा बहुत खुश हू। सरकार ने मुझे 250 कैदियो के ऊपर हाकिम बना दिया है।" सच बात यह थी कि उसे एक कैदी ओवरसियर बना दिया गया था। सज्जनो, इस तरह वे हमारी ही सहायता से हम पर शासन करते है और हमे गुलाम बनाये रखते हैं। एक गुलाम देश मे कोई हाकिम नहीं होता सब गुलाम होते हैं। जैसे देश के भीतर वैसे ही जेल के बाहर, वे दूसरे गुलामो की मदद से गुलामो पर शासन करते है।

अतएव, इस धरती के लोग यदि विदेशियो की सहायता से इन्कार कर दे भारत मे अग्रेजी राज का अत हो जायेगा। दशको पहले सीली, टाउनशेड और अन्य लोगो ने इसका पूर्वानुमान कर लिया था। टाउनशेड ने लिखा था, "जब भारत अपना सहयोग वापस ले लेगा एक दिन मे उभरा हुआ साम्राज्यवाद एक रात मे खत्म हो जायेगा।"

अब न केवल हम उनकी सेवा करते हैं बल्कि उन्हे बल भी देते हैं। हम उनकी 110 करोड रुपयो की वस्तुए खरीदते है, इस राशि के द्वारा इग्लैंड अपना रख-रखाव करता है। इसीलिए हम विदेशी का बहिष्कार करते है और स्वदेशी को अपनाते हैं। लोगो मे स्वतत्रता की इच्छा जाग्रत करने के उद्देश्य से हम प्रत्येक राष्ट्रीय कार्यक्रम मे दो चीजो को प्राथमिकता पर रखते है- असहयोग और बहिष्कार। राष्ट्रीय इच्छा के जागृत हुए बिना स्वतत्रता नहीं मिलेगी।

अपने स्वतत्रता सग्राम मे हमने उत्पीडित वर्गो, किसानो और मजदूरो को साथ नहीं लिया है। वे पहले की तरह अछूते और उपेक्षित बने हुए हैं। वे हमारे साथ नहीं जुड सके क्योंकि हम उनके सामाजिक कष्टों के निवारण मे असमर्थ रहे है। उनका कहना है कि इस बात की क्या

बंगाल विवाद को लेकर सच्चाई

प्रेस के लिए बयान, 12 अगस्त, 1931

" फ्री प्रेस ऑफ इंडिया" ने बगाल विवाद के बारे मे एक सदेश भेजा है, जो गलत और गुमराह करने वाला है। डा० वी० सी० राय कल बम्बई से आये और अपने साथ निम्नलिखित आधारो पर बगाल विवाद को सुलझाने के लिए एक लिखित प्रस्ताव लाये -

1 कि आगे की जाच रोक दी जाये।
2 कि उन जिलो मे ताजा चुनाव कराना वाछनीय है जहा कार्य समिति द्वारा मध्यस्थ की नियुक्ति की जा चुकी है। ये चुनाव मध्यस्थ की सीधी निगरानी मे होगे।
3 अन्य जिलो के चुनाव को वैध माना जाये।
4 बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के अक्टूबर मे होने वाले चुनाव श्री अनय की निगरानी और नियत्रण मे सम्पन्न होगे।

कल डा० राय ने महात्मा गाधी को एक तार भेजा। उसमे उन्होने बिन्दुओ का उल्लेख किया, मैं जिनके आधार पर प्रारूप-प्रस्ताव मे सशोधन चाहता था। इसके तुरत बाद कल के तार की पुष्टि के लिए मैंने सीधे महात्मा गाधी को एक पत्र भेजा।

तार इस प्रकार है –

"डा० राय के लिए आपका तार। बगाल प्रदेश काग्रेस समिति द्वारा सचालित मौजूदा प्रातीय चुनाव, जो जनवरी 1930 मे पडित मोतीलाल जी द्वारा वैध करार दिये गये। 1931-32 के लिए प्रातीय चुनाव इस वर्ष जून मे हुए क्योकि काग्रेस वर्ष और अखिल भारतीय चुनाव का समय बदल गया था। आगामी प्रातीय चुनाव अगले वर्ष होगे। प्रारूप के पाचवे (चौथे) बिन्दु के बारे मे, हम पर्यवेक्षक की नियुक्ति की किसी भी शर्त को अनावश्यक समझते हैं। फिर भी हम किसी उचित और निष्पक्ष आधार पर एक स्थायी समझौता चाहते है। कृपया तार से सलाह दे।"

उपर्युक्त से यह बात स्पष्ट है कि बम्बई से "फ्री प्रेस" द्वारा प्रसारित सदेश मिथ्या और भ्रामक है। वास्तव मे हुआ यह कि समझौते की दिशा मे अनौपचारिक बातचीत और सवाद चला रहे थे। मुझे खेद है कि बम्बई की "फ्री प्रेस" ने ऐसे महत्वपूर्ण मामले से निबटने मे असावधानी बरती है।

निष्कर्ष रूप मे मैं इतना जोडना चाहूगा कि जिस समय बम्बई मे प्रारूप-प्रस्ताव लाया गया था, तब काग्रेस वर्ष और अखिल भारतीय काग्रेस समिति के चुनावो के समय मे परिवर्तन के कारण यह ज्ञात नही हो सका कि बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के आगामी चुनाव आने वाले अक्टूबर मे न होकर कभी अगले वर्ष मे होगे।

रिपोर्ट के मुताबिक श्री अनय की बगाल चुनाव विवाद से सबधित प्रारभिक खोजो से उभरने वाले प्रश्नो को लेकर महात्मा गाधी और काग्रेस कार्य समिति के अन्य सदस्यो के बीच चर्चा हो चुकी है। यह जान पडता है, महात्मा गाधी काग्रेस समिति के तत्वाधान मे बगाल प्रदेश काग्रेस के ताजा चुनाव कराने को लेकर सहमति व्यक्त कर चुके थे। श्री अनय कार्य समिति का

प्रतिनिधित्व करेगे। प्रस्ताव के लाभो के बारे मे कहा जा चुका है कि कार्य समिति के तत्वाधान मे चुनाव होने से समूचे प्रात के काग्रेस जन बगाल प्रदेश काग्रेस समिति मे आजादी के साथ अपने प्रतिनिधि चुनकर भेज सकेगे। इसके द्वारा कार्य समिति के सविधान को काग्रेस जनो के बहुमत का समर्थन प्राप्त हो सकेगा।

गोलमेज सम्मेलन के बहिष्कार का स्वागत

बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के अध्यक्ष के रूप मे बयान, 15 अगस्त, 1931

मैं एक नहीं अनेक कारणो से काग्रेस समिति द्वारा गोलमेज मम्मेलन के बहिष्कार के निणय को लेकर प्रसन्न हू। सरकार की वर्तमान मानसिकता को देखते हुए यह निहायत असभव लगता है कि वह हमारी राष्ट्रीय मागो को मान लेगी, आगे हाल की घटनाओ से वामपथियो के पूर्वानुमान की पुष्टि होती है और अब वे विरोध मे खडे होने का दावा कर सकते है। शुरू से ही समझाते की शर्तो को लेकर प्रसन्न नहीं थे और वे समझौते के परिणामो और साथ ही गोलमेज सम्मलन के प्रति निराशावादी थे। अब यह कार्य समिति की इच्छा पर है कि वह अपनी वैठक वुलाये और यह विचार करे कि क्या सरकार को यह नोटिस भेज दिया जाये या नहीं कि समझौता समाप्त हो गया है। दूसरी ओर यह विचार भी करे कि देश के सामने भावी कार्यक्रम क्या होना चाहिए।

सधि की औपचारिक समाप्ति से बगाल के राजनीतिक वातावरण मे कोई विशेष परिवतन नहीं आयेगा। इसका सहज कारण यह है कि इस दुर्भाग्यशाली प्रात ने समझौते के वातावरण का मुख एक दिन के लिए भी नहीं भोगा है। बगाल अध्यादेश का क्या हुआ? विशेष अदालतो षड्यत्र के मुकदमो और ऐसी ही अनेक मामूली बातो का क्या हुआ? पिछले मार्च से दमन-चक्र निरतर चल रहा है। यदि लोगो के हृदय मे झाककर देखा जाये तो वहा सरकार के प्रति लेशमात्र सद्भावना नहीं मिलेगी। बगाल दमन का इतना अभ्यस्त हो चुका है कि यहा गाधी-इर्विन समझौते का भग होना कोई आश्चर्य की बात नहीं समझी जाती बल्कि इसे अपरिहार्य माना जाता है। दुर्भाग्य से सरकार की दमनकारी नीतियो ने युवा वर्ग पर काग्रेस के प्रभाव को गभीर क्षति पहुचाई है। एक ओर सरकार के रवैये से उत्तेजित होकर, दूसरी ओर दमन के अध्याय की समाप्ति मे काग्रेस की अक्षमता से कुपित होकर युवा लोग पूरी तरह आपे से बाहर हो गये। इस उत्तेजना और काग्रेस द्वारा अहिंसा के तीव्र प्रचार के कारण क्रान्तिकारी गतिविधियो का पुन प्रकोप हुआ है। यदि सरकार एक मैत्रीपूर्ण नीति का पालन करते हुए अहिसा के पक्ष मे प्रचार और आदोलन को मजबूत नही करती, जिसे कि काग्रेस चला रही है, तब मैं नहीं समझता कि काग्रेस देश भर मे अहिंसा के सिद्धात को फैलाने के मिशन मे कैसे सफलता प्राप्त कर सकती है? आज मुश्किल से ही कोई व्यक्ति यह आशा कर सकता है कि सरकार के पास मेल-मिलाप करने की राजनीतिमत्ता है। अतएव, केवल दूसरे क्षेत्र से ही अलग की जानी चाहिए। यदि काग्रेस गतवर्ष की भाति एक सशक्त अहिसक कार्यक्रम शुरू कर देती है, तब न केवल तमाम क्रान्तिकारी गतिविधियो को दबाया जा सकता है बल्कि देशभर

के काग्रेस जनो के सभी हिस्सो मे एकता कायम की जा सकती है, जो कि आज आपस मे लड रहे है। अतएव, हमे कार्य समिति का पहल की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

बगाल प्रदेश कांग्रेस समिति का चुनाव विवाद

अमृत बाजार पत्रिका के सपादक के नाम पत्र

18 अगस्त, 1931

महोदय

मेरा ध्यान इस आशय की रिपोर्ट की ओर आकर्षित किया गया है कि 'डा० विधान चद्र राय, सुभाष बोस की ओर से बम्बई आये थे और उन्होने समझौते के लिए लिखित प्रस्ताव रखा था जिसकी शर्ते आदि-इत्यादि है।" मैं जोर देकर कहता हू कि डा० बी० सी० राय मेरी ओर से बम्बई नहीं गये थे और मुझे उस समय तक बगाल विवाद से सबधित समझौते के प्रस्ताव या बातचीत के विषय मे कुछ ज्ञात नहीं था, जब तक कि डा० राय ने बम्बई से लौटने के बाद मुझे आश्चर्य मे नहीं डाला था। मैं महात्मा गाधी को भेजे गये तार मे अपनी स्थिति स्पष्ट कर चुका हू। सबसे पहले मैने यह कहा था कि बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के चुनाव आगामी अक्टूबर मे न होकर किसी समय अगले वर्ष होगे। दूसरी बात मैंने यह कही थी कि बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के चुनाव कराने के लिए बाहर से पर्यवेक्षक बुलाने की जरूरत नहीं है। हम 1921 से 1931 के लम्बे समय तक बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के चुनावो से सचालन के साथ-साथ बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के कार्य और सगठन का सचालन करते रहे है। इस सूरत मे हमे किसी पर्यवेक्षक की जरूरत नहीं है। मेरे विचार से इस मामले मे पर्यवेक्षक की नियुक्ति बगाल जैसे राजनीतिक दृष्टि से अग्रणी प्रात की काग्रेस समिति का सीधा-सीधा अपमान है। मैं यह हरगिज नहीं चाहूगा कि कार्य समिति या अखिल भारतीय काग्रेस समिति हमारी इच्छा विरुद्ध हमारे ऊपर एक पर्यवेक्षक को थोप दे। मुझे इस बात मे कोई आपत्ति नहीं है कि चुनाव विषयक विवादो को किसी निष्पक्ष अदालत को सौंप दिया जाये लेकिन पूरे चुनाव के लिए एक पर्यवेक्षक की नियुक्ति एकदम भिन्न बात है। इस प्रकार की व्यवस्था से विवादो की रोकथाम नहीं होगी बल्कि और बढेगे।

इस सिलसिले मे चुनाव विवाद सुलझाने हेतु श्री अनय के मध्यस्थ नियुक्त किये जाने से सबधित गलत बयान की ओर भी मेरा ध्यान दिलाया गया है। यह कहा गया है कि मैने स्थानीय मध्यस्थ की नियुक्ति का विरोध किया था और किसी बाहरी मध्यस्थ की नियुक्ति पर जोर दिया था। सच्चाई यह है मैंने महात्मा गाधी के उपयोग के लिए तीन स्थानीय मध्यस्थो के नाम लिखे थे और इसके स्थानीय मध्यस्थो की पात्रता के विषय मे सहमति न होने की स्थिति मे मैने बाहरी मध्यस्थो की एक सूची सुझाई थी। मेरे हस्तलेख मे लिखा हुआ वह कागज सभावतया महात्मा गाधी के पास अभी तक होगा जिसमे सबसे ऊपर स्थानीय मध्यस्थो के नाम है और सबसे नीचे बाहरी मध्यस्थो की सूची दर्ज है।

राहत कोष की बचत के बारे मे कुछ प्रश्न

बगाल काग्रेस बाढ एव अकाल राहत समिति के नाम पत्र, 20 अगस्त 1931

प्रिय महोदय

आपको याद होगा कि 1922 मे उत्तर बगाल मे राहत कार्य करने हेतु एक बाढ राहत समिति का गठन किया गया था जिसे बगाल राहत समिति कहा गया था। यह बात साधारण के ज्ञान मे है कि समिति का नाम जानबूझकर बगाल राहत समिति रखा गया था। इस पसद के पीछे कारण यह था कि जो समितिया 1922 मे पूर्व गठित की गयी थीं और जिनके पास बिना खर्च की गयी राशि पडी हुई थीं (जैसे ढाका बवडर कोष) व अब इस राशि को 1922 मे राहत कार्यो पर खर्च कर देना चाहती थीं और यह तर्क दिया जाता था कि ढाका बवडर कोष के नाम पर इकट्ठा किया पैसा नियमानुसार उत्तर बगाल की बाढो पर खर्च नहीं किया जा सकता। 1922 में लोगो ने यह अनुभव किया कि बची हुई राशि को बाद मे बगाल के किसी भी भाग मे आने वाली प्राकृतिक आपदाओ पर खर्च किया जाना चाहिए। अतएव तकनीकी कठिनाई मे बचाव करने के लिए जान-बूझकर बगाल राहत कोष नाम तजवीज किया गया ताकि इस समिति द्वारा बची हुई धनराशि को बगाल के किसी भी भाग के राहत कार्यो मे खर्च किया जा सके।

यह बात बाद मे खुली कि जब 1923 म उत्तर बगाल के राहत कार्य बद हुए तब समिति के पास कुछ लाख रुपये हाथ मे बचे हुए थे। फिर बचे हुए कोष मे से एक बडी राशि अकेले खादी प्रतिष्ठान नामक सगठन के माध्यम से खादी के काम पर खर्च की गयी। यह सर्वविदित है कि बगाल राहत कोष के एक सचिव श्री सतीश चन्द्र दास गुप्ता खादी प्रतिष्ठान के भी सचिव या मुख्य सगठक थे। ताजा सूचना यह है कि खादी प्रतिष्ठान एक घाटे मे चल रही सस्था है और इसमे लगाया गया पैसा वसूल नहीं किया जा सकता।

महोदय, बगाल काग्रेस बाढ एव अकाल राहत समिति के अध्यक्ष के नाते मै आपसे अनुरोध करूगा कि निम्नलिखित बिन्दुओ की खोज-बीन करे -

1 1923 मे उत्तर बगाल मे राहत कार्यो की समाप्ति के बाद कितनी राशि बची रही।

2 क्या खादी के काम मे कुल या टुकडो-टुकडो मे राशि खर्च हुई है?

3 यदि ऐसा है तो खादी के काम पर खर्च होने वाली राशि कितनी थी?

4 खादी के काम पर पैसा खर्च करने से पहले क्या समिति की स्वीकृति ले ली गयी थी? यदि ऐसा है तो यह राशि कितनी है और किस बैंक मे लगायी गयी है?

5. क्या कुछ राशि बची रह गयी है? ऐसा है तो, यह राशि कितनी है और किस बैंक मे लगायी गयी है?

6 यदि कुछ राशि बची रह गयी है तो क्या यह राहत समिति को लौटा दी जायेगी?

यदि मेरी सूचना सही है, बगाल राहत समिति मे तीन सचिव थे और 1923 मे राहत कार्य समाप्त हो जाने के बाद बगाल राहत समिति ने जो भी धनराशि खर्च की, इसके बारे मे दो सचिवो को एकदम अधेरे मे रखा गया।

कलकत्ता नगर पालिका चुनाव के सचालन मे प्राधिकार

बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के अध्यक्ष के रूप मे बयान, 16 सितम्बर, 1931

वार्ड नम्बर 6 के मौजूदा नगर पालिका चुनाव के सबध मे प्रातीय काग्रेस समिति के प्राधिकार और दायित्व को लेकर जाच की गयी है। उत्तर मे यह कहा गया है कि 1924 से (देशबधु सी० आर० दास के नेतृत्व मे काग्रेस ने पहली बार निगम मे सत्ता प्राप्त की थी) हर अवसर पर प्रातीय काग्रेस समिति चुनाव कराती रही है। 1930 मे पहली बार इस प्राधिकार को जे० एम० सेनगुप्ता ने चुनौती दी थी। वे बगाल प्रदेश काग्रेस समिति पर नियत्रण नहीं रख सके थे। यद्यपि जब उन्होने 1927 मे चुनाव का सचालन किया था उन्हे प्रातीय काग्रेस समिति का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ था।

1924 मे देशबन्धु दास ने जिनके पास नगर पालिका चुनाव कराने सबधी बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के सम्पूर्ण अधिकार सुरक्षित थे प्रत्याशियो का चयन करने के मामले मे बगाल प्रदेश समिति की अवज्ञा करने को लेकर उत्तरी कलकत्ता काग्रेस समिति की निन्दा की थी। इस तथ्य के अलावा कि बगाल प्रदेश काग्रेस समिति बगाल का सर्वोच्च काग्रेस सगठन है और भी अनेक कारण है जिनके रहते हुए जिला काग्रेस समितियो के बजाय बगाल प्रदेश काग्रेस समिति को चुनाव कराने की जिम्मेदारी सौंपी गयी है। यद्यपि जिले को यह अधिकार है कि वह बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के लिए चुनाव प्रत्याशियो (यदि उनकी ऐसी इच्छा है) के नामो की सिफारिश कर सकती है। कलकत्ता नगर पालिका क्षेत्र मे पाच जिले है–उत्तर दक्षिण केन्द्रीय बडा बाजार और 24 परगना। यदि बगाल प्रदेश काग्रेस समिति जैसी सर्वोच्च सस्था चुनाव कराने सबधी सम्पूर्ण दायित्व और कार्यभार नहीं लेती है तथा जिले अपनी इच्छानुसार कार्य करते है तब उससे दुविधा और द्वद्व की स्थिति पैदा हो जायेगी। यदि निगम के भीतर एक काग्रेस नगरपालिका पार्टी का गठन करना है यह तभी सभव हो पायेगा यदि जब चुनावी काम-काज मे समन्वयन करने वाली बगाल प्रदेश काग्रेस समिति जैसी उच्चतर सस्था हो।

आगे यह कहा जा सकता है कि कुछ ऐसे निर्वाचन क्षेत्र है जो पूर्ण रूप से एक जिले मे नही आते। वार्ड नम्बर 6 एक ऐसा ही निर्वाचन क्षेत्र है जिसे पर उत्तरी कलकत्ता काग्रेस समिति और बडा बाजार काग्रेस [illegible] का प्राधिकार है। ऐसे निर्वाचन क्षेत्रो मे उम्मीदवार खडे करने को, लेक़ सूची सुझाई थी। मेरे स्मृति नहीं है ऐसी स्थिति से कौन निबटेगा? बगाल प्रदेश काग्रेस पार्स अभी तक होगा जिसमे सब [illegible] प्रकार की स्थिति पर विचार कर करती है। अतएव यह मध्यस्थो की सूची दर्ज है। [illegible] कराने के मामलो मे जिलो को स्वायत्तता दे दी गयी

है लेकिन उत्तरी बगाल काग्रेस समिति वार्ड नम्बर [illegible] श्री सेन गुप्ता को खडा नहीं कर सकी। उत्तरी बगाल काग्रेस समिति ने बडा बाजार काग्रेस समिति से स्वीकृति भी नहीं ली। जे० एम० सेन गुप्ता ने एक हास्यास्पद बयान दिया है कि कलकत्ता के मामले मे शेष 27 काग्रेस जिलो की कोई नहीं चलनी चाहिए। इसके विपरीत मैं आग्रह के साथ कहूगा कि कलकत्ता के विकास एव समृद्धि मे सम्पूर्ण बगाल का योगदान रहा है। शेष बगाल के योगदान के बिना कलकत्ता वह नहीं होता, जो कि आज है। इसलिए कलकत्ता बगाल का सार है। यदि हम कलकत्ता निगम से उन लोगो को निकाल दे जो कि कलकत्ता के पुराने नागरिक नहीं है तब हमे अनेक पार्षदो के साथ ही अधिकारियो और कर्मचारियो के अभाव मे काम करना पडेगा। क्या श्री सेनगुप्ता इस आकस्मिकता का स्वागत करेगे?

बंगाल प्रदेश कांग्रेस समिति के अध्यक्ष तथा कलकत्ता निगम के महापौर पद से त्यागपत्र के कारण

बगाल के काग्रेसजनो को सबोधन, 18 सितम्बर, 1931

जब से बगाल मे मनमुटाव बढना शुरू हुए है मै नहीं सोचता कि किसी देशभक्त काग्रेस जन को यह सुखद लगा होगा। जहा तक मेरी बात है मैं शुरू से विवाद समाप्त करने के विनम्र प्रयास करता रहा हू। मुझे शुरू से ही यह लगता था कि समस्या के समाधान के तीन रास्ते है। पहला, भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस और बगाल प्रदेश काग्रेस समिति के सविधान और नियमो को कठोरता के साथ पालन किया जाये तथा नियमो का उल्लघन करने वालो और अनुशासनहीनता फैलाने वालो के खिलाफ कडी कार्यवाही की जाये। दूसरे काग्रेसजनो के विभिन्न वर्गो और गुटो के बीच समझौते के प्रयास किये जाये जिससे काग्रेस की गतिविधियो मे पारस्परिक सहयोग सुनिश्चित होगा। तीसरे, दोनो विकल्पो के असफल होने की स्थिति मे सब मिलाकर एक पार्टी बनाने के लिए राजी किया जाये।

मेरा अनुभव यह कहता है कि इस प्रात मे एक गुट या दल हमेशा उन लोगो का विरोध करेगा जो कि काग्रेस सगठन मे कोई कार्यभार प्राप्त कर चुके है। कम से कम पिछले दस वर्षो के दौरान यही हुआ है। जब प्रातीय काग्रेस समिति की मौजूदा कार्यकारिणी के विरोध की तैयारी हुई, तब उपर्युक्त दोनो उपायो से इस विरोध को शात करने के प्रयास किये गये। फिर भी काग्रेस के सविधान और नियमो के कार्यान्वियन द्वारा कोई समाधान नहीं हो सका क्योकि बगाल मे काग्रेस जनो का एक ऐसा गुट था जो हर सभव अवसर पर प्रातीय काग्रेस समिति का निरादर करने के लिए कृत निश्चय था। दूसरे, काग्रेस की कार्य समिति अनुशासनहीनता के खिलाफ अपेक्षित कार्यवाही करने मे असफल रही। ठीक इसी प्रकार काग्रेस के विभिन्न वर्गो और गुटो के बीच समझौते की नीतियो के आधार पर भी कोई समाधान नहीं निकल सका।

यह याद होगा कि जब 1930 मे स्वर्गीय पडित मोतीलाल नेहरू बगाल विवाद की जाच करने हेतु बगाल आये थे, हम उनके परामर्शानुसार समझौते पर राजी हो गये थे लेकिन दूसरे लोग तैयार

नहीं थे। पंडित जी के निर्णय के बाद यह आशा की जाती थी कि विवाद समाप्त हो जायेगा लेकिन यह आशा निष्फल गयी। यही विरोधवादी और अलगाववादी प्रवृत्ति 1930 के नगरपालिका चुनाव और सविनय अवज्ञा समिति के निर्माण के अवसर पर खुलकर सामने आयी। जब इस वर्ष कांग्रेस और सरकार के बीच समझौता हुआ यह आशा की जाती थी कि इसके साथ नये अध्याय की शुरूआत होगी। एक बार फिर हमे निराश होना पड़ा। प्रांतीय कांग्रेस समिति का विरोध जारी रहा। पहली बार यह विरोध जिलो मे प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस समितियो तथा प्रांतीय कांग्रेस समितियो तथा प्रांतीय कांग्रेस संघ के रूप मे एक प्रतिद्वंद्वी बंगाल प्रदेश कांग्रेस समिति के निर्माण के रूप मे प्रकट हुआ। इसके बाद मई अंत के अंतिम चुनाव के दौरान प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का खुला विरोध हुआ। तदनंतर कार्य समिति ने सम्पूर्ण परिस्थिति की जांच करके निर्णय देने हेतु एक मध्यस्थ की नियुक्ति कर दी। एक बार फिर यह आशा की किरण जागी कि मध्यस्थ की नियुक्ति से निराशा के बादल छटेंगे। ले न जब प्रांतीय कांग्रेस समिति ने बाढ राहत समिति का गठन करना चाहा और सभी दलो को आमंत्रित किया, विरोधियो ने सहयोग से इन्कार कर दिया और एक अलग समिति बना ली। इसके बाद श्री जे० एम० सेन गुप्ता ने अपने चुनाव घोषणापत्र मे एक अपील जारी की कि कांग्रेस के निगम पार्षद कांग्रेस म्यूनिसिपल एसोशियसन से बाहर आ जाये और एक पृथक दल का गठन कर ले। इस पृथक दल का पहले ही गठन हो चुका है और इसने निगम मे यूरोपीय एव मनोनीत सदस्यो के गुट के साथ खुली गठजोड कर ली है।

मेरे उपर्युक्त वक्तव्य का सार यह है कि हम कांग्रेस संविधान के कार्यान्वयन या समझौते के द्वारा बंगाल के कांग्रेसजनो के बीच एकता कायम करने मे असफल रहे। यह तथ्य इस रूप मे हमारे सामने है कि आज बंगाल के कांग्रेस जन विभाजित है तथा सरकार और शत्रु इस स्थिति का लाभ उठा रहे है। जिनके पास आज संगठन का कार्यभार है वे सभी दलो का सहयोग लेने मे असमर्थ है। हम समझते है कि मौजूदा असतोष के लिए हमे जिम्मेदार नहीं ठहराना चाहिए इसके लिए विरोधी दोषी है। फिर भी एक गली-बाजार का आदमी और जनता का एक औसत सदस्य यह जाने बिना रहेगा कि दोषी कौन है? वह किसी भी साधन से और किसी भी कीमत पर विवाद का समाधान चाहता है। मुझे कोई संदेह नहीं है कि मैं बंगाल के मानस की सही व्याख्या कर रहा हू, जब मैं यह कहता हू कि मौजूदा असतोष का अंत समय की एक मांग है भले ही मेल-मिलाप करने के लिए कितने ही कठोर कदम उठाने पड़े। प्रांत मे घटित हाल की घटनाओ से एकता की जरूरत बहुत बढ गयी है। पहले हमारे लाखो देशवासी बाढ और अकाल से पीडित है। दूसरे चित्तगोंग मे हमारे देशवासी अमानवीय यातना और अकथनीय पीडा से गुजर रहे है। तीसरे, हमारे लगभग 800 श्रेष्ठ कार्यकर्ता देशभक्ति के अपराध मे जेल में कष्ट भोग रहे है।

मेरे निकट के साथी और सहकर्मी इस बात को जानते है कि मैं तीसरे मार्ग को अपनाते हुए कांग्रेस-कार्यकर्ताओ मे एकता कायम करने की दिशा मे सोचता रहा हू। तीसरा मार्ग अर्थात् प्रांतीय कांग्रेस समिति की कार्यकारिणी से स्वेच्छा से त्याग-पत्र। मेरे मन मे यह विचार प्रतिदिन दृढ होता रहा है कि पद पर बने रहने की कोई सार्थकता नहीं है, यदि कांग्रेसजनो के सभी वर्गो का सहयोग सुनिश्चित नहीं होता है। आज पद पर बने रहना कोई सहायता नहीं है बल्कि राष्ट्रीय सेवा मे एक नकारात्मक बाधा है।

तीसरे मार्ग पर अमल करने मे मेरे मन मे जो भी सकोच था, वह समाप्त हो गया जब कि हिजली कारावास शिविर से भयानक आघात पहुचाने वाली खबर मिली। हमारे देशवासियो को जेल और जेल से बाहर मिलने वाला अकथनीय यातनाए हमारे लिए एक दैवीय चुनौती है कि सभी काग्रेस कार्यकर्ता एक हो और शत्रु के समक्ष एक सयुक्त मोर्चा पेश करे।

अतएव मे प्रातीय काग्रेस समिति के अध्यक्ष और साथ ही कलकत्ता निगम के महापौर पद से त्यागपत्र प्रस्तुत करता हू। मै यह त्यागपत्र देते हुए अपने महान और श्रेष्ठ काग्रेसी साथियो से अपील करता हू कि वे इस अवसर पर आगे आये और मौजूदा असतोष को दूर करे। मैं उन्हे आश्वस्त करता हू कि मैं एक दृढ अनुशासन प्रिय हू और मेरे मन मे किसी भी व्यक्ति के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है। मैं एक साधारण विनम्र कार्यकर्ता के रूप मे कार्य करूगा और जो भी अध्यक्ष के पद पर आसीन होता है उसे मेरी सेवाए लेने का अधिकार होगा। यदि मेरे आत्म विलोपन के परिणाम स्वरूप बगाल को बचाया जा सकता है तो मुझे यह कीमत चुकाने मे प्रसन्नता होगी। यदि मेरे देशवासी बदले मे मुझे हृदय मे स्थान देते हैं तो मेरे लिए यह एक बडा पुरस्कार होगा।

हिजली शिविर और खड़गपुर रेलवे अस्पताल मे बदियो की हालत

हिजली और खडगपुर की स्थिति पर बयान
19 सितम्बर, 1931

मैंने कल शुक्रवार को सर्वश्री जे० एम० सेनगुप्ता नृपेन बनर्जी डा० चारू बनर्जी और श्रीमती बनर्जी, सुशील राय चौधरी और अन्य साथियो के साथ खडगपुर का दौरा किया। कुमार देवेन्द्र लाल खान, शैलजा सेन और रामसुदर सिह भी हमारे साथ थे। हमे हिजली शिविर मे जाने की अनुमति नहीं दी गयी लेकिन मैंने खडगपुर अस्पताल मे बदियो के साथ-साथ अनेक घायलो को देखा। मुझे अखबारो मे छपी खबरो की सच्चाई जानने का अवसर भी मिला। अब मै यह कहने की स्थिति मे हू कि प्रेस ने वास्तविकता से कम आका है। बदियो पर हुआ हमला अपने चरित्र मे जघन्य और पैशाचिक है। सतोष मित्र और तारकेश्वर सेन ने वीरतापूर्वक प्राण दे दिये और देश शहीदो के रूप मे सदैव उनका आदर करेगा। गोविंद दत्त और शचींद्र घोष रेलवे अस्पताल मे गभीर हालत मे पडे हुए है। अस्पताल मे कृष्णपाद बनर्जी सुधीर सेन और सविता राय चौधरी की हालत भी चिन्ताजनक है। हिजली शिविर मे आशुतोष हाजरा की हालत भी ऐसी ही है।

सभी बदी भूख हडताल पर है और वे तब तक इसे जारी रखेगे जब तक एक अनौपचारिक समिति का गठन न कर दिया जाये। अब तक बदियों को घायलो से मिलने की अनुमति दी जाती रही लेकिन लगता है कि कल (रविवार) से यह सुविधा छिन जायेगी। इस स्थिति मे फिर से समस्या खड़ी हो सकती है। मैं स्थानीय अधिकारियो से साग्रह निवेदन करता हू कि वे इतने निर्दयी न बनें और बदियो को अस्पताल मे अपने घायल मित्रो से मिलने की अनुमति दे

मैं खडगपुर से अत्यत दु खी एव अपमानित होकर लौटा हू। हमारे साथी जेल मे कुत्ते और बिल्लियो की भाति मारे जा रहे हैं। क्या इन परिस्थितियो मे भी हमे लडना-झगडना चाहिए? हमे अपने शत्रु के सामने अपने तमाम मतभेदो को भुलाकर एक हो जाना चाहिए। मैं आज के अखबार मे अपने बयान मे पहले ही कह चुका हू कि जिस रूप मे भी मेरी सेवाओ की अपेक्षा की जाती है मैं जन-सेवा के लिए सदैव तत्पर रहूगा। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मेरे अनेक मित्रो ने मेरे इस कदम की सराहना की है जो कि मैंने सभी पदो से त्यागपत्र देने के रूप में उठाया है। इससे मेरे इसे विश्वास की पुष्टि होती है कि मैंने बगाल के मानस को ठीक-ठीक व्याख्या की है। हमे आशा करनी चाहिए कि बगाल और पूर्ववत् प्रतिष्ठा एव गरिमा को शीघ्र ही प्राप्त कर लेगा।

व्यक्ति स्वय को राष्ट्र में विलीन करे

एकता पर काग्रेसजनो को सबोधन
20 सितम्बर, 1931

बहुत दिनो बाद आज बगाल की राजनीति के विभिन्न दल और गुट एक मच पर एकत्र हुए है। काग्रेसजनो को एकता के सूत्र मे बाधने का प्रयास ही दु ख वेदना और अपमान के अधकार से आच्छादित आकाश के बीच एक मात्र आशा की किरण के समान है। शहीद का रक्त ही मदिर का बीज है। अतएव आज हमारे हृदय की यही पुकार है कि शहीदो के रक्त पर एकता की इमारत खडी करनी चाहिए। यदि बगाली लोग ऐसा करने मे असफल रहे तो कोई भी यह कह सकता है कि, "बगालियो तुम धरती से उठ जाओ, तुम धरती पर व्यर्थ ही क्यो बोझ बने हुए हो?" लेकिन मुझे अपने लोगो पर विश्वास है। मैं उनका सम्मान करता हू। मैं शहीदो के रक्त के प्रति श्रद्धा रखता हू कि एकता की इमारत का निर्माण अवश्य होगा।

व्यर्थ के मामलो को लेकर विस्तार मे जाने की जरूरत नही है। लेकिन एक प्रश्न विचारणीय है। तर्क के लिए यह मान लिया जाये कि जो सरकारी विज्ञप्ति मे कहा गया है, वह सच है। लेकिन इसका अभिप्राय क्या है? कमरो के अदर गोलिया बरसाने का क्या औचित्य था? और जो लोग मारे गये, वे कोई साधारण अपराधी चोर-लुटेरे नहीं थे बल्कि देश के सर्वोत्तम व्यक्ति थे, इसके मन मे सरकार विरोधी भावनाए हो सकती हैं। लेकिन अतर्राष्ट्रीय नीति-सहिता के अनुसार वे युद्ध बदियो की भाति व्यवहार के अधिकारी थे कोई कारण नहीं है कि बगाल के बदियो का वह व्यवहार क्यों नहीं दिया जाता जो कि युद्ध को किया जाता है? मैं जब बहरामपुर जेल में था, जिला मजिस्ट्रेट ने मुझसे हसते हुए कहा, "कि हमारे सामने एक ही रास्ता है कि तुम्हे दीवार के सामने खडा किया जाये और गोली मार दी जाये।" मैंने भी हसते हुए उत्तर दिया, "ठीक है, यदि आप ऐसा करते है तो इससे ऐसी आग-भडकेगी जो आप सबको भस्म कर देगी।" जैसा कि अध्यक्ष ने कहा है, यह स्वेच्छाचारी शासन की अतिम सास है। दीवार की इमारत बहुत स्पष्ट है। अन्यायी

हाथो से सत्ता खिसक रही है। वे हर ओर मे जन-उभार को देख रहे है और उन्हे अपने अंतिम दिनो का अहसास हो गया है। सीले और टाउनशैंड जैसे अंग्रेजी लेखको ने भविष्यवाणी की थी "एक दिन मे उभरा हुआ साम्राज्य एक रात मे खत्म हो जायेगा।'

अंग्रेज ने इस देश की जनता मे फूट और भेदभाव पैदा करके अपनी स्थिति मजबूत की। अंग्रेजो ने बगालियो-विशेष रूप से युवा बगालियो को पसद नहीं किया। लेकिन बगालियो के हृदय मे छुपा हुआ भावुकतावाद जिस दिन प्रकट हो जायेगा उस दिन सब चीजे उनके सामने स्पष्ट हो जायेगी और इस भावुकतावाद की जीत होगी।

जहा तक बगाल की बात है, यहा समझौते की शर्तो का कभी पालन नहीं किया गया। समझौते पर हस्ताक्षर होने के साथ से ही यहा भरपूर दमन चलता रहा है। राज्य बदियो को मुक्त नही किया गया, मृत्युदड प्राप्त बदियो के साथ कोई रियायत नहीं बरती गयी षड्यत्र मुकदमो को वापस नहीं लिया गया और प्रतिदिन नयी गिरफ्तारिया होती रही है। तब समझौता कहा रहा? क्या हृदय परिवर्तन हुआ? जब हृदय ही नहीं है तो परिवर्तन का प्रश्न ही नहीं उठता। व्यक्ति के रूप मे एक अंग्रेज सहृदय हो सकता है लेकिन जब अंग्रेज गोलमेज सम्मेलन मे बैठते है तब वे हृदय के निर्देशो को अनसुना कर देते है। वे दमन और अधिक दमन की बाते करते है।

बगाली अपनी स्वाधीन चेतना और पूर्ण स्वतत्रता की लालसा के कारण अग्रजो की आखो मे चुभते रहे है। विगत तीस वर्ष से बगाली इसके लिए आग्रहशील रहे है और यातनाए सहते रहे है इसीलिए अंग्रेज उन्हे कुचलना चाहते है। उनके अतिम रूप से सत्ता को त्याग देने से पहले बगाल मे वैसी ही पुनर्रचना होगी जैसी कि काले और भूरो ने आयरलैड मे की थी। यह बगाल की देशभक्ति का अमल परीक्षण होगा। देखना यह है कि बगाल पूर्ण स्वाधीनता की कीमत चुकाने को तैयार है या नहीं (मुझे विश्वास है कि बगाल (युवा बगाल) अपनी महता की पूर्ण ऊचाई तक नहीं उठेगा)। यदि मेरे देशवासी इसकी कीमत देने को तैयार हैं तब उन्हे पूर्ण स्वाधीनता मागना चाहिए। अन्यथा वे अपने मालिको के सामने हाथ जोडे और जो रोटी का टुकडा उनकी ओर फेंका जाता है उसे स्वीकार करें और स्वाधीनता के भ्रम मे जीते रहें।

धमकी की नीति बगाल को नहीं डरा सकती। बगाल ने महान व्यक्तियो को जन्म दिया है लेकिन उसकी बडी असफलता यह है कि उसके सपूतो मे क्रिया की अन्विति और सबद्धता नहीं है। अब समय आ गया है कि व्यक्ति स्वय को राष्ट्र मे विलीन करे। प्रकृति से अत्यत सम्पन्न बगाली अपनी अयोग्यता के कारण ऐसा कर पाने मे असफल रहे है।

उन्हे शात मन के साथ अपनी कार्य-योजना पर विचार करना होगा तब उस पर अमल करना होगा। चित्तगोग और हिजली की घटनाओ के बाद वे चुप नहीं बैठे लेकिन पहले उन्हे एक सयुक्त मोर्चा बनाना होगा।

सभी राज्य बदी सुधार के लिए उनका मुह जोह रहे है। यह समझना उनका दायित्व है कि उनके (बदियो) कष्ट और दुख व्यर्थ नहीं जायेगे।

जो लोग उन पर ऐसे आरोप लगाते है वे वास्तव मे उन पर विश्वास नहीं करते अन्यथा आज तक वे जेल के बाहर क्यो बने रहते? काग्रेस कार्यकर्ताओ मे फूट और मतभेद पैदा करने के इरादे से ही ये आरोप लगाये गये है।

जहा तक मेरी बात है, यदि मेरे त्याग पत्र देने से कांग्रेस का कार्य सुचारू रूप से चल सकता है मैं सहर्ष त्यागपत्र दे दूगा। यदि मुझे लगता है कि मेरे आत्म विलोपन से देश स्वतत्रता के समीप पहुच सकता है, मैं स्वेच्छा से ऐसा कर दूगा। यदि मुझसे यह कहा जाता है कि स्वाधीनता सग्राम मे समूचा राष्ट्र एक जुट हो जायेगा तब वास्तव मे मुझे एक धूल का कण बन जाने मे भी अत्यत प्रसन्नता होगी। जैसा कि मैं यह कह चुका हू, मैं राष्ट्र का एक विनम्र कार्यकर्ता हू। मैं अपने देशवासियो के लिए दिल मे जगह के सिवा किसी पद या प्रतिष्ठा का दावा नहीं करता।

व्यक्ति को सबके हित मे आत्म त्याग करने के तथ्य सीखनी चाहिए। सौदेबाजी की भावना से उनकी क्रिया मे सजीवता नहीं आ सकती।

जमशेदपुर की गंभीर स्थिति

एक बयान, 24 अक्टूबर, 1931

जमशेदपुर की स्थिति गभीर रूप से जनता का ध्यान खींचती है। लेबर फेडरेशन के अध्यक्ष श्री मानिक होमी पर सफलता पूर्वक मुकदमा चलाने और लेबर फेडरेशन की गतिविधियो को ठप्प कर देने के बाद टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लेबर एसोसिएशन को कुचलने पर भी आमादा है। गत रविवार को मजदूरो की समस्याओ पर विचार-विमर्श हेतु बुलाई गई बैठक गुडो द्वारा नाकाम कर दी गयी और तीस से अधिक लोग गभीर रूप से घायल हो गये। कस्बे मे आम चर्चा है कि गुडो को तैयार करने मे कम्पनी के दलालो का हाथ है और इस सिलसिले मे कम्पनी के कई जाने-माने अधिकारियो के नाम खुलकर लिये जा रहे है।

लेबर एसोसिएशन की सामान्य परिषद ने सरकार से माग की है कि रविवार की घटनाओ की जाच हेतु एक समिति नियुक्त की जाये। समिति नियुक्त होने या नहीं होने का दायित्व टाटा के निदेशक मडल का है। यदि कम्पनी अपनी प्रतिष्ठा बचाना चाहती है तो उसे तुरत जाच समिति बैठानी होगी। मैं यह कहने की स्थिति मे हू कि यदि एक निष्पक्ष समिति नियुक्त कर दी जाती है और गवाहो को सताया नहीं जाता है, तब पूर्णतया यह सिद्ध हो जायेगा कि कम्पनी के कुछ अधिकारियो के उकसाने पर कम्पनी के कुछ दलाल गत रविवार की घटनाओ के लिए जिम्मेदार है। तब से इस मामले मे कोई प्रगति नहीं हुई है।

कल मुझे एक सामाजिक कार्यजश कस्बे के बाहरी क्षेत्र मे जाना था। वहा गुडो द्वारा हमारे ऊपर हमला करने का पूरा इतजाम था। सौभाग्य से हमारे लोग आगाह हो गये और आत्मरक्षा के लिए तैयार हो गये। इसलिए प्रत्याशित हमला सभव न हो सका। मुझे सूचना मिली है कि कस्बे के गुडे आज भी सक्रिय है और हमले के दूसरे मौके की तलाश कर रहे हैं। यह कहना एक फालतू बात होगी कि कम्पनी के व्यवहार ने हमे विचलित कर दिया है। यदि वे ऐसा सोचते है कि गुडागर्दी की नीति मजदूरो को हताश और ध्वस्त कर देगी, तो यह उनकी भूल है। अब उनका पाला लेबर फेडरेशन के पदाधिकारियों से भिन्न लोगो के साथ पडा है। इस मौके पर मैं एक दिन के लिए

जमशेदपुर आया लेकिन यह घटना घटी तो मैने सब कार्यक्रम रद्द कर दिये और यहा रुकने का निर्णय किया। यदि एक स्थान पर मालिक लोग गुडो की मदद से मजदूरो को कुचलने मे सफल हो जाते है, इसी प्रयोग को वे हर जगह दोहरायेगे। अतएव अब हमारे सामने जीवन-मरण का प्रश्न है और हमे शातिपूर्ण एव वैधानिक तरीको से कम्पनी के विरुद्ध लडाई लडनी है।

मैं टाटा समुदाय को चेतावनी देता हू कि इन कार्यनीतियो को आगे जारी न रखे। उन्होने अब तक जो कुछ किया है और भविष्य मे जो भी करेगे इन सब बातो का जनमत की अदालत के सामने जवाब देना होगा। उनका वास्ता ऐसे लोगो से पडा है जो न्यायोचित कार्य के लिए अपने जीवन का बलिदान भी कर सकते है। कम्पनी के दलाल पहले ही अपने व्यवहार से मजदूरो को उत्तेजित कर चुके है और कारखाने के हर विभाग मे उनके प्रति विरोध भाव बढ रहा है और अधिक उत्तेजना से क्रोध भडक सकता है और औद्योगिक सकट खडा हो सकता है। जहा तक हमारा सबध है हम मजदूरो के पक्ष मे खडे होने के लिए कृत निश्चयी है और हर प्रकार के जोखिम और परिणामो का दृढता के साथ सामना करने के लिए तत्पर है।

हिजली शिविर में भूख हडताल पर बैठे बदियो से साक्षात्कार की अनुमति नहीं मिली

बयान, 1 अक्टूबर, 1931

मै और सतींद्रनाथ डाउन बम्बई मेल से मगलवार की सुबह खडगपुर आये। हमने आते ही बदियो से साक्षात्कार के लिए आवेदन किया जो कि भूख हडताल पर बैठे हुए थे। हम कमाडेट बेकर से मिले। उन्होने हमसे कहा कि सरकार के आदेश के बिना मैं साक्षात्कार की अनुमति नहीं दे सकता। मैंने बताया कि हम अपने बदी मित्रो को भूख हडताल तोडने पर राजी करने के लिए आये है और हिजली कैप के कमाडैंट यदि उचित समझते है तो साक्षात्कार की अनुमति दे सकते है। जब मैं अध्यादेश के तहत नजरबद था बदियो ने भूख हडताल की थी तब जेल अधीक्षक ने हमसे साक्षात्कार करने की अनुमति दे दी थी। लेकिन कमाडेट ने मुझे उत्तर दिया कि वे साक्षात्कार की मजूरी नहीं दे सकते और मुझे सलाह दी कि मैं अनुमति के लिए राइटर्स बिल्डिंग को लिखू। मैने कहा कि यदि वह व्यक्तिगत रूप से साक्षात्कार के विरोधी नहीं है तो टेलीफोन द्वारा आदेश प्राप्त करने के लिए हमारे मामले को सरकार के पास भेज सकते है। इस पर वह राजी हो गये और यह व्यवस्था की गयी कि हम उनसे दोपहर एक बजे मिले तब तक सरकार की ओर से जवाब आ सकता है।

एक बजे जब हम हिजली कैप के लिए रवाना हुए, रास्ते मे सिपाहियो ने हमारी गाडी रोक ली और बोले कि उनके पास हुक्म नहीं है कि यहा से आगे बढने दे। हमने सिपाही और हवलदार से कहा कि हम पूर्व निश्चित कार्यक्रम के मुताबिक एक बजे कमाडेट से भेट करने जा रहे हैं और सुबह हमे इस तरह नहीं रोका गया था। लेकिन उसने जिद ठान ली और मैंने कमाडेट को

लिखा कि उनकी लिखित अनुमति के बिना हम उनसे मिलने दफ्तर नहीं पहुच सकते। कमाडर ने मेरे पत्र के उत्तर मे लिखा कि हमारा आगे बढना ठीक न होगा। उन्होने मि० हूचिग्स को फोन किया था। जवाब मे उन्होने बताया कि वे स्वय तो अनुमति नहीं दे सकते लेकिन वे मि० प्रेंटिस से सम्पर्क करेंगे। उन्होने आगे बताया कि हमे बदियो से साक्षात्कार का अनुमति आज मिल पाना सभव न होगा। बदियो से साक्षात्कार की हमारी कोशिशो का कुछ हासिल न निकला। सौभाग्य से हम सुबह ही अमरेंद्र नाथ चटर्जी से मिले जो स्वय सुबह हिजली बदी शिविर मे अपने छोटे भाई व्रजेंद्र नाथ चटर्जी से मिलने जा रहे थे। हमने उनसे कहा कि हम बदियो से साक्षात्कार की कोशिश कर रहे है। लेकिन हम नहीं जानते कि हमे अनुमति क्यो नहीं मिली? हमने अमरेंद्र बाबू से निवेदन किया कि वे बदियो तक हमारा यह सदेश पहुचा दे कि वे जनता की इच्छा का ध्यान रखते हुए भूख-हडताल समाप्त कर दे।

नवापाडा पुलिस स्टेशन से उत्पीडन

बयान, 14 अक्तूबर, 1931

बगाल जूट मजदूर सम्मेलन के आयोजको ने मुझे बताया कि वे आज सम्मेलन नहीं कर पायेगे। आज कार्य दिवस होने के कारण मजदूरो का सम्मेलन मे उपस्थित होना असभव नहीं तो कठिन अवश्य होगा। दूसरे श्रोताओ की अधिक तादाद को देखते हुए एक शामियाने की बजाय खुले मैदान मे यह सम्मेलन करना होगा और प्रतिकूल मौसम के कारण खुले मैदान मे आयोजन करने मे भी कठिनाई आयेगी। आयोजको का यह आग्रह भी था कि मैं आज के बजाय सम्मेलन वाले दिन जगतदल आऊ। इस सप्ताह मे ही किसी दिन सम्मेलन बुलाने की तैयारिया चल रही थीं। इस बीच मुझे हिजली मे एक जरूरी बुलावा आया। इसलिए मैं आज बम्बई मेल से हिजली जा रहा हू और कल वापस आऊगा।

बगाल जूट मजदूर सम्मेलन की स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री टी० सी० गोस्वामी के साथ मैं रविवार को दोपहर बाद जगतदल रवाना हुआ। जगतदल थाने की सीमा मे प्रवेश करने से पहले जब हम नवापाडा थाने के क्षेत्राधिकार मे थे तब पुलिस वालो ने हमारी कार रोक ली। गाडिया खडी करके रास्ता बद कर दिया गया था। पुलिस अधिकारी ने मुझे बताया कि उसके पास ऐसे आदेश है कि मुझे कलकत्ता लौट जाना चाहिए यदि मैने ऐसा नहीं किया तो मुझे नवापाडा थाने मे हिरासत मे ले लिया जायेगा। मैंने कार से उतरने से पहले ही पुलिस अधिकारी को चेतावनी दी कि वह एक गैर कानूनी काम कर रहा है इसके लिए वह जवाबदेही होगा क्योंकि वह मुझे जगतदल थाना क्षेत्राधिकार मे प्रवेश करने से पहले गिरफ्तार कर रहा है। उसने कहा कि वह हुक्म के आगे मजबूर है। मेरे नीचे उतरने के बाद स्वय को नवापाडा पुलिस स्टेशन का आफीसर इचार्ज बताने वाले पुलिस अधिकारी ने मुझसे कहा कि यदि मैं पैदल न जाना चाहू तो कार चलाकर

थाने पहुच सकता हू। उसने दो सिपाही मेरे साथ कर दिये थे। वे (श्री गोस्वामी की) कार मे बैठ गये और हम शाम पाच बजे के आसपास नवापाडा थाना पहुचे।

थाने पहुचने के बाद आफीसर इचार्ज ने तमाम बडे अधिकारियो को फोन खटका दिये। लेकिन उनके आते-आते काफी समय बीत चुका था। आखिरकार शाम 6 30 या 7 30 बजे एस० डी० ओ० (बर्ध), ए० एस० पी० (बेमरोज) और इस्पैक्टर मैके जी आये। पहले दो अधिकारियो के कपडो को देखकर लगता था कि वे सीधे क्लब से आ रहे है। (मुझे भी बाद मे पता चला कि जब उन्हे फोन किया था उस समय वे क्लब मे थे।) तीसरे अफसर ने बताया कि वह सीधा फुटबाल के मैदान से आया है। इस प्रकार तीन-सर्वोच्च स्थानीय अधिकारी उस समय अपने खेल-कूद मे मग्न थे जबकि उनके मुताबिक जूट मजदूर सम्मेलन की दूसरी बैठक के रूप मे शाति भग करने की कोशिश हो रही थी और धारा 144 लगाकर मुझे जगतदल थाना इलाके मे दाखिल होने से रोका जा रहा था । निस्सदेह बडी सख्या मे सशस्त्र और निशस्त्र पुलिसकर्मी जगतदल और पडोस के रेलवे स्टेशन पर तैनात थे। लेकिन यदि वास्तव मे शाति भग होने का आशका होती तो जगतदल थाना सीमा से लगभग दस मील दूर बारकपुर मे तीन सर्वोच्च अधिकारी खेल-कूद मे मग्न न रहे होते। मुझे विश्वसनीय सूत्रो से यह भी पता चला कि शाम 4 30 बजे क्लब जाने से पहले एस० डी० ओ० अपने बगले पर ही था और जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हू वह शाम 6 30 या 7 बजे तक नवापाडा थाना नहीं पहुच सका। एस० डी० ओ० ने मुझे यह भी बताया कि उसे शनिवार को आयोजित जूट मजदूर सम्मेलन के बारे मे रविवार सुबह 10 बजे तक कुछ भी जानकारी नहीं थी। उसने यह भी स्वीकार किया कि यदि जूट मजदूर सम्मेलन मे शनिवार शाम को हगामा हुआ होता तो इसकी सूचना उसे जरूर मिलती।

सभवतया नवापाडा के इस्पेक्टर को मेरी चेतावनी का अनुकूल प्रभाव पडा और शनिवार की शाम एस० डी० ओ० ने थाने मे मुझसे कहा कि यदि मैं कलकत्ता वापस जाने और फिर जगतदल न आने का वचन दे दू तो मुझे छोड दिया जायेगा। मैंने जवाब दिया कि शायद जो भी परिणाम निकले लेकिन मैं उन्हे या किसी भी सरकारी अधिकारी को अपनी गतिविधियों को लेकर आश्वासन नहीं दे सकता और यह कि मैं थाने से छूटते ही सीधा जगतदल जाऊगा। उसने बताया कि इस स्थिति मे वह मुझे छोड नहीं सकेगा और मुझे थाने मे हिरासत मे रहना पडेगा।

रविवार की रात निर्देश प्राप्त हुए कि यदि मैं कलकत्ता वापस नहीं गया तो बिस्तर और खाना नहीं दिया जायेगा। लेकिन इस समय तक ये चीजे मुझे दी जा चुकी थीं। सोमवार की सुबह ये निर्देश फिर दोहराये गये। इस्पेक्टर ने मुझे बताया कि जिला मजिस्ट्रेट के आदेश के तहत मुझे किसी से बातचीत नहीं करनी है और न ही कुछ खाना-पीना है। मैंने जवाब दिया कि भोजन और पेय की आपूर्ति रोक देने से मुझ पर कोई असर नहीं पडेगा। सोमवार के पूरे दिन और आधी रात तक मेरे भाई के अलावा न तो मुझे किसी से मिलने दिया गया और न कुछ भोजन-पानी ग्रहण करने दिया गया, सिवाय एक चाय के जो कि थाने मे भोजन-पानी बद करने के निर्देश प्राप्त होने से पहले मुझे दे दी गयी थी।

सोमवार को दिन भर मे कोई विशेष घटना नहीं घटी, सिवाय इसके कि देर रात तक एक के बाद एक समूहो मे मिलने वाले थाने मे आते रहे। करीब रात 11 बजे मुझे 'थाना प्रभारी ने जगाया और कहा कि वह आदेश के तहत मेरे लिए टैक्सी ले आया है और मुझे कलकत्ता जाना पड़ेगा। मैंने उसे बताया कि मैंने पहले ही रविवार रात और सोमवार को अधिकारियो को सूचित कर दिया है कि मैं अपनी भविष्य की गतिविधियो के बारे मे किसी को कोई आश्वासन नहीं दे सकता। मैंने थाने से छूट जाने के बाद जहा चाहूगा, वहा जाऊगा और यदि मुझे बाध्य किया तो मैं कलकत्ता जाने से इन्कार कर दूगा। आगे मैंने उसे बताया कि मेरे छूटने के बाद वह मुझे स्थान विशेष पर जाने के लिए बाध्य नहीं कर सकता। प्रभारी अधिकारी ने अपने वरिष्ठ अधिकारी से बडी देर तक फोन पर बातचीत की और आखिरकार मुझसे कहा कि मुक्त होने के बाद मैं जहा मर्जी चाहे वहा जा सकता हू और मुझे टैक्सी इसीलिए दी गयी है। मैंने जवाब मे कहा कि मैं उनके द्वारा मुहैया कराई गयी टैक्सी मे नहीं बैठ सकता क्योकि इस टैक्सी का ड्राइवर मेरे मार्ग निर्देशो को नहीं समझ सकता। इसलिए मेरे थाना छोडने से पहले मेरी निजी कार मगा दी जाये। थाना प्रभारी ने ए० एस० आर० की अनुमति ले ली और कार भेजने के लिए मेरे घर फोन किया। आधी रात के बाद कार आयी और नवापाडा थाने मे 31 घटे गैर कानूनी हिरासत मे रहने के बाद मैं मुक्त हुआ।

सम्मेलन की दूसरी बैठक पर पाबदी और मुझे दिया गया आदेश दोनो एकदम अनुचित और गैर कानूनी थे। मैं जानता हू कि स्वार्थी दलालो ने हमारा सम्मेलन बिगाडने की कोशिश की थी किन्तु उन्हे सफलता नहीं मिल सकी। उन्होने रविवार की सुबह कुछ अखबारो (जैसे स्टेट्समेन और एडवास) मे सम्मेलन को लेकर गलत रिपोर्टे भी छपवाई। इन रिपोर्टो को पढने के बाद हमने आगे की शरारत का अदाजा लगा लिया। इन शरारतियो ने सभवतया मिल मालिको की मदद ली थी और उन्होने एक ऐसे अधिकारी द्वारा धारा 144 के तहत आदेश प्राप्त करने मे सफलता हासिल कर ली थी जिसे अपने आगमन के बाद रविवार सुबह दस बजे तक जूट मजदूर सम्मेलन के बारे मे कोई जानकारी नहीं थी। मैंने एस० डी० ओ० से कहा कि यदि वाकई उसे किसी गडबडी का अदेशा है तो उसे सम्मेलन को शातिपूर्वक आयोजित करने वालो के बजाय शरारती तत्वो को रोकना चाहिए। मैंने उसे यह भी बताया कि कुछ शरारतियो की कोशिशो के बावजूद मुझे सम्मेलन मे गडबडी की आशका नजर नहीं आती। एस० डी० ओ० और पुलिस अफसर ने बडी लापरवाही के साथ साम्प्रदायिकता का हौवा खडा कर दिया। मैंने इसके जवाब मे कहा कि मजदूर सम्मेलन साम्प्रदायिकता के विरूद्ध सबसे बडा आश्वासन है क्योकि यह एक ऐसा सम्मेलन है जो सभी सम्प्रदाय के लोगो को एक मच प्रदान करता है। यदि धारा 144 के तहत आदेश लागू करने की सारी कहानी सुनाई जाये तो यह बडी रोचक साबित होगी लेकिन फिर कभी।

इन घटनाओ का बयान करने के पीछे मेरा उद्देश्य निजी असुविधाओ की ओर ध्यान आकर्षित करना नहीं है। मैं केवल इस बात को रेखाकित करना चाहता हू कि ऐसे आश्चर्यजनक रूप से समर्थन प्राप्त सम्मेलन को न केवल स्थानीय बदमाशो ने प्रतिबधित किया जिनका कोई वजूद नहीं था बल्कि निहित स्वार्थी लोगो की सेवा मे समर्पित स्थानीय अधिकारियो ने भी इसके मार्ग मे बाधाए उत्पन्न की।

बंगाल को अपनी सुरक्षा पुन: करनी है

16 अक्टूबर, 1931 को एसोसिएटेड प्रेस को जारी बयान

मैं कांग्रेस कार्य समिति के रवैए के प्रति लगाव महसूस नहीं करता। पिछले कुछ वर्षों से मैं बंगाल के मामलों को लेकर कार्य समिति से कोई प्रत्याशा नहीं करता और मैं समझता हूं इस प्रांत के लोगों में धीरे-धीरे यह भावना घर करती जा रही है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि बंगाल की जीवंत समस्याओं के प्रति कार्य समिति की उदासीनता को लेकर बंगाल में कई जगह नकारात्मक असंतोष दिखाई देता है। बंगाल के लिए उचित यह होगा कि वह कार्य समिति को भुलाकर अपने पैरों पर खड़ा हो तथा अपनी मुक्ति का मार्ग खोले। बंगाल ने 1905 में अपने प्रयत्नों द्वारा अपने-आपको बचाया, फिर कोई कारण नहीं है कि 1931 के वर्ष में उसी प्रकार स्वयं को न बचा पाये। मेरा दृढ़ विश्वास है कि बंगाल पच्चीस वर्ष पूर्व की भांति यदि मौजूदा संकट के दौर में उठ खड़ा हो तो वह अपने कष्टों का निवारण करने में समर्थ हो सकेगा। भले ही उसे शेष भारत की सहायता प्राप्त न हो। लेकिन इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बंगाल को तमाम आपसी मतभेद भुलाकर एकता का प्रदर्शन करना होगा। मुझे आशा है कि बंगाल आज के दिन निःस्वार्थ देशभक्ति में कोई कमी नहीं रखेगा। हम चाहते हैं कि हमारे बीच से अच्छे और भले लोग सामूहिक हित के कार्य में आगे बढ़ कर आयें। कार्य समिति हमारे कष्टों को लेकर उदासीन हो सकती है लेकिन मैं इस सच्चाई को जानता हूं कि अन्य प्रांतों के लोग हमारे द्वारा चलाये जा रहे अहिंसक संघर्ष में पूरे मन से हमारे साथ हैं।

समिति ने गवाहियां दर्ज करके जांच का एक चरण पूरा कर लिया है। कल वह दोनों पक्षों की दलीलें सुनेगी। फिर हम उनकी रिपोर्ट की उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करेंगे। समिति के एक सरकारी होने के बावजूद मैं नहीं सोचता कि हम हिजली में किये गये उनके काम के बारे में कोई शिकायत कर पायेंगे। कम से कम यह मेरा निजी विचार है। लेकिन यह कहना बहुत जल्दबाजी होगी कि समिति की खोजें जनता कैसे संतुष्ट करेगी? समिति द्वारा दर्ज की गई गवाहियां किसी स्थिति में जनता के सामने अवश्य पहुंचेंगी। तब उनके आधार पर जनता अपने निष्कर्ष निकालेगी। इस सिलसिले में मैं यह बात साफ तौर पर कहना चाहूंगा कि जनता समिति से केवल एक स्वच्छ और निष्पक्ष रिपोर्ट ही नहीं चाहती बल्कि एक दु:खद भूल का समुचित सुधार भी चाहती है।

चित्तगोंग की घटनाओं को लेकर भी जनता की मांग यही है। चित्तगोंग के असहाय और निहत्थे लोगों का जो नुकसान हुआ है हम उसकी क्षतिपूर्ति चाहते हैं। मेरा निजी विचार यह है कि हिजली और चित्तगोंग की घटनाओं के संबंध में हुई जांच के आधार पर जनता एक मांग-सूची तैयार करे और इन मांगों को पूरा करने की दिशा में अभियान चलाया जाये।

बंगाल में नागरिकों के अधिकारों को इतनी सरलता से और लगातार कुचला जा रहा है। यह देखकर मुझे लगता है कि नागरिकों के अधिकारों के अतिक्रमण से संबंधित मुकदमों की तुरंत सुनवाई के लिए एक स्थायी संस्था बनाने की जरूरत है जिसका नाम नागरिक अधिकार समिति हो। यदि एक ऐसी सक्रिय एवं पूर्णरूपेण प्रतिनिधि समिति बन जाये तो हम संगठित जनमत की शक्ति द्वारा उस काले अध्याय का अंत कर देंगे जिससे कि आज हम गुजर रहे हैं।

जमशेदपुर के मजदूरों की समस्याएं और मांगे

टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनी के मजदूरो को सबोधन, 17 अक्टूबर, 1931

पिछले कई दिनो से हम प्रबध के सामने जमशेदपुर के मजदूरो की विशिष्ट समस्याओ और मागो को रखते रहे है। हमने शनिवार, 20 सितम्बर, 1931 को महाप्रबधक के साथ एक बैठक की थी जिसमे समस्याओ और मागो पर विचार-विमर्श किया गया था। शुक्रवार 25 सितम्बर को महाप्रबधक के साथ मेरी दूसरी बैठक हुई जिसमे इन मागो और समस्याओ पर पुन चर्चा हुई और उन्हे एक लिखित मागपत्र सौपा गया। मैं शनिवार 27 सितम्बर को निदेशक ए आर दलाल से मिला जो कि उसी सुबह बम्बई से आये थे। मैने बातचीत के दौरान उनके सामने कुछ समस्याए रखीं। दूसरे दिन फिर हम श्री दलाल से मिले। कामरेड नायडू, मोइन्रा और मोनी घोष भी बैठक मे उपस्थित थे। हमने महाप्रबधक को सौपी गई समस्याओ और मागो की सूची पर सविस्तार चर्चा की। हमने 20 सितम्बर 1931 को भी टाउन मैदान की बैठक मे हुई घटनाओ की जाच के सबध मे भी महाप्रबधक से विचार-विमर्श किया।

यह कहना जल्दबाजी होगी कि हमारे प्रयासो का क्या परिणाम निकलेगा? यह बहुत कुछ मजदूरो की शक्ति और एकता पर निर्भर करता है। आम दफ्तर का कार्य समय पहले ही सुबह 9 30 से शाम 5 बजे तक कर दिया गया है। बीच मे आधा घटे का अतराल। वर्षो के विरोध और प्रयासो के बादु बहुअपेक्षित परिवर्तन कर दिया गया है।

मजदूरो की समस्याए और मागे

1 वेतन बिल से सदस्यता शुल्क की वसूली की बहाली।

2 अनिवार्य अवकाश पर भेजे गये बार मिल मजदूरो को तुरत वापस बुलाया जाना चाहिए और उन्हे अपेक्षित दरो पर काम लगाया जाये जैसा कि सर पी गिनवाला और महाप्रबधक ने 31 मार्च और 7 अप्रैल 1931 को आश्वासन दिया था। मजदूरो से बेकारी के दिनो के मकान का किराया वसूल न किया जाये। उन्हे सितम्बर से ही मजदूरी दी जाये क्योकि सितम्बर मे उन्हे कारखाना चालू होने का आश्वासन दिया गया था।

3 न्यू रेल मिल, न्यू फिनिशिग मिल, प्लेट मिल और शिपिग विभाग के मजदूरो को उस अवधि का पूरा वेतन दिया जाये जिस दौरान उन्होने काम बद रखा।

4 बेबुनियादी बातो पर सताये गये और सेवा-मुक्त किये गये मजदूरो की बहाली की जानी चाहिए।

5 भविष्य मे मजदूरी मे कोई कटौती नहीं की जानी चाहिए।

6 मिथ्या आधारो पर और उचित खोजबीन के बिना किये गये निलबन और अन्य दडो को समाप्त किया जाये और इस प्रकार के मुकदमो पर प्रबध-तत्र शीघ्रातिशीघ्र पुनर्विचार करे।

7 अनिवार्य अवकाश को लागू न किया जाये।

8 द्वार पर कर्मचारियो की गतिविधियो को लेकर लगायी गयी अनुचित पाबदिया वापस ली जाये।

9 समय-समय पर अवकाश के दिनो का पूरा वेतन दिया जाये।

10 स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियो सहित सभी रोजाना और हफ्तेवार मजदूरो की दरे मासिक भुगतान वाले कर्मचारियो के समतुल्य की जाये।

11. चिकित्सा के आधार पर आधे वेतन का अवकाश दिया जाना चाहिए।

12. वर्षो पहले ग्रेचुइटी और पेशन योजनाओ को लेकर किये गये वायदे को पूरा किया जाना चाहिए।

13 1928 के विवाद के समझौते के फलस्वरूप दिये गये कर्ज को औपचारिक रूप से रद्द कर दिया जाना चाहिए क्योकि इस कर्ज को कर्मचारियो से अब तक वसूल नहीं किया गया है और इसे सेवा मुक्ति के समय वसूल किया जाना है।

14 कर्मचारियो के बच्चो के लिए घटाई गयी स्कूल फीस बरकरार रहनी चाहिए।

15 जिन विभागो मे अब तक विभागीय उत्पादन बोनस नहीं दिया जाता है उन्हे दिया जाना चाहिए।

16 भूमि और आवास के किराये मे वृद्धि को वापस लिया जाये।

17 जो कर्मचारी अब तक अपने वेतनमान के अनुसार न्यूनतम वेतन नहीं पा रहे है उन्हे दिया जाना चाहिए और बिना किसी बाधा के उन्हे वेतनमान के अनुसार वार्षिक वेतन वृद्धि दी जानी चाहिए।

18 गोल खोली आर एन टाइप राम दास भट्ट और सी टाउन आदि के कमरे के क्वार्टरो मे तुरत सुधार किये जाने चाहिए।

19. मजदूरो द्वारा घेरी गयी सडको और बस्तियो मे प्रकाश की उचित व्यवस्था की जाये।

20 जहा पानी की आपूर्ति के उचित प्रबध नहीं है वहा किये जाये।

21 एक महिला कर्मचारी के लिए प्रसूति लाभ की सेवा अवधि एक वर्ष से घटाकर छ महीने कर दी जाये।

22 कार्यालय कर्मचारियो और टाइमकीपरो द्वारा अपनी समस्याओ को लेकर 22-7-30 को सोपे गये ज्ञापन-पत्र पर उचित ध्यान दिया जाये। विशेष रूप से आम पाली को जारी रखने के प्रश्न पर विचार किया जाये।

23 टाइम कीपिग विभाग मे आराम देने वाली टोली को खत्म किया जाये। इसके कारण बडी दिक्कते होती है।

24 स्कूल समिति, कल्याण समिति और ऐसी ही लोक कल्याण समितियो मे मजदूर सगठन का प्रभावशाली प्रतिनिधित्व होना चाहिए।

चित्तगोंग और हिजली की जांचों के आधार पर मांगें

प्रेस के लिए जारी बयान, 23 अक्टूबर, 1931

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सरदार वल्लभ भाई पटेल ने बगाल की वर्तमान समस्याओ को लेकर पहल की है। मेरी केवल यह इच्छा है कि कार्य समिति के लिए यह सभव होगा कि बैठक कलकत्ता में रखी जाये, लेकिन मुझे खेद है कि काग्रेस अध्यक्ष की इच्छा के बावजूद कुछ सदस्यो की असुविधा मार्ग मे बाधा बन रही है।

मुझे अखबारो से ज्ञात हुआ कि सरदार पटेल का कहना है कि उन्हे न तो बगाल प्रात काग्रेस कमेटी और न मैंने हिजली की घटनाओ से अवगत कराया है। हम सब यह समझते हैं कि कार्यसमिति मे बगाल के सदस्य काग्रेस के अध्यक्ष से निकट का सवाद बनाए हुए हैं फिर भी बगाल प्रात काग्रेस कमेटी उस समय अध्यक्ष विहीन थी क्योंकि हिजली त्रासदी का समाचार पाकर मैने उसी दिन त्यागपत्र दे दिया था। हिजली की घटनाओ की खबरे अखबारो के माध्यम से देश के विभिन्न भागो मे पहुच चुकी हैं।

जैसा कि मैं काग्रेस अध्यक्ष को पहले ही सूचित कर चुका हू कि मैं पूर्व निश्चित कार्यक्रमो के कारण इस माह की 27 तारीख को दिल्ली मे आयोजित कार्य समिति की बैठक मे उपस्थित नहीं हो सकूगा। मुझे गोइला (बारीसाल) मे शहीद तारकेश्वर सेन के पवित्र अस्थियो के विसर्जन समारोह मे उपस्थित होना है और ऐसी पवित्र प्रकृति के सार्वजनिक कार्यक्रम को टालना सभव न होगा। फिर भी मुझे आशा है कि बगाल प्रात काग्रेस कमेटी के वर्तमान अध्यक्ष कार्य समिति की बैठक मे अवश्य उपस्थित होगे और बगाल के बारे मे सपूर्ण तथ्य समिति के समक्ष प्रस्तुत करेगे।

मैं पहले ही सार्वजनिक रूप से अपने विचार बता चुका हू। हमे चिन्तगोग और हिजली की जाचो के आधार पर अपनी मागे तैयार करनी होगी। इन मागो में यह बात शामिल होनी चाहिए कि सभी बंदियो को तुरत बिना शर्त रिहा किया जाये और भविष्य मे कभी इस प्रकार त्रासद घटनाओ की पुनरावृत्ति न हो। इसके साथ ही हमारे देशवासियो के साथ की गयी दुखद भूलो का उचित रूप से प्रायश्चित किया जाये। एक बार ये मागे तैयार हो जाये फिर मैं प्रस्ताव करता हू कि इन मागो को पूरा करने की दिशा मे देशव्यापी अभियान चलाया जाये। हमे उन पवित्र ज्वालाओ को अक्षण बनाये रखना है जिन्होने शहीद सतोष मित्र और तारकेश्वर सेन के पार्थिव शरीर को भस्म मे बदल दिया है। चित्तगोग और हिजली की घटनाओ ने देशभर मे शोक का वातावरण बना दिया है। दासता और अवमानना की परिस्थितियो ने हमारी आत्मा मे अग्नि प्रज्जवलित कर दी है। इग्लैंड और भारत के बीच मे सतोष मित्र और तारकेश्वर सेन के शव लेटे हुए है। ऐसा न हो कि हम भूल जाये, ऐसा न हो कि हम भूल जाये।

"फ्री प्रेस"

निजी स्वतंत्रता से वंचित और परेशान हाल

चांदपुर से बयान, 10 नवम्बर 1931

मैं 7 नवम्बर 1931 को ढाका की स्थिति का जायजा लेने के लिए मय श्री ए० सी० गांगुली, नरेंद्र नारायण चक्रवर्ती, हेमेंद्रनाथ दासगुप्ता और अविनाश भट्टाचार्य के साथ कलकत्ता से नारायण गंज पहुंचा। यह याद होगा कि 5 नवम्बर 1931 को कलकत्ता के अलबर्ट हाल में आयोजित आम सभा में हम तीनों को ढाका जांच समिति का सदस्य नियुक्त किया गया था।

जैसे ही स्टीमर नारायण गंज घाट पहुंचा, नारायण गंज के उप मंडलीय अधिकारियों सहित अनेक पुलिस अधिकारी और सिपाही स्टीमर में सवार हो गये। स्टीमर के बगल में एक नाव भी लगा दी गयी जिसमें हमने यात्रा की। तुरंत बाद एक यूरोपीय पुलिस अधिकारी (बाद में मालूम हुआ कि वह कार्यवाहक पुलिस अधीक्षक एलीसन है) मेरी तरफ मुखातिब हुआ और सी० आर० पी० सी० की धारा 144 के तहत मुझे दो माह तक ढाका जिले में प्रवेश न करने का आदेश दिया। इस आदेश पर ढाका के जिला मजिस्ट्रेट मि० डौडिंग के हस्ताक्षर थे। फिर एलीसन ने मुझसे नाव में आने के लिए कहा जो मुझे नारायण-गंज से सीधे गोलंदो जाने वाले स्टीमर तक पहुंचा देगी। उसने मुझसे जल्दी करने को भी कहा क्योंकि मेरे कारण ही डाक स्टीमर रुका हुआ था। मैं बोला कि मेरा गन्तव्य ढाका था और एक स्वतंत्र व्यक्ति की तरह ढाका की ओर ही यात्रा करूंगा। मैंने यह भी बताया कि यह आदेश निरर्थक, गैरकानूनी और अवांछित है और मैं इसके पालन का इरादा नहीं रखता। एलीसन ने नारायण गंज के एस० डी० ओ० और अन्य अधिकारियों से कुछ बातचीत की और मेरी तरफ बढ़ते हुए मेरे कंधे पर हाथ रखकर बोला, "मैं तुम्हें गिरफ्तार करता हूं।" फिर उसने कहा कि मुझे नाव में बैठना ही पड़ेगा और नारायण गंज से जाने वाले स्टीमर तक पहुंचना होगा। मैंने यह कहते हुए प्रतिरोध जताया कि मैं यदि धारा 144 के तहत आदेश की अवज्ञा करता हूं तो मुझे धारा 188 के तहत हिरासत में लिया जा सकता है। लेकिन मुझे इस तर्ज पर जबर्दस्ती ढाका जिले से बाहर नहीं खदेड़ा जा सकता। कार्यवाहक अधीक्षक ने मेरी एक न सुनी। वह अपना निर्देश दे चुका था और मेरे सामान को नाव पर लाद दिया गया। फिर भी सरकार और पुलिस के पक्ष पर साफ तौर से गैर कानूनी लगने वाले कदम का मैंने पुनः विरोध किया। इससे एलीसन थोड़ा रुका और एस० डी० ओ० नारायण गंज और अन्य अधिकारियों से पुनः परामर्श करने लगा। अंत में वह मेरे पास आया और बोला कि मुझे नीचे उतरना होगा और उसे उसके साथ थाने जाना होगा। मैं गिरफ्तारी में था इसलिए उसका पालन करना पड़ा। उसने मुझे एक कार में बैठाया और थाने ले गया पहले उसने बताया कि मुझे एक मिनट के लिए थाने में रुकना है। लेकिन बाद में मैंने पाया कि मुझे दो घंटे से अधिक थाने में रहना पड़ा। थाने में अधिकारियों के बीच लंबी बातचीत हुई। कुछ समय बाद एलीसन पहुंचा और बोला कि मुझे गिरफ्तार नहीं किया गया है बल्कि मुझे पुलिस के संरक्षण में रखा गया है। उसने मुझसे कलकत्ता वापस जाने और आदेश का पालन करने को कहा लेकिन उसी समय यह टिप्पणी भी कर दी कि वह पहले से जानता था कि मैं इस आदेश का पालन नहीं करूंगा। उसने मुझसे यह भी पूछा कि

जब जगतदल मे धारा 144 के तहत मुझे तहत मुझे आदेश दिया गया था, तब क्या हुआ था? मैंने जवाब मे कहा कि यदि मैं गिरफ्तार नहीं हू तो मैं जाना चाहता हू। मेरा गतव्य ढाका था और मैं वहा पहुचना चाहता था। जगतदल के बारे मे मैंने बताया कि मेरी गिरफ्तारी के बाद अधिकारियो ने तुरत अपनी गलती महसूस की और मुझे केवल मुक्त ही नहीं किया बल्कि उस क्षेत्र मे मेरी सभा का निषेध करने वाले आदेश को भी वापस ले लिया। फिर मैने एलीसन से पूछा कि मेरे अपराध के असज्ञेय होने की स्थिति मे वह क्या करेगा मै जमानत पर छूटने की माग करूगा। इस स्थिति मे वे मुझे ढाका मे रहने से रोक नहीं सकते। इस बिन्दु पर एलीसन और एस० डी० ओ० बाहर चले गये और अन्यत्र देर तक बतियाते रहे और शायद जिला मजिस्ट्रेट से फोन पर बात करते रहे है जो कि उस नारायण गज से दस मील दूर ढाका मे था। इस बीच मे मैं अधीर हो उठा। मैने थाना प्रभारी पूछा कि एलीसन ने जाने से पूर्व जो टिप्पणी की है उसको देखते हुए मै स्वय को गिरफ्तार समझू या नहीं थाना अफसर मुझे जवाब न दे सका। उसने कार्यवाहक एस० पी० को फोन किया। एस० पी० ने जवाब दिया कि वह हाल ही मे आ रहा है। कुछ देर बाद वह आया और बोला कि मैं गिरफ्तार नहीं बल्कि वास्तविक रूप से नियत्रण" मे हू। मैने कहा कि मैं स्पष्ट रूप से यह जानना चाहता हू कि मैं कानूनन गिरफ्तार हू या नहीं? मुझे एक नाव पर गिरफ्तार किया गया। मैंने कार्यवाहक अधीक्षक के आदेश का पालन इसलिए किया कि मै तब गिरफ्तार था। यदि उस समय मैं स्वतत्र होता तो थाने नहीं आया होता। एलीसन ने समस्या को उलझाने का प्रयास किया। वह स्पष्ट उत्तर देने के बजाय यही दोहराता रहा कि मैं "वास्तविक रूप मे नियत्रण' मे हू। जब मैंने नाव पर गिरफ्तारी का हवाला दिया तो वह बोला कि वह गलतफहमी थी। मैने जवाब मे कहा कि उस गिरफ्तारी को लेकर कोई गलतफहमी नही थी यद्यपि मेरी गिरफ्तारी को एक भूल कहा जा सकता है। फिर मैंने कहा कि जब मैं कानूनी तौर पर गिरफ्तार नहीं हू तो मैं चलूगा। मैं वास्तव मे उठ गया और जाने लगा। तब एलीसन ने मेरा हाथ पकडा और जाने से रोका। ऐसा दो बार हुआ। पुलिस अधिकारी के पक्ष पर इस गैर कानूनी काम का मैंने तीव्र प्रतिरोध किया और कहा कि या तो मुझे कानूनी तौर पर गिरफ्तार किया जाये या आजाद। मुझे केवल शारीरिक बल से अपनी स्वतत्रता से वचित नहीं रखा जा सकता। मैंने उसे यह चेतावनी भी दी कि वह ऐसा आचरण करके स्वय को कानून की नजर मे दोषी बना रहा है। उसने कहा कि उसे बचा लिया जायेगा कि क्योकि वह आदेश के तहत ऐसा कर रहा है। मैने कहा कि यह सच्चाई उसे कानून की नजर मे निर्दोष साबित नहीं कर सकती। लेकिन मेरे शब्दो का उस पर कुछ असर नहीं हुआ। शाम चार बजे के आसपास वह उठा और बोला कि मुझे उसके साथ चादपुर स्टीमर मेल तक जाना होगा और वहा से बैठाकर मुझे ढाका जिले से बाहर भेज दिया जायेगा। तब उसने मुझसे हाथ से पकडा और कुछ दूरी तक धकाता हुआ ले गया। मैंने यह पाया कि वह शारीरिक बल का प्रयोग करने पर आमादा है, मैने समर्पण कर दिया और अनेक लोगो की उपस्थिति मे कहा कि मै कानूनी आदेश के आगे नहीं बल्कि मात्र शारीरिक बल के आगे झुक रहा हू।

थाने से स्टीमर घाट के लिए प्रस्थान करने से ठीक पहले मैंने एलीसन से कहा कि जब वह मुझे शारीरिक बल प्रयोग द्वारा ढाका जिले से बाहर निकाल रहा है ऐसे मे मैं अपने वकीलो

के लिए निर्देश छोड देना चाहता हू ताकि वे जिम्मेदार सरकारी अफसरो द्वारा किये गये गैर कानूनी काम के विरुद्ध जरूरी कानूनी कार्यवाही कर सके। जब मैंने उससे वकीलो को बुलाने के लिए कहा उस समय नरेंद्र नारायण चक्रवर्ती मेरे साथ थे। लेकिन एलीसन ने कहा कि मुझे किसी वकील से मिलने की इजाजत नहीं दी जायेगी और उस समय नरेंद्र नारायण चक्रवर्ती मेरे साथ थे। लेकिन एलीसन ने कहा कि मुझे किसी वकील से मिलने की इजाजत नहीं दी जायेगी और उस समय नरेंद्र बाबू से लौटने को कहा। बाद मे एलीसन ने कहा कि वह केवल जे० सी० गुप्ता को मुझसे मिलने की इजाजत देगा। लेकिन उसने मेरे थाना छोडने तक जे० सी० गुप्ता की प्रतीक्षा नही की। फिर भी जे० सी० गुप्ता मुझसे स्टीमर पर आकर मिले। मैने वे सारे हालात बयान किये जिनके तहत मुझे बल प्रयोग द्वारा स्टीमर तक लाया गया था और ढाका जिले से बाहर भेजा जा रहा था।

सर्वश्री जे० सी० गुप्ता हेमेंद्रनाथ दास गुप्ता और नरेंद्र नारायण चक्रवर्ती अधिकाश समय मेरे साथ रहे। मैंने ऊपर जो कुछ कहा है वे इसके व्यक्तिगत रूप से साक्षी है।

जब स्टीमर नारायण गज को छूटने वाला ही था घाट पर लोगो की भीड जमा हो गयी और वे मुझे साधुवाद देने लगे। बडाबिल्ला के बदनाम एलीसन के लिए इतना काफी था वह स्टीमर से उतरा और सिपाहियो को साथ लेकर भीड को लाठियो से रोकने लगा।

मि० एलीसन और पुलिसकर्मी मुशीगज पहुचने तक स्टीमर की मार्ग रक्षा करते रहे। मुशीगज घाट पर पुलिस के लोग नीचे उतरने लगे। तब मैंने एलीसन से कहा कि मैं शुरू से उसका अनुसरण कर रहा हू, इसीलिए अब मै भी नीचे उतरूगा। मेरी इस बात ने कार्यवाहक एस० पी० को सतर्क कर दिया। उसने आदेश दिया कि घाट पर पुल बनाने वाले सभी तख्तो को हटा दिया जाये केवल एक तख्ता छोड दिया जाये। जब पुलिस दल उस पार उतर गया वह भी जल्दी मे पार कर गया और तुरत तख्ते हटा लिये गये ताकि मैं वे उसके पीछे पार न उतर सकू। स्टीमर तुरत चल पडा।

इन परिस्थितियो मे चादपुर आने के लिए बाध्य किया गया। एस० पी निर्देशानुसार मेरा सामान ढाका भेज दिया गया था। जब मुझे मालूम हुआ कि वे मुझे ढाका से बाहर भेजने पर तुले हुए हैं तब मैंने उस सामान को वापस मगाना चाहा। लेकिन सामान नही आया। एस० पी० ने मुझसे कहा कि यदि मेरा सामान समय पर नहीं पहुचा तो मेरे लिए कुछ बिस्तर का प्रबध कर दिया जायेगा। लेकिन वास्तव मे कुछ नहीं किया गया। टिकट के रूप मे मुझे मुशीगज के बाद दूसरे स्टेशन गजारिया तक का पास दिया गया। जब एस० पी० ने मुझे पास दिया तो मैने उससे कहा कि वह मुझे गजारिया से चादपुर तक बिना यात्रा टिकट यात्रा का गैर कानूनी काम करने के लिए बाध्य कर रहा है। लेकिन इस बात का उस पर कुछ असर नही हुआ।

उपर्युक्त तथ्यो की रोशनी मे मेरा इस बात को दोहराना उचित है जिसे मै अक्सर कहता रहा हू कि इस दुर्भाग्यशाली देश मे अपनी व्यक्तिगत स्वतत्रता को लेकर हमारे पास कोई अधिकार नहीं है। हम पूरी तरह स्थानीय अफसरो की दया पर रहते है। मुझे यह भी लगता है कि ढाका मे ऐसी बहुत सी अधेरिया हैं जिन्हे स्थानीय अफसर रोशनी मे नहीं आने देते। उन्हे

बेनकाब होने का डर बना रहता है। इसका कारण सिर्फ यह है कि उन्होने मेरे खिलाफ धारा 144 के तहत गैर कानूनी कार्यवाही क्यो की है? फिर भी मुझे आशा है कि जाच समिति निर्भीक होकर जाच शुरू करेगी। जहा तक मेरी बात है यह कहने की जरूरत नहीं कि मैं ढाका जाने का प्रयास फिर से करूगा लेकिन इस का परिणाम क्या होगा? यह बता पाना एक जल्दबाजी होगी।

लोग ढाका की भयप्रद घटनाओ के बारे मे काफी कुछ सुन चुके है। मैं उन्हे यह अहसास कराना चाहता हू कि भविष्य मे दमन को रोकने का तरीका यह है कि स्थानीय अफसरो को बेनकाब किया जाये। यदि मुझे अपनी स्वतन्त्रता से वचित किया गया जैसा कि लगभग सुनिश्चित लगता है मुझे आशा है कि मेरे साथी निर्भीक रूप से इस काम को आगे बढ़ायेगे।

आत्म सम्मान, मनुष्यता और जनता के अधिकार कुचल दिये गये

गिरफ्तारी के समय संदेश, 12 नवम्बर, 1931

चित्तगोग और हिजली को याद रखे। ये स्थानीय नहीं बल्कि राष्ट्रीय भूले है। इन भूलो का किसी भी प्रकार का अल्प सुधार हमे सतुष्ट नहीं कर सकता। मैं देशवासियो से अपील करता हू कि वे चित्तगोग और हिजली की भूलो के सुधार को लेकर हमारे द्वारा पेश की गयी मागो का समर्थन करे और एक देशव्यापी आदोलन चलायें।

बगाल प्रातीय सम्मेलन जल्द ही होगा और कार्यवाही की रूपरेखा तैयार की जायेगी। मेरा परामर्श है कि यदि इस बीच सरकार हमारी मागे पूरी नहीं करती है तो हम पिकेटिंग के साथ-साथ विलायती माल के बहिष्कार का अभियान छेड देगे। मुझे आशा है बगाल प्रातीय सम्मेलन इस मामले मे बगाल का निश्चित नेतृत्व करेगा।

चित्तगोग और हिजली की नृशसताओ से केवल बगाल के काग्रेसजनो के ही नहीं बल्कि समूचे बगाल वासियो के समक्ष एक समस्या खड़ी कर दी है। यदि काग्रेस अपने कर्त्तव्य मे असफल होती है और मैं आश्वस्त हू कि नहीं होगी तब कोई कारण नहीं है कि जनता इस मामले को अपने हाथ मे न ले। आत्म सम्मान, मनुष्यता और जनता के अधिकार पैरो के नीचे कुचल दिये गये और यह जनता का कर्त्तव्य है कि इनका प्रतिशोध ले। मुझे आशा है कि यदि जरूरत पडी तो लोग चित्तगोग और हिजली की भूलो के सुधार हेतु एक सगठन बनायेगे और सफलता प्राप्त होने तक अभियान जारी रखेगे। कहीं भूल न हो जाये मैं अपने देशवासियो से अपील करता हू कि हर माह की 16 तारीख को चित्तगोग और हिजली दिवस के रूप मे मनाये।

हिजली और चित्तगोग के अत्याचारो का प्रतिकार किया जाये

हरीश पार्क मे भाषण, 26 नवम्बर, 1931

यद्यपि इस परिस्थिति मे हमारे कर्त्तव्य को मैं अनगिनत बार दोहरा चुका हू। मुझे यह जरूरी लगता है कि क्योकि यह हमारे राष्ट्रीय आतमसम्मान को प्रभावित करने वाला मामला है। हमारा कर्त्तव्य यह है कि हमे अपने देशवासियो को इस परिस्थिति से अवगत कराने के लिए एक तूफानी अभियान छेडना चाहिए।

दमन के अभ्यस्त होने के कारण हम परिस्थितियो की गभीरता का अनुमान करने मे समर्थ नहीं हो सकते। लेकिन यदि हम इस मामले को गहराई से देखे तो महसूस करेगे कि यह हमारे लिए जीवन-मरण का प्रश्न है। चित्तगोग जैसे अत्याचार हमारे लिए नये नहीं है लेकिन इस घटना मे एक नयी बात यह है कि एक गैर सरकारी जाच समिति ने आरोप लगाये है कि स्थानीय अधिकारी किसी आधार पर इस मामले मे निर्दोष नहीं ठहराये जा सकते। अब तक इस गभीर आरोप का उत्तर नहीं मिला है। जब तक हमे उत्तर नहीं मिलता है हमारा इस निष्कर्ष पर पहुचना अतार्किक नही है कि इस आरोप मे सच्चाई निहित है। यदि सरकार कोई उत्तर नही देती है, देश इस आरोप को सच समझेगा लेकिन यदि सरकार कुछ करना चाहती है तो अविलब करे। चित्तगोग का मामला एक स्थानीय समस्या नहीं है क्योकि ऐसी घटनाए देश के किसी भी भाग में किसी भी समय घटित हो सकती है। अतएव यदि हम इन अत्याचारो के प्रति उदासीन बने रहे, सरकार यह समझेगी कि हम इनका प्रतिकार करने मे अशक्त है फिर इससे भी अधिक गभीर रूप मे अत्याचार जारी रहेगे।

कुछ घटो की सूचना पर लाखो लोग शहीद सतोष और तारकेश्वर के शवो को लेने के लिए इकट्ठे हो गये और कलकत्ते की सडको के बीच से इनकी यात्रा निकाली। उन्हे ऐसा करने के लिए किसने उकसाया? क्योकि उन्होने महसूस किया कि हिजली की घटनाए कही भी दोहराई जा सकती हैं और यह कि उनके पास अपने जीवन की रक्षा का अधिकार है। हिजली के अत्याचार जलियावाला बाग से भी कहीं अधिक बडे है क्योकि यहा बिना किसी मुकद्मे के निर्दोष लोग सरकारी हिरासत मे रहे। हम ऐसा मानते कि इन लोगो की सुरक्षा के लिए सिपाही से लेकर हर अधिकारी जवाबदेह है। इस घटना से हमारी लाचारी का पता चलता था।

यदि हम दावा करते हैं और वास्तव में हमारी यह आस्था है कि हम मनुष्य है तब हमारा कर्त्तव्य बन जाता है कि हम यह बताये कि हम मनुष्य है भेडे नहीं। जो स्वय का कानून और व्यवस्था का रखवाला बताते हैं, वे हमारे जीवन और सम्पत्ति की रत्ती भर चिन्ता नहीं करते।

हम चीजो की इस हालत के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से स्वय जिम्मेदार है। 1920 मे कलकत्ता तथा 1921 मे नागपुर के काग्रेस सत्रो मे पजाब और खिलाफत समस्याओ के समाधान की मागो को स्वराज की माग के ऊपर वरीयता दी गयी थी। मैं नहीं समझ पाया था कि ऐसा क्यों हुआ? लेकिन इसका कारण आज समझ मे आया। हमारी जान-माल प्राथमिक चिन्ता का विषय है और स्वराज गौण। यदि बगाल विभाजन की नीति से सहमत होता, तो वह स्वराज

के संघर्ष मे इतना गौरवशाली पराक्रम न दिखा पाता। आज भी वही समस्या वही खतरा हमारे सामने मौजूद है।

दुर्बल कंगाल बंगालियो ने अपनी बहादुरी से दरिद्रता को पराजित कर दिया था। उन्होने विजय का स्वाद चख लिया है। अब यह उनके शक्ति प्रदर्शन का समय है। उन्हे आप को संगठित करना चाहिए और एक तगडी भिडंत देनी चाहिए। यदि हम आज इन चीजो को सहन कर लेते है तो सत्ता यह समझेगी कि हम कुछ भी सहने के लिए तैयार हैं। अपनी कार्यवाही से यह दर्शाइए कि आप किसी भी कीमत पर इन चीजो को सहन नहीं करने जा रहे है।

दमन करने वाले से दमन सहने वाला कहीं बडा अपराधी है। पाच करोड बगाली एक स्वर मे कहे कि वे प्रतिकार चाहते हैं। इन मुद्दो की खातिर अन्य समस्याओ की कुर्बानी कर देनी चाहिए। दमन की छोटी-छोटी खुराके अध्यादेश और विशेष अदालतो के साथ शुरू हुईं। इसके परिणामस्वरूप चित्तगोग और हिजली की वारदाते हुई और यदि हमने इन्हे सहन कर लिया तो हमे कलकत्ता मे इससे भारी और कठोर दमन के लिए तैयार रहना चाहिए।

हिजली और चित्तगोग को लेकर जनता की मागे पहले ही सुनिश्चित की जा चुकी है और हमारे अभियान का आधार यही मागे होनी चाहिए। यदि हम चुप रहते है तो हम समूचे सभ्य ससार के सामने हसी का पात्र बनेगे। यह विश्राम का समय नहीं है। हिजली और चित्तगोग का प्रतिकार किया जाना चाहिए।

बहिष्कार कार्यक्रम

खुलना जाने से पहले दिया गया बयान, 17 दिसबर, 1931

बहरामपुर मे बहिष्कार प्रस्ताव को पारित हुए ग्यारह दिन बीत गये लेकिन यह खेद की बात है कि बगाल प्रात काग्रेस समिति ने इस प्रस्ताव की पुष्टि अब तक नहीं की है और यह प्रस्ताव औपचारिक अनुमोदन के लिए कार्यसमिति के पास नहीं भेजा गया है। बहरामपुर मे हमे सर्वश्री राजेद्र प्रसाद नरीमन और अन्य द्वारा स्पष्ट रूप से आश्वस्त किया गया था कि बगाल से जो भी कार्यक्रम भेजा जायेगा कार्यसमिति उसे मजूरी दे देगी। अतएव अकारण ही बहुत समय नष्ट हो चुका है। फिर भी जब आगामी 29 दिसम्बर को कार्यसमिति की बैठक हो रही है मुझे आशा है इस बीच बगाल प्रात काग्रेस समिति की सयुक्त समिति बहिष्कार प्रस्ताव की पुष्टि कर देगी और इसे औपचारिक अनुमोदन हेतु कार्यसमिति को भेज देगी।

इस बीच प्रात भर के काग्रेस सगठनो और अन्य सस्थाओ को बहिष्कार प्रस्ताव को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक प्रबध कर लेना चाहिए। आवश्यक धन जुटाने स्वय सेवको की सूची बनाने और आवश्यक साहित्य के प्रकाशन मे स्वाभाविक रूप से अधिक समय लग जायेगा। ये प्रारभिक तैयारिया तुरत की जानी चाहिए। खुलना से लौटने के बाद मे बम्बई और पूना जाऊगा। आशा

है कि महात्मा गाधी के इग्लैड से लौटने पर मैं बम्बई मे उनसे भेट करूगा। जैसे ही बहिष्कार कार्यक्रम कार्यसमिति द्वारा औपचारिक रूप से स्वीकृत कर लिया जाता है हम लोग अविलब छोड देगे।

ईश्वर ने चाहा तो मुझे आशा है कि मैं बहिष्कार कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के तरीको पर विचार विमर्श हेतु समूचे प्रात के जिलो के प्रतिनिधि कार्यकर्ताओ के एक सभा का आयोजन जनवरी के आरभ मे करूगा।

समझौते के बावजूद दमन जारी है

महाराष्ट्र युवा सम्मेलन मे अध्यक्षीय भाषण का मूल पाठ, 22 दिसम्बर, 1931

सारे ससार के युवा वर्तमान व्यवस्था को लेकर बेचैन है। उनके पास अपना एक स्वप्न है, एक दृष्टि है- चीजो को बेहतर रूप मे देखने की दृष्टि और अब ये युवा अपने स्वप्न को यथार्थ मे परिवर्तित करने के लिए शक्ति बटोर रहे है। हम स्वप्नदृष्टा हो सकते है लेकिन हमे यह विश्वास है कि आज का स्वप्न कल के यथार्थ मे बदल सकता है। इस आस्था से प्रेरित होकर हम हमारे देशवासियो के लिए एक नयी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था निर्माण करने हेतु कठोर वास्तविकताओ और बाधाओ का मुकाबला करने के लिए युद्धरत है।

मैं जानता हू कि कुछ लोग यह सोचते है कि स्वतत्रता की पूरी खुराक हमारे लिए ठीक नहीं है, जैसे यह स्वेच्छा को प्रेरित कर सकती है। हमारी उनसे कोई लडाई नहीं है बल्कि हम उनसे तर्क करने मे अपने समय और ऊर्जा को नष्ट नहीं करेगे। हम सिर्फ यह कहेगे कि हमारे और उनके बीच कुछ मूलभूत अतर है। हमारा विश्वास है कि स्वतत्रता सबके लिए है और यह जितनी अधिक हमे प्राप्त होगी, इससे हमारा और मानवता का उतना ही हित है। लेकिन मित्रो युवाओ की आवाज आसानी से नहीं सुनी जाती। अक्सर इस आवाज पर मुहर लगाने के प्रयास किये जाते है। लेकिन यहा तक कि मुहरबद आवाज उन लोगो द्वारा सुनी जा सकती है जो अपने कानो पर जोर डालने की तकलीफ उठाते हैं। जहा तक हमारे देश की बात है मै आग्रह के साथ कहता हू कि भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की परिधि मे भी युवाओ की आवाज को हमेशा नहीं सुना गया। इसके परिणामस्वरूप आप देश के कई भागो मे काग्रेस सगठन और युवा आदोलन के बीच द्वद्व की स्थिति देख सकते हैं। मैं काग्रेस सगठन के प्रभारी व्यक्तियो से जोरदार अपील करूगा कि वे हमारे समाज के क्रान्तिकारी तत्वो को काग्रेस सगठन मे प्रवेश दे। यही क्रान्तिकारी तत्व किसी दल या सगठन की शक्ति का निर्माण करते हैं और मेरे मतानुसार हमे ऐसे व्यक्तियो को सगठन से बाहर नहीं रखना चाहिए जो अपने दृष्टिकोण मे क्रान्तिकारी है।

मेरे विनम्र मत मे गोलमेज सम्मेलन की पराजय का एक बडा कारण यह है कि जब यह अभागा समझौता हुआ। उस समय युवाओ की आवाज की कमोवेश उपेक्षा की गयी। वास्तव मे

गोलमेज सम्मेलन को "युद्धरत" दलो तक परिमिति रहना चाहिए था। दुर्भाग्य से गोलमेज सम्मेलन के वफादारो साम्प्रदायिक और अज्ञात कुलशील लोगो को आगे बढाना नहीं बल्कि सही राष्ट्रवादियो के मार्ग मे बाधाए उत्पन्न करना था। इन परिस्थितियो मे कोई आश्चर्य नहीं कि सम्मेलन धुए मे उडकर रह गया। आज के गोलमेज सम्मेलन को देखकर आयरलैंड के समझौते की याद आती है जो सीन फीनर्स के लिए एक गढा साबित हुआ था। लेकिन सीन फीनर्स इस गड्ढे से बच निकले और हम इसमे गिरने वाले है। आज स्थिति बिल्कुल भिन्न होती यदि हम समझौते के समय यह आग्रह करते कि केवल युद्धरत दलो का प्रतिनिधित्व होना चाहिए और यदि हम अंग्रेजी हुकूमत से यह वचन ले लेते कि सम्मेलन मे केवल कराची प्रस्ताव के अनुसार भारतीय जनता की मूलभूत मागो पर विचार-विमर्श किया जायेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। परिणाम स्वरूप सम्मेलन मे स्वराज के उस वास्तविक रूप पर विचार-विमर्श नहीं हुआ जिसे भारत प्राप्त करना चाहता था लेकिन क्या भारत पूर्ण स्वराज चाहता था या स्वराज को टुकडो-टुकडो मे खुराके चाहता था और सभी लोगो ने भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि महात्मा गाधी द्वारा प्रस्तुत स्वराज की माग का विरोध किया।

समझौते के समय हुई गलती को केवल काग्रेस के सर्वोच्च कार्यकर्त्ताओ के मत्थे नहीं मढना चाहिए बल्कि यह भारत सरकार की गलती भी है। मुझे कहना चाहिए इसमे भारत सरकार की गलती ज्यादा है। समझौते की शर्तो पर विचार-विमर्श के दौरान क्रान्तिकारी बदियों और मेरठ षड्यत्र मुकदमे के बदियो द्वारा प्रतिनिधित्व देश के दो उग्रवादी समूहो की एकदम उपेक्षा की गयी। लार्ड इर्विन को सूचित किया और परामर्श दिया गया कि यदि शाति कायम रखना है तो इन दो उग्रवादी समूहो की उपेक्षा करना उचित न होगा। लेकिन इस परामर्श का कुछ अर्थ नहीं निकला। समझौते की घोषणा मे सत्याग्रह बदियो को मुक्त करने की बात थी लेकिन मेरठ षड्यत्र मुकदमे बदस्तूर चलते रहे। भारत की विभिन्न जेलो मे पडे क्रान्तिकारी बदियो को या तो भुला दिया गया था उनकी उपेक्षा की गयी। इन दो समूहो के साथ-साथ बिना मुकदमे के जेल भेजे गये बदियो को मुक्त न करना एक गभीर भूल थी।

जबकि सरकार और काग्रेस के बीच सामान्य रूप से समझौता हो चुका था फिर भी खुशी-खुशी दमन चलता रहा। बिना मुकदमे के जेल मे डाले गये बदियो की सख्या दिन-ब-दिन बढती गयी। दमन की मात्रा और विधियों में वृद्धि होती रही। फिर सरकार अपनी ऐसी नीतियो द्वारा उत्तेजित करती रही, काग्रेस जिन्हे रोक या बद नहीं कर सकती थी। जब इस प्रकार की उत्तेजनाओ ने तेजस्वी युवाओ के मन मे रोष उत्पन्न कर दिया और उन्हे आतकवादी गतिविधियो के ओर प्रेरित कर दिया तब एग्लो इडियन प्रेस और नौकरशाही के दलालो ने जिन्हे हम सरकारी आतकवाद के लिए जवाबदेह मानते है- काग्रेस और उसके प्रतिनिधियो को दोष देना शुरू कर दिया। काग्रेस सरकारी आतकवाद को रोक पाने मे इसलिए अक्षम साबित हुई क्योकि देश भर के युवाओ, विशेष रूप मे बगाल के युवाओ पर उसकी पकड मजबूत नहीं रही। यदि काग्रेस नौकरशाही की दमनकारी नीति को रोक पाने मे सक्षम होती तो अहिंसा के रूप मे काग्रेस की अपील की सीधा प्रभाव पडता। लेकिन आज की हालत को देखते हुए यह मान लेना चाहिए कि अहिंसा-को बनाए रखने की दिशा मे प्रेस तथा मचो से बार-बार की जाने वाली अपीलो का अपेक्षित प्रभाव नहीं हो पा रहा है।

मेरा यह दृढ़ मत है कि जैसे ही महात्मा गांधी भारत आते हैं उनसे यह निवेदन किया जाना चाहिए कि सरकार को एक धमकी भेज दे, जब सरकार अपने आचरण से यह जता चुकी है कि उसने समझौते को तोड़ दिया है। मैं नहीं समझ पाया कि कांग्रेस समझौते की छाया से क्यों चिपटी हुई है, जबकि इसका सार-तत्व एकदम नष्ट हो चुका है।

कांग्रेस को एक निर्भीक नीति अपनानी चाहिए

शिवाजी मंदिर में आयोजित महाराष्ट्र युवा आंदोलन में भाषण, 24 दिसम्बर, 1931

किसी भी क्षेत्र में कोई संदेह नहीं किया जा सकता कि अब हमें स्वतंत्रता की भूख लगी हुई है। यह भूख बहुत तीव्र और गहन है। जब एक बार यह भूख हमारे भीतर जाग चुकी है तो पूरी खुराक मिलने तक यह भूख शांत नहीं हो सकती।

स्वतंत्रता का पहला-पहला स्वाद हमें असंतुलित कर सकता है हमें चक्कर भी आ सकते हैं लेकिन जब हम सयमी हो जाते है तो तब हमें पता चलता है कि स्वतंत्रता असीम और अबाधित शक्ति का स्रोत है। दुर्भाग्यपूर्ण दिल्ली समझौते के समय युवाओं की आवाज की उपेक्षा की गई। इसका परिणाम यह हुआ कि अनेक बंदी तथा नजरबंद लोग मुक्त नहीं किए जा सके और जब कि कांग्रेस और सरकार के बीच समझौता हो चुका था फिर भी दमन के द्वारा युवाओं के मन में रोष उत्पन्न किया जाता रहा जिसने उन्हें आतंकवाद की दुर्भाग्यपूर्ण कार्यवाही की ओर प्रेरित किया।

यदि कांग्रेस सरकार की दमनकारी नीति को रोक पाने में सक्षम होती तो अहिंसा के रूप में कांग्रेस की अपील का सीधा प्रभाव पड़ता। लेकिन आज की हालत को देखते हुए यह मान लेना चाहिए कि अहिंसा के बनाये रखने की दिशा में प्रेस तथा मंचों से बार-बार की जाने वाली अपीलों का अपेक्षित प्रभाव नहीं हो पा रहा है।

मेरा यह दृढ़ मत है कि जैसे ही महात्मा गांधी भारत आते है उनसे यह निवेदन किया जाना चाहिए कि सरकार को इस आशय की एक धमकी भेज दें कि सरकार जब तक विभिन्न स्थानों पर अपनाये गये दमनकारी उपायों को तुरन्त वापस नहीं लेती है तब तक हमारे लिए गोलमेज सम्मेलन को सहयोग जारी रखना नहीं होगा। जब सरकार अपने आचरण से यह जता चुकी है उसने समझौते को तोड़ दिया है। मैं नहीं समझ पाया कि कांग्रेस समझौते की छाया से क्यों चिपटी हुई है जबकि इसका सार-तत्व एकदम नष्ट हो चुका है।

जैसा कि देश को एक निर्भीक और तत्पर अनुयायी की प्रतीक्षा रही है, कांग्रेस को एक निर्भीक नीति अपनानी चाहिए और मैं कांग्रेस पदाधिकारियों को चेतावनी देता हूं कि सरकार से समझौता करते समय कांग्रेस के वामपंथियों सहित देश के प्रमुख समूहों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

स्वाधीनता प्राप्ति में एकमात्र उद्देश्य निहित है

कलकत्ता जाने से पहले प्रेस को जारी बयान, 3 जनवरी, 1932

उस समय जब काग्रेस कार्यसमिति आगे बातचीत के लिए तैयार थी, लार्ड विलिंगडन एक दुर्निवार समस्या का अत करते हुए हमारे बचाव के लिए आ गये। अब हमारी पकड जल्दी ही मजबूत हो जायेगी और एक बार फिर वास्तविक मुद्दो की लडाई शुरू हो जायेगी। गाधी-इर्विन समझौते के समापन के समय हमने महसूस किया था कि अभी हताशाओ के अत का समय नहीं आया है और जग जारी रहेगी। तब हमारी आवाज की अनसुनी कर दी गयी। आज हम सही साबित हुए हैं।

जहा तक बगाल की बात है, आज हमारे पास वह नहीं है, जो कि हम चाहते थे। अब विलब रूप से सत्याग्रह अभियान का पुन आरभ होना चाहिए क्योकि केवल इसी के द्वारा बगाल की स्थिति मे सुधार की आशा की जा सकती है। यह भी सुखद है कि एक बार फिर अग्रेजी माल के बहिष्कार को अखिल भारतीय अस्त्र के रूप मे अपना लिया गया है।

इस सिलसिले मे मैं कहना चाहूगा कि आज भी हमारे सामने एक खतरा है। कुछ समय लडाई जारी रहने के बाद पिछले दिल्ली समझौते की भाति फिर किसी समझौते का प्रस्ताव लाया जा सकता है। यदि इसे रोकना है तो आज से ही कार्यकर्त्ताओ को क्रियाशील और गतिशील बनाना चाहिए और जो लडाई मे शामिल होना चाहते है। उन्हे यह बात स्पष्ट कर देनी चाहिए कि स्वाधीनता प्राप्त मे ही उनका एकमात्र लक्ष्य निहित है और वे नये समझौते व मोल-तोल सहन नहीं करेगे। यदि ऐसा नहीं हुआ तो एक बार फिर हम स्वय को विपत्ति मे झोक देगे।

मेरा स्वास्थ्य एव अन्य विचार

एक मित्र के लिए पत्र, 16 अप्रैल, 1931

यह जानकर हमे बडा सुख मिला कि पिताजी के स्वास्थ्य में तेजी के साथ सुधार हो रहा है। हमे आशा है, गर्मी के मौसम के बावजूद यह प्रगति बनी रहेगी।

आपने मेरे स्वास्थ्य के बारे मे पूछा था। हा तथ्यो को छुपाने का कोई अर्थ नहीं है। आप पहले ही सुन चुके है कि मेरे आमाशय मे गडबडी है। इस कारण मैंने निर्ममता के साथ अपनी खुराक कम कर दी है। पहले मैं कई दिनो तक दूध और साबुदाने पर रहा। जब मैं थक गया तो मैंने हॉर्लिक्स लेना शुरू किया और अब मैं सूप भी पी रहा हू। इस प्रतिबधित भोजन के कारण कई दिनो से मुझे तेज दर्द नहीं होता है। लेकिन रोजाना जाने के समय मेरे पेट में जलन होती है जो मेरे लिए इस बात का सकेत है कि सीमारेखा पार नहीं होनी चाहिए। दूसरे शब्दो मे, जब

मुझे जलन का अनुभूति हो, उस समय यदि मैं भारी भोजन कर लू तो तेज दर्द उठने लगता है और असुविधा व बेचैनी होने लगती है।

अभी-अभी मुझे साइटिका का रोग भी हो गया है। एक पखवाडे तक मैं बिस्तर से लगा रहा। लगातार मालिश करने से कुछ सुधार हुआ। जाघ के निचले भाग से लेकर घुटने तक अब भी खिचाव रहता है और पिछले सप्ताह से कोई सुधार नहीं है। मैं इजेक्सन ले रहा हू और लगातार मालिश करा रहा हू लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। यदि तुम साइटिका का कोई घरेलू उपचार जानते हो तो मुझे बताना।

मेज दादा (श्री शरत बोस) कुल मिलाकर ठीक है केवल पिछले महीने सुगर बढ गयी थी। जब तक वे यहा है, मुझे आशा है कि यह बीमारी नियमित डाइबिटीज का रूप नहीं लेगी।

माफ करना मैं अपने बारे में बहुत कुछ कह चुका हू। इसका यह प्रभाव पड सकता है कि मैं दु खी हू। दु ख से कोसो दूर हू। प्रसन्नता का सबध शरीर से नहीं बल्कि मन से होता है। सच्चाई यह है कि शारीरिक अस्वास्थ्य के समय मेरा मस्तिष्क अधिक स्पष्ट और द्विविधा मुक्त होकर कार्य करता है। जैसे-जैसे आप की बीमारी बढेगी शरीर का ह्रास होगा जैसा कि होता है तब आप अनुभव करेगे कि अततोगत्वा मनुष्य एक बधकमुक्त आत्मा है शरीर तो केवल एक वस्त्र है और भी, इस स्थिति मे व्यक्ति की भविष्य दृष्टि अधिक स्पष्ट हो जाती है और उसके विचारो मे दृढता आ जाती है। आपका सत्य के साथ तादात्म्य हो जाता है जो कि आपके जीवन की प्रेरणा है। व्यक्तिगत रूप से मै आध्यात्मिक पीडा से गुजरने के बाद आध्यात्मिक अनुभव की अधिकतम ऊचाइयो तक ऊपर उठ सकता हू, जितनी कि मेरा सामर्थ्य है।

मानवीय सत्ता मे निहित दैवीय प्रयोजन मे मेरा सदैव विश्वास रहा है और मैं आश्वस्त हू कि मेरा सिवनी निवास निष्फल नहीं जायेगा जिस प्रकार माडले निवास किसी भी रूप मे निष्फल नहीं रहा। मुझे कोई सदेह नहीं है कि मैं अपेक्षाकृत एक उत्तम शुद्ध और आदर्श व्यक्ति के रूप मे सामने आऊगा जो निर्द्वद्व और नि स्वार्थ भाव से स्वय को एक महान लक्ष्य की सेवा मे पूर्णत समर्पित कर देगा। स्व का अतिक्रमण सबसे बडी साधना है और आत्माहुति सेवा के निमित्त हमारी योग्यता की उच्चतम परीक्षा है। स्व को नष्ट करना सरल है किन्तु इसे अर्जित करना कठिन है। यदि मैं इस अतिम सघर्ष मे सफल हो जाता हू, मैं जीवन-समर को जीत लूगा और तब मैं दैवीय प्रयोजन के अनुशासित उपकरण के रूप मे कार्य करने मे समर्थ हो जाऊगा। एक समय अरविद ने कहा था, "हमे दैवीय विद्युत के शक्तिकरण होना चाहिए ताकि जब हममे से प्रत्येक उठ खडा हो तो हजारो सूर्य हमारे आसपास उदित हो जाये।"

मैं अरविद के ग्रथो का विस्तार से अध्ययन कर रहा हू और यह ग्रथ मुझे बहुत मोहक लगते है। दिलाप (श्री दिलीप कुमार राय) जैसे कुछ मित्र मुझे उनकी नयी पुस्तके भेजते रहते हैं। मैं "आर्य" का नियमित पाठक था जिन दिनो यह प्रकाशित हुआ करता था लेकिन बाद मे मेरे पास उनकी पुस्तके पढने के लिए समय नहीं रहा। अब मैं महसूस करता है कि यहा से मुक्त होने के बाद मुझे एक बार पाडिचेरी जाना चाहिए। अभी-अभी मुझे दिलीप का एक लम्बा पत्र मिला है। उसे बहुत कष्ट हुआ जब उसने पाडिचेरी विचार सम्प्रदाय के बारे मे मेरी टिप्पणिया पढी

जो कि मैंने दिसम्बर 1928 मे की थीं। उसने इन टिप्पणियो को बहुत गहराई से लिया। दिलीप और अनिल बरन डे जैसे पुराने मित्रो से मिलकर मुझे प्रसन्नता होगी।

सभी मित्रो को मेरी याद दिलायें। मैं सभी मित्रो को नहीं लिख सकता, यद्यपि मैं सबको चाहता हू कि लिखू। सत्य बाबू (श्री सत्य रजन बक्षी) के परिवार जन कैसे है।

आशा है, आप सप्रसन्न है।

आपका स्नेहाकाक्षी

मेरे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के बारे में

कलकत्ता के एक मित्र के नाम पत्र, 22 अप्रैल, 1932

मैंने जो आपको पिछला पत्र लिखा था तब से देश भर मे गर्मी बहुत बढ गई है और यहा भी हम इसे महसूस कर रहे हैं। पिछले दिनो कुछ बौछारे पडी थीं, इससे अस्थाई तौर पर कुछ ठडक हो गई। अभी सारी गर्मी पडी हुई है और यह मौसम सुखद नहीं लगता है।

हाल ही मे छिदवाडा का सर्जन मेरे परीक्षण के लिए सिवनी आया था। उसने सावधानी से मेरा परीक्षण किया। मुझे उसके नुस्खे के बारे मे सूचना नहीं दी गई है और मैं व्यग्रता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा हू। कल से हमे शाम को जेल के बगीचे मे कसरत के लिए जाने की इजाजत दी दी गई है और मुझे आशा है कि यह हमारे स्वास्थ्य के लिए बेहतर होगा। लगातार एक ही जगह पर बधकर रहने के प्रभाव का पता एकदम नहीं चलता लेकिन नि सदेह इससे शरीर और मन पर एक जकडन महसूस होने लगती है और समय बीतने के साथ धीरे-धीरे इसका पता चलने लगता है।

कुल मिलाकर मेरी शारीरिक दशा मे परिवर्तन नहीं आया है। आज भी साइटिका बडी जिद के साथ मुझसे चिपटा हुआ है, जबकि मैं दो इजेक्सन ले रहा हू। पिछले पखवाडे मे मुझे केवल एक बार तेज दर्द उठा था लेकिन प्रतिदिन भोजन के बीच मे और असमय दाई ओर जलन महसूस होती रहती है। इस जलन के रहते हुए आहार की मात्रा बढाना सभव नहीं लगता क्योकि मेरा अनुभव बताता है कि यह एक खतरे का सकेत है। इसके अतिरिक्त इस अवस्था मे आहार वृद्धि, असुविधा और वेदना को बढाता है। अब तक मेरा 20 आइब वजन घट चुका है। यदि मैं पहले जितना वजन बढाने की सोचू तो मुझे आमाशय को सामान्य स्थिति मे लाने का प्रयास करना होगा। (यदि प्रतिबध की मौजूदा परिस्थितियो के बीच ऐसा सभव हो सका)। मैं चाहता हू कि रोग की वास्तविक जड को जानने के लिए मेरे अदर का सम्पूर्ण परीक्षण किया जाना चाहिये जैसे बिस्मय भोजन के बाद एक्स-रे परीक्षण, टेस्ट मील परीक्षण आदि। फिलहाल हम कमोबेश अधेरे में भटक रहे हैं, लेकिन जब तक मैं यहा हू जेल या सिविल अस्पताल मे ऐसा कोई परीक्षण सभव नहीं है।

इसलिए हमसे जो सर्वोत्तम होता है, हम करेगे।

इन परिस्थितियो मे जैसा हो सकता है, मेजदादा कुल मिलाकर ठीक है। केवल सुगर बढ गई है।

मै यहा अपने निवास और विश्राम का सदुपयोग करने की कोशिश कर रहा हू। मैं नहीं जानता कि मैं कब बगाल वापस आऊगा। टैगोर ने अपनी उत्कृष्ट शैली मे जो लिखा है उसकी अनुभूति मुझे यहा हो रही है। बर्मा को छोडकर और किसी स्थान पर मुझे पहले कभी यह अनुभूति नहीं हुई-

"सोनार बागला आमि तोमे भालो बाशी

चिरोदिन तोमार आकाश तोमार बाताश

आमार प्राणे बाजाए बशी।"

और मेरे मनस्पटल पर समुद्र की भाति नदियो एव हसते हुए लहरियेदार मक्का के पौधो के खेत समय-समय पर उभरते रहे है, जो केवल बगाल मे ही देखे जा सकते है और मैं यहा कवि के शब्दो को दोहराए बिना नहीं रह सकता-

"ओरे अघ्राने तोर भारा रवेते

की देकेची मधुर हासी।"

मेरे यहा गिरफ्तार होने से पहले मैंने महाराष्ट्र के भीतरी क्षेत्रो का भ्रमण किया और मैंने महाराष्ट्र की पहाडियो के जगली और ऊबड-खाबड दृश्यो का आनद उठाया। ये दृश्य मेरे मन को बहुत भाए लेकिन साथ-साथ मुझे यह अनुभूति भी हुई कि बगाल की विशाल नदियो और अग्रहायण धान के अनत खेतो से निर्मित काव्यात्मक दृश्य के बिना यहा की दृश्यावली अधूरी है।

जहा इद्रिय-अनुभवो की सीमा समाप्त हो जाती है, वहा आनद की अनुभूति के लिए मन को ही सक्रिय होना पडता है। विषयातर के लिए मेरा यह तर्क है।

आपका स्नेहाकाक्षी,
सुभाष चद्र बोस

स्वास्थ्य और उपचार के बारे में

कलकत्ता के कविराज अनाथ नाथ राय के नाम पत्र

4 जून, 1932

वास्तव मे यह आपकी अनुकपा है कि आप मेरे उपचार हेतु सिवनी आना चाहते हैं। कई दूसरे डाक्टर, होम्योपैथिक और कविराजो ने मुझे लिखा है वे मेरे उपचार हेतु प्रस्तुत हैं। मैं उनकी कृपापूर्ण आत्मीयता का आभारी हू। लेकिन इस सुविधा का लाभ उठाना मेरे लिए सम्भव नहीं है क्योकि मेरे जैसे रोगी के उपचार हेतु एक चिकित्सक जिन परिस्थितियो की अपेक्षा रखता है वे यहा नहीं है।

मैं आपके निवेदन से सहमत हू कि मेरा रोग वृत्तिमूलक नहीं है बल्कि अस्वाभाविक है। एक आम आदमी के विचार से या तो आमाशय के कुछ भागो मे नासूर बढ जाने के कारण हुआ है या फिर गाल ब्लैडर की कुछ परेशानी है। लेकिन एक्स-रे परीक्षण के बिना किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुचा जा सकता। इस बीच आमाशय को बेहतर रखने के लिए मैं आहार को नियमित कर सकता हू और कुछ पदार्थ ले सकता हू। लेकिन आहार सयम के बावजूद मुझे आमाशय मे जलन महसूस होती है। यहा मुझे हरे नारियल और गन्ने नहीं मिल सकते, जैसा कि आपने परामर्श दिया है और ऐसा जरूरी भोजन तो केवल घर पर तैयार किया जा सकता है।

मुझे खेद है कि मैंने सब को मेरे प्रति चिन्ता मे डाल दिया है। लेकिन मैं क्या कर सकता हू? जब मैं यहा आया था, मैं इतना स्वस्थ और प्रसन्न था कि यह सोचने मे ही नहीं आता था कि मैं बीमार पड जाऊगा। पिछले दिनो मेरे स्वास्थ्य की क्षति पूर्ति हो गयी थी क्योकि मेरा आमाशय सतोषजनक स्थिति मे था। मेरे स्वास्थ्य की वर्तमान स्थिति मे क्षतिपूर्ति का केवल एक ही लक्षण दिखाई देता है कि मेरे फेफडे ठीक हैं और अब तक मानसिक अवसाद या हताशा का कोई चिन्ह नहीं है।

उचित निदान के लिए एक्स-रे परीक्षण

जबलपुर से कलकत्ता के एक मित्र के नाम पत्र

10 जून, 1932

आज सुबह एक्स-रे परीक्षण शुरू हुआ और थोडी-थोडी देर के बाद यह कल सुबह तक चलेगा क्योकि आज मैंने जो "बिस्मथ आहार" लिया है, इसके बाद कई प्लेटे लेनी होगी। सभवतया यह परीक्षण सोमवार तक चलेगा।

मेरे शरीर का तापमान अब भी घट-बढ रहा है। आज सुबह वजन अस्पताल मे 141 रिकार्ड किया, दाखिले के समय 182 था। इस प्रकार 41 की क्षति हुई है। साइटिक दर्द अब भी होता है और बवासीर का नया दर्द शुरू हो गया है। मधुमेह के लिए मेजदादा का पूर्ण रूप से परीक्षण

किया जा चुका है अगले सप्ताह परीक्षण का परिणाम मिलने की आशा है। हमारे उपचार हेतु भविष्य मे किये जाने वाले प्रयासो की हमे बिल्कुल जानकारी नहीं है। ब्रिटिश स्टेशन हास्पिटल मे भी हमारा परीक्षण किया जाना है और जहा तीन सदस्यीय मेडीकल बोर्ड है।

शारीरिक दशा मे कोई परिवर्तन नहीं

मद्रास सुधारालय से कलकत्ता के एक मित्र के नाम पत्र

31 जुलाई, 1932

मेरे यहा पहुचने से पहले मुझसे कहा गया था कि सुधारालय एक बोर्स्टल सस्था है लेकिन यह सूचना गलत साबित हुई। यह हमारी अलीपुर सेट्रल जेल की तरह है। जबलपुर के जेल अधीक्षक जिसके पास मेरे तबादले के आदेश भेजे गये थे ने मुझे बताया कि मैं मद्रास आने के बाद एक अस्पताल मे जाऊगा। लेकिन यहा आने पर पता चला कि सुधारालय के अधीक्षक के पास मुझे किसी अस्पताल मे भेजने का कोई आदेश नहीं है। इस स्थिति ने मेरी नियमित आहार की व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर दिया है।

मैं जबलपुर छोडने से पहले सरकार को आग्रह के साथ लिखूगा कि मुझ अपने निजी डाक्टर सर नीलरतन सरकार डा० बी० सी० राय और मेरे भाई डा० सनील बोस द्वारा परीक्षण कराने की अनुमति दी जाये। मैं यहा यह बात इसलिए दोहरा रहा हू कि सरकार मेरे मद्रास तबादले के बारे मे न सोच सके और यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से यहीं समाप्त हो जाये।

जब से मैं यहा आया हू शरीर मे तापमान बना हुआ है। मेरी शारीरिक दशा मे कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। मद्रास मे अभी बहुत गर्मी है। मुझे बताया गया कि वर्षा अक्टूबर तक होगी।

फेफडो के कष्ट का पता लगा

मद्रास सुधारालय से कलकत्ता के एक मित्र के नाम पत्र

18 अगस्त, 1932

मैंने मद्रास सरकार सयुक्त प्रात सरकार और भारत सरकार को इस आग्रह के साथ पत्र लिखे हैं कि मेरा अस्पताल मे दाखिला किया जाये और यह सकेत भी कर दिया है कि यदि नहीं किया गया तो मेरा मद्रास तबादला करना व्यर्थ है। बहरहाल व्यापक परीक्षण का कोई मतलब नहीं रह जाता यदि बाद मे वैज्ञानिक ढग से किसी अस्पताल मे उपचार नहीं किया जाता है। मैं अस्पताल पर इसलिए जोर दे रहा हू कि सरकार के मौजूदा रवैये से मुझे नहीं लगता है कि घर पर मेरे निजी चिकित्सकों द्वारा मेरा उपचार कराया जायेगा। और मैं सरकार से किसी प्रकार के अनुग्रह की अपेक्षा नहीं करता मैं केवल यह चाहता हू जो कि पहले एक नागरिक और फिर एक राज बदी के रूप मे ईमानदारी के साथ मेरा अधिकार बनता है।

मैं निजी चिकित्सको द्वारा परीक्षण के लिए भी दबाव डालता रहा हू और इस विषय मे मैंने मद्रास सरकार और भारत सरकार को लिखा है। मैं जब जबलपुर मे था, मैंने इस विषय मे सयुक्त प्रात सरकार को भी लिखा है।

व्यावहारिक रूप से अब परीक्षण समाप्त हो चुका है। एक्स-रे परीक्षण मे काफी समय लग गया। यहा सरकारी अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक लेफ्टीनेट कर्नल स्किनर और डा० गुरू स्वामी मुदालियर ने भी मेरा परीक्षण कर लिया है। ब्लड सुगर का परीक्षण अभी जरूरी नहीं समझा गया है लेकिन वान पर्किट का परीक्षण किया जा चुका है। डाक्टरो से पता चला है कि गाल ब्लैडर मे कोई गभीर गडबडी नहीं है। लेकिन फेफडो की दशा सामान्य नहीं है। (चिकित्सक की भाषा मुझे याद नहीं है) यह इसलिए हुआ कि वान पर्किट का परीक्षण क्षय रोग के लिए जरूरी समझा जाता है। परीक्षण की अभिक्रिया का झुकाव पाजिटिव की ओर है।

इस सपूर्ण परीक्षण का शुद्ध परिणाम यह है कि जैसा मैंने सोचा था स्थिति उससे कहीं बदतर है। लेकिन सिवनी और जबलपुर दोनो जगह एक सिद्धात सामने आया था कि कष्ट की जड गाल ब्लैडर है। लेकिन अब जताया गया कि यह सब फेफडो का कारण हुआ है। एक मामूली आदमी के रूप मे मैं यह नहीं समझ सका कि फेफडो के कष्ट के सिद्धात से तमाम लक्षणो की व्याख्या कैसे की जा सकती है? आमाशय वेदना साइटिका और ववासीर आदि लक्षणो की व्याख्या केवल गाल ब्लैडर जैसे अन्य सिद्धात से की जाती है। फिर भी, मद्रास मे परीक्षण से मुझे यह लाभ हुआ कि कष्ट के जिस कारण को सिवनी और जबलपुर मे अनदेखा किया गया, यहा आकर उसका पता लग गया।

मेरी शारीरिक दशा मे कोई सुधार नहीं हुआ है। दैनिक तापमान बना हुआ है और अदरूनी दर्द साइटिका वजन का कम होना भूख न लगना अपच और अनिद्र जैसे रोग ज्यो के त्यो बने हुए है। मद्रास मे अभी तक गर्मी बनी हुई है।

मै मेजदादा का समाचार पाने के लिए व्यग्र हू। मद्रास काउसिल मे मेरे उपचार सबधी बातचीत के बारे मे आपने कल अखबारो मे पढा होगा। विधि सदस्य सर कृष्णन नायर ने एक सतोषजनक उत्तर दिया (यद्यपि उनके कथन मे एक गलती थी।) और कहा कि वे अस्पताल मे मेरे उपचार को लेकर भारत सरकार को लिख रहे है।

मैं अपने मामले के सभी तथ्यो की जानकारी देते हुए विधि सदस्य (जो कि जेल प्रभारी भी हैं) को लिखा है कि किस प्रकार जबलपुर के मेडिकल बोर्ड ने अस्पताल मे मेरे उपचार की सिफारिश की, किस प्रकार डा० सुनील बोस को इस आधार पर मेरे परीक्षण की अनुमति नहीं दी कि सरकार अस्पताल मे मेरे परीक्षण का प्रबध कर रही है और किस प्रकार यह बताते हुए मद्रास सुधारालय मे मेरा तबादला किया गया कि वहा अस्पताल मे उपचार कराया जाएगा? इसी बीच प्रतिरोध के रूप मे मैंने अस्पताल जाना बद कर दिया था लेकिन जेल महानिरीक्षक जिसने इस जेल का दौरा किया था, ने मुझे मौखिक आश्वासन दिया है कि परीक्षण समाप्त होने के बाद अस्पताल मे दाखिले के प्रश्न पर औपचारिक रूप से विचार किया जायेगा। इसके बाद मैने परीक्षण हेतु अस्पताल जाना बदस्तूर कर दिया।

आशा है, वहा सब सकुशल हैं।

डा० आलम के स्वास्थ्य लाभ के लिए प्रार्थना

बेगम आलम के नाम पत्र, 2 नवम्बर, 1932

प्रिय श्रीमती आलम

जब मैं मद्रास मे था, मुझे डा० आलम का एक पत्र मिला और मैंने तुरत उसका उत्तर दे दिया था। मुझे आशा है यह पत्र यथा समय पहुच गया होगा। उन्हे हाल ही मे पडे दौरे की बात सुनकर मुझे असीम दु ख हुआ। अपनी व्यग्रता की भावनाओ का वर्णन करना मेरे लिए सभव न होगा। लेकिन लगता है कि हम एकदम असहाय है केवल मै दिन-रात उनके स्वास्थ्य लाभ के लिए प्रार्थना कर सकता हू। मेरा विश्वास है कि इच्छा-शक्ति एव विचार जैसी कोई चीज है और उनके असख्य मित्रो एव देशवासियो की प्रार्थनाओ से वे पूर्ण स्वस्थ हो जायेगे।

आज उन सुखद दिनो की याद आ रही है जो लाहौर मे हमने आपकी छत की नीचे गुजारे थे।

जब तक मुझे डा० साहब के स्वस्थ होने की शुभ सूचना नहीं मिलती है मै अपने विषय मे कुछ नहीं लिखूगा।

डा० साहब और आपके प्रति हार्दिक सम्मान एव शुभकामनाओ के साथ

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

प्रयोगात्मक उपचार का रोगी

एस० सत्यमूर्ति के नाम एक पत्र, 19 नवम्बर, 1932

आपका 31 अक्टूबर का पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। मुझे आपकी गतिविधियो और स्वास्थ्य के बारे मे अखबारो से सूचना मिलती रही है। अखबारो से यह जानकर हर्ष हुआ कि आखिरकार आपको अस्पताल से छुट्टी मिल गयी है। आपका बदलाव के लिए बाहर जाने का निर्णय उचित ही है और मुझे आशा है कि आपको डाक्टरो के अनुमान से भी अधिक तीव्र गति से आपके स्वास्थ्य मे सुधार होगा। मजबूरी के विश्राम के समय को किस प्रकार बिताना चाहते है?

मेरे स्वास्थ्य मे सुधार की खबर कुछ जल्दी फैल गयी है। दरअसल हुआ यह कि जलवायु और वातावरण के परिवर्तन के कारण मै अधिक प्रसन्न अनुभव करने लगा हू। तापमान मद्रास

मे जितना हुआ करता था, उससे कुछ कदर कम है लेकिन शाम के समय अब भी बढ जाता है। अब यह 99 2 और 99 4 के बीच डोलता रहता है। दुर्भाग्य से आतो के कष्ट से मुझे अब भी बडी असुविधा हो जाती है और भूख अब भी कम लगती है। अब तक मेरे वजन का रिकार्ड भी ठीक नहीं रहा है। चार सप्ताह बाद मेरा वजन उतना ही है जितना कि दाखिले के समय था।

मुझे आशा थी कि यहा ठहरने के दौरान मुझे स्वतत्रता दे जायेगी। मै आज की 1818 के विनियम- 3 के अधीन लगाये गये प्रतिबधो के बीच रहता हू। सेनेटोरियम 15 दिसम्बर को बद हो जायेगा और मार्च 1933 तक नहीं खुलेगा। एक मित्र ने लिखा था कि मुझे देहरादून भेजा जा सकता है लेकिन मुझे अब तक कोई औपचारिक सूचना नहीं मिली है।

यहा एक दूसरी परेशानी खडी हो गयी है। जैसा कि आप जानते है मद्रास मे सभी डाक्टरो को यह डर था कि मेरे दोनो फेफडो पर टी० बी० का असर है। इसके साथ-साथ ले० कर्नल स्किनर ने रिपोर्ट दी थी कि आतो मे टी० बी० के ग्लैड है। बाद मे मेडीकल बोर्ड ने भी सदेह व्यक्त किया था कि फेफडो मे कुछ गडबडी है। उन्हे मेरे पेट मे कुछ कमी लगती थी लेकिन वे रोग की वास्तविक प्रकृति के बारे मे अब तक राय कायम नहीं कर पाये है।

लेकिन मुझे पहले की तरह टी० बी० का उपचार दिया जा रहा है। मै जैसे ही यहा पहुचा मुझे बिस्तर पर लिटा दिया गया और "बिस्तर मे उपचार" अब भी जारी है। मुझे कोलोडियल कैलाशियम इजेक्शन दिया जा रहा है और अनेक दवाए दी जा रही है। लेकिन वर्तमान स्थिति को लेकर मै प्रसन्न अनुभव नहीं कर पा रहा हू।

मै निश्चित रूप से यह जानना चाहता हू कि क्या रोग है? और मै प्रयोगात्मक उपचार का रोगी हू। यहा तक डाक्टर भी निश्चित रूप से निदान नहीं पा रहे है। मै चाहूगा कि यह बात मुझे साफ तौर पर बता दी जाये। अतएव मैं सरकार को लिख चुका हू कि किसी अन्य डाक्टर से मेरा पुन परीक्षण कराया जाये।

यह सेनेटोरियम केवल फेफडो के लिए है और यदि मेरे फेफडे दुरुस्त है तो मुझे यहा क्यो रखा जा रहा है? और यदि मैं आत की टी० बी० का रोगी हू तब क्या किया जाना है? मैं भारत मे ऐसे किसी सेनेटोरियम के बारे मे नहीं जानता जहा आत की टी० बी० का उपचार होता हो। फिर भी हमे देखना और प्रतीक्षा करनी चाहिए।

कृपया समय-समय पर मुझे लिखते रहे। मैं वर्तमान परिस्थितियो के अधीन यथासभव समय पर उत्तर दूगा।

आपके शीघ्र स्वास्थ्य के लिए पार्थना और अगाध सम्मान के साथ

आपका स्नेहाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

प्रयोगो से तग आ गया

भोवाली सेनेटोरियम यू० पी० से मद्रास के एक मित्र के नाम पत्र, 19 नवम्बर, 1932

मैं मद्रास के डाक्टरो का अत्यत आभारी हू कि उन्होने बडे कष्ट उठाकर मेरे परीक्षण और निदान को सपन्न किया। यद्यपि इसके परिणाम मुझे और हर किसी को चिन्ताजनक है। लेकिन कई बीमारियो के मामले मे उचित निदान आधे उपचार के बराबर होता है।

भोवाली कुल मिलाकर अच्छी जगह है और यह वर्ष का सर्वोत्तम मोसम है। जेल की बद दीवारो से पहाडियो पर बने सेनेटोरियम का बदला हुआ वातावरण मेरे लिए मानसिक शाति का स्त्रोत है। व्यक्तिगत रूप से मैं पहाडियो का बडा शौकीन हू। उनके पास एक मौन भव्यता और गरिमा विद्यमान है जो आपके मन को ससार के मामलो से ऊपर उठाती है और आपको यह अहसास कराती है कि आप एक आध्यात्मिक प्राणी है और युगो-युगो से हमारे काव्य दर्शन और प्रेम प्रसग का प्रमुख विषय पहाडिया-विशेष रूप से हिमालय की श्रेणिया रही है।

जैसा कि उन्होने कहा है दुर्भाग्य से मिट्टी का पिण्ड होने के कारण शरीर इतने जल्दी वातावरण के परिवर्तन से प्रभाव ग्रहण नहीं करता है जितने जल्दी मन प्रभावित होता है और जहा तक शारीरिक सुधार की बात है मैं कुछ असतुष्ट रहा हू। दुर्भाग्य से तापमान बना हुआ है और पिछले दिनो कभी 99 2 और 99 4 के बीच ऊपर नीच होता रहा है। खासी के कारण से बडी असुविधा होती है और खाना खाने के बाद ये पहले की तरह भारी हो जाती है। पाचन और भूख की हालत अब भी ठीक नहीं है। वजन का रिकार्ड भी सतोषजनक नहीं है। चार सप्ताह बाद वजन उतना ही है जितना कि दाखिल के समय था।

मै अपेक्षा करता था कि अस्पताल मे दाखिल होने के बाद मुझे राजबदी नही समझा जायगा लेकिन दुर्भाग्य से पहले की भाति प्रतिबध जारी रहे। सेनेटोरियम 15 दिसम्बर को बंद हो जायगा और मै एक बार फिर फुटबाल बन जाऊगा।

एक दूसरी बात बेचैनी का कारण बन गयी है। आप जानते है कि मद्रास मे मेरा परीक्षण करने वाले सब डॉक्टर इस बात को लेकर एकमत थे कि मेरे दोनों फेफड़ो पर टी० बी० का असर है। इसके साथ साथ लफ्टीनेट कर्नल स्किनर ने रिपोर्ट मे यह बताया कि आतो मे टी० बी० के लक्षण है। बाद मे मेडीकल बोर्ड की राय थी कि पेट मे भी कुछ गडबडी है। लेकिन वे रोग की प्रकृति के निष्कर्ष पर एकदम नही पहुच सके और सभवतया उन्होंने एपेंडीसाइटिस के कारण ऐसा अनुमान लगाया। फिर भी मैं समझता हू यहा डाक्टर कहते है कि वे फेफड़ों में कोई गडबडी नहीं खोज सकते। पेट की परेशानी को लेकर भी वे राय कायम नहीं कर सके। लेकिन पहले की भाति अब भी मेरा टी० बी० का उपचार चल रहा है। मैं 11 अक्टूबर को जब से यहा आया हू मुझे बिस्तर पर बने रहने का आदेश दे दिया गया है। आम रोगियो और विशेष रूप से बिस्तर वाले रोगियो पर यहा कडा अनुशासन रहता है और यह उचित है जैसा कि होना भी चाहिए। मुझे कोलोडियल केल्शियम के इजेक्शन भी दिये जा रहे है मै बहुत-सी अन्य दवाए भी ले रहा हू जो मैं समझता हू टी० बी० के रोगी को दी जाती है।

निदान की कठिनाई को देखते हुए मैने सरकार को दूसरे दिन फिर लिखा है कि मेरे निजी डाक्टरो सर नीलरतन सरकार डा० बी० सी० राय और डा० सुनील बोस द्वारा मेरा परीक्षण कराया जाये। उचित निदान के अभाव मे उपचार के विचार मुझे ठीक नहीं लगता और मैं प्रयोगात्मक उपचार से तग आ चुका हू। मैं निश्चित रूप से जानना चाहता हू कि निदान क्या हुआ है? और यदि डाक्टर निदान कर पाने मे असमर्थ है तो स्पष्ट रूप से बता देना चाहिए। सरकार की ओर से उत्तर की प्रतीक्षा करनी चाहिए। एक मित्र ने मुझे लिखा है कि मुझे सेनेटोरियम बद होने के बाद देहरादून भेजा जा सकता है लेकिन मुझे अब तक कोई औपचारिक सूचना नहीं मिली है।

यदि मेरे फेफडो मे टी० बी० नही है तो फिर मुझे यहा क्यो रखा जाना चाहिए। यह सेनेटोरियम फेफडे के रोगियो के लिए है और मैं देश मे ऐसे किसी सेनेटोरियम के बारे मे नहीं जानता जहा आतो की टी० बी० का उपचार किया जाता हो। यदि यह अतिम रूप से डाक्टरो द्वारा घोषित किया जा चुका है कि आतो की टी० बी० का रोगी हू, तब स्थिति ज्यादा गम्भीर हो जायेगी। फिर भी यहा के मौजूदा हालात को देखते हुए मैं डाक्टरो की राय मानने को जब तक तैयार नहीं हू, तब तक कि मेरे विश्वासपात्र निजी डाक्टर इसकी पुष्टि नहीं कर देते है।

उपचार जारी है, कोई सुधार नहीं

विमल कांति घोष के नाम पत्र, 22 नवम्बर, 1932

मेरे प्रिय विमल बाबू,

आपके 8 नवम्बर के स्नेहपूर्ण पत्र को पाकर प्रसन्नता हुई विशेष रूप से यह जान कर मुझे सतोष हुआ कि मैं शोक सतप्त परिवार के सदस्यो तक अपनी सवेदनाए पहुचा सका। आपके पत्र से बीते हुए दिनो का स्मरण करने मे सहायता मिली। आप जानते है कि स्मृतिशेष मोतीबाबू अक्सर हमसे कहा करते थे कि पत्रिका एक राष्ट्रीय सस्था है। जब उनका निधन हुआ, उन्होने इसका दायित्व आपके स्वर्गीय पिताजी को सौप दिया था। मैं आश्वस्त हू कि आपके पिताजी ने अपने अग्रेज के पति प्रत्याशा से परे सम्मान व्यक्त करते हुए इस दायित्व को जीवन के अतिम क्षणो तक निभाया और सतोषजनक भूमिका अदा की। बहरहाल हम केवल भरण पोषण के लिए जीवित नही है, बल्कि हमे एक कर्त्तव्यनिर्वाह करना है, एक मिशन को पूरा करना है और जब तक यह मिशन पूरा हो गया तो जीवन के लक्ष्य की पूर्ति हो गई।

मैं पहले ही जो अपने स्वास्थ्य के विषय मे लिख चुका हू, उसमे अधिक कुछ जोडने की जरूरत नहीं है। तापमान अभी बना हुआ है, और यह आमतौर पर 99 4 और इससे भी अधिक हो जाता है। भोजन के बाद पेट दर्द भी बना रहता है। वजन की स्थिति जैसी भी है उसमे कोई सुधार नही है। उनका कहना है कि टी० बी० वजन एक महत्वपूर्ण कारक है। जैसा कि मैंने पिछली बार लिखा था, यहा के डाक्टरो की राय मे फेफडो से ज्यादा पेट की गडबडी है। अब सुपरिटेडेट की यह निश्चित राय है कि मुझे आतो की टी० बी० है। फिर भी वे मेरे फेफडे

और आतो दोनो की टी० बी० का उपचार कर रहे है। कोलाऊल केलशियम और सोडियम मारहेट के इजैक्सन एक दिन छोड कर दिये जा रहे है। दवाओ के साथ-साथ मे पाचनक्रिया ठीक रखने और पेटदर्द से आराम के लिए टमाटर के जूस के साथ मछली के जिगर का तेल एजियर्स समलजन और कुछ अन्य औषधिया भी ले रहा हू। इस सबके बावजूद मेरी पाचनक्रिया और भूख की हालत ठीक नहीं है। एक डाक्टर मित्र ने आपरेशन के बाद पेट मे आक्सीजन के प्रयोग का परामर्श दिया था। यद्यपि यह टी० बी० के उपचार की एक मान्यता प्राप्त पद्धति है (यह फेफडे की टी० बी० के लिए कृत्रिम न्यमो-थोरेक्स उपचार के समान है) लेकिन उन्होने यह उपचार नही किया क्योकि यह सेनेटोरियम फेफडे की टी० बी० के लिए है। साथ-साथ मैं यह चाहता था कि यह उपचार केवल अनुभवी और पूर्णत दक्ष हाथो द्वारा ही किया जाना चाहिए। इसलिए मै उपचार हेतु प्रस्तुत नहीं हुआ। वास्तविक कठिनाई यह है कि भारत मे आतो की टी० बी० को कोई सेनेटोरियम नहीं है।

जैसा कि आज व्यवस्था है, मैं यहा 15 दिसम्बर तक रहूगा। एक मित्र ने मुझे लिखा है कि इसके बाद वे मुझे देहरादून भेज सकते है। लेकिन मुझे सरकारी सूत्रो से कोई सूचना नहीं मिली है।

यहा का परिवेश बडा ही सुखद है और मैं शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद प्रसन्न हू। सबको प्रेम एव हार्दिक स्मरण के साथ,

आपका अपना

अब तक बिस्तर से बंधा हुआ रोगी हू

भोवाली से सत्येंद्र नाथ मजूमदार, सपादक, आनद बाजार पत्रिका के नाम पत्र, 24 नवम्बर, 1932

जैसा कि आप जानते हैं, मैं पिछले माह के मध्य मे यहा पहुचा था। दीवारो से घिरी हुई जेल की तुलना मे सेनेटोरियम का बदला हुआ वातावरण मुझ पर थोपे गये प्रतिबन्धो के बावजूद स्वागत योग्य है। पर्वतो का दृश्य अत्यत मनोरम है और हिमालय के साथ परम्परा से चले आ रहे पवित्र सबधो का स्मरण अपने मे सहायता करता है। वास्तव मे, पर्वतो मे एक उदास भव्यता होती है जो हमारे मन को स्वर्गामुख करती है और निम्न व तुच्छ धरातल से ऊपर उठा कर उच्चतर अस्तित्व के प्रगति मे समर्थ बनाता है। मुझे बताया गया कि यदि आप यहा से 500 फुट ऊपर चढ जाये तो वहा से आपको अनत हिमराशि का भव्य दृश्य दिखाई देगा। मैं ऊचाई पर चढने और उस रजत भव्यता के दृश्य को देखने की कामना कैसे कर सकता हू?

जैसे ही मै यहा आया, मुझे बिस्तर पर लेटा दिया। यह टी० बी० के सभी रोगियो के लिए एक साधारण नुस्खा है, आम तौर पर उक्त तापमान के समय बिस्तर छोडने की अनुमति नहीं दी जाती। उनके लिए एक क्रमिक व्यायाम की व्यवस्था है जो बिस्तर के आराम से शुरू हो कर

5 या 6 मील के भ्रमण के साथ खत्म होती है। सच्चाई यह है कि कुछ भ्रमण करते हुए रोगी इतने स्वस्थ लगते है कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि वे टी० बी० के रोगी है। फिर भी वे स्वस्थ नहीं होते और यदि वे असावधानी बरते तो फिर से बीमार पड सकते है।

यहा उपचार सबधी कठोर अनुशासन है जैसा कि होना चाहिए। दिनचर्या बहुत नपी-तुली है और आपको इसका पालन करना है। सुबह 6 बजे के बिगुल के साथ दिन आरम्भ होता है और फिर 9 30 के बिगुल के साथ आपको बिस्तर पर पहुच जाना होता है। जैसे ही रोगी की दशा सुधरती है उसे कृत्रिमवृद्ध के साथ व्यायाम की अनुमति दी जाती है। यदि दुर्भाग्य से रोगी को हानि होती है तो उसे पुन बिस्तर पर वापस आना पड़ता है। सेनेटोरियम पहाडियो के इर्द-गिर्द फैली झोपडियो की एक कालोनी की भाति है। यहा वर्ष मे दो बार खेल-कूद होते है जिनमे केवल भ्रमण करने वाले रोगी ही नहीं बल्कि कर्मचारी रोगियो के रिश्तेदार और और नौकर भी भाग लेते है। सेनेटोरियम मे एक एक्स-रे प्लाट और एक आधुनिकतम प्रयोगशाला है।

मैं अब तक बिस्तर से बधा हुआ एक रोगी हू और शारीरिक दृष्टि से मै उतना ठीक हू जितना कि एक जेल के बदी को होना चाहिए। फिर भी इस सुखद परिवेश के बीच एक व्यक्ति का मन प्रसन्न रहता है। जैसे ही 15 दिसम्बर को सेनेटोरियम बद हो जायेगा मुझे नहीं लगता कि मैं एक भ्रमण करने वाला रोगी हो जाऊगा जैसा कि मैं यहा हू।

विवावती बोस के नाम पत्र

मेसर्स एड पान्ड	द्वारा अधीक्षक
हस्ताक्षर अपाठ्य	किग एडवर्ड सेनेटोरियम
1 11-32	भोवाली (यू० पी०)
	26-10-32

मेरी प्रिय मझली दीदी

आपका पत्र पाकर मुझे असीम प्रसन्नता हुई कृपया मेरा सादर विजय प्रणाम स्वीकार करे, बडो को प्रणाम और छोटो को स्नेह।

मैं जब से यहा आया हू, प्रसन्न हू और शारीरिक रूप से बेहतर महसूस कर रहा हू। तथापि मुझे ठीक होने मे अभी समय लगेगा पाचन का कष्ट और बुखार अभी तक बना हुआ है। इस कारण मुझे बिस्तर पर ही रहना पडता है। एक सप्ताह बाद शायद मैं चल फिर सकता हू। डाक्टर और मेट्रन मेरी अच्छी देखभाल कर रहे है और फिलहाल यहा की जलवायु बडी सुखद है। डाक्टर आशा करते थे कि यहा आने पर मेरी हालत मे शीघ्र सुधार होगा। लेकिन घटनाओ ने ऐसा मोड लिया है उन्हे निराशा होने लगी है। सभवतया वे अपना निदान बदल देगे। वे शायद छाती के

बजाय पेट के रोग का उपचार करेगे। मै बाद मे आपको सकारात्मक प्रगति से अवगत करा सकूगा। किन्हीं भी रूप मे ये सूचनाए माता पिता के देना अनावश्यक है। सेनेटोरियम 15 दिसम्बर को बद हो जायेगा, मैं नहीं जानता कि बाद मे मुझे कहा भेजा जायेगा।

मुझे इस की बडी चिन्ता है कि मझले दादा को एकदम अकेले रहना है। कृपया देखे कि कोई न कोई उनसे हर माह मिलता रहे।

आशा है आप सकुशल है।

आपका स्नेहाकाक्षी

सुभाष

पुनश्च

आपने मुझे अपना बनारस का पता नही दिया है। अशोक ने भी पत्र लिखा है लेकिन पता नहीं भेजा है। मैं अशोक को एक पत्र लिख रहा हू जब आप उसे लिखे तो कृपया अपने पत्र के साथ नत्थी कर दे। यहा बडी ठड पड रही है। यदि कलकत्ता लौटने के बाद आपको आलमारी मे मेरे कुछ गर्म कपडे मिले तो मुझे भेज दे। ओवरकोट यदि वहा है तो दस्ताने ऊनी मोजे आदि जो भी हो मुझे भेज सकती है। इसके साथ-साथ कलकत्ता लौटने पर कृपया आप मुझे जेब खर्च के लिए पचास रूपये भेज दे।

सुभाष

(मूल बगला से अनुवाद सम्पादक)

बगालवासियो को विदाई सदेश

एस० एस० 'गेज' से सुभाष चद्र बोस ने निम्नलिखित सदेश भेजा

एक वर्ष से भी अधिक समय हुआ मुझे अपने ही प्रात से निर्वासित कर दिया गया है। लगातार बदिशो मे रहते मेरा स्वास्थ्य बहुत बिगड गया है। जैसे ही मेरी हालत बिगडी मुझे एक प्रात से दूसरे प्रात मे भेज दिया गया। लेकिन मुझे जानबूझ कर अस्पतालो और चिकित्सको से दूर रखा गया, जो कि मेरे उपचार की जिम्मेदारी लेने के लिए बेचैन थे। यहा तक कि बगाल की जेलो के दरवाजे भी मुझ पर बद हो चुके है जो कि मेरे हजारो देशवासियो के लिए खुले हुए है।

मेरे शारीरिक कष्ट के साथ मानसिक यातना भी जुड़ी हुई है। बगाल से बाहर मेरी कैद के दौरान मैंने प्रात मे होने वाले दमन को बड़ी शिकस्त के साथ महसूस किया। मैं इन परिस्थितियो मे अपनी कोठरी के एकात मे केवल मौन प्रार्थना कर सकता था कि देवी हमारे लोगो को शक्ति दे ओर एक नये बगाल का निर्माण हो सके।

जीवन की वास्तविकताओ से घबरा कर मैंने निराशा के लबे समय के दौरान मैंने समाधि मे अपनी शरण खोजी। भारतीय चितन दृष्टि ने मेरी मन की आखे खोल दीं मुझे सात्वना, शक्ति एव प्रेरणा दी। यह दृष्टि बकिम और विवेकानद से लेकर द्विजेद्र लाल और देशबधु जैसे मनीषियो को सम्मोहित करती रही है। मैंने पहली बार अनुभव किया कि भारत माता' की अवधारणा एक सर्वोच्च वास्तविकता है जो वर्तमान समय की न्यूनतओ और अपूर्णताओ को अतिक्रमण करती है और अपनी श्रेष्ठता जताती है। यह चितन-दृष्टि वह निधि है, जिससे मुझे ससार की कोई शक्ति वचित नही कर सकती। यही वह मठ है जिसमे मैं प्रतिदिन आराधना करता हू।

एक स्वप्न है जिसने मेरे जीवन को दिशा दी है वह स्वप्न है- भारत और मानवता की सेवा के लिए समर्पित एक महान और अविभाजित बगाल सप्रदायो और समूहो की सतह से ऊपर उठा हुआ ऐसा बगाल जहा मुसलमान हिंदू, ईसाई और बौद्ध सभी भाई-चारे के साथ रहे। यह मेरे सपनो का बगाल है। भविष्य का बगाल अभी भ्रूण की अवस्था मे है- जिसकी मैं प्रतिदिन पूजा और सेवा करता हू।

"इस स्वप्न की व्याख्या करना और इसे यथार्थ मे बदलने का प्रयास करना- मेरे जीवन की एक व्यसन है। यदि सफलता मिलती है तो इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमे अपने सर्वोत्तम का त्याग कर देना चाहिए। यदि हम इस मिशन को पूरा करते हैं तो कोई त्याग इतना प्रिय नहीं है और यातना इतनी बडी नहीं है। मित्रो क्या आप उस धरातल तक ऊचा नहीं उठेगे जहा आपके सम्मुख केवल एक महान और अविभाजित बगाल की वास्तविकता हो। हमारे महापुरुषो द्वारा छोडी गई विरासत को याद कीजिए। यह मत भूलिये कि आप उनके सपनो- देश के भविष्य की आशाओं के उत्तराधिकारी हैं। यदि आप अपने विचार एव कर्म मे महान हैं तो आप अकेले ही अपने देश को महान बनाने मे समर्थ हो सकते है, अतएव, मैं पूरी स्पष्टता के साथ कहता हू कि जितनी फि मेरे भीतर हो सकती है, अपने तुच्छ झगडो को भूल जाओ, अपने व्यक्तिगत मतभेद दूर कर दें बगाल को सयुक्त एव महान बनाने के प्रयास करो ताकि उसकी महानता मे हम अपनी सर्वोच्च प्रसन्नता और गरिमा की अनुभूति कर सके। अतत यदि बगाल जीवित है तो कौन मर सकता है, यदि बगाल मृत है तो कौन जी सकता है?"

सुभाष चद्र बोस

एस० एस० गेज
2-3-33

अनुक्रमणिका

ब

भ

म